सीनियर सिटीजन सोसायटी, अजमेर

वरिष्ठ जनों के कल्याणार्थ संस्था

चरैवेति चरैवेति

स्मारिका

2018



विश्व मित्र जन सेवा समिति अजमेर (रजि.)

Vishva Mitra Jan Seva Samiti (Reg.)

Ajmer (Raj.)

(REGESTERED UNDER ACT - 1958 NO - 85/A-92-93)

E-mail : nfo@guruom.org.

www.vishvamitras.org



राष्ट्रीय संत

डॉ. कृष्णानन्द जी गुरूदेव

लाड़लीघर

विश्व मित्रजन सेवा समिति की स्थापना के 25 वर्ष पूर्ण होने पर रजत जयन्ती वर्ष में राष्ट्रीय संत डॉ. श्री कृष्णानन्द जी गुरूदेव द्वारा नवीन प्रकल्प के रूप में कन्याओं के हितार्थ विशेषकर दृष्टि बाधित (नेत्रहीन) कन्याओं के समग्र विकास हेतु उपरोक्त शिक्षण संस्थान एवं छात्रावास खोलने का संकल्प लिया गया था। इस पुनीत कार्यकी परिणति श्री गुरूदेव द्वारा दिनांक 03.10.2017 को आरम्भ किये गये। दृष्टिबाधित कन्या शिक्षण संस्थाने एवं छात्रावास के रूप में हुई, जिसका उपनाम "लाडली घर" रखा गया है। जिसका शुभारम्भ माननीय नि:शक्तजन आयुक्त श्री धन्नाराम जी पुरोहित के करकमलों से हुआ। जिसमें दृष्टिबाधित बालिकाओं को ब्रेललिपी, संगीत एवं हस्तकला के माध्यम से शिक्षा, भोजन एवं आवास नि:शुल्क उपलब्ध करवाया जा रहा है जिससे उनके अंधकारमय जीवन में ज्ञान की ज्योति एवं आत्मविश्वास का दीपक जगा सकें। आइए हम मिलकर इस सेवा रथ के सारथी बनें।

नोट :-

"लाड़ली घर" में आपके द्वारा किसी भी आयोजन के अंतर्गत–जन्मदिवस, वर्षगांठ, व पावन स्मृति में भोजन करवाने की सुविधा उपलब्ध हैं।







विशेष : आप अपना सहयोग सीधे खाते में भी जमा करवा सकते है। विश्वमित्र जनसेवा समिति अजमेर, बैंक ऑफ बड़ौदा

A/c No. - 25290100003144 IFSC- BARBOWRAJME PAN - AAAV6701E

कार्यालय : 'श्री आनन्दम्', ई–336, मेहन्दी खोला माता रोड़, शास्त्री नगर, अजमेर

पुष्कर : श्री आनन्दम्, ध्यान केन्द्र, पोखरा की ढाणी, मेड़ता रोड़, पुष्कर (अजमेर)

दूरभाष : 09414415343, 09166238668

(पंजीयन क्र. 55/अजमेर/95-96)

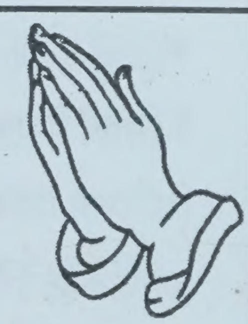
चरैवेती चरैवेती

स्मारिका – 2018

सीनियर सिटीजन सोसायटी, अजमेर

(बुजुर्गों के कल्याण एवं सेवार्थ संस्था)

प्रार्थना



दया कर, दान भक्ति का हमें परमात्मा देना।
दया करना, हमारी आत्मा में शुद्धता देना।।

हमारे ध्यान में आओ प्रभो, आँखों में बस जाओ।
अंधेरे दिल में आकर के, परम ज्योति जगा देना।।

बहा दो प्रेम की गंगा, दिलों में प्रेम का सागर।
हमें आपस में मिल-जुलकर, प्रभो रहना सिखा देना।।

हमारा कर्म हो सेवा, हमारा धर्म हो सेवा।
सदा ईमान हो सेवा, व सेवकचर बना देना।।

वतन के वास्ते जीना, वतन के वास्ते मरना।
वतन पर जाँ फ़िदा करना, प्रभो हमको सिखा देना।।

दया कर दान ....।
दया करना हमारी ....।।

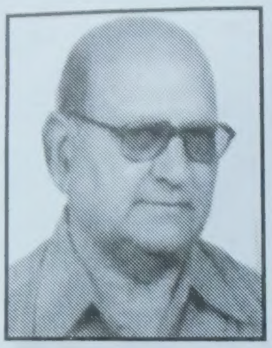
प्रकाशक : महासचिव, सीनियर सिटीजन सोसायटी, अजमेर

कार्यालय : 37-ए, कैलाशपुरी क्रिश्चयन गंज, अजमेर मो. : 9829158498

मुद्रक : द मनीष प्रिन्टर्स, अजमेर मो. : 9529678116

सदस्यों में वितरण हेतु

सम्पादकीय



सोसायटी की वार्षिक स्मारिका 2018 का यह अंक प्रस्तुत करते हुए बहुत गौरव का अनुभव कर रहा हूँ। किसी भी संस्था की गतिविधियों को एक ही साथ प्रस्तुत करने का स्मारिका के अलावा और कोई माध्यम नहीं हो सकता। हमें श्रद्धेय सन्तों, प्रशासनिक अधिकारियों और जन प्रतिनिधियों के शुभ कामना सन्देश प्राप्त हुए हैं मैं उनका आभारी हूँ।

सोसायटी के मुख्य आयोजन वरिष्ठजन सम्मान समारोह, होली-दीवाली स्नेह मिलन और वर्षाकालीन भ्रमण आदि होते हैं, और इनमें वरिष्ठजन अपनी-अपनी प्रतिभा का परिचय प्रस्तुत करते हैं। ऐसे ही वरिष्ठजनों ने आयु के इस मुकाम पर भी अपनी कलम उठाई और कई सारी रचनाऐं लेख प्रस्तुत कर दिए जो स्मारिका में प्रकाशित हैं।

पूरे अजमेर शहर में हमारे 22 समूह कार्य करते हैं और प्रत्येक समूह में 100 से लेकर 500 तक सदस्य होते हैं। शहर का कोई कोना ऐसा नहीं है जहां हमारे सोसायटी के सदस्य निवास नहीं करते हों। प्रत्येक माह प्रत्येक समूह की सभाऐं होती हैं जिनमें वे एक दूसरे के साथ जन्मदिन आदि मनाते है। जन समस्याओं पर जन प्रतिनिधियों का ध्यान आकर्षित करते हैं। चिकित्सा शिविर लगाते हैं, प्याऊ चलवाते हैं, उपयोगी पुराने कपड़ो को गरीब बस्तियों में बांटते हैं, गौशालाओं में चारा डलवाते हैं। ऐसे अनेक समाज उपयोगी कार्य करते हैं।

इस बार अक्टूबर 2017 को बहुत ही गरिमामय, अनुशासित तरीके से वरिष्ठजन सम्मान समारोह जवाहर रंगमंच पर आयोजित किया गया। शहर के कई गणमान्य व्यक्तियों ने इसमें उपस्थित रहकर हमें अनुगृहीत किया। हमारी सोसायटी मं न केवल राजकीय सेवा से सेवानिवृत्त कर्मचारी अधिकारी ही है बल्कि स्वयं का व्यापार करने वाले अनेक बुद्धिजीवी भी सदस्य है। सभी सदस्य संस्था को यथाशक्ति अपना सहयोग देते हैं। जिससे हमारे कार्यक्रम संचालित होते हैं। स्मारिका प्रकाश में अध्यक्ष श्री सुरेश अग्रवाल और वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री जे.पी. शर्मा का उल्लेखनीय योगदान रहा इसके अतिरिक्त सम्पादक मण्डल ने भी अपना पूरा सहयोग इसमें दिया जिन सज्जनों, व्यापारिक प्रतिष्ठानों ने हमें विज्ञापन दिया, उनका बहुत आभारी हूं।

हमारे सभी समूह संयोजकों ने यथा शक्ति स्मारिका हेतु तन-मन-धन से सहयोग किया है जिसे भुलाया नहीं जा सकता। मनीष पिन्टर्स ने भी हमारा कार्य निश्चित समय सीमा में कर दिया जो उल्लेखनीय है इनका बहुत-बहुत आभार। सम्पादक मण्डल प्रत्येक रचना, लेख आदि को गहराई से जांचता परखता है, फिर भी कोई त्रुटि रह सकती है जिसे आप विशाल हृदय के साथ क्षमा करेंगे, इसी आशा के साथ लेखनी को विराम देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित

- चिरंजीलाल शर्मा
प्रधान सम्पादक

****

सत्यमेव जयते

वसुन्धरा राजे

मुख्यमंत्री राजस्थान



संदेश

हर्ष का विषय है कि सीनियर सिटीजन सोसायटी, अजमेर वरिष्ठ नागरिकों के कल्याण से जुड़े अनेक कार्यक्रम आयोजित करता रहा है और उनके हितार्थ संस्थान द्वारा ''वरिष्ठ नागरिक स्मारिका'' का प्रकाशन किया जा रहा है।

वरिष्ठ नागरिक अनुभव का भण्डार होते है, वे अपने जीवन में कई अनुभव प्राप्त किये हुए होते हैं तथा उन्हें जीवन के विभिन्न पहलुओं की गहराई से समझ होती है। जीवन के इस दौर में वे अपना संकलित ज्ञान युवाओं के साथ साझा कर उन्हें मार्गदर्शित कर सकते है।

युवाओं को आवश्यकता है कि वे उन अनुभवों का इस्तेमाल कर अपने जीवन को नई दिशा प्रदान करें। युवा पीढ़ी को चाहिए कि वे अपनी ऊर्जा उनकी सेवा और देखभाल में लगाएं ताकि बुजुर्गों के चेहरों पर मुस्कान आ सकें।

मैं स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

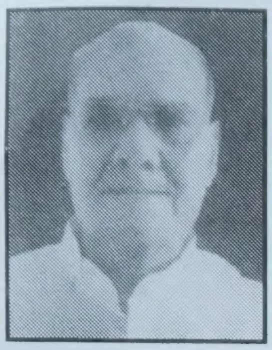
(वसुन्धरा राजे)

प्रेम नारायण गालव
कार्यकारी अध्यक्ष
राजस्थान राज्य वरिष्ठ नागरिक बोर्ड
(राज्य मंत्री)

सत्यमेव जयते

कार्यालय : एस.सी-1, गणेश मार्ग, गोवर्धन पथ, बापू नगर, जयपुर (राजस्थान)
निवास : स्टेशन रोड, नगरपालिका के सामने, बारां (राजस्थान)
+91-9414257039
+91-9461690999
galavpn11@gmail.com

शा. टीप. क.अ./वनबो/सान्याअवि/2018/5/4
जयपुर दिनांक : 12.6.18



सदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि सीनियर सिटीजन सोसायटी, अजमेर प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष 2018 की "वरिष्ठ नागरिक स्मारिका" का प्रकाशन करने जा रही है।

सीनियर सिटीजन सोसायटी, अजमेर नगर की एक मात्र संस्था है जो वर्ष 1995-96 में पंजीकृत है एवं सम्पूर्ण राजस्थान के 25 जिलों में संचालित इस प्रकार की संस्थाओं के शीर्षस्थ स्थान पर अपने 3000 संस्था सदस्यों के साथ वरिष्ठजनों के कल्याणार्थ एवं सेवार्थ कार्यशील रहती है।

वरिष्ठ नागरिक समाज का मार्गदर्शक वटवृक्ष है, जिनके अनुभवों से समाज को प्रेरणा प्राप्त करने का अवसर मिलता है। सीनियर सिटीजन सोसायटी द्वारा आयोजित की जाने वाली मासिक बैठकें निश्चित रूप से वरिष्ठ नागरिकों में प्रसन्नता बनाये रखने में सहायक है। सोसायटी के समस्त पदाधिकारी एवं सदस्यगण साधुवाद के पात्र है।

मैं आशा करता हूँ कि स्मारिका में प्रकाशित की जा रही सामग्री वरिष्ठजनों के लिए बहुउपयोगी तथा समाज के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होगी।

सद्भावी
प्रेम नारायण
(प्रेम नारायण गालव)

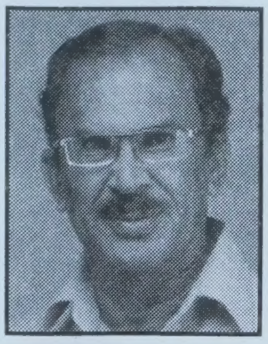
श्री चिरंजी लाल शर्मा
महासचिव
सीनियर सिटीजन सोसायटी, अजमेर।
37-ए, कैलाशपुरी, क्रिश्चयन गंज, अजमेर

वासुदेव देवनानी
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षा, भाषा एवं पुस्तकालय विभाग,
ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग
तथा इसके अधीनस्थ प्राथमिक शिक्षा का स्वतंत्र प्रभार
राजस्थान सरकार

सत्यमेव जयते

कमरा नं. 6303, मंत्रालय भवन
शासन सचिवालय, जयपुर - 302 005
फोन : 0141-2227250 (कार्यालय)
0141-2362672 (निवास)
ई मेल : mosrajeducation@gmail.com

अ.शा. पत्र क्रमांक : 290
जयपुर, दिनांक : 19.6.18



संदेश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि सीनियर सिटीजन सोसायटी अजमेर प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी ''वरिष्ठ नागरिक स्मारिका'' का प्रकाशन करने जा रही है।

वरिष्ठ नागरिकों के प्रति समर्पित संस्था स्थापना वर्ष से वरिष्ठजनों में जीवन्तता एवं व्यस्तता बनाये रखने हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कर एवं उनकी सेवार्थ अवनरत सक्रिय है जिसके लिये सोसायटी के समस्त पदाधिकारी व सदस्यगण साधुवाद के पात्र है।

स्मारिका में प्रकाशित की जा रही सामग्री वरिष्ठ नागरिकों एवं समाज के लिए उपयोगी सिद्ध होगी इसी कामना के साथ स्मारिका के सफल प्रकाशन के लिये मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

आपका

(वासुदेव देवनानी)

श्री चिरंजी लाल शर्मा
महासचिव
सीनियर सिटीजन सोसायटी, अजमेर।
37-ए, कैलाशपुरी, क्रिश्चयन गंज, अजमेर

शिवशंकर हेडा
अध्यक्ष (राज्य मंत्री)

सत्यमेव जयते

अजमेर विकास प्राधिकरण
अजमेर (राज.)
अ.शा.पत्रांक: PA/SSH/372
दिनांक: 18 जून 2018



शुभकामना संदेश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि सीनियर सिटीजन सोसायटी अजमेर द्वारा प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

वरिष्ठ नागरिक समाज की अमूल्य निधि है जो अपने अनुभवों से नई पीढ़ी को पोषित कर आगे बढ़ने की प्रेरणा देते है। समसामयिक गतिविधियों यथा स्वास्थ्य परीक्षण शिविर, मनोरंजन शिविर, पिकनिक, आम सभा व सांस्कृतिक समागम इत्यादि के आयोजन से आपसी भाईचारा व मेल-जोल बढ़ता है व जीवन में समरसता आती है।

मैं सीनियर सिटीजन सोसायटी से सम्बद्ध सभी महानुभावों को अपनी शुभकामनाएं प्रषित करते हुए सुखद जीवन व्यतीत करने की कामना करता हूँ।

भवदीय

(शिवशंकर हेडा)

श्री चिरंजी लाल शर्मा
महासचिव
सीनियर सिटीजन सोसायटी, अजमेर।
37-ए, कैलाशपुरी, क्रिश्चयन गंज, अजमेर

धर्मेन्द्र गहलोत
महापौर
नगर निगम, अजमेर

निवास : 221, प्रगति नगर, कोटड़ा
अजमेर - 305001 (राज.)
फोन : 0145-2427953 (कार्यालय)
0145-2620912 (कार्या. फैक्स)
ई मेल : dgehlot1966@gmail.com

दिनांक : 11.6.2018



शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि सीनियर सिटीजन सोसायटी अजमेर द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी सोसायटी द्वारा किये गये कार्यों एवं सोसायटी के सदस्यों की एक वरिष्ठ नागरिक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

इस सोसायटी के द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस, वार्षिक स्वास्थ्य परीक्षण एवं मनोरंजन शिविर, पिकनिक, सांस्कृतिक समागम आदि करती है, जो कि अत्यन्त सराहनीय है।

मैं इस स्मारिका के माध्यम से समस्त पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को बधाई देता हूँ तथा उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

आपकी स्मारिका के प्रकाशन पर मेरी हार्दिक शुभकामनाऐं। मुझे विश्वास है कि स्मारिका आमजन एवं पदाधिकारियों हेतु उपयोगी सिद्ध होगी।

शुभकामनाओं सहित

शुभेच्छु

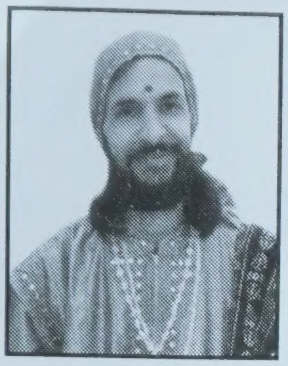
(धर्मेन्द्र गहलोत)

श्री चिरंजी लाल शर्मा
महासचिव
सीनियर सिटीजन सोसायटी, अजमेर।
37-ए, कैलाशपुरी, क्रिश्चयन गंज, अजमेर

विश्व मित्र जन सेवा समिति अजमेर (रजि.)

Vishva Mitra Jan Seva Samiti (Reg.)

(राज. संस्था पंजीकरण अधिनियम 58 ऑफ 58 के अन्तर्गत)
आयकर अधिनियम धारा 80 G(5)(VI) के अधीन छूट का प्रावधान उपलब्ध
E-mail- santkrishnanand@gmail.com, www.vishvamitras.org.



श्री कृष्णानन्द जी 'गुरूदेव'
श्री आनन्दम, ई. 336,
शास्त्री नगर, अजमेर

शुभकामना सदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि सीनियर सिटीजन सोसायटी अजमेर, वर्ष 208 की वरिष्ठ नागरिक स्मारिका प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी प्रकाशित होने जा रही है।

आपको संस्था अजमेर शहर के विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित वरिष्ठ नागरिक समूहों द्वारा 22 वर्षों से विविध संस्थाओं के सहयोग से निरंतर सक्रिय रहकर वरिष्ठ नागरिकों के उपेक्षित व कमजोर लोगों की सहायतार्थ सद्व्यवहार, त्याग, दान और सेवा भावना के साथ कार्यशील रहते हुए ना केवल राजस्थान में अपितु सम्पूर्ण देश में शीर्षस्थ स्थान पर कार्यरत हैं।

मैं इस संस्था के समस्त पदाधिकारियों एवं कार्यकत्ताओं को बधाई देते हुए उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ। वृद्धजन पूर्ण चन्द्रमा की तरह समाज व परिवार में शीतल छाँव की मानिंद है इन्हीं के निकट हम पूर्णता का अनुभव कर सकते हैं।

यह स्मारिका नवीन पीढ़ी को सामाजिक कल्याण के उपयोगी एवं हितकर दायित्वों से परिचय कराये और समाज इससे लाभाविन्त हो, ऐसी मेरी हार्दिक शुभकामनायें हैं।

डॉ. कृष्णा नन्द 'गुरूदेव'

अध्यक्षीय उद्बोधन



इस सृष्टि में मनुष्य शरीर अमूल्य, विलक्षण एवं उन्नति करने का सर्वोत्म साधन है। सर्वोत्तम की प्राप्ति के लिए सतत् चेष्टा और ध्येय होना आवश्यक है। उद्देश्य विहिन जीवन निकृष्ट है। समय का सदुपयोग उद्देश्य को सार्थक करता है। सीनियर सिटीजन सोसायटी अजमेर वृद्धावस्था के समय को अनुशासित और लक्ष्य परक बनाती है। समय को खर्च करने की कला जिसने सीख ली उसको सब कुछ प्राप्त हो जाता है। जिसने नहीं सीखा उसे सब कुछ प्राप्त होते हुए भी कुछ नहीं मिलता। आयु सीमित है। इसे विज्ञान सुविधाजनक तो बना सकता है। लेकिन इसमें एक पल की वृद्धि भी नहीं कर सकता।

यह संस्था जीवन को नई ऊर्जा, ताजगी और जोश से संचारित कर स्वस्थ व तंदुरूस्त रखने के मायने देती है। सम्बन्धों में आयी शिथिलता और आलस्य को दूर करती है। संकल्प के साथ नई दिशा देती है। संस्था में सभी जाति, धर्म, संस्कृति और लिंग का प्रवेश बिना भेदभाव के है। संस्था का गठन वर्ष 1995 में 31 सदस्यों से प्रारंभ हुयी वह आज लगभग 4500 सदस्यों तक पहुँच गयी है। शहर को प्रशासनिक दृष्टि से 22 समूहों में बांटा गया है जिसका संचालन समूह संयोजक करते हैं। समूह संयोजक नवीन सदस्यों की प्रवेश जानकारी लेकर संस्था को संस्था कि सदस्यता हेतु नाम प्रस्तावित करते है। जिसे अधिशाषी परिषद् की सभा में सर्वसम्मति से स्वीकृती प्रदान की जाती है। संस्था कि लोकप्रियता का प्रमाण निम्नलिखित संस्थाओं से राष्ट्रीय स्तर पर सम्बद्धता से भी है-

Indian Federation of ageing (INFA) Help age India All India senior citizen forum, Banglore. All India senior citizen confederation, Mumbai

उपरोक्त के अतिरिक्त वरिष्ठ नागरिक संस्थान, जयपुर राजस्थान के साथ-साथ जिला प्रशासन से भी सम्बंध है।

प्रत्येक सदस्य, संस्था के हितों को ध्यान में रख कर सामाजिक उत्थान में अपना योगदान देता है। जिस के कारण सदस्य को समूह स्तर पर और संस्था स्तर पर एक नई पहचान मिलती है। सदस्यों के द्वारा व्यापार, नौकरी, राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर जो सेवायें प्रदान की गई है वे सभी समाज और सेवाओं से रूबरू होते है। समय-समय पर आयी प्राकृतिक आपदायें भूकम्प, बाढ़, अकाल इत्यादि की परिस्थितियों में उन्मुक्त रूप से सभी ने सहयोग प्रदान किया है। नवीन पीढ़ी सेवा भाव से जुड़े इस कार्य हेतु संस्था चिकित्सा शिविर, निःशुल्क जाँच शिविर व वद्धजनों के मनोरंजन के लिए समय-समय पर भ्रमण शिविर, खेल कूद प्रतियेगिता का आयोजन करती हैं। संस्था का सदस्य एक दूसरे की सेवा की भावना से जुड़ता है। संस्था प्रत्येक सदस्य को अपने आप के मूल्यांकन करने का अवसर प्रदान करती है। इसमें कोई गौ सेवा प्रकल्प से तो कोई बैंक, चिकित्सा, रोगी सेवा, बच्चियों की शिक्षा, पशुपक्षियों की सेवा, स्वच्छता अभियान, वृद्धाश्रम व स्कूल, गरीब विद्यार्थियों को गणवेश, प्याऊ इत्यादि में अपने सार्म्थयानुसार योगदान प्रदान करता है। वृद्धजन अपने आपको युवाओं के समक्ष आश्रित, बेसहारा न समझे इस हेतु संस्था अपने भावों को व्यक्त करने का अवसर भी प्रदान करती है। इसी हेतु संस्था अपने स्तर पर संयुक्त राष्ट्र संध द्वारा घोषित 1 अक्टूबर को अन्तर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस, पर संस्था के वरिष्ठतम सदस्यों का एवं शहर के 90 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्तियों का सम्मान करती है।

संस्था अपना मासिक मुखपत्र ''सेवा संकल्प'' प्रकाशित कर सभी समूहों की गतिविधियाँ, सेवा कार्यो एवं सरकारी कर्मचारियों से संबंधित महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ समय-समय पर प्रकाशित करती है। प्रतिवर्ष वरिष्ठ नागरिक स्मारिका का प्रकाशन किया जाता है। जिसमें वरिष्ठ नागरिकों की स्वरचित रचनाओं के अतिरिक्त संस्था की वर्ष भर की गतिविधियों का उल्लेख एवं सार भी दिया जाता है।

दुःखों का नाश सहयोग से होता है और कल्याण केलिए प्रयत्न हो तो प्रत्येक क्षण को खुशी में परिवर्तित किया जा सकता है। वृद्धावस्था को दूर रखने के लिए स्वयं को स्वस्थ रखने की आवयश्कता है। संस्था प्रतिकूल परिस्थितियों को अनुकूल करने का जतन करती है।

चाह गयी चिंता मिटी मनुआ बेपरवाह। जिनको कछु न चाहिये सो जग शहन्शाँह॥ यह संस्था प्रतिरोपित इच्छाओं को समझने का पूर्ण अवसर देती है। संस्था चाहती है कि वृद्धावस्था में इच्छाओं का त्याग कर सभी शहन्शाह की तरह रहें। मैं सभी संस्था सदस्यों का उनके सुखद भविष्य की कामना के साथ स्वस्थ व दीर्घायु होने की कामना करता हूँ। जाने अनजान में किसी को भी ठेस लगी हो उनसे क्षमा याचना की अपेक्षा रखते हुए संस्था हित में एकजुट होने की प्रार्थना करता हूँ।

- सुरेश अग्रवाल
अध्यक्ष

वार्षिक प्रतिवेदन

- चिरंजीलाल शर्मा
महासचिव



दिनांक 2-5-2017 को अधिशाषी परिषद् की महत्वपूर्ण बैठक में यह निर्णय लिया गया था कि आमसभा 31 मई को सम्पन्न कराई जायेगी। इसी बैठक में संविधान में कुछ संशोधन करने हेतु एक समिति का भी गठन किया गया था। समिति के सुयोजक श्री नरेन्द्र मंगल को बनाया गया और उनके साथ सर्व श्री भंवरलाल गोयल, रतनलाल ऐरन, श्री जे.एन.शर्मा, श्री वी.पी.कपूर को रखा गया। इसी बैठक में यह भी तय किया गया था कि भविष्य में जन्मदिन सहयोग की राशि नहीं मांगी जायेगी यद्यपि ऐच्छिक सहयोग दिया जा सकेगा। संस्था के कार्य को सुचारू चलाने के लिए केन्द्रीय सहयोग 100/- रू प्रति वर्ष प्रति सदस्य लिया जायेगा।

दिनांक 31.05.2017 को नाका मदार के सामुदायिक भवन में आमसभा का आयोजन किया गया। विभिन्न समूहों से लगभग 15 सदस्यों ने अपने विचार रखे। इस बीच समूह 18 के वरिष्ठ सदस्य एवं कवि श्री तेजसिंह कच्छावा की नवीनतम काव्य रचना ''मन के मोती'' व ''दिल की जुबां'' का विमोचन भी किया गया। सोसायटी के लेखे जोखों का आन्तरिक अंकेक्षण समूह 02 की वरिष्ठ सदस्य सुश्री सन्तोष शर्मा द्वारा नि:शुल्क किए जाने पर सार्वजनिक रूप से शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया गया।

वर्ष 2016-17 के मध्य हमसे बिछुड चुके संस्था के दिवंगत सदस्यों को श्रृदांजलि दी गई। आम सभा को सफल बनाने में समूह 20 के संयोजक श्री राजेन्द्र शिवहरे, श्री रामेश्वर सिसोदिया एवं श्री विनोद माथुर का उत्साहवर्धक सहयोग रहा, उनके हम बहुत आभारी है।

दिनांक 04.07.2017 की अधिशाषी परिषद की बैठक में संविधान संशोधन पर इस समिति के संयोजक श्री नरेन्द्र मंगल ने कुछ बिन्दुओं पर चर्चा की परन्तु समयाभाव के कारण पूरी नहीं हुई।

दिनांक 06.08.17 को जांगिड समारोह स्थल पर संस्था की ओर से चिकित्सा एवं परामर्श शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर के संयोजक समूह 13 के श्री चिरंजीलाल शर्मा थे। 9 चिकित्सकों, 14 तकनीकी सहायकों के साथ 365 रोगियों ने शिविर का लाभ उठाया। 13 जरूरतमंदों को चश्में भी वितरित किए गए।

दिनांक 1 अक्टूबर 2017 को अन्तर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस पर सोसायटी ने अपने सबसे गरिमामय उत्सव ''वृद्धजन सम्मान समारोह'' को भव्य एवं अनुशासनबद्ध तरीके से मनाया।

दिनांक 29.10.2017 को दीपावली स्नेह मिलन एवं वनभ्रमण का सम्मिलित कार्यक्रम पुष्कर के पास चित्रकूट धाम पर आयोजित किया गया। कई रोचक कार्यक्रम समूह 18 के संयोजक श्री के.के. गौड एवं श्रीमती प्रेरणा गौड़ ने कराए। सदस्यों ने एक से बढ़कर एक सुन्दर प्रस्तुतियां दी। स्वादिष्ट अल्पाहार और भोज के साथ सदस्यों ने वनभ्रमण का आनन्द उठाया।

दिनांक 30.1.2018 को नाका मदार में सोसायटी की आम सभा आयोजित हुई। आमसभा समयबद्ध और पूर्ण अनुशासित रही।

दिनांक 18.03.2018 को समूह सं.18 ने अपने ही दम पर एक बहुत शानदार चिकित्सा शिविर धोला भाटा में आयोजित किया। इसमें कई विशेषज्ञ चिकित्सक आए, 583 रोगियों को परामर्श दिया और दवा का भी नि:शुल्क वितरण किया गया। समूह 18 के संयोजक श्री के.के. गौड़ एवं उनके समूह के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं।

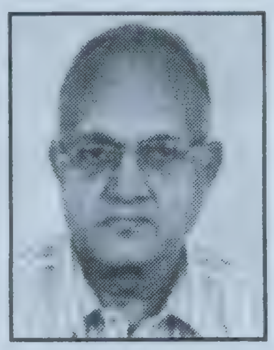
दिनांक 27.03.2018 को जनकपुरी में होली मिलन समारोह आयोजित किया गया। आयोजन बहुत ही सफल रहा और समयबद्ध पूर्ण हुआ।

यहाँ मैं इस बात का भी उल्लेख करना चाहूंगा कि सोसायटी के केन्द्रीय सहयोग में अपेक्षा से बढ़कर सदस्यों ने सहयोग दिया। कई समूह समाजोपयोगी कार्यों में भी लगे हुए हैं। सदस्य संख्या हर वर्ष बढ़ रही है। सोसायटी के सभी सदस्यों, समूह संयोजको के सहयोग के बिना यह संभव नहीं है। मैं उन सभी का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

* * * *

वार्षिक आम सभा

(31.05.2017 बुधवार)



श्री रतनलाल ऐरन



श्री कैलाश जोशी

सीनियर सिटीजन सोसायटी, अजमेर की वार्षिक आम सभा आज दिनांक 31.05.2017 बुधवार को सामुदायिक विकास भवन, मधुबन कॉलोनी, नाका मदार, अजमेर में आयोजित की गई।

प्रात: 9.30 बजे से 10.00 बजे तक अल्पाहार एवं पंजीकरण का समय रखा गया। तत्पश्चात महासचिव श्री चिरंजीलाल शर्मा द्वारा कौरम पूरा नहीं होने के क्रम में सभा को स्थगित करते हुए पुन: इसी स्थान पर आधे घण्टे पश्चात उसी ऐजेण्डे के अनुरूप सभा की कार्यवाही करने की घोषणा की गई।

प्रात: 10.30 बजे विधि विधान के अन्तर्गत महासचिव श्री शर्मा द्वारा सभी का स्वागत करते हुए अधिशाषी परिषद के श्री सुरेश अग्रवाल - अध्यक्ष महोदय, श्री जे. पी. शर्मा - वरिष्ठ उपाध्यक्ष, श्रीमती कुसुम गौतम - महिला उपाध्यक्ष, श्री वी. पी. कपूर - सचिव प्रशासन, श्री सुनील सक्सेना - सचिव विकास, श्री बलवीर सिंह गहलोत - सचिव वित्त, श्रीमती राधिका अग्रवाल - महिला सदस्य, श्रीमती मंजू महेश्वरी - महिला सदस्य को मंचासीन कराते हुए सरस्वती माता के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलन करवाया गया। तत्पश्चात संस्था के अध्यक्ष श्री सुरेश अग्रवाल की अध्यक्षता में सभा आयोजित कर ऐजेण्डे के अनुसार कार्यवाही प्रारम्भ की गई :-

1. ईश वन्दना :- ईश-वन्दना के लिए श्रीमती कुसुम गौतम, श्रीमती राधिका अग्रवाल, श्रीमती मंजू महेश्वरी, श्रीमती संतोष वर्मा द्वारा सम्पन्न की गई। पूर्व कार्यवाहक अध्यक्ष श्री आर. एस. निर्बान द्वारा ओम ध्वनि का उच्चारण एवं हास्यासन कराया गया एवं ताली वादन भी कराया गया।

महासचिव द्वारा अध्यक्ष महोदय को स्वागत एवं उद्‌बोधन के लिए आमंत्रित किया।

2. अध्यक्ष महोदय द्वारा स्वागत एवं उद्‌बोधन :- अध्यक्ष महोदय श्री सुरेश अग्रवाल द्वारा संस्था के गठन से लेकर आज तक सभी पदाधिकारियों को नमन करते हुए सभा में उपस्थित सभी सम्मानीय सदस्यों एवं मातृशक्ति का अभिनन्दन किया। अध्यक्ष द्वारा अपने उद्‌बोधन में सर्वप्रथम संस्था सदस्यों का नवनिर्वाचित अधिशाषी परिषद के सदस्यों में आस्था एवं विश्वास के प्रति आभार व्यक्त करते हुए आश्वस्त किया कि हम सभी पूर्ण निष्ठा, श्रृद्धा एवं कमठ कार्यकर्त्ता के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान कर संस्था की खोई हुई प्रतिष्ठा को पुन: प्राप्त एवं जाग्रत करने का भरपूर प्रयास करेंगे।

पूर्व में आयोजित वृद्धजन सम्मान समारोह, होली स्नेह मिलन समारोह एवं स्मारिका प्रकाशन पर सदस्यों द्वारा दिये गये सहयोग के लिए साधुवाद दिया। भविष्य की योजनाओं के संदर्भ में अवगत कराया कि सर्वप्रथम हमारा प्रयास संस्था के लिए भूमि एवं भवन प्राप्त करने का हैं। पूर्व में आयोजित सभी कार्यक्रम यथानुसार आयोजित किये जाते रहेंगे एवं भविष्य में नये कार्यक्रमों के अन्तर्गत चिकित्सा एवं परामर्श शिविर, जागरूकता अभियान, वृक्षारोपण, पर्यावरण एवं जनउपयोगी कार्य करने के लिए भी पूर्ण प्रयास किया जायेगा। भूमि एवं भवन के अन्तर्गत संस्था द्वारा भरसक प्रयत्न किए जा रहे हैं। जन प्रतिनिधि, शासन एवं प्रतिष्ठित व्यक्तियों से सम्पर्क लगातार जारी है एवं आश्वासन के अनुरूप संस्था को शीघ्र ही रियायती दर, अच्छे स्थान पर अच्छी मात्रा में जगह मिलने की सम्भावना है। अजमेर विकास प्राधिकरण एवं नगर निगम अजमेर से भी पत्र व्यवहार जारी है। इस संबंध में अध्यक्ष महोदय ने सभा को अवगत कराया कि भीलवाड़ा में नगर सुधार न्यास ने वरिष्ठ नागरिकों को भवन बनाकर दिया हैं जिसका स्वामित्व नगर सुधार न्यास के पास हैं लेकिन पजेशन वरिष्ठ नागरिक संस्था के पास हैं। इसी प्रकार का भवन अजमेर में भी बनाकर दिया जाये जिसके लिए प्रयास जारी

हैं। अजमेर विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष ने अवगत कराया कि संस्था के लिए उचित तो यही होगा कि लगभग 200 गज भूमि लेकर उस पर कार्यालय, वाचनालय, आदि बना लिया जाए।

अध्यक्ष ने सभा को अवगत कराया कि 12.02.2017 को वृद्धजन सम्मान समारोह का भव्य आयोजन किया गया।

संस्था अध्यक्ष ने अपने उद्बोधन में राजस्थान वरिष्ठ नागरिक संस्थान के अध्यक्ष श्री भंवर सेठ के अजमेर प्रवास का भी जिक्र किया जिसमें संस्थान द्वारा राजस्थान सरकार से विभिन्न सुविधाओं जैसे वृद्धजनों को पुलिस सेवा द्वारा सुरक्षा प्रदान की जाए, हॉस्पिटल में अलग से वार्ड की सुविधा हो जिसमें खेल कूद से संबंधित कैरम इत्यादि वाचनालय की सुविधा आदि एवं वृद्धजनों की पेंशन को बढ़ाये जाने की चर्चा पर जोर दिया। श्री भंवर सेठ ने प्रसन्नता जाहिर की अजमेर सीनियर सिटीजन सोसायटी में 4000 से अधिक सदस्य हैं। इसके साथ ही उन्होनें आश्चर्य व्यक्त किया कि आजीवन सदस्यता शुल्क मात्र 300/400 रूपये प्राप्त किये जा रहे हैं जबकि भीलवाड़ा में 3000 रूपये एवं उदयपुर में 5000 रूपये प्रति सदस्य प्राप्त किये जा रहे हैं।

संस्था द्वारा स्मारिका का प्रकाशन 1 अक्टूबर को वृद्धजन दिवस पर सम्मान कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रकायान किया जाता है। स्मारिका में 1 अक्टूबर को सम्मानित किए गए वृद्धजनों का विवरण एवं संस्था सदस्यों के द्वारा रचित कविताएँ, लेख एवं गीत आदि प्रकाशित किए जाते है। स्मारिका में सम्पूर्ण सदस्यों की सूची (निर्देशिका) भी प्रकाशित की जाती है जिसमें सदस्यों से संबंधित उनके नाम, पते, सम्पर्क सूत्र, जन्म तिथि एवं समूह संख्या प्रकाशित की जाती है। जिसमें सदस्यों से आवश्यकतानुसार सम्पर्क किया जा सके। स्मारिका प्रकाशन की लागत विज्ञापनों के प्रकाशन से पूरी की जाती है। इस वर्ष विज्ञापनों में सहयोग प्रदान करने के लिए श्री जे. पी. शर्मा वरिष्ठ उपाध्यक्ष, श्री कल्याण राय शर्मा समूह संयोजक संख्या 10 एवं श्री मदन रवि समूह संयोजक 12 का विशेष योगदान रहा, संस्था उनके सहयोग हेतु आभार प्रकट करती हैं।

संस्था में तन-मन-धन से सेवा करनी होती है इस दृष्टि से सभी पदाधिकारियों एवं सभी समूह संयाजकों द्वारा प्रदान की जा रही सेवाओं के लिए अध्यक्ष महोदय द्वारा आभार व्यक्त किया। संस्था सदस्यों द्वारा प्रेषित समस्याओं का निवारण भी तत्परता से करने का पूरा प्रयास किया जाता है।

संस्था अध्यक्ष द्वारा सम्मानित सदस्यों /आयोजकों/समूह संयोजकों/स्थानीय प्रशासन और कार्यकर्त्ताओं को धन्यवाद देते हुए आभार व्यक्त किया गया। जिनके बिना इस प्रकार के आयोजन को करना सम्भव नहींहोता। संस्था का प्रचार-प्रसार दैनिक समाचार पत्रों के माध्यम से होता है। सभी मीडिया कर्मियों के साथ भास्कर/दैनिक नवज्योति/राजस्थान पत्रिका/सरे राह/स्वामी न्यूज इत्यादि का भी शुक्रिया किया जिनके माध्यम से संस्था की गतिविधियाँ जन समूहों तक पहुँचती है।

3. गत साधारण सभा की कार्यवाही का पठन एवं अनुमोदन :-

महासचिव श्री शर्मा द्वारा गत आम सभा जो दिनांक 17.07.2016 को सामुदायिक विकास भवन, शास्त्री नगर, अजमेर में आयोजित की गई थी के कार्यव्रत/कार्यवाही विवरण का पठन किया गया जिसे सर्वसम्मति से अनुमोदित किया गया।

4. वित्त सचिव द्वारा वर्ष 2015-16 के संशोधित अंकेक्षित लेखों एवं वर्ष 2016-17 के अंकेक्षित लेखों का प्रस्तुतीकरण एवं अनुमोदन :-

महासचिव ने सभा को अवगत कराया कि संस्था के लेखें व्यापारिक पदति के आधार पर संधारित किये जाते हैं जिसमें वर्ष से संबंधित होने वाली समस्त आय एवं व्ययों का समायोजन (प्रोविजन किया जाता है) जिससे संस्था की वास्तविक स्थिति को प्रदर्शित किया जा सके। लेखों का वित्त सचिव के द्वारा संधारण करने के पश्चात महासचिव द्वारा जांचे जाते है तत्पश्चात् अतिक्ति अंकेक्षण किया जाता हैं। इस वर्ष सुश्री संतोष शर्मा आयकर अधिवक्ता के द्वारा आंतरिक अंकेक्षण किया गया हैं। वैधानिक अंकेक्षण मैसर्स महेश आर एण्ड कम्पनी चार्टेड अकाउण्टेंट द्वारा किये गये है।

वित्त सचिव श्री बलबीर सिंह गहलोत को लेखे प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया गया जिसे उन्होंने भली भांति प्रस्तुत

किया।

उनके द्वारा सभा में 2015-16 के संशोधित अंकेक्षित लेखे एवं वर्ष 2016-17 के अंकेक्षित लेखों का विगतवार पठन किया गया जिसका सदस्यों द्वारा सर्वसम्मति एवं करतल ध्वनि से अनुमोदित कर पारित किया गया।

5. महासचिव द्वारा वार्षिक प्रतिवेदन का प्रस्तुतीकरण :- महासचिव द्वारा सभा में उपस्थित सभी सदस्यों का हार्दिक स्वागत करते हुए वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जिसके अन्तर्गत :-

6. 31 मई को जन्म लिए हुए संस्था के सदस्यों को जन्मदिन की हार्दिक बधाई एवं सम्मान :-

संस्था में 31 मई को जन्म लिए हुए सदस्यों के लिए दीर्घायु, उत्तम स्वास्थ्य एवं उज्जवल भविष्य की कामना की गई।

7. खुला अधिवेशन में संस्था सदस्यों द्वारा विचार/सुझाव :- खुला अधिवेशन में संस्था सदस्यों द्वारा निम्न प्रकार से अपने विचार एवं सुझाव प्रस्तुत किए गए। उल्लेख है कि संस्था के अध्यक्ष द्वारा अपने उद्बोधन में महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर प्रकाश डाला एवं महासचिव द्वारा वार्षिक प्रतिवेदन में अधिकांश बिन्दुओं पर स्थिति स्पष्ट की गयी। सदस्यों के सुझावों का बिन्दुवार निम्न प्रकार से निवारण करने का प्रयास किया गया -

समूह संख्या 07 के संयोजक सदस्य श्री भंवर लाल गोयल - श्री गोयल ने सभा को सम्बोधित करते हुए अवगत कराया कि उन्हें समूह संख्या 07 का संयोजक नियुक्त किया गया है। उनके द्वारा अथक प्रयास करने के बावजूद भी सकारात्मक सहयोग प्राप्त नहीं हो पा रहा हैं अतः सभा में उपस्थिति सज्जनों से निवेद न है कि समूह संख्या 7 व उसके आस-पास के सदस्यों को प्रेरित करे जिससे समूह की गतिविधियाँ सूचारू रूप से संचालित की जा सकें। इसके साथ ही उन्हें संविधान संशोधन समिति का सदस्य बनाया गया है। निवेदन है कि अपने प्रस्ताव एवं सुझाव देने का कष्ट करें।

समूह संख्या 02 के संयोजक श्री कैलाश जोशी - श्री जोशी ने सभा को सम्बोधित करते हुए अवगत कराया कि अध्यक्ष महोदय ने अपने उद्बोधन में अवगत कराया कि अजमेर विकास प्राधिकरण द्वारा संस्था को 1000 गज के लगभग भूमि उपलब्ध कराने में अधिक राशि का विनियोजन बतलाया है जो कि संस्था के लिए बहुत ही मुश्किल एवं नामुमकिन है अतः ऐसी स्थिति में उपलब्ध राशि से लगभग 200 गज का भूमि का प्लॉट ले लिया जाये तो संस्था के लिए उत्तम रहेगा। इस भूमि पर कार्यालय, वाचनालय एवं खेलकूद की प्रक्रिया एवं छोटी मोटी सभाओं का आयोजन किया भी जा सकेगा। इस सम्बन्ध में महासचिव ने बताया कि यदि भवन की व्यवस्था नहीं बैठी तो 200 गज प्लाट की कार्यवाही की जावेगी।

समूह संख्या 13 के सदस्य श्री चिरंजी लाल शर्मा - श्री शर्मा ने अपने सम्बोधन में संस्था द्वारा 3000 रूपये वर्ष 2015-16 में एवं 1000 रूपये वर्ष 2016-17 में कानूनी व्यय को गलत करार देते हुए वसूलने की कार्यवाही से अवगत कराया। इस संबंध में महासचिव ने अवगत कराया कि उक्त व्यय नयी अधिशाषी परिषद के चुनाव होने के पूर्व के हैं जो तत्कालीन अध्यक्ष एवं महासचिव द्वारा अनुमोदित किये गये हैं। अतः इस बिन्दु पर किसी प्रकार की टिप्पणी करना अनुचित होगा।

श्री शर्मा ने एक व्यक्ति दो पद के संदर्भ में सभा को अवगत कराया कि यह प्रथा पूर्व से गलत परिपाठी की ओर हैं और अभी तक इस दिशा में कोई सुधार नहीं हुआ हैं। अतः एक व्यक्ति एक पद ही होना चाहिए। महासचिव ने उत्तर दिया कि संविधान संशोधन समिति इस बारे में विचार करेगी।

श्री शर्मा ने यह भी अवगत कराया कि पूर्व में श्री जे.एस. राजावत ने संस्था विरोधी गतिविधियाँ आयोजित की जिसमें उनके द्वारा सहकारी विभाग अजमेर को गलत सूचनाएँ देकर संविधान संशोधन को रोकने एवं संस्था की छवि खराब करने की कोशिश की गई और आज उसी सदस्य को संविधान संशोधन समिति का सदस्य बनाया गया हैं। जो एक दम अनुचित एवं व्यवस्था के विपरीत हैं। महासचिव ने सदन से पूछा कि श्री राजावत को रखना चाहिये कि नहीं, इस पर चारों तरफ से हटाओ-हटाओं की आवाजें आयी अतः महासचिव ने उन्हें हटाने के लिए आश्वस्त किया।

समूह संख्या 10 के सदस्य श्री कल्याण राय शर्मा - श्री

शर्मा ने अपनी कविता के माध्यम से संस्था के सभी सदस्यों को एकजुट होकर काम करने की सीख दी।

समूह संख्या 20 के सदस्य श्री मुकेश भार्गव – श्री भार्गव ने सूरत, बड़ौदा में वरिष्ठ नागरिकों के द्वारा आयोजित कार्यक्रम की व्याख्या करते हुए सदस्यों से निवेदन किया कि कुछ सदस्य आपस में समूह बनाकर घूमने जाने का प्रयास करें। उनके द्वारा सदन को अवगत कराया कि सभी समूह अपने समूह से धन राशि एकत्रित कर 1,00,000/– रूपये की सावधि जमा सोसयटी के अध्यक्ष/महासचिव एवं समूह के सम्मानित सदस्य के नाम से बनवायी जाए जिसका ब्याज प्रतिवर्ष संस्था को प्राप्त होता रहें। जिसे संस्था की गतिविधियाँ सुचारू रूप से संचालित की जा सकेगी। इस सम्बन्ध में महासचिव ने अगली अधिशाषी परिषद् में विचार करने का आश्वास दिया।

समूह संख्या 18 के सदस्य श्री तेजसिंह कच्छावा – श्री कच्छावा द्वारा रचित पुस्तक मन के मोती, दिल की जुबा का विमोचन संस्था के अध्यक्ष एवं महासचिव द्वारा किया गया एवं शुभकामना प्रेषित की गई।

समूह 18 के संयोजक श्री वी.पी. कपूर – श्री कपूर द्वारा सभी सदस्यों का धन्यवाद ज्ञापित किया कि उनके द्वारा अधिशाषी परिषद को चुनाव में विजय दिलायी है। यह भी विश्वास दिलाया कि सभी भरपूर कार्य करेंगे। इसके साथ संविधान में भी संशोधन किया जा रहा हैं जिसके अन्तर्गत आने वाले वर्षों में मई माह में होने वाली आम सभा 31 मार्च तक हो जाया करेंगी। सम्भवत: उनका दृष्टिकोण केन्द्र सरकार द्वारा वित्त वर्ष 1 जनवरी से 31 दिसम्बर होने से हो सकता है। इस सम्बन्ध में संविधान संशोधन समिति को अवगत कराया जायेगा।

समूह संख्या 9 के सदस्य श्री कश्मीर सिंह – श्री सिंह ने सभा को सम्बोधित करते हुए स्वयं का पक्ष रखा कि नवनिर्वाचित कार्यकारिणी को बहुत ही अल्प समय हुआ हैं हमें उनको अनुरूप कार्य करते रहने देना चाहिए। अभी किसी विषय में कोई राय बनाना उचित नहीं है। सभी को संस्था के हितों की तरफ ध्यान देकर कार्य करते रहना चाहिए।

समूह संख्या 4 के सदस्य श्री मोहन सिंह टांक – श्री टांक ने संस्था द्वारा 12 फरवरी 2017 को वृद्धजन दिवस पर किये गये रू. 70000 के व्यय को अनुचित बताया उन्होंने 6000 रू. वरिष्ठ नागरिक संस्थान को दिये गये लेवी को भी व्यर्थ बताया। इस पर महासचिव ने अवगत कराया कि वृद्धो के सम्मान के लिये कोई दिवस नहीं होता, हम कभी भी बुजुर्गों का सम्मान कर सकते हैं। और यह सम्मान समारोह 1 अक्टूबर 2016 को होना था जिसे अब सम्पन्न किया गया। इस संदर्भ हमें रू. 1,03,000/– का सहयोग प्राप्त हुआ तथा आयोजन के पश्चात् 34,000 रू. की बचत हुई। लेवी हर संस्था संगठित रखने के लिए भेजी जाती है।

श्री टांक से यह भी निवेदन किया गया कि वे अपनी गरिमा के अनुकूल अपना सहयोग संस्था को प्रदान करते रहे।

समूह संख्या 4 के सदस्य श्री एम.एल. गोयल :– श्री गोयल जो सभा में अपने विचार रखना चाहते थे व्यक्तिगत रूप से उपस्थित नहीं हुए उन्होंने अपने पत्राचार द्वारा संविधान संशोधन एवं संस्था की कार्यवाही के संबंध में विचार व्यक्त किये गये। महासचिव ने आश्वस्त किया कि तत्सम्बन्ध में कार्यवाही करने का प्रयास किया जायेगा।

समूह संख्या 20 के सदस्य श्री राधेश्याम सिंघल – श्री सिंघल जो कि अजमेर विद्युत वितरण निगम लि. अजमेर से अधिशाषी अभियंता के पद से सेवानिवृत हुए है, उन्होंने सभा में निवदेन किया कि अ.वि.वि.नि. में किसी प्रकार की कोई शिकायत हो या किसी कार्य में रूकावट आ रही हो तो वह स्वयं इस संबध में वह अपनी सेवाएँ नि:शुल्क प्रदान कर सकते हैं। वह टेलीफोन नं. 9414314587 पर सम्पर्क किया जा सकता है।

समूह संख्या 1 के सदस्ये श्री मानसिंह वर्मा – श्री वर्मा ने सभा में अपने विचारों के अन्तर्गत 12 फरवरी को आयोजित वृद्धजन सम्मान समारोह के आयोजन में वृद्धजनों को सम्मान में शॉल भेट नहीं की जाने की कमी को बताया। महासचिव ने स्पष्ट किया कि जिन समूहों से समय पर नाम प्राप्त नहीं हुए उन्हीं सदस्यों को शॉल नहीं दी जा सकी थी। शेष आरोप निराधार है।

समूह संख्या 10 के सदस्य श्री जी.सी. पंवार – श्री पंवार ने अध्यक्ष महोदय के उद्‌बोधन में आये भूमि एवं भवन के

संदर्भ में सदन को अवगत कराया कि इस संबंध मे पत्र एवं फार्म आदि भरकर पूर्ण प्रयास करते रहना चाहिए। इसके साथ ही उनके द्वारा सेवानिवृत केन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों के लिए नि:शुल्क चिकित्सा स्वास्थ्य योजना (सीजीएचएस) सुविधा राजस्थान राज्य में केवल जयपुर में उपलब्ध है। राज्य के विभिन्न जिलो में सीजीएचएस कार्डधारी कर्मचारी चिकित्सा सुविधा के लिए जयपुर आते हैं। और उन्हें परेशानियों का सामना करना पड़ता हैं यदि यह सुविधा राजस्थान राज्य के सम्भागीय मुख्यालयों पर उपलब्ध हो जाय जिसके लिए सरकार को लिखा जाना चाहिये। श्री पंवार ने सेवा संकल्प में राज्य सरकार व केन्द्र सरकार की अधिसूचनाओं को प्रकाशन करने का भी सुझाव दिया। महासचिव ने आश्वासन दिया कि इसका पूर्ण प्रयास किया जायेगा।

समूह संख्या 21 के सदस्य श्री मदन मोहन शर्मा - श्री शर्मा ने सभा को अवगत कराया कि कुछ संस्थाएँ है जो कल्याणार्थ सेवाओं के लिए बजट पारित करती है। उनसे सम्पर्क कर सहयोग लिया जाना चाहिये। यह भी सुझाव दिया कि स्मारिका की डायरेक्ट्री में सदस्यों के मूल विभाग के नाम का उल्लेख होना चाहिये। जिससे सदस्यों को उस विषय में संबंधित सदस्य की सेवाएँ ली जा सके। यह भी सुझाव दिया कि सदस्य प्रति वर्ष 1 पीपल का पेड़ लगाये। महासचिव सुझावों पर कार्यवाही करने का आश्वासन दिया।

समूह संख्या 10 की सदस्य श्रीमती संतोष चौहान - श्रीमती चौहान ने सदन में पारिवारिक, धार्मिक बातों की चर्चा करते हुए योग एवं ध्यान के विषय में चर्चा करते हुए उसकी उपयोगिता बतायी जिससे शरीर को स्वस्थ एवं निरोग रखा जा सकें।

समूह संख्या 18 के सदस्य श्री गिरीराज कच्छावा - श्री कच्छावा ने सभा को सम्बोधित करते हुए अधिशाषी परिषद के सदस्यों द्वारा किये जाने वाले कार्यकलापों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि बुराई करना बहुत आसान है लेकिन काम करके दिखाना हिम्मत का काम हैं। इसके साथ ही इन्होंने सेवा सकंल्प एवं स्मारिका उन सदस्यों को ही दिये जाने की सिफारिश की जो समूह की मासिक सभाओं में एवं केन्द्र द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में भाग लेते है।

8. अन्य बिन्दु अध्यक्ष महोदय की अनुमति से :-

सभा में वर्ष 2016-17 के लेखों का आंतरिक अंकेक्षण सुश्री संतोष शर्मा द्वारा नि:शुल्क किया। जिसके लिए उन्हें शॉल ओढ़ाकर माल्यार्पण कर सम्मानित किया गया।

9. दिवंगत सदस्यों को श्रद्धांजलि -

महासचिव द्वारा वर्ष 2016-17 के दौरान हमसे बिछड़े दिवंगत सदस्यों का स्मरण करते हुए नमन किया। सभी सदस्यों ने खड़े होकर 2 मिनट का मौनवृत रख कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

सभा का समापन सुनियोजित रूचिकर स्वादिष्ट सहभोज के उपरान्त अध्यक्ष महोदय के धन्यवाद एवं राष्ट्रगान के साथ सम्पन्न किया गया।

* * * *

स्वभाव की पूजा

कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्य देवताः ।
तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया ॥ श्रीमद् 7/20

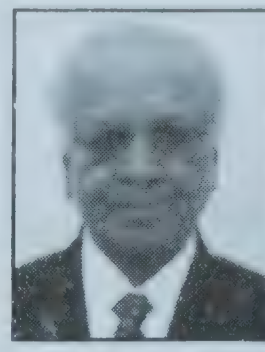
भावार्थ - भौतिक इच्छाओं से विकृत बुद्धिवाला उन देवताओं की शरण में जाता है, जहां अपने स्वभाव की पूजा विधि का विधान है।

निःशुल्क चिकित्सा शिविर

(6 अगस्त 2017, रविवार)



श्री चिरंजीलाल शर्मा



श्री बी.आर. दोहरे

सोसायटी द्वारा दिनांक 06.08.2017 को 9 नं. पेट्रोल पम्प के पास स्थित जांगिड समारोह स्थल पर निःशुल्क चिकित्सा एवं परामर्श शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर के सम्बन्ध में जानकारी देते हुए सोसायटी के चिकित्सा प्रकोष्ठ के प्रभारी श्री चिरंजीलाल शर्मा (समूह 13) ने बताया कि डॉ. रजनीश सक्सेना के प्रयासों से शिविर में कई विशेषज्ञ चिकित्सकों ने अपनी सेवायें दी। डॉ. रजनीश सक्सेना ने रक्त की जांच व हृदय की निःशुल्क जांच 7 तकनीकी सहायकों के माध्यम से करवाई तथा रोगियों को डायबिटीज सम्बन्धी परामर्श दिया। डॉ. पीयूष अरोड़ा द्वारा चेस्ट व अस्थमा, डॉ. अमित गर्ग द्वारा आँखों की, डॉ. ज्ञानप्रकाश द्वारा दांतो की, डॉ. पी.एस. हाड़ा द्वारा सोनोग्राफी व पेट रोगों की, डॉ. मनीष गोयल द्वारा नाक, कान, गले की, डॉ. राकेश दुबे द्वारा सामान्य रोगों की तथा डॉ. मोनिका वर्मा एवं डॉ. अभिनन्दन वर्मा द्वारा एक्यूप्रेशर द्वारा रोगों से बचने के उपाय और व्यायाम बताए।

श्री चिरंजीलाल ने अवगत कराया कि इस शिविर में 9 चिकित्सकों एवं 14 तकनीकी सहायकों द्वारा निःशुल्क सेवाएँ दी गई। कैम्प प्रातः 7 से 1 बजे तक चला जिसमें 365 रोगी लाभान्वित हुए। शिविर में 13 जरूरतमन्दों को निःशुल्क चश्में वितरित किए गए। वातानुकूलित जांगिड समारोह स्थल, प्रीतम टेन्ट हाऊस द्वारा 150 कुर्सी, 27 टेबल, शामियाना, तख्त आदि निःशुल्क उपलब्ध कराए। गौरव स्टूडियो, श्रृंगार चँवरी द्वारा 20 फोटोग्राफ निःशुल्क दिए गए। भार्गव आप्टीकल द्वारा आँखों की जांच निःशुल्क की गई।

शिविर का प्रारम्भ माँ सरस्वती की पूजा दीप प्रज्जवलन से किया गया। शिविर में सोसायटी के अध्यक्ष श्री सुरेश अग्रवाल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री जे.पी. शर्मा, महिला उपाध्यक्ष श्रीमती कुसुम गौतम, सचिव प्रशासन श्री वी.पी. कपूर, सचिव विकास श्री सुनील सक्सेना, सचिव वित श्री बलबीर सिंह गहलोत, कार्यकारिणी सदस्य श्रीमती राधिका अग्रवाल, समूह संयोजक सर्वश्री कैलाश जोशी, सुरेन्द्र विजयवर्गीय, कल्याणराय शर्मा, भगवानदास असमादिया, बी.आर. दोहरे, रतनलाल ऐरन, राजेन्द्र शिवहरे, के.के. गौड़, भंवरलाल गोयल, जी.एस. बेदी, आर.के. प्रसाद, स्काउट श्री डी.एस. थाड़ा का भी पूर्ण सहयोग रहा। चिकित्सा प्रकोष्ठ के प्रभारी श्री चिरंजीलाल शर्मा (समूह 13) ने डॉक्टरों, तकनीकी स्टॉफ, जांगिड बैंक और समारोह स्थल के अध्यक्ष, प्रीतम टेन्ट हाऊस के प्रोपराईटर, गौरव स्टूडियो आदि का आभार व्यक्त किया।

सोसायटी के पदाधिकारियों ने सभी डॉक्टर्स, तकनीकी स्टॉफ, जांगिड बैंक और समारोह स्थल आदि को स्मृति चिन्ह भेंट किए।

****

पूजा में मन्तव्य होता है, सेवा में कोई मन्तव्य नहीं होता।
सेवा शुद्ध प्रेमभाव है, जिसे माता अपने बच्चे के पालन में करती है।
- संत रामसुख दास जी

Governing Council



सुरेश अग्रवाल
अध्यक्ष



जे.पी. शर्मा
वरिष्ठ उपाध्यक्ष



श्रीमती कुसुम गौतम
उपाध्यक्ष



चिरंजीलाल शर्मा
महासचिव



वी.पी. कपूर
सचिव (प्रशासन)



सुनील सक्सेना
सचिव (विकास)



बलबीर सिंह गहलोत
सचिव (वित्त)



श्रीमती राधिका अग्रवाल
महिला सदस्य



श्रीमती मन्जू माहेश्वरी
महिला सदस्य

संरक्षक मण्डल


डॉ. एस. के. सिंह


श्री रमेशचन्द्र अग्रवाल


श्रीमती हेमन्त मिश्रा

समूह संयोजक


नरेन्द्र मंगल
समूह-1


कैलाश जोशी
समूह-2


सुरेन्द्र विजयवर्गीय
समूह-3


जे. एस. राजावत
समूह-4


जे. पी. विजय
समूह-5


चन्द्रनारायण अग्रवाल
समूह-6


भँवरलाल गोयल
समूह-7


पी.डी. अग्रवाल
समूह-8


भगवान दास
समूह-9


कल्याणराय शर्मा
समूह-10


मानकरण अग्रवाल
समूह-11


मदन रवि
समूह-12


बी.आर. दोहरे
समूह-13


श्रीकृष्ण शर्मा
समूह-14


जे.पी. शर्मा
समूह-15

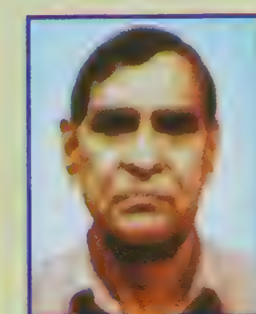

रतनलाल ऐरन
समूह-16


आर.सी. माहेश्वरी
समूह-17


के.के. गौड़
समूह-18


राजेन्द्र शिवहरे
समूह-20


सत्यनारायण सिंह
समूह-21


वीर बहादुर सिंह
समूह-22

आम सभा - 31 मई 2017



दीप प्रज्जवलित करते अधिकारीगण



पंजीकरण कराते हुए सदस्यगण



ईश वन्दना करते अधिशाषी परिषद के सदस्यगण



महिला सदस्य प्रस्तुति देते हुए



संस्था अध्यक्ष श्री सुरेश अग्रवाल सदस्यों को सम्बोधित करते हुए



डॉ. तेजसिंह कच्छावा की पुस्तक का विमोचन करते हुए



हास्यासन का आनंद लेते सदस्यगण



भोजन आनंद लेते सदस्यगण

आम सभा - 31 मई 2017



वित्तीय प्रस्तुति देते श्री बलवीर सिंह गहलोत



महासचिव श्री चिरंजीलाल जानकारी देते हुए



सुश्री सन्तोष शर्मा (आन्तरिक अकेंक्षण)



श्री कश्मीर सिंह अध्यक्ष राज. पेंशनर्स एसोसिएशन अपने विचार रखते हुए



पंजीकरण करते श्री सिसोदिया श्री जादम



सदस्यों को स्कीम समझाते हुए



अल्पाहार वितरण करते हुए



संस्था सदस्य विचार प्रकट करते हुए

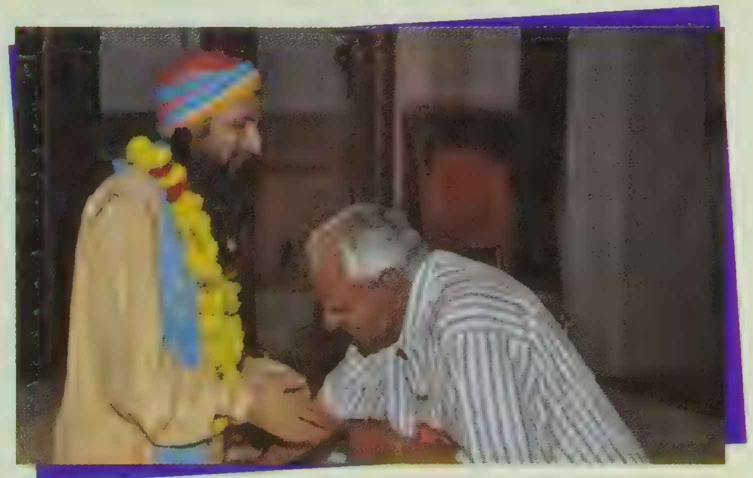
वृद्धजन सम्मान समारोह



दीप प्रज्जवलित करते हुए श्री शिवशंकर हेड़ा व डॉ. कृष्णानंद जी



सदस्यों का पंजीकरण करते हुए अधिकारी



डॉ. कृष्णानंद जी का स्वागत करते हुए
संस्था अध्यक्ष श्री सुरेश अग्रवाल



श्री शिवशंकर हेड़ा का स्वागत करते हुए संस्था
महासचिव श्री चिरंजीलाल शर्मा



ईश वन्दना करते हुए महिला सदस्य



वृद्धजन को सम्मानित करते हुए



वृद्धजन को सम्मानित करते हुए



वृद्धजन को सम्मानित करते हुए

वृद्धजन सम्मान समारोह



जवाहर सभागार में उपस्थित वरिष्ठजन



सभागार में उपस्थित वरिष्ठजन



श्री शिवशंकर जी हेड़ा के साथ सम्मानित वरिष्ठजन



डॉ. कृष्णानंद जी महाराज के साथ सम्मानित वरिष्ठजन



डॉ. कृष्णानंद जी, श्री हेड़ा एवं श्री सुरेश अग्रवाल वरिष्ठजन को सम्मानित करते हुए।



वरिष्ठजनों को सम्मानित करते हुए

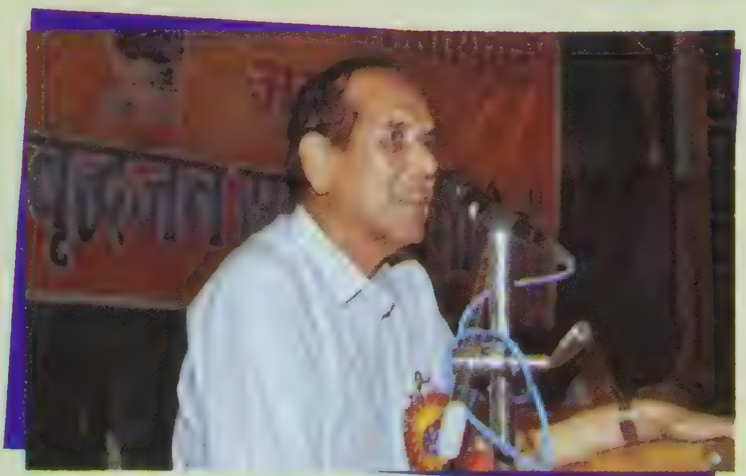


वरिष्ठजनों को सम्मानित करते हुए



वरिष्ठजनों को सम्मानित करते हुए

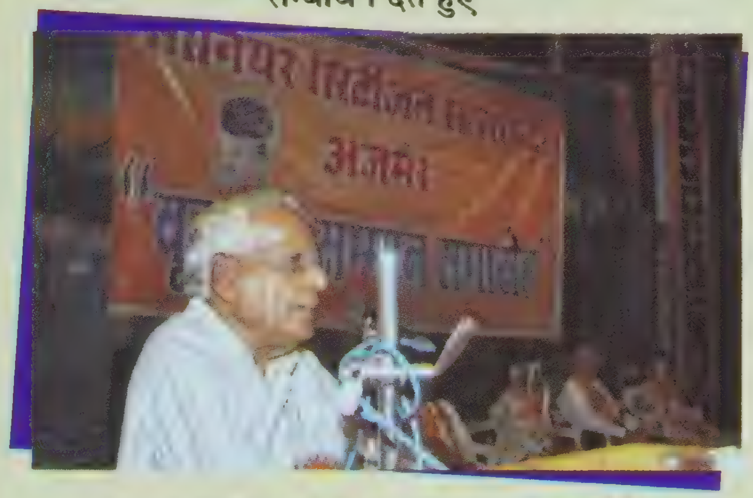
वृद्धजन सम्मान समारोह



श्री शिवशंकर हेड़ा, अध्यक्ष अजमेर विकास प्राधिकरण सम्बोधन देते हुए



डॉ. कृष्णानंद जी महाराज आशीर्वचन देते हुए



संस्था अध्यक्ष श्री सुरेश अग्रवाल सम्बोधन देते हुए



संस्था महासचिव श्री चिरंजीलाल शर्मा स्वागत करते हुए



मंचासीन पदाधिकारीगण



श्री हेड़ा वृद्धजनों को सम्मानित करते हुए



श्री हेड़ा वृद्धजनों को सम्मानित करते हुए



डॉ. कृष्णानंद जी महाराज सम्मानित करते हुए

चिकित्सा एवं परामर्श शिविर



चिकित्सा शिविर के उत्साही सदस्य



डॉ. मनीष गोयल को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए



चिकित्सकों को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए



डॉ. रजनीश सक्सेना को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए



डॉ. प्रियशील हाड़ा को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए



डॉ. रजनीश सक्सेना को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए



चिकित्सकों को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए



डॉ. मोनिका वर्मा को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए



अन्तर्राष्ट्रीय वृद्धजन सम्मान समारोह

(1 अक्टूबर 2017, रविवार)



श्री बलबीर सिंह गहलोत **श्री नरेन्द्र मंगल**

सीनियर सिटीजन सोसायटी 1995 से इसका आयोजन गरिमामय रूप से कर रही है। जवाहर रंगमंच लोहागल रोड, 3 बजे से ही अधिशाषी परिषद एवं समूह संयोजकों, संरक्षकगणों एवं सदस्यों की भारी भीड़ से गुलज़ार हो गया। भारतीय संस्कृति में बुजुर्गों का सम्मान प्राचीन समय से प्रचलित है। इस मौके पर 47 बुजुर्गों का अभिनन्दन कर उन्हें सम्मानित किया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय वृद्धजन सम्मान समारोह बुजुर्गों के अस्तित्व का बोध दिवस है। जिन बुजुर्गों ने परिवार, समाज, संस्था, राज्य व राष्ट्र को कन्धे से कन्धा मिलाकर सहयोग किया। उन्हें ढ़लती सांझ में याद किया जाय तो उनके आत्म सम्मान को नई ऊँचाई मिल जाती है। परिवार को बुजुर्ग की उपस्थिति का नया अहसास होता है। यह मृत्युपूर्व के प्रत्येक क्षण को शाश्वत ऊर्जा से जोड़ता है। ऐसे समारोह का उद्‌देश्य हमारे मनीषियों को रही। जिसे विश्वस्तर पर मिली मान्यता ने इस दिवस को अमर बना दिया है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अजमेर विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री मान् शिव शंकर हेड़ा थे। अध्यक्षता विश्व-मित्र जनसेवा समिति के डॉ. कृष्णानंद देव जी महाराज द्वारा की गयी। इस समारोह में वरिष्ठ नागरिक आयोग के सदस्य श्रीमान् कालीचरण खण्डेलवाल, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के श्रीमान् सुनीलदत्त जैन भी सुशोभित थे। कार्यक्रम माँ सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्वलन के साथ प्रारंभ हुआ जिसमें ईश वन्दना श्रीमती कुसुम गौतम, श्रीमती राधिका अग्रवाल, श्रीमती मन्जू माहेश्वरी एवं श्रीमती बीना रानी ने भाग लिया। अध्यक्ष श्री सुरेश अग्रवाल ने संस्था गतिविधियों की जानकारी दी। महासचिव श्री चिरंजीलाल शर्मा ने अतिथियों का स्वागत माल्यार्पण से विगतवार परिचय के साथ कराया।

समूह संयोजक एवं सदस्यों के द्वारा विशेष सीटिग व्यवस्था की गई। जिसमें 90 वर्ष से अधिक आयु के वयोवृद्धों को तथा आयुक्रम में वरिष्ठ सदस्यों को जिनका सम्मान, प्रशस्ति पत्र, श्री फल, शॉल, माला मंचासीन गणमान्य अतिथि, कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं अधिशाषी परिषद के अध्यक्ष श्री सुरेश अग्रवाल, वरि.उपाध्यक्ष श्री जे.पी. शर्मा, उपाध्यक्ष श्रीमती कुसुम गौतम, महासचिव श्री चिरंजीलाल शर्मा, सचिव प्रशासन श्री वी.पी. कपूर, सचिव विकास श्री सुनील सक्सेना, सचिव वित्त श्री बलवीर सिंह गहलोत, महिला सदस्य श्रीमती राधिका अग्रवाल एवं श्रीमती मन्जू माहेश्वरी द्वारा कराया गया।

वरिष्ठ नागरिको की सम्मान सूची अन्य रिपोर्ट अन्तर्गत है कृपया देखे, साथ ही श्री जे.पी. शर्मा वरि.उपाध्यक्ष के धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात् राष्ट्रगान, अल्पाहार, श्री कृष्ण गोपाल कालेड़ा आयुर्वेद धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा स्वाईन फ्लू व मौसमी बीमारियों की रोकथाम हेतु काढ़े का वितरण की व्यवस्था भी इस अवसर पर की गयी। जिसका सभी ने भरपूर लाभ उठाया।

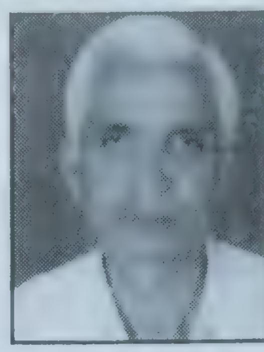
****

जो मन को एकाग्र करता है, उसे योग सिद्धि प्राप्त होती है।
चंच मन को निरन्तर अभ्यास से वश में करना संभव है।
- पातांजलि योग

वृद्धजन सम्मान समारोह के सम्मानित वरिष्ठजन - संक्षिप्त विवरण



श्री जे.पी. शर्मा



श्री पी.एन. शर्मा

संस्था द्वारा सम्मानित 90 वर्ष की आयु से अधिक का संक्षिप्त विवरण-

श्री हरिनारायण शर्मा **जन्म तिथि 10 दिसम्बर 1925**



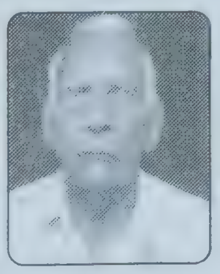
आप अत्यंत मिलनसार, मृदुभाषी व प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी है। संतानो को उच्च शिक्षा दी व संस्कार प्रदान किये। आपके तीन पुत्रों में से एक CPWD से सेवानिवृत है, एक डॉक्टर तथा एक रेल्वे में जन सम्पर्क अधिकारी है। दो पुत्रिया केन्द्रीय विद्यालय में शिक्षिका है।

श्री पी.एन.सैनानी **जन्म तिथि 20 जनवरी 1920**



आपकी समाज सेवा के प्रति हमेशा क्रियाशील रहे है और अपने अनुभवों से समाज व वरिष्ठ जनों को लाभान्वित करते रहे है। आप धार्मिक व सज्जनता के प्रतिमूर्ति स्वरूप है।

श्री बाबूलाल **जन्म तिथि 22 मई 1926**



आप सेवा निवृत्ति के बाद आप विभिन्न सामाजिक सेवाओं से जुड़े रहे हैं। आपके 4 पुत्र व 3 पुत्रियां का भरापूरा परिवार है।

श्रीमती माना देवी गहलोत **जन्म तिथि 10 जून 1926**



आपका जन्म अजमेर के जूनिया में हुआ। आप एक धार्मिक स्वभाव की महिला हैं। आपके 5 पुत्र 5 पुत्रियों से भरापूरा परिवार है।

श्री रघुवीर सिंह शर्मा **जन्म तिथि 10 नवम्बर 1927**



आपने प्रारम्भिक शिक्षा के बाद आप रेल्वे सेवा में कार्यरत हुए व प्रशासनिक मंत्रालय से सेवा निवृत हुए। आपके 6 पुत्र व 1 पुत्री है और सभी को उच्च शिक्षा व संस्कार प्रदान किये और सभी उच्च पदर पर आसीन है। आप इस संस्था के समूह 13 के सक्रिय सदस्य है।

श्रीमती कमला बाई मालू **जन्म तिथि 1 जनवरी 1924**

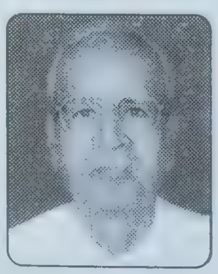


आप इस संस्था के समूह 12 द्वारा प्रायोजित एक धार्मिक स्वभाव की सम्मानित महिला है ।अल्प शिक्षित होने के बाद भी

आपने अपनी संतानो को उच्च शिक्षा व संस्कार प्रदान किये है

संस्था के आयुक्रम में एक प्रतिशत वरिष्ठतम सम्मानित सदस्यों का विवरण

श्री अम्बा लाल **जन्म तिथि 8 फरवरी 1936**



श्री आप संस्था कें समुह संख्या 6 के सम्मानित सदस्य है। रेल्वे की तृतीय श्रेणी के सर्वोच्य पद 10 वर्ष तक गौरवपूर्ण व यशस्वी रूप से सेवारत रहे। आपके तीन पुत्र, एक पौत्र तथा पांच पौत्रियां है।

श्रीमती सज्जन कुमारी पारख जन्म तिथि 13 अक्टूबर 1936



श्रीमती सज्जन कुमारी धर्मपत्नि जसवंत सिह पारख एक मिलनसार व धर्मभीरू स्वभाव की महिला है। आपके एक पुत्र है जिनका निजी व्यवसाय है तथा 4 पुत्रिया है आपके एक पुत्र है। आप इस संस्था की सक्रिय सदस्य है।

श्रीमती जेसी सेम्यूल जन्म तिथि 16 जुलाई 1932



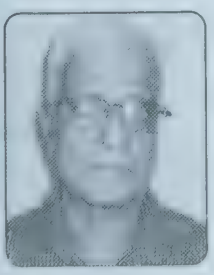
आपका जन्म राजस्थान के बीकानेर जिले में हुआ। एस.टी.सी. शिक्षा के पश्चात आपने शिक्षिका के रूप में अपनी सेवायें दी। आपके 6 पुत्र 2 पुत्रियों से भरापुरा परिवार है। आप मृदुभाषी व सौम्य स्वाभाव की महिला है आप इस संस्था के समूह 12 की सम्माननीय सदस्या है।

श्री वासदेव शिवनानी जन्म तिथि 14 अप्रेल 1937



आपका जन्म सिंध पाकिस्तान के नवाबशाह में हुआ। 11 वर्ष की उम्र में विभाजन के फलस्वरूप विस्थापित के रूप मे भारत आये। कड़े संघर्ष के बाद अजमेर में स्थापित हुए और नगर निगम की राजकीय सेवा में कनिष्ठ लिपिक के पद से सेवा निवृत हुए। आपके 2 पुत्रियां है। आप इस संस्था के समूह 20 की सक्रिय सदस्य है।

श्री जगदीश प्रसाद विजय जन्म तिथि 3 जनवरी 1937



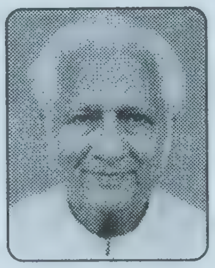
1958 में रेल्वे मे लिपिक के रूप में कार्य प्रारम्भ करने के पश्चात अपनी योग्यत, कठिन परिश्रम व कर्त्तव्य निष्ठा के फलस्वरूप क्रमशः मुख्य कल्याण निरीक्षक से वरिष्ठ कार्मिक अधिकारी के रूप मे प्रधान कार्यालय मुम्बई से 1995 में सेवा निवृत हुए। आपके 2 पुत्र व 1 पुत्री है और सभी उच्च शिक्षित है आपकी पत्नी श्रीमती मनोहर विजय भी राजपत्रित अधिकारी पद से 1996 में सेवा निवृत हुई है।

श्री भंवरलाल शर्मा जन्म तिथि 1जुलाई 1936



आपका जन्म अजमेर जिले के रामसर में हुआ। आपने अनुस्नातक तथा बी.एड. की शिक्षा प्राप्त कर शिक्षक के रूप में अनके विद्यालयों मे अपनी सेवाऐं दी। प्रशासनिक पदो पर रहकर अध्यापकों का मार्गदर्शन करते रहें। आप राजकीय टीकमचंद उच्च माध्यमिक विद्यालय अजमेर से उप प्रधानाचार्य पद से सेवा निवृत हुए। आप इस संस्था के समूह 7 के सक्रिय सदस्य है।

श्री कैलाशचन्द्र चौधरी जैन जन्म तिथि 1अगस्त 1937



आपका जन्म राजस्थान के भीलवाड़ा में हुआ। आपने एम.कॉम तक शिक्षा प्राप्त की। आप मित्र संगम दिल्ली के स्थापक सदस्य रहे है और संस्था के रजत जयंति समारोह मे पूर्व राष्ट्रपति महामना श्री जैल सिंह के हाथों मित्र रत्न अवार्ड से सम्मानित हुए। आप इस संस्था के समूह 1 के सक्रिय सदस्य है।

श्री रामस्वरुप अग्रवाल जन्म तिथि 14 अगस्त 1937



आप सहकारी विभाग राजस्थान के उप रजिस्ट्रार पद से सेवा निवृति के पश्चात आप विभिन्न सामाजिक संघठनों से जुड़े रहे है। अग्रवाल समाज अजमेर के महासचिव, उपाध्यक्ष व अध्यक्ष पद पर कार्यरत रहे और वर्तमान में आजीवन

संरक्षक है। अपना घर आश्रम लोहागल रोड अजमेर के उपाध्यक्ष पद पर कार्यरत है आप इस संस्था के समुह 1 के सक्रिय सदस्य है।

श्री भंवरलाल तंवर **जन्म तिथि 16 मई 1937**



आपका जन्म अजमेर में स्व. श्री चौथूराम जी के यहां हुआ। आपने प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद रेल्वे मे चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी के रूप में अपनी सेवा दी। चतुर्थ श्रेणी से तृतीय श्रेणी में 13 वर्ष की कठिन कानूनी लड़ाई के बाद, पदौन्नत हुए और चीफ क्लर्क के पद से सेवा निवृत हुए। आप इस संस्था के समूह 22 के सक्रिय सदस्य है।

श्री रामेश्वरलाल तत्ववेदी **जन्म तिथि 13 सितम्बर 1935**



आप जिला पुलिस कार्यालय अजमेर में सन् 1952 में सहायक कर्मचारी के पद से सेवा प्रारम्भ की। कठिन परिश्रम व कर्त्तव्य निष्ठा के साथ विभिन्न पदों पर रहते हुए सितम्बर 93 मे आयुर्वेद विभाग के लेखाकार पद से 41 वर्षो का सेवा काल पूर्ण कर सेवा निवृत हुए।

आपके 2 पुत्र है दोनों ही मार्बल व्यवसाय है। आपका एक पौत्र डॉक्टर और वर्तमान में आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में ब्लड कैंसर पर अनुसंधानरत है।

श्रीमती प्रेम कांता सिंघल **जन्म तिथि 18 दिसम्बर 1936**



आपका जन्म मध्य प्रदेश के नीमच में हुआ। आप एक धार्मिक स्वभाव की महिला हैं। आपकी खुशियों का मंत्र है ''स्वस्थ मन-सुंदर जीवन । आपके तीन पुत्र व चार पुत्रियों का भरापूरा परिवार है।

श्री राधाकिशन टाक **जन्म तिथि 16 जुलाई 1937**



आपका जन्म अजमेर में स्व. श्री भूरा जी टाक के यहां हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा के बाद रेल्वे से केरिज वर्कशॉप के मास्टर क्राफ्टमेन के पद से 1995 में सेवानिवृत हुए। सेवानिवृत्ति के बाद आप सामाजिक कार्यों में रत रहे हैं। वर्तमान में आप गढ़ी मालियान मुक्ति धाम के कोषाध्यक्ष पद पर कार्यकर रहे हैं। आप इस संसथा समूह 13 के सक्रिय सदस्य हैं।

श्री सत्यप्रकाश ओझा **जन्म तिथि 15 जनवरी 1937**



आप सेवा निवृत्त रेल कर्मचारी हैं। आप एक प्रतिभावान फोटोग्राफर हैं। फोटोग्राफी प्रतियोगिता (जापान) में 1995 में सम्मानित हुए। जयपुर में फोटोग्राफी प्रतियोगिता में सहकारिता मंत्री द्वारा भी सम्मानित हुए। आपका पुत्र भी कुशल फोटोग्राफर है। आप इस संस्था के समूह 9 के सम्मानित सक्रिय सदस्य हैं।

श्री गिरधारी लाल **जन्म तिथि 15 जुलाई 1937**



आप स्नातक शिक्षा के पश्चात राजस्थान की राजकीय सेवा में कार्यरत होकर राज्य लेखा सेवा से सहायक लेखाधिकारी के पद से सन 1995 में सेवानिवृत्त हुए। तत्पश्चात समाज सेवा में लगकर 18 वर्ष तक सचिव पद पर कार्यरत रहे। आप इस संस्था के समूह 18 के सम्माननीय सदस्य हैं।

श्री जगन्नाथ वेदवाल **जन्म तिथि 15 जुलाई 1937**



आप इंटरमीडियेट शिक्षा के बाद रेल्वे सेवा में कार्यरत हो कर 1995 में वरिष्ठ वाणिज्य निरीक्षक अजमेर के पद से सेवा निवृत्त हुए। आप इस संस्था के

समूह 13 के सम्मानित सदस्य हैं। आप सामाजिक कार्य करते हैं तथा भजनगंज शिवमंदिर के पूर्णकालीन पंडित का कार्य कर रहे हैं ।

श्रीमती कांता सागर **जन्म तिथि 7 फरवरी 1937**



आपका जन्म राजस्थान के ऐतिहासिक शहर अजमेर में हुआ। आपने हायर सेकडंरी तक शिक्षा प्राप्त की है। आप कुशल गृहिणी, मृदुभाषी व सामाजिक सेवा में रूचिकर महिला हें। आप इस संस्था के समूह 14 की सम्मानित सदस्या हैं।

श्री ओमप्रकाश पाठक **जन्म तिथि 1 दिसम्बर 1933**



आप इंटरमिडियेट शिक्षा के बाद आप रेल्वे सेवा में नियुक्त होकर उल्लेखनीय प्रगति करते हुए स्टेशन मासटर के बाद ट्रेफिक इंस्पेक्टर के पद से सेवानिवृत्त हुए। सेवाकाल में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए अनेकों बार पुरूस्कृत हुए।

श्रीमती शांती पाठक **जन्म तिथि 10 जुलाई 1935**



आपका जन्म उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध शहर आगरा में हुआ। आप कुशल गृहिणी, मृदुभाषी व सामाजिक सेवा में रूचिकर महिला हें। आप इस संस्था के समूह 14 की सम्मानित सदस्या हैं।

श्री सत्यनारायण सिंघल **जन्म तिथि 9 जुलाई 1937**



आप प्रारम्भिक शिक्षा के बाद आप रेल सेवा में नियुक्त हो कर विभिन्न पदों पर पदोन्नत होकर 1995 में सेवा निवृत्त हुए। आप आध्यात्मिक, धार्मिक व सामाजिक सेवाओं में विशेष रूचि रखते हैं। आप इस संस्था के समूह 6 के सम्मानित सदस्य हैं।

श्री जे.के तुलस्यानी **जन्म तिथि 8 मार्च 1937**



आप स्नातक तक शिक्षा प्राप्त कर अध्यापन सेवा में लगकर अध्यापक पद से सेवानिवृत्त हुए। तत्पश्चात सामाजिक संगठनों में सक्रिय रहे हैं। आप बहाई आध्यात्मिक सभा अजमेर के सचिव व सिंधी बोली विकास समिति अजमेर के अध्यक्ष रहै हैं। आप इस संस्था के समूह 6 के सम्मानित सदस्य हैं।

श्री नरेन्द्र देव शर्मा **जन्म तिथि 1 जुलाई 1937**



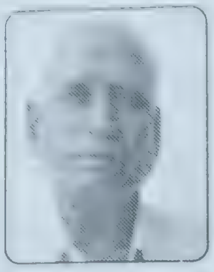
आप इंटरमिडियेट शिक्षा के बाद न्याय विभाग के पश्चात राज्य सचिवालय जयपुर से 1995 में सेवानिवृत्त हुए। तुलसी जयंती समारोह समिति अजमेर तथा बाल फुलवारी आदर्शनगर के संस्थापक सदस्य रहे हैं। राम मारूति मानस मंडल के पूर्व अध्यक्ष तथा आदर्श नगर आर्य सामाज के पूर्व प्रधान रहे हैं। आप इस संस्था के समूह 12 के सम्मानित सदस्य हैं।

श्री के.सी. बूटानी **जन्म तिथि 31 मई 1937**



आप बी.एस. सी. तथा सिविल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा प्राप्त करके अपनी शासकीय सेवा प्रारम्भ करी। आप चीफ एस्टीमेटर के पद से सेवा निवृत्त होने के बाद सामाजिक कार्यो से जुड़े रहे। आप इस संस्था समूह 11 के सम्मानित सदस्य हैं।

श्री जगन्नाथ गोरा **जन्म तिथि 10 अक्टूबर 1937**



आप समाजशास्त्र में अनुस्नातक की सनद प्राप्त कर आप रेल्वे सेवा में नियुक्त हुए। अपनी मेहनत और कर्तव्यनिष्ठा से रेल्वे चिकित्सा विभाग में डिस्ट्रिक्ट एक्सटेंशन एज्यूकेटर के पद पर पहुँच कर सेवानिवृत्त हुए। आप इस संस्था के समूह 11 के सम्माननीय सदस्य हैं।

श्री सुगनो लाल चंदानी **जन्म तिथि 28 नवम्बर 1937**



आप राज्य सरकार की सेवा कनिष्ठ लिपिक के पद से प्रारम्भ करी और कार्यालय सहायक के पद से सन् 1995 में सेवानिवृत्त हुए। 1985 में 20 सूत्रीय कार्यक्रम में उत्कृष्ट कार्य के लिये ततकालीन जिलाधीश महोदय द्वारा आपको सम्मानित किया गया। 1989 के गणतंत्र दिवस पर उर्स मेले व पुष्कर मेले में प्रशंसनीय कार्य के लिये जिला प्रशासन ने प्रशस्ति पत्र दिया। 1993-94 में राजस्व विभाग केकड़ी उपखंड स्तर पर कार्यालय कार्यक्षेत्र में विशिष्ट सेवा के लिये सम्मानित हुए।

श्री सतीशचन्द्र श्रीवास्तव **जन्म तिथि 12 नवम्बर 1937**



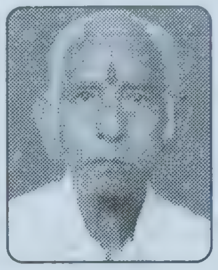
आप राजस्थान राज्य शिक्षा विभाग के वरिष्ठ शिक्षक के पद से सन् 1995 में सेवा निवृत्त हुए। सामाजिक व धार्मिक कार्यों में रूचि के साथ आप विभिन्न सामाजिक संस्थाओं से जुड़े रहे हैं। आप संस्था के समूह 14 के सम्मानित सदस्य हैं।

श्री बिजेश्वर प्रसाद मीतल **जन्म तिथि 23 अक्टूबर 1937**



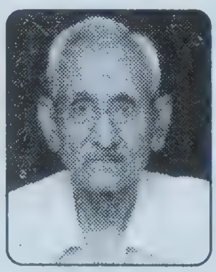
आप राजकीय निर्माण विभाग में नियुक्त हुए। आपने भूटान में सीमांत सड़कों व राजस्थान के बांधों के निर्माण कार्य में अपनी महत्वपूर्ण कार्यदक्षिता दर्शाई। आप सिंचाई विभाग के अधिशाषी अभियंता के पद से सन 1995 में सेवानिवृत्त हुए। आप इस संस्था के समूह 12 के सम्माननीय सदस्य हैं।

श्री वेदप्रकाश जोशी **जन्म तिथि 21 जुलाई 1937**



आपने एम. ए., बी.एड. की शिक्षा प्राप्त करी और राज्य विभाग में नियुक्त हुए। अपनी लगन और मेहनत से क्रमशः स्कूल व्याखयाता, सेकण्ड्री प्रधानाध्यापक तथा प्रिंसीपल के पद पर पदोन्नत होते हुए सन 1995 में सेवा निवृत्त हुए। आप इस संस्था के समूह 6 के सम्माननीय सदस्य हैं।

श्री पुखराज पुरोहित **जन्म तिथि 1 फरवरी 1937**



आपने प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद रेल डाक सेवा में जुड़कर सन् 1995 में सेवानिवृत्त हुए। संयुक्त परिवार में संघर्षपूर्ण जीवन के साथ संतानों को शिक्षित व स्वावलम्बी बनाया। आप आज भी जीवन में क्रियाशील है। आप इस संस्था के समूह 17 के सम्माननीय सदस्य हैं।

श्रीमती सुगनी देवी पुरोहित **जन्म तिथि 1 जनवरी 1938**



आप मृदुभाषी व धार्मिक स्वभाव की महिला हैं। संयुक्त परिवार की जिम्मेदारी उठाते हुए सभी संतानों को उच्च संस्कार दिये। आप और आपके पति श्री

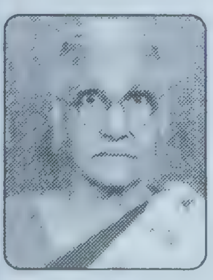
पुखराज पुरोहित इस संस्था के समूह 17 के सम्माननीय सदस्य हैं।

श्री चन्द्रसेन गहलोत **जन्म तिथि 10 जून 1937**



आपने प्रारम्भिक शिक्षा के बाद सन् 1957 में रेल्वे सेवा में नियुक्त हुए। 1969 में अकाउन्ट्स स्टाफ एसोसियेशन के सचिव रहे। कर्मचारियों के हितों के लिये सदैव संघर्षरत रहे। जैक्सन कोपरेटिव बैंक के निदेशक भी रहे हैं। सेवा निवृत्ति के बाद आप सामाजिक संस्थाओं से जुड़ गये। आप इस संस्था के समूह 17 के सम्माननीय सदस्य हैं।

श्रीमती ऊषा भटनागर **जन्म तिथि 5 अगस्त 1937**



आपने हाईस्कूल शिक्षा के बाद नर्सिंग का कोर्स पूरा कर राज्य के चिकित्सा व स्वासथ्य विभाग में कार्य किया। आपके एक मात्र पुत्र चिकित्सा विभाग जयपुर में सहायक प्रशासनिक अधिकारी के पद पर कार्यरत हैं। आप इस संस्था के समूह 12 की सम्माननीय सदस्या हैं।

श्रीमती प्रकाश भल्ला **जन्म तिथि 10 मार्च 1937**



आपने दसवीं कक्षा और प्रभाकर परीक्षा के बाद शिक्षिका के पद पर कार्य करते हुए सन् 1935 में सेवा निवृत्ति हुई। समाज सेवा करते हुए आज भी बच्चों को निःशुल्क शिक्षा दे रहीं हैं। जिसके लिये आप धन्यवाद की पात्र हैं। आप इस संस्था के समूह 5 की सम्माननीय सदस्या हैं।

श्री प्रियतोष दत्ता **जन्म तिथि 1 जनवरी 1937**



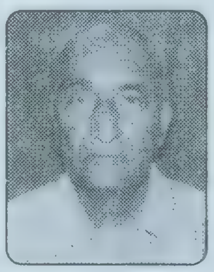
आप प्रशंसनीय व बेदाग राजकीय सेवा से सन् 1995 में सेवा निवृत्त हो कर सामाजिक कार्यों में संलग्न रहै। आप इस संस्था के समूह 18 के सम्माननीय सदस्य हैं।

श्री अमृतपाल चोपड़ा **जन्म तिथि 2 जनवरी 1937**



आपने इंटर मीडियेट तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद रेल्वे सेवा में नियुक्त हुए। प्रशंसनीय व बेदाग सेवा के बाद सन् 1995 में सेवा निवृत्त हो कर सामाजिक संस्थाओं से जुड़े रहे। आप इस संस्था के समूह 1 के सम्माननीय सक्रिय सदस्य हैं।

श्री योगेश्वर दयाल शर्मा **जन्म तिथि 1 जनवरी 19: 7**



आपने एम. ए. , बी.एड. तथा एम. एड. की शिक्षा प्राप्त करी और राज्य के शिक्षा विभाग में अपनी सेवाये देकर आप 1995 में सेवा निवृत्त हुए। आप इस संस्था के समूह 2 के सम्मानित सदस्य हैं।

श्री ब्रह्म स्वरुप अग्रवाल **जन्म तिथि 7 नवम्बर 1937**



आपने प्राथमिक शिक्षा के बाद आप ठेकेदारी व्यवसाय से जुड़ गये। आपकी धार्मिक व सामाजिक कार्यों में विशेष अभिरूचि हे। आप इस संस्था के समूह 2 के सम्मानित सदस्य हैं।

श्री मदन मोहन मेहरा **जन्म तिथि 31 दिसम्बर 1937**



आप बैंकिग सेवा में प्रशंसनीय व बैदाग सेवा के बाद आप बैंक अधिकारी के पद से सेवानिवृत्त हुए। आपकी धार्मिक व सामाजिक कार्यों में विशेष रूचि रही है। आप इस संस्था के समूह 8 के सम्मानित सदस्य हैं।

श्री गोविन्द लाल गोयल **जन्म तिथि 21 जनवरी 1937**



आपने एम.कॉम., सी.ए., एल एल बी शिक्षा प्राप्त करी। सन् 1955 में बैंक ऑफ बडौदा के केन्द्रीय कार्यालय जयपुर में सेवा प्रारम्भ करी। 37 वर्ष की यशस्वी सेवा के पश्चात बैंक ऑफ बड़ौदा के वरिष्ठ प्रबंधक पद से 1997 में सेवा निवृत हुए। आप इस संस्था के समूह 16 के सम्मानित सदस्य है।

श्री हेम प्रकाश कोहली **जन्म तिथि 8 अक्टूबर 1937**



आपने विज्ञान शाखा मे स्नातक की शिक्षा प्राप्त करी। रेल्वे मे सेवारत होकर डीजल शेड आबूरोड़ के अधिकारी पद से सेवा निवृत हुए। आप इस संस्था के समुह 15 के सक्रिय सदस्य है।

श्री विद्याप्रकाश झा **जन्म तिथि 2 अगस्त 1937**



आपने प्रारम्भिक शिक्षा के बाद रेल्वे मे सेवारत हुए। कठिन परिश्रम व सेवानिष्ठा के साथ सी.टी.टी.आई., अधिक्षक रेल-तार विभाग अजमेर से सेवा निवृत हुए। आप इस संस्था के समूह 15 के सम्मानित सदस्य है।

श्री रक्षपाल सिंह **जन्म तिथि 5 जुलाई 1937**



आपने इंटर तक शिक्षा प्राप्त कर राज्य के खान विभाग से निष्कलंक सेवा के बाद 1995 में सेवा निवृत हो कर सामाजिक कार्यो में प्रवृत हो गये। आप इस संस्था के समूह 4 के सम्मानित सदस्य है।

श्री गोविन्द लाल दाधीच **जन्म तिथि 31 अगस्त 1936**



आपने मेट्रिक तथा शिक्षा प्राप्त करके ओरियन्टल कम्पनी मे अपने सेवाये दी। 40 वर्षो के निष्कंलक सेवा काल के बाद आप सेवा निवृत हुए। आप इस संस्था के समूह 4 के सम्मानित सदस्य है।

श्रीमती विनोद भटनागर **जन्म तिथि 22 नवम्बर 1937**



आपकी शिक्षा प्राप्ति मे विशेष अभिरूचि रही है। आप ने एम. ए., एम.एड., की शिक्षा प्राप्त की है और व्याख्याता (हिंदी) के पद से सेवानिवृत्त हुई है। आप इस संस्था के समूह 8 की सम्मानित सदस्या है।

श्री प्रकाश नारायण माथुर **जन्म तिथि 10 सितम्बर 1937**



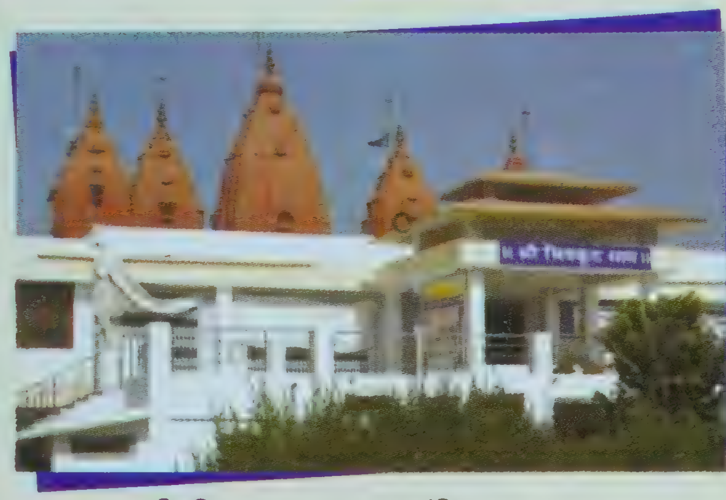
आपने हाई स्कूल शिक्षा के बाद आपने रेलवे केरिज वर्क शॉप में अपनी सेवाएं दी। आप रेलवे स्काऊट में आप कब मास्टर रहे है। आप इस संस्था के समूह 6 के सम्मानित सदस्य है।

श्री कंवर मंजर **जन्म तिथि 28 अगस्त 1937**



आप की शिक्षा व खेलकूद में विशेष अभिरूचि है। आप एक स्कूल के संचालक है। खेलो व नृत्य मे भाग लेते रहते है । आप इस संस्था के समूह 15 के सम्मानित सदस्य है।

शीतकालीन भ्रमण एवं दीपावली स्नेह मिलन समारोह



श्री चित्रकूट धाम मंदिर, पुष्कर



दीप प्रज्जवलित करते संस्था अध्यक्ष, महासचिव, वरि. उपाध्यक्ष, वित्त सचिव एवं महिला सदस्य



संस्था अध्यक्ष को जन्मदिन की शुभकामना देते हुए



ईश वन्दना करते हुए सदस्यगण



समारोह का आनन्द लेते सदस्यगण



हास्यासन का आनंद लेते हुए सदस्यगण



केरम प्रतियोगिता का आनंद लेते सदस्यगण



कार्यक्रम का आनंद लेते सदस्यगण

शीतकालीन भ्रमण एवं दीपावली स्नेह मिलन समारोह



प्रस्तुति देते महिला सदस्य



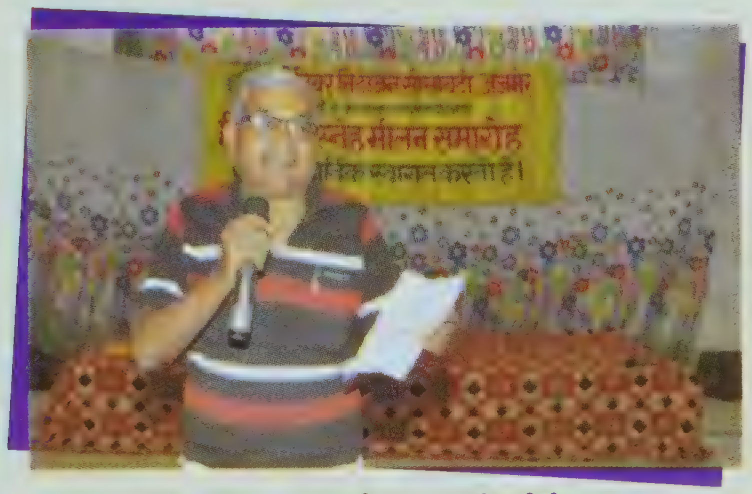
प्रश्नोत्तरी पर ध्यान देते सदस्यगण



श्री के.के गौड़ व श्रीमती प्रेरणा गौड़



श्री जयदेव सांखला प्रस्तुति देते हुए



श्री मुकेश भार्गव प्रस्तुति देते हुए



श्री सुरेश अग्रवाल संस्था अध्यक्ष



भोजन का आनंद लेते सदस्यगण



भोजन का आनंद लेते सदस्यगण

आम सभा - 30 जनवरी 2018



संस्था अध्यक्ष श्री सुरेश अग्रवाल व श्री वी.पी. कपूर
मां सरस्वती को माल्यार्पण करते हुए



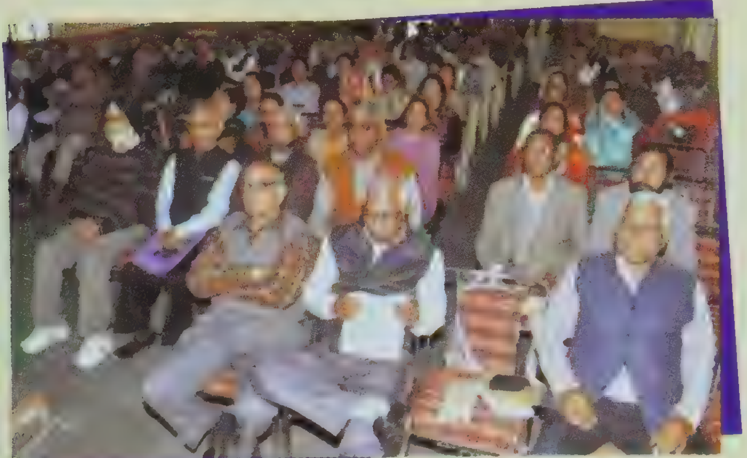
पंजीकरण कराते सदस्यगण



स्पोन्सरकर्त्ता श्री एकांश मौर्य को सम्मानित करते
संस्था अध्यक्ष व महासचिव



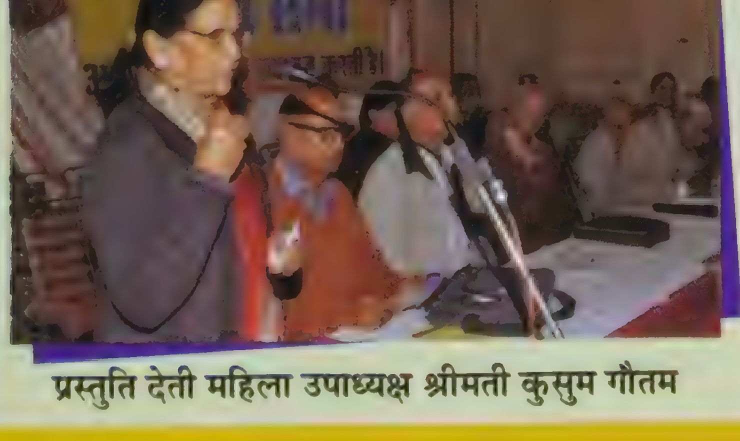
कुमारी चारू भोजवानी को सम्मानित करती
महिला उपाध्यक्ष श्रीमती कुसुम गौतम



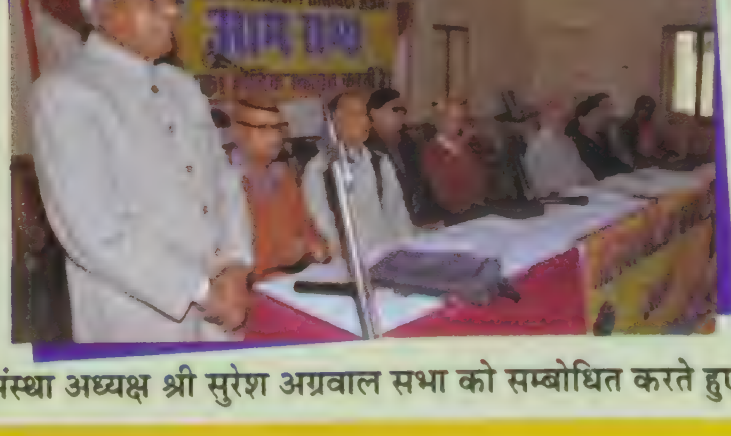
सभा की कार्यवाही सुनते सदस्यगण



सभा की कार्यवाही सुनते सदस्यगण

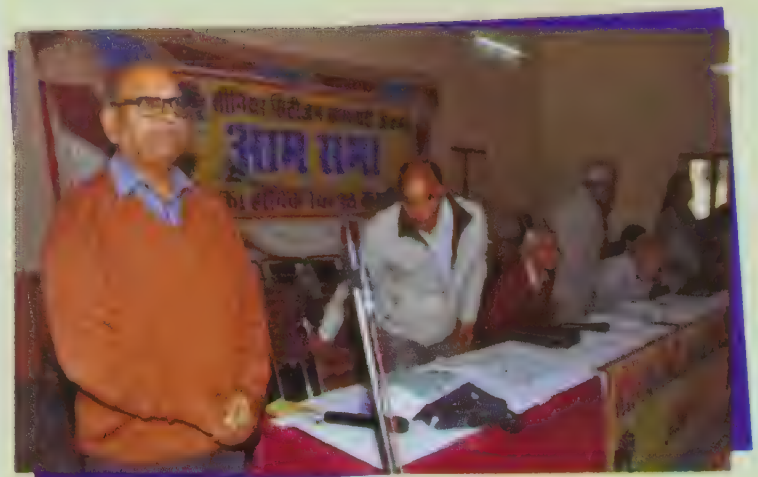


प्रस्तुति देती महिला उपाध्यक्ष श्रीमती कुसुम गौतम



संस्था अध्यक्ष श्री सुरेश अग्रवाल सभा को सम्बोधित करते हुए

आम सभा - 30 जनवरी 2018



महासचिव श्री चिरंजीलाल शर्मा संस्था की जानकारी देते हुए



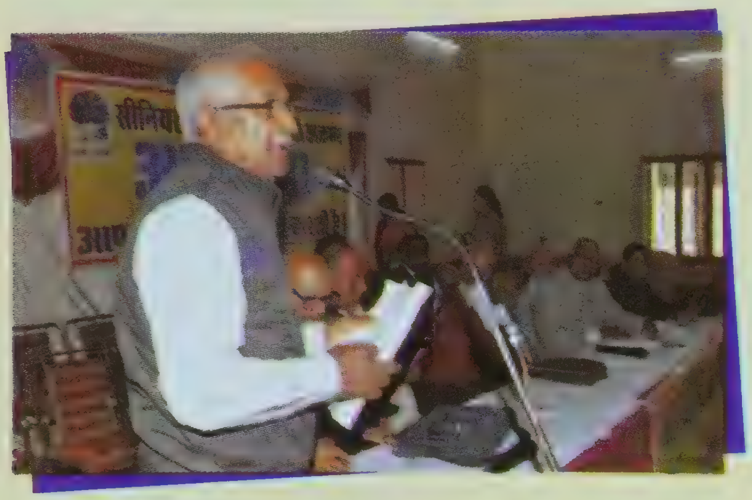
श्री ओ.पी. पीपल विचार व्यक्त करते हुए



श्री मुकेश भार्गव विचार व्यक्त करते हुए



श्री रतनलाल ऐरन विचार व्यक्त करते हुए



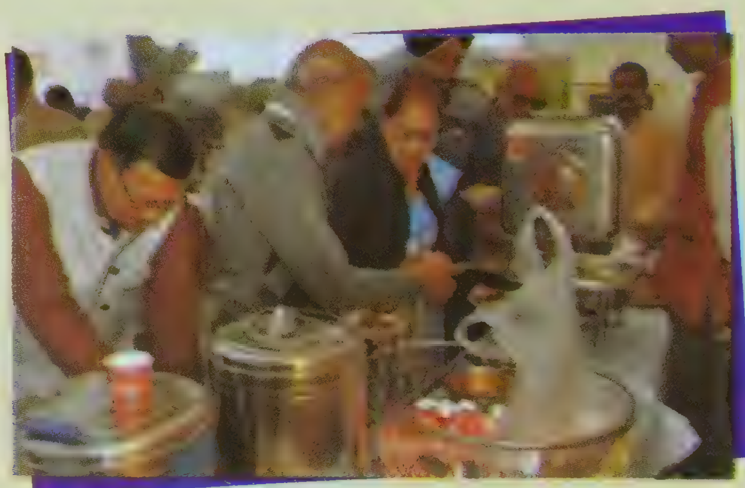
श्री जे.एस. राजावत विचार व्यक्त करते हुए



श्री के. जी. मोदानी विचार व्यक्त करते हुए



श्री सुन्दर लखवानी विचार व्यक्त करते हुए



अल्पाहार वितरण करते सदस्यगण

होली स्नेह मिलन समारोह



दीप प्रज्जवलित करते हुए संस्था अध्यक्ष



ईश वन्दना करते हुए सदस्यगण



हास्यासन कराते श्री लज्जाशंकर गोयल



संस्था अध्यक्ष श्री सुरेश अग्रवाल उद्बोधन देते हुए



होली की प्रस्तुति देते हुए



प्रस्तुति का आनंद लेते सदस्यगण

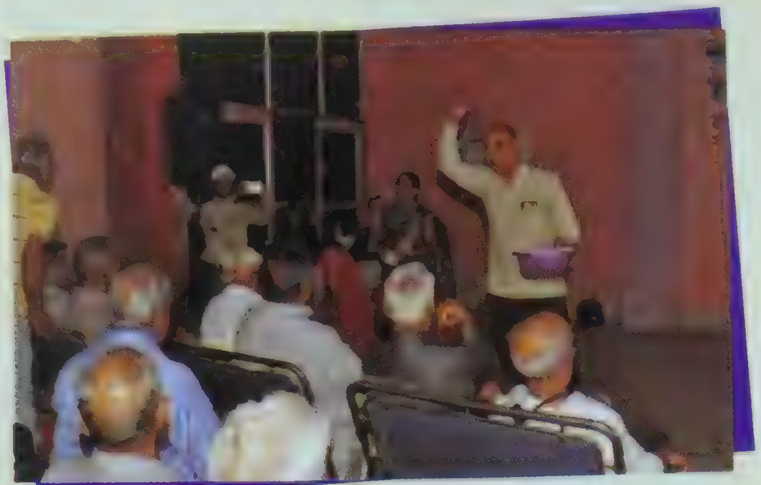


श्रीमती प्रेरणा गौड़ संचालन करते हुए



भोजन का आनन्द लेते सदस्यगण

होली स्नेह मिलन समारोह



पुष्पवर्षा करते श्री बलवीर सिंह गहलोत



संस्था को उत्साहित करते हुए संस्था अध्यक्ष



श्री जयदेव सांखला को श्री शर्मा संगत देते हुए



हाउजी खिलाते महिला सदस्यगण



श्री जे. पी. शर्मा वरि. उपाध्यक्ष प्रस्तुति देते हुए



श्री कँवर मंजर प्रस्तुति देते हुए



श्री अशोक शर्मा व श्रीमती प्रीति जोशी प्रस्तुति देते हुए



श्रीमती मनोहर विजय को श्री शर्मा संगत देते हुए

विशाल नि:शुल्क चिकित्सा शिविर वरिष्ठ नागरिकों के जज्बे को सलाम

खुद लाठी के सहारे चलकर जवान मरीजों को डॉक्टर के चेंबर तक छोडने का कार्य कर रहे वरिष्ठ नागरिकों को देखकर आँखें नम हो गयी। ऐसा अनुठा ''नि:शुल्क चिकित्सा शिविर'' पहले कभी नहीं देखने में आया।

रविवार 18 मार्च 2018 को प्रात: 9.30 बजे से दोपहर 2 बजे तक ऑल सेंट्स स्कूल, धोलाभाटा में सीनियर सिटीजन सोसायटी, धोलाभाटा समूह -18 द्वारा जेएलएन मेडिकल कॉलेज एवं राजकीय सेटेलाईट अस्पताल के सहयोग से विशाल नि:शुल्क चिकित्सा शिविर सम्पन्न हुआ।

उसमें 583 मरीजों का नि:शुल्क उपचार किया गया। नि:शुल्क जांच जैसे - ब्ल्ड शुगर, फास्टिंग, पीपी, रेन्डम, ईसीजी आदि। साथ ही सभी मरीजों को नि:शुल्क दवाएँ भी वितरित की गयी।

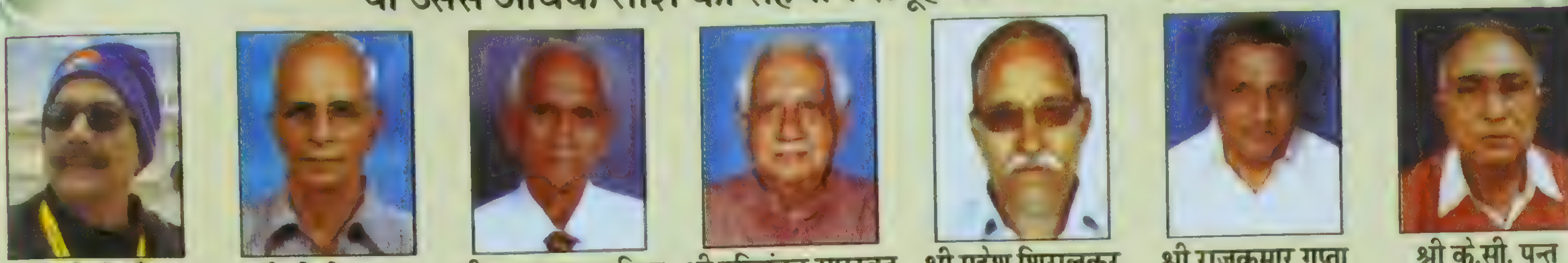
जिन मरीजों को और सघन जांच व ऑपरेशन की आवश्यकता थी, उन्हें अलग से पर्ची बनाकर अगले दिन सेटेलाईट अस्पताल एवं जेएलएन अस्पताल जाकर जांचें करवा कर मिलने को कहा गया।

शिविर में सेटेलाईट अस्पताल से डॉ राकेश पोरवाल, डॉ प्रदीप माहेश्वरी (नेत्र), डॉ रंजन रॉय (फिजीशियन), डॉ बरखा गुर्जर (स्त्री रोग), डॉ सी.पी. चौहान (दंत रोग), डॉ. मनीष वर्मा (शिशु रोग) तथा जेएलएन मेडिकल कॉलेज से डॉ राजेश (हृदय रोग), डॉ. विवेक बाबू (अस्थि), डॉ सुदीप डांगावास (ईएनटी) व डॉ रामप्रसाद (सर्जरी) तथा राजकीय चिकित्सालय से डॉ नमिता चौहान (शिशु दंत रोग) विशेषज्ञों ने पूरे समय तक नि:शुल्क सेवाएं प्रदान की।



विशाल नि:शुल्क चिकित्सा शिविर की अभूतपूर्व सफलता में निम्नलिखित सदस्यों का आर्थिक योगदान रहा।

(जगह के अभाव के कारण केवल उन्हीं की फोटो प्रेषित की जा रही है जिन्होंने रू. 500 या उससे अधिक राशि का सहयोग समूह 18 को किया है।)



श्री के.के. गौड 1100/-
श्री वी.पी. कपूर 1000/-
श्री डालचन्द जनुठिया 1000/-
श्री हरिशंकर सारस्वत 1000/-
श्री महेश शिरालकर 500/-
श्री राजकुमार गुप्ता 500/-
श्री के.सी. पन्त 500/-



श्री हरिशरण कम्बोज 500/-
श्री तेजसिंह कच्छावा 500/-
श्री सुखवन्त सिंह 500/-
श्री विनय भारद्वाज 500/-
श्री नारायण लाल 500/-
श्री योगेन्द्र गुप्ता 500/-
श्री जयन्त कुमार बुन्देल 500/-



श्रीमति प्रेरणा गौड़ 1100/-
श्रीमति वीना रामसिघानी 1000/-
श्रीमति पूर्णशशि सरना 1000/-
श्रीमति मिथिलेश चौहान 1000/-
श्रीमति श्वेता गौड़ 1000/-
श्रीमति मधु कपूर 500/-
श्रीमति चेतन कौर 500/-



श्रीमति सुरेन्द्र सोहल 500/-
श्रीमति भारती सुजनानी 500/-
श्रीमति वीना जालोटा 500/-
श्रीमति संगीता डोडानी 500/-
श्रीमति कृष्णा गोस्वामी 500/-
श्रीमति सुनिता आर्य 500/-
श्रीमति प्रभा शर्मा 500/-



श्रीमति स्नेहलता शर्मा 500/-
सुश्री चम्पा भाटिया 500/-
श्रीमति सरोज कपूर 500/-
श्रीमति कृष्णा अग्रवाल 500/-
श्रीमति मनजीत साहनी 500/-
श्रीमति रेखा गुप्ता 500/-









शीतकालीन भ्रमण एवं दीपावली स्नेह मिलन समारोह



श्री के.के. गौड़

श्री राजेन्द्र शिवहरे

सीनियर सिटीजन सोसायटी का शीतकालीन भ्रमण एवं दिपावली स्नेह मिलन समारोह संस्था के अध्यक्ष श्री सुरेश अग्रवाल की अध्यक्षता में श्री चित्रकूट धाम, पुष्कर, अजमेर में आयेजित किया गया। उल्लेख है कि श्री चित्रकूट धाम एक अद्वितीय मंदिर संसार का पुष्कर में स्थापित हैं जिसमें 11 फीट की ऊँचाई में शिवलिंग में हनुमान जी विराजमान हैं। उक्त मंदिर देवनगर रोड पर स्थापित हैं। चित्रकूट में भव्य आयोजनों के अन्तर्गत धन्वतरी को लक्ष्मी पूजा (श्री-यंत्र) की एवं महाशिवरात्रि पर्व पर भस्म आरती की पूजा किये जाने के लिए विख्यात हैं। सदस्यों को श्री चित्रकूट धाम, पुष्कर पर बसों द्वारा (निर्धारित गन्तव्य स्थान) पहुंचाया गया। पहुँचने पर स्वादिष्ट अल्पाहार कराया गया। कार्यक्रम का आगाज सरस्वती माता के चित्र पर संस्था के पदाधिकारी अध्यक्ष - श्री सुरेश अग्रवाल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष - श्री जे. पी. शर्मा, महासचिव - श्री चिरंजीलाल शर्मा, सचिव प्रशासन - श्री वी.पी. कपूर, वित्त सचिव - श्री बलबीर सिंह गहलोत एवं महिला सदस्य - श्रीमती राधिका द्वारा दीप प्रज्जलवन कर व माल्यार्पण किया गया। सरस्वती वन्दना एवं ईश प्रार्थना संस्था की सदस्य श्रीमती सरोज कपूर, श्रीमती राधिका अग्रवाल, श्रीमती प्रेरणा गौड़, श्रीमती शशि चौबे एवं श्रीमती स्नेहलता शर्मा द्वारा हुआ।

संस्था के महासचिव चिरंजीलाल शर्मा ने सभी का स्वागत किया। अध्यक्ष श्री सुरेश अग्रवाल ने अपने उद्‌बोधन में संस्था की गतिविधियों का विस्तार से वर्णन किया और भविष्य में होने वाले कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत की। इसके साथ ही उपस्थित सभी सदस्यों से निवेदन किया कि समारोह को सफल बनाने के लिए आयोजकों एवं संयोजकों ने भरसक प्रयास किया हैं। अतः अपना योगदान देकर कार्यक्रम को सफल बनाने का प्रयत्न करे व आयोजकों का मनोबल बनाये रखें। संस्था अध्यक्ष ने सभा को अवगत कराया कि संस्था अपने पूर्ण रूप से भीलवाडा की तर्ज पर भवन बनाने हेतु प्रयासरत हैं। इसके लिए अध्यक्ष द्वारा प्रतिनिधी मण्डल में श्री सुरेश अग्रवाल वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री जे. पी. शर्मा एवं समूह संयोजक श्री राजेन्द्र शिवहरे सहित राजस्थान राज्य वरिष्ठ नागरिक के कार्यकारी अध्यक्ष श्री प्रेम नारायण गालव के अजमेर प्रवास पर उन्हें ज्ञापन देकर निवेदन किया गया था कि अजमेर में भी भीलवाडा की तरह भवन बनाकर दिया जाए। उक्त ज्ञापन श्री कार्यकारी अध्यक्ष ने अपने सहमति पत्र पूरजोर सिफारिश के साथ मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे को प्रेषित किया गया। जिसकी प्रति संस्था के अध्यक्ष, महासचिव एवं अध्यक्ष अजमेर विकास प्राधिकरण को पढाई गई हैं। अध्यक्ष ने सभा को यह भी अवगत कराया कि शीघ्र ही नवम्बर माह में एक प्रतिनिधी मण्डल जयपुर जाकर इस विषय में प्रयास करेगा। इसके साथ ही अध्यक्ष महोदय ने अपने उद्‌बोधन में इस बात की पीड़ा भी व्यक्त करी कि संस्था द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में सदस्यों की संख्या आशातीत नहीं होने से कार्यक्रमों के आयोजकों का उत्साह तो कम होता ही हैं साथ ही मनोबल भी गिरता हैं। उदाहरण के तौर पर इस वर्ष 12 फरवरी को अन्तर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस पर अच्छी संख्या में उपस्थिति रही जबकि 1 अक्टूबर को आयोजित उसी प्रकार के कार्यक्रम में आंकलन रूप से उपस्थिति कम रही। इसका मुख्य कारण या आशय इस ओर भी है कि संस्था के सदस्यों तक संस्था की गतिविधियाँ पहँचाना समूह संयोजकों का एक सशक्त कड़ी के रूप में माध्यम होता हैं। जो वर्तमान में कुछ समूह संयोजकों द्वारा पूर्ण रूप से निभाया नहीं जा रहा है। वस्तु स्थिति यह भी हैं कि कुछ समूह संयोजक तो अधिशाषी परिषद की सभाओं में भी भाग नहीं लेते। अतः इस दिशा में सभी को मिलजुल कर सकारात्मक पहल की जानी चाहिए।

इसी के साथ सभी सदस्यों को धन्यवाद देते हुए कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आभार व्यक्त किया।

सर्वप्रथम समारोह में 80 वर्ष से अधिक आयु के सदस्यों का स्वागत किया गया एवं सभी समूह संयोजकों का परिचय कराया गया। तत्पश्चात समूह संख्या 15 की श्रीमती सरला गम्भीर, श्रीमती मिथलेश शर्मा एवं श्रीमती राधिका अग्रवाल द्वारा 51 दीपों को प्रज्जवलन कर आरती उतारते हुए गीत प्रस्तुत किया। सौभाग्य की बात थी कि उक्त दिवस को संस्था के अध्यक्ष श्री सुरेश अग्रवाल का जन्म दिवस भी था अत: उन्हें महासचिव द्वारा माला पहनाकर दीर्घायु, उत्तम स्वास्थ्य एवं उज्जवल भविष्य की कामना की गई। इस अवसर पर संस्था अध्यक्ष ने केन्द्र को 1100 रूपये एवं समूह संख्या 13 को 1100 रूपये (योग 2200 रू.) भेंट स्वरूप प्रदान किये जिसके लिए उपस्थित सदस्यों ने करतल ध्वनि से स्वागत किया।

मनोरंजन की कडी में श्री मुकेश भार्गव ने ''हे मालिक तेरे बन्दे हम'' के गीत पर राजनैतिक आधार पर बहुरूपीय ''कैसे कैसे कर रहे कर्म, देश को कर रहे हजम'', श्री जयदेव सांखला द्वारा ''ये जीवन है, थोडे गम है, थोड़ी खुशियाँ हैं यह न सोचो कितनी हार है या जीत'', श्री कैलाश केसवानी ने ''आवारा सडकों पर अंजान लोग मिल जाते हैं'' श्री धरमीचन्द जैन द्वारा ''बीते बुरे दिन मत याद उनकों सुख के दिन आने वाले है'', श्री मांगीलाल तिवारी ने मोदी को मिले गये जोगी व्यांगत्मक प्रस्तुत दी गई। श्री चिरंजीलाल शर्मा (समूह संख्या 2) सुख -दुख के विषय में कविता सुनाई। श्री विनय भारद्वाज ने उम्र 82 ने ''जाने कहा गये वो दिन'' पर नृत्य किया। श्री हीरालाल पटेल ने कविता प्रस्तुत की – पत्थर सुरक्षित है जब तक वह पहाड़ का हिस्सा है, पत्ता सुरक्षित है जब तक वह डाल पर लगा हुआ हैं, इंसान सुरक्षित है जब तक वह परिवार से जुड़ा हुआ हैं। श्रीमती सोनू हासानी ने ''शुक्रराना तेरा मेरे सतगुरू, तूने मुझे अपना बना लिया हैं'', श्रीमती सरला गम्भीर ने शुक्रराना एवं भगवान शब्द की उत्पति की व्याख्या करते हुए इसके महत्त्व को समझाया। श्री सुरेश उपाध्याय ने ''उम्र के फल सूखेंगे याद करो वह पल जो गुजर जायेगा।''। श्रीमती स्नेहलता शर्मा ने ''संसार के लोगों से आशा किया करना जब कोई नहीं अपना राधेश्याम रटा करना'', श्री तेज सिंह कच्छावा ने कविता प्रस्तुत की ''हर बार एक नया जख्म देते जाते है और दुश्मन से फिर भी हाथ मिलाते जाते है।'', श्री के.के. गौड़ ने ''एक है अपनी जमीन एक है अपना वतन, आवाज दो हम एक हैं, अब वक्त सोने का नहीं सारा वतन खतरे में हैं।'', श्रीमती कृष्णा जैन ने ''गिरधर मेरे मौसम आया धरती के श्रृंगार का '', श्री भगवान दास असमादिया ने अतिशयोक्ति पेश की, श्री डी.के. तोषीनीवाल ने ''लाओ बिणनी, मारे साथ का सारे साथी परणगया, छोरा-छोरी घर-घर में जब देखू सारी रात सूनो लागै कद परणासी बाबडियो'' इसके साथी ही ''जिन्दगी की ना टूटे लड़ी, प्यार करले घड़ी दो घड़ी'', श्री चिरंजीलाल शर्मा भजनगंज निवासी ने ''म्हाने गोदया लेलो छेल लावण के लाग्यो बरबूटो'', श्रीमती हीरा देवी सोनी ने ''यह दुनिया तेरी है काना, मतलब की दिवानी हैं दिल तोड़ कर दुनिया खुशियाँ मनाती है, छिपा गम का अंधेरा कैसे गुजरेगी न बेटा अपना है ना बेटी अपनी हैं'', श्री महेश शिराडकर ''ये जिन्दगी उसी की है जो किसी का हो गया'', श्री तेज सिंह कच्छावा ने ''याद आता है उनको गुजरा हुआ जमाना'', श्री कैलाश जोशी ने ''या खुदा अब कोई तमन्ना नहीं एवं हाथ में प्याला लाया हूँ सर पर चद्दर अब तू जाने तेरी मर्जी'', श्री जे.पी. शर्मा ने ''पडौसी को सुखी नहीं देखने के लिए विराट कवि सम्मेलन कराने का निश्चय किया, पारश्रमिक की कोई चिन्ता मत करिये हमें तो पडौसी से बदला लेना हैं'' व्यंग प्रस्तुत किया, श्री वी.पी. कपूर ने चुटकला प्रस्तुत किया एक कंजूस के घर मेहमान आने पर पूछा गया ठंडा लोगे या गरम मेहमान ने उत्तर दिया दोना ही ले आओ, कंजूस ने अपनी पत्नी से कहा कि एक गिलास में गीजर का पानी, एक गिलास में फ्रिज का पानी ले आओ। श्री एस.पी. ओझा ने चुटकला प्रस्तुत किया बॉर्डर पर सिपाही ने अपनी छुट्टियाँ टेंक अदला बदली करके स्वीकृत प्रस्तुत किया कंडेक्टर ने बताया कि वह 8 घंटे बस में और 16 घंटे बीबी के बस में रहता हूँ।

आयोजन में खेल कूदों में चैस प्रतियोगिता विधिवत न होने व समय अभाव के कारण कोई विजेता नहीं रहा। कैरम में प्रथम मुकेश भार्गव, द्वितीय श्री रामेश्वर

सिसोदिया रहे। विजेता व उपविजेता दोनों ही ग्रुप 20 से है। कैरम डबल्स में विजेता श्री जे.पी. शर्मा समूह संख्या 15 एवं श्री ओ.पी. पीपल समूह संख्या 21 की जोड़ी रही व उपविजेता श्री रामेश्वर सिसोदिया समूह 20 एवं श्री एस.एन. कपूर समूह 20 की रही। हाऊजी का खेल भी खिलाया गया। इसके साथ ही श्रीमती प्रेरणा गौड़ ने बहुत ही सुन्दर एवं व्यवस्थित तरीके से आओ, दिखाओ, पाओ ले जाओ खेल प्रस्तुत कर विजेताओं को सांत्वना पुरस्कार तत्काल वितरित किये गये। खेलों में सबसे ज्यादा चूडियाँ पहनी हुई, 5 से ज्यादा अंगूठी पहनी हुई, पत्नी के पर्स में पति का फोटो, पति के जेब में पत्नी का फोटो, बीमारी के इलाज की पर्ची, स्वास्थ्य संबंधी दवाई, नोटो की सीरिज, 200 का नया नोट, लाल रंग की चप्पल, पारम्परिक कुर्त्ता पजामा आदि आदि थे। पार्सल गेम भी खिलाया जिसमें नाचना, गाना गाना, गुस्सा करना, बच्चों के जैसे रोना, रोते हुए बच्चे को चुप कराना आदि आदि थे।

कार्यक्रम का संचालन महासचिव श्री चिरंजीलाल शर्मा, समूह संयोजक श्री के.के गौड़ एवं श्रीमती प्रेरणा गौड़ द्वारा किया गया। राष्ट्रगान के पश्चात स्वादिष्ट सहभोज का आयोजन किया गया।

****

उन्नत की परिभाषा

सुहृन्मित्रार्युदासीन मध्यस्थ द्वेष्यबन्धुषु।
साधुष्वपि च पायेषु समबुद्धिर्विशिष्यते।।

- श्रीमद् 6/9

भावार्थ

उन्नत वह है जो हितैषियों, मित्रों, शत्रुओं
तटस्थों, मध्यस्थों, ईर्ष्यालुओं
पुण्यात्माओं और पापियों को समान
भाव से देखता है।

आमसभा की कार्यवाही

(30 जनवरी 2018, मंगलवार)



श्रीमती मंजु माहेश्वरी



श्रीमती राधिका अग्रवाल

दिनांक 30.1.2018 को नाका मदार सामुदायिक भवन में सोसायटी के अध्यक्ष श्री सुरेश अग्रवाल की अध्यक्षता में आमसभा का आयोजन किया गया। अल्पाहार और चाय के पश्चात 10 बजे सभा बुलाई गई परन्तु कोरम पूरा नहीं होने से स्थगित की गई और ठीक 10.30 बजे इसी स्थान पर पुनः सभा आयोजित की गई।

सर्वप्रथम महासचिव द्वारा सोसायटी के अध्यक्ष श्री सुरेश अग्रवाल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री जे.पी. शर्मा, महिला उपाध्यक्ष श्रीमती कुसुम गौतम, सचिव प्रशासन श्री वी.पी. कपूर, सचिव वित्त श्री बलबीर सिंह गहलोत, सचिव विकास श्री सुनील सक्सेना, महिला सदस्य श्रीमती राधिका अग्रवाल एवं श्रीमती मंजू माहेश्वरी को मंच पर मंचासीन किया गया। मंच पर पदासीन पदाधिकारियों द्वारा माँ सरस्वती के चित्र पर दीप प्रजजवलन एवं तिलक किया गया। श्रीमती कुसुम गौतम, श्रीमती राधिका अग्रवाल एवं श्रीमती मंजु माहेश्वरी ने ईश प्रार्थना करवाई। श्रीमती गौतम न ओम उच्चारण, हास्यासन एवं ताली वादान करवाया।

सोसायटी के अध्यक्ष श्री सुरेश अग्रवाल ने सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए संस्था के पूर्व पदाधिकारियों का स्मरण किया और कहा कि यह संस्था आज जिस शिखर पर खड़ी है उस पर पहुँचाने में उनका बहुत बड़ा योगदान रहा है। आज संस्था किसी परिचय की मोहताज नहीं है। हमारे कार्यक्रम इतने भव्य और अनुशासित होते है कि लोग बाहर जाकर इसका उदाहरण देते है। सोसायटी के सभी समूह संयोजक अपनी पूरी मेहनत से कार्य कर रहे हैं इसीलिए आज परिणाम भी अच्छे आ रहे है। हमारे सभी निर्णय सामूहिक होते हैं जिनका प्रकाशन सेवा संकल्प में किया जाता है। स्मारिका आदि मुद्रण कार्य निश्चित प्रक्रिया के तहत किये जाते है। कई लोग मीटिंग के विवरण की फोटो कॉपी मांगते है परन्तु यह संभव नहीं है। संस्था का न तो कोई कार्यालय है और न ही कोई बाबू। अगर किसी को भी कोई शंका आदि है तो वो महासचिव या सचिव (वित्त) के पास जाकर रिकार्ड का अवलोकर कर सकते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि पत्रिका प्रकाशन में हानि क्यों उठाई जाती है तो मेरा यह कहना है कि पत्रिका छापना सोसायटी के मुख्य कार्यों में से एक है जिसमे हमारे सदस्यों के लेख/कविता आदि छपते हैं, संस्था की सम्पूर्ण गतिविधियाँ छापी जाती है जो आवश्यक है। इसके प्रकाशन में लाभ-हानि को नहीं देखा जाना चाहिए।

अंत में उन्होंने सभी सदस्यों को आह्वान किया कि आप समय-समय पर संस्था को सहयोग देते रहें ताकि हमारा कार्य गति पकड़ता रहे। अध्यक्ष के उद्बोधन के बीच 11 बजते ही सभी सदस्यों ने शहीदों की याद में दो मिनट का मौन रखा और शहीदों को श्रद्धाजंलि दी। महासचिव चिरंजीलाल शर्मा ने पिछली रिर्पोट पढ़ना शुरू किया दो तीन पृष्ठ पढ़ने के बाद समूह-4 के संयोजक खडे हो गए और स्टेज पर आकर कहने लगे कि हर बार मेरे बारे में नकारात्मक बाते क्यों लिखते रहते है। पहले सेवा संकल्प में लिखा, फिर स्मारिका में लिखा और अब रिपोर्ट में बोल रहे हो तो फिर मेरे खिलाफ कार्यवाही क्यों नहीं करते। इस तरह बार-बार बेईज्जती क्यों की जा रही है। इनकी बातों के बीच में ही एक सदस्य स्टेज पर आकर कहने लगे कि पूरी रिर्पोट पढ़ने के बाद जो कहना है कहें। इस बीच समूह-13 के श्री चिरंजीलाल ने एक व्यक्ति एक पद की बात उठाई जिस पर महासचिव ने कहा कि संविधान में संशोधन होने पर ही कुछ हो सकता है। फिर महासचिव ने शेष रिपोर्ट पढ़ी। रिपोर्ट पढ़ने के बाद सदन से पूछा गया कि क्या इसे पुष्ट किया जावे तब सभी ने ताली

बजाकर रिपोर्ट की पुष्टि की।

इसके बाद श्री मोहन सिंह टांक ने कहा कि उस दिन जब मै बोला था तब महासचिव या अध्यक्ष ने मंच पर से ऐसी कोई अपील नहीं की जैसी आज कर रहे हैं। उस दिन समूह-2 के 10-12 सदस्य लगातार टोका-टोकी करते रहे। जब मैं स्टेज से उतरकर गया तब मुझे यह कहा गया कि आप को शर्म आनी चाहिए आप ग्रुप में कोई सहयोग नहीं कर रहे हो।

इसके बाद महासचिव ने यह कहा कि पिछली बार मैंने कोई अमानवीय बात नहीं कही फिर भी टांक साहब को ऐसा लगता है तो मैं क्षमा मांगता हूँ और पूरी सोसायटी आपसे क्षमा प्रार्थी है। इसके बाद महासचिव ने एक-एक कर सभी समूहों से संयोजक/सदस्य को बुलाया।

समूह -1 के संयोजक श्री नरेन्द्र मंगल ने सवाल किया कि यह क्यों नहीं बताया कि पिछली रिपोर्ट में क्या-क्या कार्यवाही हुई। जन्मदिन जिनका आज है उनके नाम आपको लाने चाहिए थे, स्टेज पर समूह संयोजकों को शुरू से ही बिठाया जाना चाहिए था। श्री मंगल ने कहा कि हमारे समूह ने सर्व प्रथम सक्रिय और असक्रिय सदस्यों की बात उठाई थी और सूची बनाई थी। जन्मदिन कार्ड पर ''आपसे सहयोग की अपेक्षा है'' छापा जाना गलत है यह बात मैंने उठाई थी यद्यपि इसे अब नहीं छापा जा रहा है। स्मारिका में केवल जन्म दिवस पर सहयोग करने वालों के फोटो छपते है जबकि वृद्धजन समारोह में भी सदस्य सहयोग करते है उनके भी चित्र प्रकाशित होने चाहिए। यह बात मान ली गई है। पेंशन को आय कर से मुक्त किया जाना चाहिए।

समूह -2 से श्री के. जी. मोदानी ने कहा कि आमसभा में अध्यक्ष को अलग से बैठना चाहिए। पूर्व संविधान में संशोधन विधिवत नहीं हुए हैं यह मैंने सरकारी विभाग से पता किया हैं। साधारण सभा की सूचना सेवा संकल्प में क्यों नहीं छापी गई। सक्रिय/असक्रिय का विभाजन करके हमने सदस्यता में मतभेद कर दिया। हमें असक्रिय सदस्यों तक पहुंचना चाहिए ताकि वे सक्रिय हो सकें।

समूह - 11 से श्री प्रेमशंकर शर्मा ने कहा कि सोसायटी के अध्यक्ष यहां अध्यक्षता नहीं कर सकते। जो जीवित नहीं है उनसे किस बात के पैसे लेंगे, पुष्कर में पिकनिक हुई उसका खर्चा सब पर क्यों डाला ? 100 रू. की अनिवार्यता नहीं होनी चाहिए। स्मारिका की कोई अपयोगिता नहीं है इसमें पैसा व्यर्थ जा रहा है।

समूह - 16 के संयोजक श्री रतनलाल ऐरन ने कहा कि हमें छोटी-छोटी बातों पर ऐतराज नहीं करना चाहिए जो भी निर्णय होते हैवो या तो बहुमत से होते है या सर्वसम्मति से। संस्था के पदाधिकारियों को आपने प्रजातांत्रिक तरीके से चुना फिर विरोध किस बात का ?

समूह - 21 से श्री ओ. पी. पीपल ने कहा कि हमारे बहुत से साथी उच्च पदों से सेवानिवृत्त हुए हैं हमें अनुशासन का पालन करते हुए संस्था को आगे बढ़ाना चाहिए। आपसी मतभेदों को मिल बैठकर सुलझाना चाहिए। कोर्ट में मामला ले जाने से पहले पदाधिकारियों से चर्चा करनी चाहिए थी।

समूह - 15 से वासुदेव खटनानी ने कहा कि मैंने 3 साल पहले संस्था में प्रवेश किया था। मुझे आश्चर्य होता है कि यहाँ 100 रू. का केन्द्रीय सहयोग देने पर विवाद हो रहा है। क्या कोई भी संस्था बिना पैसे के चल सकती है ? कोई कह रहा है कि आमसभा का स्थान बड़ा और शहर में होना चाहिए तो आप बताइये कि कौनसा स्थान हैं ? सहयोग कीजिए। आलोचना करना अच्छी बातहै पर स्वस्थ आलोचना होनी चाहिए। यहां पर एक-दूसरे पर आरोप लगाने के अलावा कुछ नहीं करते जबकि बुजुर्गों के फायदे से संबंधित बातें होनी चाहिए।

समूह - 22 से श्री सुन्दर खटवानी ने कहा कि हमें एक-दूसरे का सहयोग करना चाहिए। हम ज्ञान के एवं अनुभवों के भंडार है हमारी सोसायटी अभी युवा है क्योंकि 22 साल ही इसे बने हुए हुआ है। मेरा सुझाव है एक ग्रुप के सदस्य दूसरे ग्रुप में जावें तो परस्पर स्नेह बढ़ेगा। सभी समूह की मासिक बैठक उनके समूह सं. के हिसाब से उसी दिनांक को होवें। समूह 1 की 1 तारीख को 22 की 22 तारीख को। अनुभवों को लिखें और दूसरों तक पहुंचायें। असक्रिय या अस्वस्थ लोगों के लिए हेल्पलाईन शुरू होनी चाहिए।

समूह-4 के संयोजक श्री जे.एस. राजावत ने कहा कि 100 रू. केन्द्रीय सहयोग सही है। आमसभा में 50 रू. टोकन मनी की जगह ज्यादा रखो पर बीच का स्थान रखो। संविधान में संशोधन करना चाहिए। स्मारिका में फालतू चीजें मत छापों। ग्रुप-3-ए चिकित्सा शिविर करते हैं उसे सेवा संकल्प में क्यों नही छापते ? हमें जोड़ना है तोड़ना नहीं है।

समूह-20 से श्री मुकेश भार्गव ने कहा कि भवन के चारों ओर जो लोग रहते हैं वे बहुत सहयोगी प्रवृति के हैं वे हमारे भजन गीत कवितायें सुनते हैं और सराहना करते हैं। जो लोग नाराज हैं उनके लिए महासचिव ने क्षमा मांग ली फिर झगड़ा समाप्त करना चाहिए। और ही अधिक उत्साह हैतो इनके सामने चुनाव लड़ना चाहिए इनको हराना चाहिए। मैं तो ऐसा ही करता।

समूह-10 से श्री चिरंजीलाल ने कहा कि पहले मैं चिकित्सा प्रकोष्ठ का प्रभारी था फिर मुझे पता नहीं क्यों हटाया। मैने पुराने सचिव (वित्त) का चार्ज लाकर दिया। यहां काम की इज्जत नहीं है। मेरा फोटो नहीं छपा जबकि मैं चिकित्सा प्रभारी था। मैं अपनी इच्छा से पद छोड़ रहा हूँ पदाधिकारियों से विनती है कि संस्था को ढंग से चलाओं।

समूह-4 से श्री गिरिराज कच्छावा ने कहा कि बुजुर्गों को मिलने वाली सुविधाओं पर कुठाराघात हो रहा है। रोडवेज बसों में रियायत मिलती है परन्तु लाल वाली बस में नहीं मिलती। पिछली बार मैनें कहा था कि इन्हें समय कम हुआ है काम करने का। पैसे तो देने ही पड़ेगें हाँ आप आय-व्यय का ब्यौरा ले सकते हैं।

समूह-18 से श्री उपाध्याय जी ने कहा कि पेंशनर्स से 1000 रू. माह की कटौती करने की तैयारी हैं। इसे रोकना चाहिए। स्मारिका कम पृष्ठ में छापें। जो कर रहे हैं उनका प्रतिरोध करने के लिए प्रतिरोध नहीं करें।

समूह-9 से श्री कीर्ति कुमार तामरा ने कहा कि मैं कुछ जानकारी देना चाहता हूँ। आप संस्था को एनजीओ की तरह चला सकते हो। इन्हें भी अधिकार है। ब्यावर में पुलिस ऐसे बुजुर्गों का सर्वे कर रही है जो अकेले रहते हैं। वे उनकी आवश्यकताओं को लिखेंगे।

समूह-17 के श्री एस.के.अरोडा ने कहा कि हमारे समूह के कुछ सदस्य प्रातः घूमने जाते है तक सामने से बजरी के भरे हुए ट्रक, ट्रेक्टर, डम्पर निकलते है जिससे खतरा रहता था। हमारे समूह संयोजक ने मंच से आग्रह किया और इन लोगों ने पुलिस अधीक्षक से मिलकर कार्यवाही के लिए आग्रह किया। मैं यही कहना चाहता हूँ कि ऐसी जो हमारी भिन्न-भिन्न समस्यायें है उनके लिए सोसायटी कार्यवाही कर रही है।

सोसायटी की महिला उपाध्यक्ष श्रीमती कुसुम गौतम ने सुझाव दिया कि हमारे सक्रिय कार्यकत्ताओं पर कभी दुख आता है तो हमें उनसे मिलने जाना चाहिए और सार संभाल करनी चाहिए इससे उन्हें लगेगा कि हमारा हाल पूछने कोई आया।

सोसायटी के अध्यक्ष श्री सुरेश अग्रवाल ने अन्त में सभी वक्तओं की सारभूत बातों का जवाब देते हुए सदन का विश्वास दिलाया कि हम संस्था हित में कार्यवाही करेंगे। निर्णय सामूहिक लेकर सदस्यों का विश्वास बनाये रखेंगे। यदि अधिशाषी परिषद से कोई गलती भी हुई हो तो हम उसके लिए क्षमा प्रार्थी है। और आपसे अपेक्षा करते हैं कि आप सोसायटी के निर्णयों की पालना करते रहेगें।

आमसभा में इन्वेस्टमेंट बॉडी के सलाहकार श्री एकांश मौर्य, कुमारी चारू भोजवानी एवं श्री अब्बास अली का माला पहनाकर स्वागत किया गया। उल्लेखनीय है, कि इस कम्पनी द्वारा आज के अल्पाहार हेतु सहयोग किया गया था।

महासचिव ने आज के आयोजन को सफल बनाने में सहयोग करने वाले समूह-20 के संयोजक श्री राजेन्द्र शिवहरे, श्री रामेश्वर सिसोदिया, श्री विनोद माथुर, समूह-17 के संयोजक श्री रतनलाल ऐरन, समूह-12 के श्री महेश शर्मा, समूह-2 के संयोजक श्री कैलाश जोशी व श्री भगवान लालवानी, सचिव विकास श्री सुनील सक्सेना, सचिव वित्त श्री बलबीर सिंह गहलोत का आभार प्रकट किया। दिवंगत सदस्यों के लिए दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धाजंलि दी गई। राष्ट्रगान पश्चात सभा सम्पन्न हुइ। सदस्यों ने सामूहिक भोज का आनन्द उठाया।

****

होली स्नेह मिलन समारोह



श्रीमती प्रेरणा गौड़



श्रीमती कुसुम गौतम

सीनियर सिटीजन सोसायटी, अजमेर द्वारा दिनांक 27.03.2018 मंगलवार को प्रात: 9.30 बजे से जनकपुरी गंज, अजमेर में संस्था के अध्यक्ष श्री सुरेश अग्रवाल की अध्यक्षता में होली स्नेह मिलन समारोह आयोजित किया गया। सर्व प्रथम संस्था के पदाधिकारियों द्वारा सरस्वती माता के चित्र पर माल्यार्पण कर , दीप प्रज्जवलन किया। ईश वन्दना श्रीमती कुसुम गौतम, श्रीमती मंजू महेश्वरी एवं संस्था की महिला सदस्यों के द्वारा की गई। श्री लज्जा शंकर गोयल द्वारा ओम उच्चारण व हास्यासन एवं 21 बार ताली वादन कराया गया।

अध्यक्ष द्वारा सभा में उपस्थित सभी सदस्यों का हार्दिक अभिनन्दन किया और होली, सम्वत्सर, चेटीचण्ड, दुर्गाष्टमी एवं नवरात्रों की शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित की। उन्होनें अपने उद्बोधन में अवगत कराया गया कि अधिशाषी परिषद के निर्णय अनुसार यह कार्यक्रम शहर के मध्य में आयोजित किया गया है। उसका मुख्य कारण 30 जनवरी को आयोजित आम सभा में कुछ सदस्यों ने आपत्ति की कि शहर से दूर एवं एकांत स्थानों पर समारोह आयोजित करने के कारण उपस्थिति कम रहती है। इस बात पर समूह संयोजकोंअधिशाषी परिषद के सदस्यों द्वारा गहन विचार विमर्श के पश्चात आज का आयोजन शहर के मध्य जनकपुरी, गंज में रखा गया हैं। लेकिन अफसोस है कि पूर्व में आयोजित होली स्नेह मिलन चन्द्रवरदाई नगर में किया गया जिसमें 200 के लगभग सदस्य संख्या रही। इसी प्रकार दो आम सभाएँ सामुदायिक विकास भवन नाका मदार में दिनांक 31 मई को एवं 30 जनवरी को आयोजित की गई जिसमें 200 एवं लगभग 300 सदस्यों की उपस्थिति दर्ज की गई। जबकि आज उसके विपरीत उपस्थिति न्यून है जिसके लिए सबको विचार करना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय ने इस बात की भी सराहना की कि समूह संख्या 18 द्वारा दिनांक 18 मार्च को न्यू ऑल सेन्ट स्कूल, धोला भाटा रोड में चिकित्सा एवं परामर्श शिविर का आयोजन किया गया जिसमें लगभग अधिकारिक सूचना के अनुसार 585 व्यक्तियों का परिक्षण किया गया। जो गौरव का विषय है उसके लिए समूह संयोजक श्री के. के. गौड़ एवं समूह के समस्त सदस्यों को धन्यवाद व शुभकामनाएँ दी।

महासचिव ने संस्था गतिविधियों से अवगत कराने के पश्चात् सांस्कृतिक कार्यक्रम संचालन के लिए श्री के. के. गौड़ एवं श्रीमती प्रेरणा गौड़ को आमंत्रित किया गया। सर्वप्रथम सभा में उपस्थित जिन संस्था सदस्यों का आज जन्मदिन था को आमंत्रित कर माल्यार्पण कर बधाई कार्ड देकर शुभकामनाएँ दी गई। इसी कड़ी में श्रीमती प्रेरणा गौड़ की माताजी श्रीमती श्यामा शाडंल्य जो बंगलौर से आई थी का भी माल्यार्पण कर सम्मान किया गया।

सर्वप्रथम समूह संख्या 1 से श्रीमती स्नेहलता मंगल ने मधुर आवाज में भजन प्रस्तुत किया। समूह संख्या 2 से श्री जय देव

सांखला ने मारवाडी गीत प्रस्तुत किया एवं महासचिव श्री चिरंजीलाल शर्मा ने चुटकले प्रस्तुत किया। समूह संख्या 5 से श्री धर्मी चन्द जैन ने स्वरचित देशभक्ति गीत बीत गये जीवन के दिन बीत गये प्रस्तुत किए एवं श्री मनोहर विजय ने श्याम पीछा छोड़ राधा रानी का भजन प्रस्तुत किया। समूह संख्या 6 से श्री सीताराम शर्मा ने उडे जब जब जुल्फें तेरी - घुंघरों की आवाज से मधुर फिल्मी गीत प्रस्तुत किया। भावों से प्रेरित होकर श्रीमती सुधा पाण्डे ने सीताराम शर्मा को 500/- रूपये का नगद पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया। इसी प्रकार श्री भंवर लाल गोयल ने फागून के महिने चारों ओंर सर सर चली बहार स्वरचित गीत प्रस्तुत किया समूह संख्या 9 से श्री ज्ञान चन्द गुप्ता एवं उनकी पत्नी श्रीमती सुधा गुप्ता द्वारा होली में उडे रें गुलाल गीत से समा बांधा। समूह संख्या 10 से श्री रामकरण राय द्वारा आ लौट कर आजा मेरे मीत फिल्मी गीत प्रस्तुत किया। समूह संख्या 11 के श्री प्रेम शंकर शर्मा ने होली तो होली अब मिलन की बारी है एवं मेरी चुनरी उडी उडी जाए ब्रज की होली में एवं बुरा न मानो होली गीतों की प्रस्तुति दी। समूह संख्या 13 से श्री देवेन्द्र कुमार ने रंग बरसे भीगे चुनर वाली रंग बरसे गीत प्रस्तुत किया। समूह संख्या 15 से श्री जे. पी. शर्मा द्वारा हंसने हंसाने की बारी आयी कविता पाठ किया। श्री कंवर मंजर ने मेरा जूता है जापानी पर नृत्य करके सब का मन मोह लिया। समूह संख्या 16 से श्री रतन लाल ऐरन ने जैसी करनी वैसी भरनी संदेश देते हुए प्रस्तुती दी। समूह संख्या 17 से श्री अशोक शर्मा एवं श्रीमती प्रीति जोशी ने चंग धीरों रें पर युगल नृत्य प्रस्तुत किया। इसी प्रकार श्री एस. के. अरोडा ने भजन प्रस्तुत किया। समूह संख्या 18 से श्रीमती भारती सुजनानी ने हास्य योग, श्री तेज सिंह कच्छावा ने कविता पाठ एवं श्री वी. पी. कपूर ने चुटकला प्रस्तुत किया। समूह संख्या 20 से श्रीमती बीना रानी, श्री मुकेश भार्गव एवं डॉ. एन. के. माथुर ने कैसी हसीन है आज की रात फिल्मी गीत प्रस्तुत किया। समूह संख्या 22 से श्रीमती कृष्णा जैन ने मुहब्बत के दम से दुनिया बसी है फिल्मी गीत प्रस्तुत किया एवं श्री सुन्दर लखानी ने भी भजन प्रस्तुत किया।

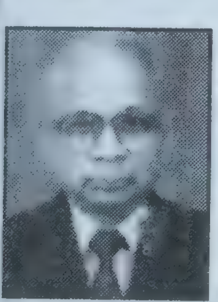
मनोरंजन के क्रम को आगे बढ़ाते हुए श्रीमती प्रेरणा गौड़ ने आओ पाओ ले जाओ के अन्तर्गत विभिन्न खेल खिलाए। जैसे सदस्यों के पर्स में दवाई की पर्ची, बिना बाल के सदस्य के पास कंघा होना आदि खेल खिलाएँ। विजेताओं को हाथो हाथ पारितोषित भी किया । सामुहिक भोज के साथ साथ हाऊजी खेल का भी आयोजन किया गया।

समारोह को व्यवस्थित करने के लिए अधिशाषी परिषद के सदस्य, संस्था के सदस्य विशेष कर सचिव (विकास) श्री सुनील सक्सेना को भोजन व्यवस्था के लिए, श्री के. के. गौड़, श्रीमती प्रेरणा गौड़ एवं सहयोगी श्रीमती भारती सुजनानी को सफल संचालन के लिए व महासचिव श्री चिरंजीलाल शर्मा को सम्पूर्ण व्यवस्था के लिए आभार प्रकट किया। इसी के साथ ही वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री जे. पी. शर्मा महिला उपाध्यक्ष श्रीमती कुसुम गौतम सचिव प्रशासन श्री वी. पी. कपूर सचिव वित्त श्री बलबीर सिंह गहलोत महिला सदस्य श्रीमती मंजू महेश्वरी आदि को कार्यक्रम को सफल बनाने में योगदान रहा जिसके लिए संस्था आभार प्रकट करती हैं।

साथ ही दीपावली स्नेह मिलन के अवसर पर कैरम प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें निम्न विजेताओं को पुरूस्कृत किया गया। कैरम एकल में श्री मुकेश भार्गव व श्री रामेश्वर सिसोदिया। युगल में 1. श्री जे. पी. शर्मा व श्री ओ. पी. पीपल, 2. श्री रामेश वर सिसोदिया व श्री एस. एन. कपूर।

सीनियर सिटीजन सोसायटी अजमेर के समूहों की वार्षिक प्रगति रिपोर्ट 2017-18

समूह संख्या - 1 (वैशाली नगर)



नरेन्द्र मंगल
समूह-1

प्रतिमाह नियमित रूप से समूह की बैठकें आयोजित की गई, जिनमें माह में जन्मदिन वाले सदस्यों का अभिनंदन किया गया। सदस्यों के द्वारा मनोरंजन, ज्ञान, अध्यात्म तथा सूचना से संबंधित कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। सोसायटी एवं समूह से संबंधित कार्यक्रमों/समस्याओं पर चर्चा की गई तथा अवसर अनुसार सोसायटी/समूह के दिवंगत सदस्यों की आत्म शांति के लिये प्रार्थना की गई।

इन मासिक बैठकों में बारी-बारी से समूह के किन्हीं आदरणीय सदस्य को अध्यक्षता के लिये अनुरोध किया जाता है जो जलपान की व्यवस्था भी करते है। इस क्रम में अप्रैल 17 से दिसम्बर 17 तथा फरवरी, मार्च18 में सर्व श्री उमेश चंद गुप्ता, आर.एस.अग्रवाल, जे.एन.पुरोहित, सुधाकर बंधु, अशोक शर्मा, श्रीमती गुणमाला जैन, सर्व श्री डी.पी.माथुर, के.एन.अग्रवाल, महेश चंद्र गुप्ता, राजेन्द्र पँवार तथा श्रीमती सुदर्शना गहलोत ने बैठकों की अध्यक्षता की।

गत वर्ष केन्द्र के लिये जन्मदिन एवं समूह के लिये वार्षिक सहयोग राशि देने तथा समूह की गतिविधियों में नियमित रूप से भाग लेने वाले 51 सक्रिय सदस्यों की पहचान की गई थी। इस वर्ष 22 नये सदस्य जुड़े, किन्तु 17 पुराने सदस्य असक्रिय हो गये। इस प्रकार 1-4-18 की स्थिति के अनुसार समूह में कुल 56 सक्रिय सदस्य हो गये, जिनमें से 5 नये सदस्य जनवरी से मार्च 18 के बीच बनें। शेष 51 सक्रिय सदस्यों से केन्द्र के लिये वर्ष 2018 के लिये कुल रू. 5100 की वार्षिक सहयोग राशि प्राप्त हुई। एक अक्टूबर 2017 को आयोजित वृद्धजन सम्मान समारोह के लिये समूह के कुल 13 सदस्यों ने कुल 6450रू. का योगदान दिया। इस समारोह में समूह 1 के तीन सदस्यों सर्व श्री अमृत पाल चोपड़ा, कैलाश चन्द्र चौधरी एवं आर.एस.अग्रवाल को भी सम्मानित किया गया।

जनवरी 2018 में समूह 1 का वार्षिक सम्मान समारोह आयोजित किया गया। जिसकी अध्यक्षता समूह में आयु क्रम में वरिष्ठतम सदस्य श्री गुलाबचन्द्र अग्रवाल ने की। राजस्थान वरिष्ठ नागरिक बोर्ड के कार्यकारी अध्यक्ष श्री प्रेमनारायण ने मुख्य अतिथि के रूप में तथा सर्व श्री सुरेश अग्रवाल - अध्यक्ष व चिरंजीलाल शर्मा - महासचिव सीनियर सिटीजन सोसायटी अजमेर ने विशिष्ट अतिथियों के रूप में भाग लेकर समारोह की शोभा बढ़ाई।

समारोह में वर्ष 2017 में 75 वर्ष आयु प्राप्त समूह के सदस्य श्री दिनेशचन्द्र तायल का सम्मान किया गया। इसके अलावा एक अक्टूबर को हुए वृद्धजन सम्मान समारोह के लिये स्वैच्छिक रूप से सहयोग राशि देने वाले सदस्यों में से उपस्थित सर्व श्री अशोक शर्मा, आर.एस.अग्रवाल, पुरूषोत्तम शर्मा, डी.पी.माथुर, सुधाकर बंधु, अनिल अग्रवाल, महेश चंद्र गुप्ता, नरेन्द्र मंगल तथा सर्व श्रीमती आई एच सैम्युअल एवं स्नेहलता मंगल का माला पहनाकर आभार व्यक्त किया गया। इस समारोह में उपस्थित नहीं होने वाले सदस्यों - श्री राजेन्द्र प्रसाद अग्रवाल, श्री उमेश चन्द गुप्ता तथा श्रीमती गुणमाला जैन का भी आभार व्यक्त किया गया। समारोह के दूसरे भाग में मनोरंजन के कार्यक्रम तथा सहभोज आयोजित किये गये। समूह की मासिक बैठकें बधिर विद्यालय वैशाली नगर, अजमेर में आयोजित की जाती है तथा समूह सं.1 की ओर से विद्यालय को समय-समय पर नकद या वस्तु के रूप में सहयोग दिया जाता है। इसी क्रम में इस वर्ष बधिर विद्यालय को रू. 3100/- का चंदा दिया गया।

समूह संख्या - 2 (क्रिश्चियन गंज)



कैलाश जोशी
समूह-2

समूह संख्या 2 की मासिक बैठक प्रत्येक माह के तृतीय शनिवार को रेम्बुल रोड़, शिव मन्दिर पर (वैशाली नगर, पंचशील का कुछ भाग एवं क्रिश्चियन गंज, कैलाशपुरी क्षेत्र) सदस्यों की उपस्थिति में सम्पन्न होती है। वर्तमान में समूह में सदस्यों की संख्या 198

हो गई है। बैठक में प्रतिमाह औसतन 45 से 55 सदस्यों की उपस्थिति रहती है। समूह के सदस्य होली, दीपावली, अन्तर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस, वर्षाकालीन भ्रमण आयोजित कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेते है।

वृद्धजन दिवस पर समूह के 22 सदस्यों द्वारा 11,000/- ग्यारह हजार रूपये सहयोग राशि दी गई। जन्मदिन की केन्द्र को भेंट राशि भी सदस्यों ने न्यूनतम 100/-रू. देने का निर्णय किया गया। श्री आर.एस.निर्बाण एवं श्री नरेन्द्र कुमार बनवीर ने इस कडी में केन्द्र को जन्मदिन भेंट राशि 500/--500/- रू. दी गई।

प्रतिमाह नियमित रूप से समूह की बैठक में माह में जन्मदिन वाले सदस्यों का अभिनंदन माला पहनाकर, बधाई कार्ड देकर अभिनंदन किया जाता है। समूह में नये बनाये सदस्यों का माल्यार्पण कर स्वागत कर परिचय कराया जाता है। दिवंगत हुए सदस्यों के घर शोक संदेश दिया जाकर बैठक में श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है।

इस वर्ष समूह के सदस्य श्री सन्तोष कुमार रावत, श्री ओमप्रकाश वर्मा, श्रीमती कमला पाटोदिया, श्रीमती कैलाश उपाध्याय 75 वर्ष की आयु पूर्ण किये जाने पर दिनांक 18-11-2017 को समूह स्तर पर अमृतोत्सव मनाया गया। इस दौरान उन्हें विधिवत शॉल, श्रीफल, माल्यार्पण, बधाई कार्ड देकर स्वस्थ व शतायु होने की कामना की गई एवं बैठक स्थल पर समूह की ओर से सुरूचि भोजन की व्यवस्था की गई।

मासिक बैठकों में अल्पाहार का आयोजन समूह के कोष से नहीं किया जाता है एवं बारी-बारी से सदस्यों द्वारा ही किया जाता है। माह मार्च 18 में श्री मोतीलाल पाटोदिया एवं अप्रेल 18 में श्री आर.डी.गुप्ता के निवास पर बैठक आयोजित कर उनके द्वारा रात्रि भोजन समूह सदस्यों को करवाया गया। अतः समूह की छवि एक अनुशासित एवं सुदृढ़ प्रबंधन के अन्तर्गत आंकी जा सकती है। समूह के कोषाध्यक्ष श्री अशोक कुमार शर्मा द्वारा प्रतिवर्ष का लेखा जोखा प्रस्तुत कर उसकी छाया प्रति समूह सदस्यों को उपलब्ध कराते है। श्री गोपाल शंकर शर्मा, श्री गोपाल माथुर, श्री के.जी.मोदानी, श्री रामगोपाल अग्रवाल सेवा संकल्प वितरण से लेकर बैठक व्यवस्था, अल्पाहार वितरण में सक्रिय रूप से सहयोग करते है।

श्री के.जी.मोदानी, गोपाल शंकर शर्मा, श्री जयदेव साँखला, श्री किशन आर.खुराना, श्री महेन्द्रदेव मुरारी, श्री बी.पी.श्रीवास्तव, डा.के.जी.गोयल, डा.एस.एन.माहेश्वरी, श्री चिरंजीलाल शर्मा, कैलाश जोशी आदि द्वारा मनोरंजन कार्यक्रम में भजन, चुटकले, गीत, गजल, स्लोगन, उपदेश, धार्मिक कथाएँ आदि सुनाकर सदस्यों का मनोरंजन करवाते है। श्री रोहिताश-रोहिल्ला जो कि समूह के मीडीया प्रभारी कार्य में सहयोग कर सभी सदस्यों की गतिविधियों की सूचना एवं जानकारी देने का कार्य करते है।

समूह द्वारा प्रत्येक माह गौ सेवा प्रकल्प हेतु राशि श्री के.जी.मोदानी द्वारा एकत्रित की जाती है। प्रकल्प के प्रभारी श्री के.जी.मोदानी द्वारा समूह के कुछ सदस्यों को सूचना कर साथ लेजाकर प्रत्येक माह के द्वितीय शनिवार को पंचशील स्थित नगर परिषद गौशाला में गायों के लिये बहुत ही कम दर पर चारे की गाड़िया डलवाई जाती है। श्री डी.सी.तायल, श्री जयदेव साँखला, श्री कुलदीप व्यास, श्री आर.के.रोहिल्ला एवं अन्य सदस्य इस कार्य में सहयोग कर रहे है।

समूह सं. 3 (सिविल लाईन)



सुरेन्द्र विजयवर्गीय
समूह-3

समूह की मासिक बैठक प्रति माह के अन्तिम सप्ताह में शिव कुण्ड सावित्री स्कूल चौराहा, अजमेर में आयोजित की जाती है। समूह के सदस्यों की संख्या 65 है लेकिन 30-35 भाग लेते है। सिविल लाईन व नागरिकों का सेवा समूह है। सभी सदस्य व्यवसायिक प्रतिष्ठानों एवं वरिष्ठ राजकीय पदों से सम्बन्धित रहे है।

समूह में नवीन बनाये गये सदस्यों का माल्यार्पण कर उनका स्वागत किया जाता है एवं उनका परिचय करवाया जाता है। जिन सदस्यों का माह में जन्म दिवस आता है उनका माल्यार्पण एवं बधाई कार्ड भेंट कर अभिनन्दन किया जाता हैं माल्यार्पण पति-पत्नि के द्वारा ही करवाने की कोशिश की जाती है, जो सदस्य इस अवसर पर उपस्थित नहीं हो पाते है उनके बधाई कार्ड घर भिजवाये जाते हैं। जन्म दिवस के उपलक्ष में सदस्यों द्वारा संस्था एवं समूह को राशि जमा

करवाई जाती है। बैठक में समूह सदस्यों द्वारा भजन, गीत, गायन, महापुरूषों के उपदेश, धार्मिक कथाऐं, हास्यस्पद चुटकलें इत्यादि सुना कर सदस्यों का मनोरंजन किया जाता है। समूह सदस्यों द्वारा विभिन्न विषयों पर सामाजिक सेवा, प्राकृतिक औषधि उपचार, योगा, आध्यात्मिक अनुभव का आपस में आदान-प्रदान करते हैं। बैठक में महिला सदस्यों की उपस्थिति भी सराहनीय रहती है एवं भजन, गीत इत्यादि में बढ़-चढ़ कर भाग लेती है।

इस वर्ष समूह के वरिष्ठ सदस्य श्री ओमप्रकाश बाडमेरा का दिनांक 24-12-2017 को स्वर्गवास हो गया जिसका सभी सदस्यों को दु:ख हुआ एवं उनकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की गई।

दिनांक 26-02-2018 को 75 वर्ष या 75 वर्ष से अधिक आयु के निम्न सदस्यों का विशेष सम्मान शॉल, श्रीफल एवं माल्यार्पण कर किया गया। (1) श्री राधेश्याम हेड़ा (2) श्री राधाकिशन अजमेरा। समारोह में सदस्यों ने स्वादिष्ट भोजन प्रसादी प्राप्त की। दिनांक 26-01-2018 को अनुपस्थित निम्न सदस्यों का विशेष सम्मान शॉल, श्रीफल एवं माल्यार्पण दिनांक 27-02-2018 की बैठक में किया गया। (1) श्री हरीप्रसाद असावा (2) श्री हरी प्रसाद महेश्वरी।

मासिक सेवा संकल्प सदस्यों को भिजवाने में श्री सूरज नारायण लखोटिया, श्री भवंरलाल मूंदडा एवं श्री गोविन्द प्रसाद असावा का पूर्ण सहयोग रहता है। प्रत्येक माह की बैठक की समाप्ति पर अल्पाहार का आयोजन किया जाता है। अल्पाहार की व्यवस्था में श्री अनिल कपूर एवं श्री दशरथ तिलक का पूर्ण सहयोग रहता है।

समूह संख्या 04 (शास्त्रीनगर)



जे. एस. राजावत
समूह-4

समूह के सदस्यों की संख्या 321 है। इस साल 5 नए सदस्य बनें। सक्रिय सदस्य केवल 60 है। बाकी सदस्य चुनावी वर्ष 2016-17 में तत्कालीन अध्यक्ष जी ने, चुनाव में वोट प्राप्त करने की मनशा से बनायें। उनका समूह व संस्था में योगदान कम हैं। इस प्रकार के सदस्य संस्था के हित में नहीं रूचि नहीं लेते।

वे संस्था की गतिविधि व साल भर के कार्यक्रमों में भी अपनी भागीदारी का निर्वाह नहीं करते जिससे - असंतोष व आम राय और खासकर वरिष्ट नागरिकों की आयु - स्वास्थ्य को दरकिनार कर होते हैं। केवल 4000 सदस्यों को दूर रखकर परिषद् कार्यकारिणी व अन्य 70-80 सदस्यों के हित को देखकर तय किये गए लगते हैं।

उपरोक्त कार्यप्रणाली को देखकर समूह का आर्थिक सहयोग भी सिमट गया व संस्था को केवल 50-55 सदस्यों ने अपना सालाना शुल्क 100 ×50 = 5000 /- रूपये दिए।

समूह द्वारा आयोजित 75 वर्ष आयु प्राप्त करने वालों का सम्मान समारोह, पिकनिक, सालाना मंनोरंजन साधन व अन्य कार्यक्रम बहुत ही उत्साहवर्धक व सीमित व्यय के अनुसार आयोजित किए गए।

समूह संयोजक कमाण्डर जे.एस.राजावत ने अपने व्यक्तिगत संबंधो से प्रशासन, जनप्रतिनिधियों द्वारा किए व्यय से बहुत कार्यक्रम आयोजित किए व जगह, स्थान, हॉल, ट्रांसपोर्ट नि:शुल्क उपलब्ध करवाएं।

समूह संख्या - 5 (कुन्दन नगर)



जे. पी. विजय
समूह-5

समूह की मासिक बैठके सुविधानुसार सदस्यों की सहमति से आयोजित की जाती है। इस समूह में वर्तमान में 43 सदस्य है। जो अपनी वार्षिक नवीनीकरण राशि जमा कर चुके है। समूह में एक-दूसरे के प्रति सहृदयता व आत्मीयता का भाव है। इसी कारण सदस्य अपने निवास पर बैठक रख कर आत्म सन्तुष्टि एवं गौरवानुभूति महसूस करते हैं।

मासिक बैठको में प्रत्येक सदस्य को जन्म दिवस मास के उपलक्ष्य में संस्था द्वारा प्रदत्त बधाई कार्ड, माल्यार्पण व स्वस्थ दीर्घायु होने की शुभकामनायें व्यक्त की जाती है। सभी सदस्य अपने जन्म दिवस के मास में 100 रूपये संस्था को भेंट देते रहे किन्तु इस वर्ष के नवीनीकरण के नियमों से इस राशि को प्रारंभिक में ही संस्था को दे दिये है जिसका उल्लेख सेवा संकल्प के मई के अंक में पृष्ठ 3 की रिपोर्ट में है।

जिन सदस्यों के 75 वर्ष पूर्ण हो जाते है उसे समूह अमृतोत्सव के रूप में मनाते हैं। ऐसे सदस्यों को संस्था के बधाई कार्ड के साथ माल्यार्पण, स्मृतिचिन्ह, शॉल व श्रीफल देकर ईश्वर से स्वस्थ व दीर्घायु की सुखद कामनायें की जाती है।

1 अक्टूबर 2017 के अन्तर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस को समूह द्वारा मुक्त हृदय व भाव से अधिकांश सदस्य 500 रूपये की राशि दी जाती है। इस वर्ष यह राशि रूपये 8000/- संस्था को दी गयी। कभी भी संस्था के आह्वान पर जब भी आपदा यथा भूकंप, अतिवर्षा, बाढ़ का प्रकोप हुआ समूह से यथा सम्भव सहयोग दिया जाता रहा है।

इस वर्ष मेडिकल केम्प के लिये 500/- रूपये का सहयोग श्री जे.पी.विजय की ओर से अलग से किया गया। इसके साथ-साथ ही 5000/-की राशि टोल्फो को जानवरों की दवा हेतु दी गई है।

समूह की गतिविधियों के निरीक्षणार्थ अधिशाषी परिषद के सदस्यों को समय-समय पर आमंत्रित किया जाता है तथा उनके सुझाव व निर्देशों को समूह में लागू किया जाता है। सांस्कृतिक व एक साथ चर्चा में ज्ञान, स्वास्थ्य, धार्मिक, सांस्कृतिक व दैनिक सरोकार के विषयों पर भी खूब खुल कर विचार व्यक्त किये जाते है। सदस्य गरिमामयी अनुशासनात्मक स्थिति में एक दूसरे को सम्मान व आदर देने से भी नहीं चूकते है।

प्रत्येक सदस्य अपने-अपने क्षेत्र व लाईन में स्वास्थ्य व स्वच्छता के अभियान से सजग है। समय पड़ने पर स्वच्छता अभियान में भी योगदान देते है। मासिक सेवा संकल्प का वितरण प्रतिमास नियमित रूप से सदस्यों के सहयोग से होता है। कुछ प्रबुद्ध सदस्य अपनी रचनाऐं वार्षिक स्मारिका में भी प्रकाशानार्थ देते हैं। समूह सदस्यों से संस्था के कार्यों में सदैव सकारात्मक सहयोग रहता है। उन्हें जब भी किसी कार्य के लिए कहा जाता है तो पूर्ण मनोयोग से संस्था हित को देखते हुए शीघ्र पूरा किया जाता है।

समूह संख्या - 6 (हाथी भाटा)



चन्द्रनारायण अग्रवाल
समूह-6

समूह की बैठक हाथी भाटा स्थित गौतम स्कूल के प्रागंण में नियमित तौर पर हर माह आयोजित की जाती है। मासिक बैठक में लगभग 35-45 सदस्यों की उपस्थिति रहती है।

समूह की मासिक बैठक में सदस्यों की उपस्थिति में से क्रमवार एक सदस्य को अध्यक्षता का दायित्व सौंपा जाता है। मीटिंग की कार्यवाही शुरू करने से पूर्व ईश वन्दना की जाती है तथा किसी भी एक सदस्य द्वारा समूह को पांच-पांच बार ओम ध्यान व हास्य ध्यान करवाया जाता है, एवं तीस बार तालियां बजवाकर शरीर की ऊर्जा को और बढ़ाया जाता है। नये सदस्य के आगमन पर उनका परिचय करवाकर माल्र्यापण किया जाता है।

संस्था के पदाधिकारियों में से किसी भी पदाधिकारी को समूह में आमंत्रित किया जाता है। इससे संस्था की सभी गतिविधियों की जानकारी सभी को मिलती रहती है।

जिस माह में जिन-जिन सदस्यों का जन्मदिवस होता है, उनका माल्र्यापण कर बधाई कार्ड देकर उनके स्वस्थ एवं निरोग रहने की कामना की जाती है। जिस भी सदस्य की 75 वर्ष की आयु जिस माह में पूर्ण होती है समूह द्वारा उनकी हीरक जयन्ती भी मनाई जाती है उनका माल्र्यापण कर शॉल ओढ़ाकर तथा रंगीन फोटो सहित अभिनन्दन-पत्र का पठन कर उन्हें भेंट कर उनके पारिवारिक सदस्यों की उपस्थिति में दी जाती है। समूह द्वारा प्रत्येक त्यौहार बड़े ही सुन्दर तरीके से मनाया जाता है।

वर्ष में दो बार उपस्थित सदस्यों को समूह द्वारा उपहार भी दिये जाते है। सभी सदस्यों के मध्य स्नेह और आत्मीयता की भावना रहती है। आपसी सहयोग से संस्था के प्रतिव्यक्ति को 'सेवा संकल्प' भी प्रतिमाह पहुचांते है। एक-दूसरे का आदर सम्मान इस ग्रुप में प्राथमिक है। उपस्थित सदस्य प्रत्येक माह में आयोजित होने वाली मासिक मीटिंग में गीत-गजल, भजन, कविताएँ, चुटकले तथा प्रेरक प्रसंग सुनाकर माहौल को हंसी-खुशी से भर दिया जाता है।

अन्त में स्वादिष्ट अल्पाहार के बाद अध्यक्ष महोदय की अनुमति से शान्ति पाठ के पश्चात् मीटिंग समाप्त की जाती है।

समूह संख्या -8 (केसरगंज)



पी.डी. अग्रवाल
समूह-8

समूह की मासिक बैठक प्रतिमाह विधिवत रूप से होती है। सभी सदस्यों की सहमति से बैठक के सभापति पद को सुशोभित करने का अवसर सभी सदस्यों को बारी-बारी से दिया जाता है। मीटिंग की कार्यवाही शुरू करने से पहले ईश वंदना, पाँच-पाँच बार ओम ध्यान व हास्य ध्यान तथा 30 बार तालियां बजाकर शरीर की उर्जा को और बढ़ाया जाता है। नये सदस्य के आगमन पर सभी से परिचय कराया जाता है और उसका माल्यार्पण कर स्वागत किया जाता है। जिनका जन्म दिवस आता है उन्हें बधाई कार्ड एवं पुष्पाहार भेट किये जाते है। वे सदस्य 100/- रू. सोसायटी व समूह को स्वेच्छा से योगदान प्रदान करते है। सभी सदस्यों के मध्य स्नेह और आत्मीयता की भावना के साथ आपसी सहयोग से संस्था का सेवा संकल्प दिया जाता है। एक दूसरे का आदर सम्मान इस समूह की प्राथमिकता है। बैठक के दौरान विधी एवं परम्परानुसार कार्य आरम्भ होता है। सर्वप्रथम गत बैठक के कार्यवृत का पठन होता है जिसकी पुष्टि सभी सदस्यों के द्वारा की जाती है।

समूह में अनवरत मासिक बैठक होती रहती है। कोष का लेख जोखा रखा जाता है। मकर संक्रान्ति के अवसर पर दयानन्द बाल निकेतन में 1100/- रू. की राशि तथा सीता गौशाला में 1100/- की राशि का दान किया गया। समूह में फाग महोत्सव आयोजित किया जाता है तथा खाटू श्याम के भजन प्रस्तुत किये गये। गीत संगीत कविता चुटकलों व गानों का दौर चला जिसमें श्री ओ.पी. सिंहल, श्री हीरालाल मैसी, श्री प्रेमचंद सिंहल, श्री अजय मेहरा, श्री पी.डी. अग्रवाल, श्री दयाशंकर गोयल, श्री अशोक कुमार चौहान, श्री मती अन्जु अग्रवाल के द्वारा सुन्दर भजनों की प्रस्तति दी गई। हर वर्ष की भांति पौष बड़ा महोत्सव का भी आयोजन किया गया। समूह के श्री अजय मेहरा एवं श्री सूरज नारायण कपूर खत्री समाज में अध्यक्ष एवं संयुक्त सचिव के पद पर क्रमशः चुनावों में विजयी रहे जिनका माल्यार्पण कर स्वागत किया गया।

स्वच्छता अभियान की कड़ी में इस विषय पर एक परिचर्चा रखी गई जिसमें स्वच्छता अभियान के लिए सभी को जागृत करने के लिए प्रेरित किया और इस नेक अभियान में सभी सदस्य अपना अपना सहयोग प्रशासन को दे रहें है। समूह के वरिष्ठ सदस्य श्री नारायण दास मीरचंदानी एवं श्री मदन मोहन मेहरा के निधन पर इन दोनों सदस्यों के लिए दो मिनट का मौन रखकर ओम शांति का पाठ किया गया व उनको श्रृद्धांजलि अर्पित की गई तथा शोक संतप्त परिवारे को संवदेना पत्र उनके घर पर जाकर उनके परिवारजनो को दिए गये।

दिनांक 19 नवम्बर 2017 को स्व. श्री के.सी. गुप्ता की प्रथम पुण्यतिथि पर समूह की ओर से श्रृद्धांजलि अर्पित की गई। श्री गुप्ता जी के द्वारा किए गये कार्यों की सराहना की गई। सर्वसम्मति से यह भी प्रस्ताव पारित किया गया कि स्वदेशी निर्मित सामान की ही खरीददारी की जायेगी। चीन की किसी भी निर्मित वस्तुओं को कोई भी सदस्य ना तो खरीदेगा और ना ही उसकी बिक्री की जायेगी। समूह संयोजक पी.डी. अग्रवाल के द्वारा वर्ष में आने वाले सभी त्योहारों की सभी सदस्यों को शुभकामना दी जाती है। बैठक के अन्त में स्वाादिष्ट अल्पाहार का आनन्द लेने के तत्पश्चात् समूह संयोजक के द्वारा बैठक में पधारे सभी सम्मानीय सदस्यों का हार्दिक आभार व्यक्त कर सभा की समाप्ति की जाती है।

समूह संख्या - 09 (अलवर गेट)



भगवान दास
समूह-9

समूह संख्या 09 की मार्च 2018 तक कुल सक्रिय सदस्यों की संख्या 28 है। समूह की मासिक बैठक मास के द्वितीय रविवार को सर्दी के मौसम में 4 बजे सायं एवं ग्रीष्म में सायं 5:30 बजे आयोजित की जाती है। (सर्दी में अक्टूबर से मार्च व ग्रीष्म में अप्रैल से सितम्बर मास) कम से कम दो घण्टे का मिलन मार्टिन्डल ब्रिज श्री नगर रोड के पास रेल्वे के मजदूर संघ के कार्यालय में आयोजित की जाती है। अक्सर समूह के 3/4 सदस्य उपस्थित होते है। मासिक बैठक की सूचना समूह संयोजक पूर्व में व्यक्तिगत सदस्यों के निवास पर सेवा संकल्प के साथ

लिखकर दी जाती है। समूह सदस्यों से जनवरी 2018 से समूह को रूपये 500/- व संस्था को 100/- रूपये वार्षिक जमा किये जाते है। पूर्व में यह राशि रूपये 500/- जिसमें समूह के लिये रूपये 400/- व संस्था के लिये रूपये 100/- जन्म दिवस के रूप में जमा करवाये जाते है। वर्ष में जिन सदस्यों ने अपनी जीवन के 75 वर्ष पूर्ण कर लिये उन्हें शॉल, श्रीफल रूमाल व माल्यार्पण कर सम्मान किया जाता है। साथ वर्ष के प्रत्येक मास में जिन सदस्यों का जन्म मास होता है उन्हें बधाई कार्ड व माल्यार्पण कर सम्मान व अल्पाहार दिया जाता है। अल्पाहार करीब रूपये 30/- प्रति व्यक्ति पर खर्च किये जाते है। आय व्यय का लेखा जोखा प्रति माह बैठक पर संयोजक श्री भगवानदास असमादिया द्वारा मास रिपोर्ट में दिया जाता है। वृद्ध जन दिवस पर समूह द्वारा अक्टूबर 2017 में रूपये 1500/- राशि दी गयी।

समूह की मासिक बैठक में सर्व सहमति से अध्यक्ष पद का चयन होता है। उन्हें पुष्प भेंट कर सम्मानित किया जाता है। बैठक का शुभारंभ ईश वंदना से किया जाता है। तीन बार ओम का उच्चारण कियें जाने के पश्चात् एक्यूप्रेशर की तालिया व उच्च स्वर में हास्यासन व पांच बार लम्बी श्वास लेना व छोड़ना विधिवत किया जाता है। सभापति की अनुमति से पिछली बैठक का कार्यवृत पठन किया जाता है। जिसमें आय व्यय का ब्यौरा संयोजक द्वारा दिया जाता है। सभी सदस्यों के अनुमोदन के पश्चात् सभापति के हस्ताक्षर कर स्वीकृति दी जाती है। समूह की बैठक में सेवा संकल्प में आवश्यक सूचनाऐं व निर्देशों से अवगत कर विचार विमर्श कर अग्रिम गतिविधियों के लिये सहयोग सदस्य द्वारा करते है। सदस्यों द्वारा जमा राशि की रसीद दी जाती है तथा संस्था के सहयोग की अलग से संस्था द्वारा रसीद सदस्यों को वितरित की जाती है। संस्था द्वारा 9 नं. पेट्रोल पम्प के पास जांगिड ब्राह्मण बैंक पर मेडिकल कैम्प लगाया जिसमें समूह संयोजक श्री भगवान दास असमादिया ने अपनी सेवाएं दी। संस्था द्वारा वार्षिक सभा व पिकनिक के आयोजन की सूचना सदस्यों को समय-समय पर दी जाती है। सदस्यों ने वार्षिक बैठक व पिकनिक में समुचित आनन्द लिया।

13.8.17 को जवाहर लाल नेहरू मेडिकल कॉलेज के पूर्व प्रशासनिक अधिकारी श्री नारायण सिंह राठौड ने समूह की बैठक में "श्रृद्धा" विषय पर बढ़ा ही सुन्दर उद्बोधन विभिन्न उदाहरणों के साथ किया जिसे सभी ने सराहा। समूह में त्यौहार, गणतंत्र दिवस, स्वाधीनता दिवस पर बैठकों में विशेष रूप से मनाये जाते है। अल्पाहार की भी विशेष व्यवस्था की जाती है। बैठक में पर्यावरण, पौधारोपण, स्वास्थ्य संबंधी एक्यूप्रेशर आदि पर समुचित विचार विमर्श सहयोग हेतु अपील की जाती है।

1 अक्टूबर 2017 को संस्था द्वारा आयोजित वृद्ध दिवस पर समूह के सर्व श्री एस.पी. ओझा व सुगनो लालचन्दानी का 80 वर्ष पूरे होने पर सम्मान किया गया एवं 90 वर्ष पूर्ण होने पर श्री बाबूलाल राणावत व श्रीमती माना देवी पत्नी स्व. श्री रूप सिंह गहलोत का विशेष रूप से स्वामी डॉ. कृष्णानन्द गुरूजी श्री शिवशंकर हेडा, अध्यक्ष एडीए, श्री सुरेश अग्रवाल, अध्यक्ष संस्था ने शॉल व श्रीफल भेंट कर सम्मानित किया। बैठक में नियमित रूप से भजन चुटकले, कविता, स्वास्थ्य पर चर्चा एवं आध्यात्मिक चर्चा की जाती है। हर मास की बैठक में अलग अलग सदस्यों द्वारा सभापति पद सुशोभित किया जाता है। पूर्व संयोजक श्री नन्दकिशोर शर्मा की बीमारी के कारण कार्य करने में असमर्थता प्रकट की। दिनांक 14.05.17 को बैठक में श्री सुरेश अग्रवाल संस्था अध्यक्ष श्री चिंरजीलाल शर्मा महासचिव की सादर उपस्थिति में समूह के सदस्यों ने श्री भगवानदास असमादिया को संयोजक पद पर चयन कर पदासीन किया।

इस वर्ष समूह के सदस्य श्री हरिप्रसाद शर्मा वैद्य जी, श्री कृष्णअवतार खण्डेलवाल, श्री पुष्कर सिंह तोमर व श्री लक्ष्मीनारायण गुप्ता का देवलोक गमन हो गया। समूह द्वारा बैठकों में क्रमश: दो मिनट का मौन रख कर उनकी आत्मा की शांति हेतु मौन रखकर प्रार्थना की गयी।

समूह संख्या - 10 (पालबीछला)



कल्याणराय शर्मा
समूह-10

समूह की मासिक बैठक प्रतिमाह नियमित रूप से होती है। 27 अप्रैल 2017, गुरूवार को शांति विद्या निकेतन उच्च प्राथमिक विद्यालय, विनय नगर के संस्थापक श्री मनोहर लाल श्रीवास्तव ने जो ग्रुप के वरिष्ठ सदस्य है, ने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सरोज श्रीवास्तव के जन्मदिवस 26.4.1936 के उपलक्ष में अपनी संस्था के भवन में सभी उपस्थित सदस्यों का आदर सत्कार व अल्पाहार

कराते हुए मीटिंग का श्रेय लिया। प्रति माह होने वाली मीटिंग के लिए अपने शाला भवन को नि:शुल्क उपलब्ध कराने का वादा किया। श्री सुरेश जी अग्रवाल ने मीटिंग की अध्यक्षता करते हुए इन्हें धन्यवाद दिया। रू. 100/- संस्था को भेंट किए। संयोजक कल्याण राय शर्मा ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। हमेश की भांति सर्व श्रीमती आशा गुप्ता, मनोरमा गोयल, पुष्पा कच्छावा, सरोज श्रीवास्त, पुष्पा राव व सर्व श्री ओमप्रकाश चौरसिया, लक्ष्मण सिंह अखावत, जसवन्त सिंह चौहान, रामकरण राव आदि के प्रति आभार व्यक्त किया जो अपनी साहित्यिक व सांस्कृतिक रूचि के फलस्वरूप अपना योगदान देते हैं।

22 मई 2017 को भी मीटिंग इसी उत्साह व आनन्द के साथ शाला भवन में मनाई गई। स्वागत-सत्कारकर्त्ता श्री चौरसिया लाभार्थी रहे। जून माह की मीटिंग 11 जून 2017, रविवार को सम्पन्न हुई लाभार्थी श्री त्रिलोक चन्द टांक रहे। शादी की वर्षगांठ की खुशी में श्री सुरेश जी अग्रवाल, श्रीमती राधिका अग्रवाल व सभी सदस्यों ने भाग लिया। 11 जुलाई 2017, मंगलवार को श्री रामकरण राव स्वागत-सत्कार लाभार्थी रहे। 3 जुलाई 1944 उनके जन्मदिन की खुशी के हम सहभागी रहे। 25 जुलाई 2017 को संयोजक ने अपने निवास स्थान पर मीटिंग/हवन व सहभोज का आयोजन अपने जन्मदिन के अवसर पर रखा। 13 अगस्त 2017, रविवार को श्रीमती मंगली बारिया धर्मपत्नि श्री पुखराज बारिया ने 8.8.56 अपने जन्म दिवस की याद में सभागियों का सत्कार-स्वागत किया। 10 सितम्बर 2017, रविवार को मीटिंग शाला भवन में श्री ओमप्रकाश कच्छावा ने जन्म दिवस 5 सितम्बर 1938 की याद में मीटिंग में लाभार्थी रहते हुए अपना योगदान दिया। शॉल ओढ़ाकर उन्हें सम्मानित किया गया। विशेष मेहमान भारत सरकार द्वारा नामित श्री संतोष कुमार गौतम ने ग्रुप के कार्यक्रम की प्रशंसा की। 8 अक्टूबर 2017 की मीटिंग श्री बी.सी. पंवार ने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती आशा पंवार के जन्म दिवस 15.10.1957 की खुशी में सभी को आमन्त्रित किया। 4 सदस्यों को जन्मदिन, प्रत्येक ने 100-100 रू. संस्था को भेंट किये। श्री धर्मीचन्द जैन के मुख्य आतिथ्य में मीटिंग हुई, उन्होंने अपनी रचनाएँ सुना कर साहित्य का रसास्वादन कराया। 12 नवम्बर 2017 की मीटिंग शाला भवन में ही रखी गई जिसके लाभार्थी श्री लक्ष्मण सिंह अखावत रहे। 2 नवम्बर 1954, जन्मदिन की खुशी में सभी सम्मिलित हुए। श्री बी.सी. कपूर की अध्यक्षता में मीटिंग रखी, श्री के.के. गौड़ विशिष्ठ अतिथि रहे। श्री गौड़ एवं श्री मदनलाल बारिया की जोशीली रचनाओं का आनन्द उठाया। 17 दिसम्बर 2017 मीटिंग की अध्यक्षता श्रीमती मनोरमा गोयल द्वारा की गई। 21 जनवरी 2018, रविवार को शाला भवन में ही मीटिंग आयोजित की गई। श्री त्रिलोक चन्द टांक के जन्मदिवस 11 जनवरी 1953 स्वागत-सत्कार लाभार्थी रहे। मुख्य अतिथि श्री गालव जी व अध्यक्षता का श्री सुरेश जी अग्रवाल ने की राजस्थान सरकार के वरिष्ठ नागरिक व संस्था के अध्यक्ष ने कहा कि मीटिंग में ऐसे पारिवारिक व प्रसन्नता दायक वातावरण को देखकर बहुत प्रसन्नता हो रही है। सभी को अपनी शुभकामनाएं दी। 21 फरवरी 2018 को मीटिंग श्री कृष्ण भार्गव का जन्म दिन 24 फरवारी 1943 होने की खुशी में सभी ने उत्साह के साथ भाग लिया व सत्कार के लाभार्थी रहे। 30 मार्च 2018, शुक्रवार को मीटिंग श्री सूरजकरण जैन वरिष्ठ सदस्य ने अपने जन्म दिन 17 मार्च 1935 की याद में सत्कार लाभार्थी रहते हुए योगदान दिया, अध्यक्ष श्री सुरेशचन्द अग्रवाल ने अपने उद्बोधन में ग्रुप होने वाले कार्यक्रमों व लाभार्थियों का हृदय से आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद दिया। समूह संयोजक ने सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया।

समूह संख्या - 11 (गुलाब बाडी)



मानकरण अग्रवाल
समूह-11

समूह संख्या 11 में कुल 92 सदस्य है। इस समूह की बैठक प्रतिमाह समिति भवन में आयोजित होती है। प्रतिवर्ष वार्षिक सदस्यता शुल्क 100/-रू. लिये जाते है। समूह के सदस्यों द्वारा अपने जन्म दिवस पर केन्द्र व समूह को भेंट स्वरूप राशि दी जाती है। इस वर्ष से केन्द्र में सदस्यता शुल्क 100/-रू. प्रति सदस्य कर दिया है। प्रतिमाह जिनका जन्मदिन होता है उनको माल्यापण कर बधाई कार्ड देकर सम्मानित किया जाता है, तथा इनके द्वारा

प्रतिमाह स्वरूचि भोज का आयोजन किया जाता है। प्रतिवर्ष माह दिसम्बर में 75 वर्ष पूर्ण करने पर सदस्यों को सम्मानित करते है। जिसमें शॉल ओढ़ाकर, प्रशस्ति पत्र, श्रीफल तथा मार्ल्यापण कर स्वागत सम्मान करते है। समय-समय पर 26 जनवरी, मकर संक्रान्ति, 15 अगस्त, शिवरात्रि, होली व दीपावली स्नेह मिलन मनाया जाता है तथा बड़े नेताओं को याद कर व उनके बारे में बताया जाता है। नये सदस्य बनाने में समूह के सदस्यों द्वारा प्रयास किये जाते है। तथा देहान्त होने पर सदस्य को श्रद्धाजंलि दी जाती है। प्रतिमाह मनोरंजन की कडी में हाउजी, चुटकले, धार्मिक प्रवचन व ज्ञानवर्धक बातें की जाती है। जिसमें सर्व सदस्यों को मौका मिलता है। जिसकी तबीयत खराब होती हैं उसके घर जाकर कुछ सदस्यगण उसका हाल पूछने जाते है।

समूह सं.-12 (आदर्श नगर)



मदन रवि
समूह-12

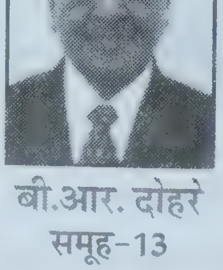
आदर्श नगर समूह अपने आप को समूह न समझकर एक परिवार के रूप में संगठित है, इस समूह में लगभग 210 सदस्य है। जिसमें लगभग 100 सदस्य अपने आप को एक दूसरे से लगा समझते हैं, यह समूह आदर्श नगर, विज्ञान नगर, पंचवटी, जोन्सगंज, पर्वतपुरा, माखुपुरा, गुलाबबाड़ी, बिहारी गंज, श्रृंगार चौरी तक के सदस्य इसमें समाये हुए हैं, इस वर्ष भी दो सदस्यों की स्वर्गवास से कमी महसूस रही, समस्त सदस्यों ने श्रद्धांजलि अर्पित की गई, ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें, स्वर्गवासी सदस्य श्रीमती सत्यवती शर्मा, दो वर्ष पूर्व, श्रीमती सत्यवती ने ग्रुप द्वारा संचालित प्याऊ के लिए एक वाटर कूलर मय फिल्टर के लिए भेंट किया था जो कि सुचारू रूप से कार्यरत है, दूसरे श्री गोपाल लाल जादम, जिसकी मृत्यु रेल दुर्घना में हुई।

समूह की नियमित मासिक बैठक हो रही है, मनोरंजन एवं समूह में सदस्यों के विचार गोष्ठी और समस्याओं पर भी नियमित विचार होता रहा और सदस्यों की भागीदारी पर नियमित चर्चा पर ध्यान दिया जाता है, इस वर्ष सभा के लिए स्थान परिवर्तन किया गया है, सभा के लिए स्थान मुकुन्द गार्डन, नसीराबाद रोड़, आदर्श नगर, अजमेर में सभा का आयोजन होता है। इस स्थान के लिए श्रीमती संतोष भार्गव का विशेष धन्यवाद है, कि उन्होंने मिटिंग के लिए स्थान देकर सदस्यों को लाभान्वित किया है।

इस वर्ष 8 सदस्यों के 75 वर्ष आयु पूर्ण होने पर सम्मानित किया गया, सम्मानित सदस्यों में 2 महिला सदस्य एवं 6 पुरूष सदस्य रहें, सम्मान में 75 वर्ष पूर्ण होने पर उन्हें शाल उठाया गया और स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया और सभी की ओर से सतायु की कामना की गयी। इस बार जनवरी 18 की सभा मे राजस्थान वरिष्ठ नागरिक प्रकोष्ठ के अध्यक्ष श्री प्रेम नारायण गालय को अध्यक्षता में सभा का आयोजन किया गया। उन्होनें सभा में अध्यक्ष पद पर कहा कि मैं इस सभा से अत्यन्त प्रभावित हुआ हूँ और भविष्य में सभा प्रेरणात्मक गतिविधि को सहारना और करूँगा और राजस्थान सरकार से कोशिश करूँगा की अजमेर में सीनियर सिटीजन सोसायटी के लिए जमीन देकर सोसायटी का अपना भवन हो ऐसी कोशिश करूँगा। सभा में सीनियर सिटीजन के अध्यक्ष और महासचिव उपस्थित रहे।

समूह में प्रत्येक सभा के पश्चात सदस्यों के सहयोग से भोजन व्यवस्था लगातार बनी रहती है। समूह सहयोग से लगातार 10 वर्ष से नसीराबाद रोड़, आदर्श नगर, अजमेर में बस स्टेण्ड पर प्याऊ की व्यवस्था सुचारू रूप से चल रही है, प्याऊ पर दो वॉटर कूलर मय वाटर फिल्टर कार्यरत है। साथ ही एक सेविका पानी पिलाने के लिए कार्यरत है, और वॉटर कूलर के 2 नल निरंतर बाहर की ओर कार्यरत है, इसकी देखरेख श्री हरी प्रसाद तिवारी, श्री एस.सी. शर्मा और श्री रामस्वरूप शर्मा, श्री पी.सी. जैन ध्यान रखते है, और सभी सदस्यों का आर्थिक सहयोग निरंतर प्राप्त है। इस प्रकार यह समूह निरंतर सेवारत है, और आशा करता हूँ भविष्य में भी सुव्यवस्था बनी रहेगी।

समूह सं. - 13 (भजनगंज)



बी.आर. दोहरे
समूह-13

प्रत्येक मासिक बैठक में ईश प्रार्थना और तीन बार ऊँ का उच्चरण - 20 बार तालियाँ - 3 बार अट्टाहस कार्यवाही शुरू की जाती है। समूह से अध्यक्ष चुना जाता है। बैठक को समूह संयोजक संचालित करता है। बी.आर.दोहरे

18 साल से तन-मन-धन से सेवायें दे रहे है। यह एक बहुत बड़ी इकाई के रूप में कार्यरत है। इस क्षेत्र में भजनगंज-तानानीनगर-बिहारीगंज-हनुमान नगर-श्रृंगार चँवरी-अंगीरा नगर-धाननाड़ी रोड़-मेयो लिंक रोड़-धोला भाटा रोड़-गोवा कोलोनी-नसीराबाद रोड़ इत्यादि शामिल है। 2017-2018 में संस्था से (20) नये सदस्यों को जोड कर उनका सम्मान किया गया। 2017-2018 में (13) सदस्यों का निधन हो गया। समूह में कार्यकारिणी के (5) सदस्य हैं। अध्यक्ष (1) श्री सुरेश अग्रवाल (2) श्रीबलवीर सिंह गहलोत वित्त सचिव श्रीमती राधिका अग्रवाल महिला सदस्य चिकित्सा प्रभारी श्री चिरंजीलाल शर्मा संयोजक श्री वी.आर.दोहरे यह एक बड़े गौरव की बात है। इस समूह से संस्था को 2017-18 में इस प्रकार सहायता राशि प्रदान की।

(1)	जन्मदिवस भेंट	20328/-
(2)	वृद्धजन दिवस	6200/-
(3)	नये सदस्य	5700/-
(4)	चिकित्सा शिविर	2651/-

समूह की बैठक मनुहार समारोह स्थल नसीराबाद नि:शुल्क उपलब्ध कराने के लिये श्री सेवाराम चौहान धन्यवाद के पात्र है। सदस्यों के द्वारा मनुहार समारोह स्थल यदि सी.सि.यो. का सदस्य बुक करवाता है तो उसको 10% डिस्काउण्ट रियायत दी जाती है। हाउजी का खेल बैठक के समय खेला जाता है। श्रीमती राधिका अग्रवाल, श्री मनोहरलाल, श्रीमती कैलाश पाराशर, श्री पी.के. शर्मा, श्री बलवीर सिंह, श्री चिरंजीलाल शर्मा खेल खिलाते हैं। समूह में सदस्यों की संख्या190 है।

मनोरंजन की कड़ी में भजन-कीर्तन, गीत मारवाड़ी, चुटकले। स्वास्थ संबंधी जानकारी, बेटी बचाव बेटी पढ़ाओ मेडीटेशन - योग आदि किया जाता है। यह संस्था वृद्धिजनों के कल्याण हेतु सबसे बड़ी संस्था है। बैठक में 30 से 50 तक सदस्य शामिल होते है। इन सभी को नाश्ता सदस्यों के सहयोग से और संयोजक के प्रयास से कराया जाता है। यह सामाजिक संस्था प्रेम भाई चारा से चलती है किसी एक जाति विशेष की संस्था नहीं है। संयोजक के अथक प्रयास से समस्त गतिविधियाँ भाई चारा- स्नेह भरा वातावरण तैयार किया जाता हैं।

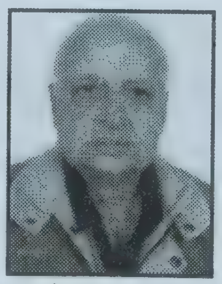
समूह संख्या - 14 (मेयो लिंक रोड)



श्रीकृष्ण शर्मा
समूह-14

समूह-14 की मासिक बैठक प्रत्येक माह के अन्तिम रविवार प्रात: 10.00 बजे वृद्धजन सत्संग भवन (दिवा केन्द्र) रघुनाथ मन्दिर स्थित प्रांगण में होती है, बैठक का प्रारम्भ ईश वन्दना, ओ३म उच्चारण, करतल ध्वनि एवं हास्य योग से होता है। बैठक में सर्व प्रथम इस माह में जन्में सदस्यों को बधाई कार्ड देकर दीर्घायु एवं शुभकामनाऐं वरिष्ठतम पदेन अध्यक्ष द्वारा दी जाती है। सभा में उपस्थित सदस्यों द्वारा सम सामयिक विषय पर चर्चा एवं प्रश्नोत्तर से समस्या समाधान किया जाता है। सभा समापन अध्यक्षीय आशीर्वचन से होता है।

समूह संख्या - 15 (रामगंज)



जे.पी. शर्मा
समूह-15

संस्था का अजमेर शहर का सबसे बड़ा समूह है, जिसमें वर्तमान में 445 सदस्य है। सभी सदस्य समूह कार्यक्रमों में बढ़-चढ़ कर भाग लेते है व आमोद-प्रमोद के साथ सुख-शांति व भाईचारे का अनुभव करते है। यहाँ कि मासिक बैठकों में औसत 90-100 के बीच उपस्थिति रहती है, जो कि समूह की सक्रियता एवं कार्यशैली के प्रति संतोष प्रकट करती है। उपरोक्त दोनों मापदण्डों में संस्था के किसी भी समूह से यह समूह अग्रणीय है। समूह के पास दिवा केन्द्र व मासिक बैठकों के लिये स्थायीभवन उपलब्ध है।

मासिक बैठकों में माह में जन्मे समूह सदस्यों का जन्मदिन बधाई व पुष्प प्रदान कर धुमधाम से मनाया जाता है। स्वेच्छा से जन्मदिन सहयोग राशि समूह/केन्द्र को भेजी जाती है जो लगभग 500-600 रू. प्रति माह औसतन है।

सदस्यगण सांस्कृतिक एवं मनोरंजन कार्यक्रमों के रूप में

बैठक में भजन गीत, कविताएँ-चुटकले, प्रश्नोत्तरी, आप बीती घटनाएं बताते है। जिन्हें प्रोत्साहन रूप में पुरस्कार भी दिये जाते है। संस्था की अन्य गतिविधियों के अन्तर्गत आर्थिक सहयोग के रूप में वृद्धजन दिवस, स्मारिका में विज्ञापन हेतु काफी अच्छी धनराशि एकत्रित कर उचित सहयोग दिया जाता है।

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी 75 वर्ष पूर्ण करने वाले हीरक जयन्ती (अमृत-महोत्सव) 26 जनवरी 2018 को दिवा केन्द्र प्रागंण में सहभोज कार्यकारिणी के साथ मनायी गयी। जिसमें सदस्यों को समूह द्वारा शॉल, श्रीफल, रामचरित मानस पुस्तिका दी गयी। प्रत्येक जन्मदिन व अन्य सुअवसरों पर स्वरूचि भोज/अल्पाहार आयोजित किये जाते है।

इस वर्ष की समूह द्वारा आयोजित वर्षकालीन गोठ पापड़ के हनुमानजी, जयपुर पर आयोजित की गयी। इसमें 2 बसों द्वारा 90 सदस्यों की उपस्थिति रही। इस गोठ में बारात जैसा जगह-जगह स्वागत व अल्पाहार की भी व्यवस्था की गयी। सदस्यों ने इसे ऐतिहासिक बना दिया। प्रत्येक मासिक बैठकों में शहर के बाहरी विशिष्ट प्रतिनिधि, डाक्टर, साहित्यकार, अर्थशास्त्री, धर्माचार्य जनप्रतिनिधि भी आमंत्रित किये जाते है।

समूह के पास एक वाचनालय जो ब्यावर रोड़ (प्राइम लोकेशन) पर गतिशील है। इस दिवा केन्द्र में तीन हिन्दी अखबार, एक अंग्रेजी अखबार प्रतिदिन आते है। सैकड़ो की तादाद में धर्म-पुस्तिका अपलब्ध है। प्रतिदिन 20-30 सदस्य यहाँ आकर अपनी उपस्थिति देते है। समूह के पास अपना स्वंय का एक बहुत ही अच्छा कैरम बोर्ड व शतरंज भी है, जिससे सदस्य अपना मनोरंजन के साथ अभ्यास भी करते है। यह सुबह-शाम 3-3 घण्टे खुलता है। सोसायटी से इस दिवा केन्द्र के लिये 400रू. प्रतिमाह का अंशदान भी दिया जाता रहा है।

समूह के 2-3 सदस्य प्रतिदिन पूरे मास पेंशनर्स सेवार्थ अपनी सेवाएँ 'पंजाब नेशनल बैंक' में देते है। इसी प्रकार रेल्वे अस्पताल में समूह के 2 सदस्य मरीजों की सेवार्थ मैंगजीन, फल-वितरण आदि कर अपनी सेवाएँ देते है।

संयोजक श्री जे.पी.शर्मा समूह का संचालन सफलतापूर्वक कर रहे है। इनकी मधुर व्यवहार, कार्यकुशलता की वजह से इतने बड़े ग्रुप के होने के पश्चात् भी बिना विघ्न बाधा के समस्त कार्य हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हो रहे हैं। इनकी निष्ठा कर्त्तव्य परायणता व समर्पण की भावना के कारण विरोध के सुर सदैव शान्त हुए हैं। यह इनके व्यक्तिगत एवं सुमधुर व्यवहार का ही परिणाम है। इन्होंने समूह की राजनीति से भी अलग होना चाहा जिसे सदस्यों ने नहीं होने दिया। समूह ऐसे कर्मठ कार्यकर्ता को पाकर गौरवान्भूति महसूस करता है।

समूह सं. 16 (फॉयसागर रोड)



रतनलाल ऐरन
समूह-16

समूह का कार्यक्षेत्र पुष्कर रोड़, फायसागर रोड़, बी.के.कौल नगर, ज्ञान विहार, रामनगर, महावीर कोलोनी, दयानंद कोलोनी, नृसिंहपुरा, हरीभाऊ उपाध्याय नगर (मुख्य) आदि विस्तृत फलक में फैला हुआ है। सभी क्षेत्रों के विद्वजन, विभिन्न समाजों के पदाधिकारी आदि इस समूह के सक्रिय सदस्य है। समूह संयोजक श्री रतनलाल ऐरन के संयोजन में समूह की सभा नियमित रूप से प्रत्येक माह आयोजित की जाती है। मासिक सभा के लिये समूह सदस्य श्री भागवत जैन व श्रीमती रमणीक जैन द्वारा स्थान उपलब्ध कराने के लिये समूह उनके प्रति आभारी है।

समूह की नियमित सभाओं में सदस्यों के जन्मदिन पर उनको पुष्पहार पहनाकर, बधाई पत्र देकर जन्मदिन की शुभकामनायें दी जाती है। समसामयिक विषयों, स्वास्थ्य पर चर्चा की जाती है और वरिष्ठ जनों की समस्या-समाधान पर भी विचार-विमर्श किया जाता है। मनोरंजन के अंतर्गत भजन, चुटकले, गीत, प्रेरक प्रसंग सदस्यों द्वारा प्रस्तुत किये जाते हैं। हाऊजी का खेल भी खिलाया जाता है। होली महोत्सव, दीपावली , अन्नकूट, पिकनिक आदि भी नियमित रूप से आयोजित किये जाते हैं। वर्ष 2017 में सदस्यों द्वारा 9025/- रू. सोसायटी को जन्मदिन भेंट के रूप में दिये। गौशाला में हरा चारा, गुड़, दलिया वगैरह का भी योगदान दिया है। स्व. श्री श्याम सुंदर जी फतेहपुरिया की प्रेरणा से शरद पूर्णिमा के अवसर पर नि:शुल्क अस्थमा निवारण

शिविर का आयोजन किया जहां औषध युक्त खीर का वितरण किया जाता है। 75 वर्ष से अधिक उम्र के 4 वरिष्ठजनों को शाल औढ़ाकर व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। समूह सदस्य श्री रामेश्वर लाल सुगंध स्वनिर्मित 'अमृत पिल्स'व औषधीय तेल का निःशुल्क वितरण मासिक सभाओं में करते रहे हैं। समूह की प्रगति में सदस्यों का सद्‌भाव मय सहयोग व सक्रिय भागीदारी रहती है।

समूह संख्या 17 (पुष्कर रोड)



आर.सी. माहेश्वरी
समूह-17

इस समूह के सदस्य पुष्कर रोड़, हरिभाऊ विस्तार मुख्य, प्रगति नगर, कोटड़ा आवासीय , रीजनल कॉलेज के आसपास व सूर्य नगरी तक के आवासी व कुछ अन्य क्षेत्रों के सदस्य है।

श्री आर.सी.माहेश्वरी, समूह संयोजक के संयोजकत्व में ग्रुप की मीटिंग जय अम्बे सेवा समिति वृद्धाश्रम, दाहरसेन स्मारक, मणीपुंज व अन्य पर्यटक स्थलों पर आयोजित की जाती है। समूह के सदस्य सोसायटी के कार्यक्रमों - वृद्धजन दिवस, होली मिलन समारोह, पिकनिक व साधारण सभा आदि में बढ़चढ़ कर भाग लेते हैं।

सोसायटी द्वारा शुरू की गइ सहयोग राशि स्कीम के तहत अभी तक (जनवरी से जून तक) 7600/- रूपये का सहयोग दिया गया हैं। ग्रुप द्वारा जन्म दिवस राशि 500/- या अधिक के लिए ग्रुप प्रयासरत है। ग्रुप स्मारिका हेतु विज्ञापन हेतु भी प्रयासरत है पिछले साल 2500/- सहयोग कराया था।

इस वर्ष समिति के 3 सदस्यों श्री चन्द्रसेन गहलोत, श्री पुखराज पुरोहित व श्रीमती सुगनी देवी का 80 वर्ष पूर्ण होने पर जवाहर रंगमंच पर सम्मान हुआ। 75 वर्ष पूर्ण होने पर समूह द्वारा उसी माह में विधिवत सम्मान किया जाता है। समूह के सदस्य श्री आर.सी.माहेश्वरी, जे.एन. शर्मा, चन्द्रसेन गहलोत, समीरमल जैन, एच.एन.माथुर, आर.के.चतुर्वेदी व श्री गोपीचंद अग्रवाल व बहादुर सिंह भाटी नियमित रूप से वृद्धाश्रम में सेवाएँ प्रदान करते हैं। सोसायटी के उपरोक्त सदस्य जय अम्बे सेवा समिति के सचिव श्री के.के.खन्ना के निर्देशन में ब्लड डोनेशन कैम्प, स्कूलों में यूनिफार्म, स्टेशनरी वितरण, गाँवों में जानवरों को चारा व पीने के पानी हेतु टैंकर भिजवाने आदि के कार्यों में सहयोग करते हैं। समिति के श्री एस.के.अरोरा द्वारा योगाभ्यास द्वारा स्वस्थ्य जीवन जीने के गुर सिखाते हैं। वर्तमान में ग्रुप की सदस्य संख्या 195 हैं। ग्रुप के 6 सदस्यों ने स्मारिका हेतु लेख भेजे हैं। समिति के सदस्य श्री आर.के.गोयल, श्री एच.के.एस. व श्री एस.एस.विजय वर्गीय व श्री मुन्नालाल जैन लॉयंस क्लब व महावीर इण्टर नेशनल जैसी संस्थाओं द्वारा दिये गये सामाजिक दायित्व भी निभा रहे हैं।

समूह संख्या - 18 धोलाभाटा



के.के. गौड़
समूह-18

समूह संख्या 18 गांधीनगर, तिलकनगर, पूजा मार्ग, बसंत विहार कॉलोनी, कृष्णा कॉलोनी, लक्ष्मी बाई नगर, बाबा रामदेव मन्दिर एवं सम्पूर्ण धोला भाटा परिसर तक फैला हुआ है।

सदस्यता - कुल सदस्य - 179,

सक्रीय सदस्य - 121

नये सदस्य जुड़े - सितम्बर 2017 में 10 सदस्य, नवम्बर 2017 में 14 सदस्य, मार्च 2018 में 02 सदस्य कुल 26 सदस्य जुड़े।

मीटिंग - कुल मीटिंग 11 (जून माह में मीटिंग नहीं हुई)

प्रत्येक मीटिंग ईश वंदना, ओम उच्चारण, हास्य आसन, तालीवादन द्वारा प्रारम्भ की जाती है। जन्मदिन के उपलक्ष्य में सदस्यों को तिलक व माल्यार्पण तथा बधाई कार्ड भेंटकर दीर्घआयु की प्रार्थना की जाती है। नये सदस्यों के उपस्थित होने पर तिलक व माल्यार्पण कर स्वागत किया जाता है। तथा नये सदस्यों द्वारा परिचय दिया जाता है। सांस्कृतिक कार्यक्रम में भजन, गीत, कविता, चुटकले व गाने, प्रेरक प्रसंग आदि सुनाये जाते है। प्रत्येक माह में यदि किसी सदस्य अथवा परिजन का स्वर्गवास होने पर उठावने वाले दिन शोक - सन्देश प्रेषित किया जाता है, तथा समूह की बैठक में उनकी आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखकर श्रदांजली अर्पित की जाती है। प्रतिमाह बैठक के अन्त में समूह सदस्यों द्वारा अल्पाहार का आयोजन किया जाता है, तथा अध्यक्ष द्वारा

धन्यवाद प्रेषित किया जाता है।

उपस्थिति - प्रतिमीटिंग 45 सदस्यों की रही।

केन्द्रीय सहयोग - कुल 18151/-रू. केन्द्र को सहयोग राशि के रूप में दिये गये। जिनका विवरण निम्न प्रकार है-

जन्मदिवस सहयोग राशि 7251/-रू., वार्षिक सहयोग राशि 4300/-रू., आजीवन सदस्यता राशि 7100/-रू. तथा प्रवेश शुल्क राशि 2500/-रू.।

ग्रुप कॉडिनेटर - संयोजक श्री वी.पी.कपूर ने वनमैन व वनपोस्ट को ध्यान में रखते हुये 21 जुलाई 2017 को ग्रुप संयोजक का चार्ज श्री के.के.गौड को देने का प्रस्ताव रखा, जिसे सभी उपस्थित सदस्यों ने करतल ध्वनि से स्वागत किया तथा 21 जुलाई 2017 को श्री के.के.गौड ने निरविरोध निर्वाचित होकर समूह संयोजक का कार्यभार ग्रहण कर लिया।

समारोह- इस वर्ष नियमित बैठकों के अलावा निम्नलिखित समारोह आयोजित किये गये -

1. 15 अगस्त 2017 : स्वतन्त्रता दिवस को हर्ष व उल्लास के साथ धोलाभाटा चौराहे पर ध्वजारोहण किया गया तथा सदस्यों द्वारा राष्ट्रगीत सुनाये गये तथा बिस्कुट व टॉफी का वितरण किया गया।

2. वर्षाकालीन पिकनिक :

2 सितम्बर 2017 को बिडला सिटी वॉटर पार्क में पिकनिक का आयोजन किया गया। इसमें 84 सदस्यों व परिजनों ने बहुत हर्ष उल्लास के साथ पिकनिक में भाग लिया तथा वॉटर पार्क का आनन्द लिया। वहीं पर अल्पाहार व भोजन भी किया। 70 वर्ष से ऊपर सदस्यों को बग्गी में बैठाकर अन्य सदस्यों ने बग्गी का संचालन कर सम्मान दिया।

3. वृद्धजन दिवस :

वृद्धजन दिवस के उपलक्ष्य में श्री के.के.गौड़, श्री वी.पी.कपूर, श्री महेश चन्द्र गुप्ता, श्री अर्जुन डोडानी, श्रीमती बीना रामसिंघानी एवम् सुश्री सुरेन्द्र कुमारी द्वारा प्रत्येक सदस्यों ने 500/-रू. की राशि केन्द्र को भेंट स्वरूप दिये।

4. अमृत महोत्सव :

28 दिसम्बर 2017 को समूह द्वारा 75 वर्ष की उम्र पूरी करने वाले सदस्यों (श्री वी.पी.कपूर, श्री तेजसिंह कच्छावा, श्री विनय कुमार भारद्वाज व श्री चन्द्रप्रकाश बसंल) को तिलक व माल्यार्पण कर श्रीफल व शॉल पहनाकर सम्मानित किया गया, इसमें

अजमेर की कार्यकारणी व समूह संयोजक भी उपस्थित हुये। मीटिंग के बाद स्वादिष्ट भोजन का सभी ने आनन्द लिया। उस दिन सदस्यों की उपस्थित 98 रही।

26 जनवरी 2018 :

राष्ट्रीय समारोह गणतंत्र दिवस के अवसर पर 225 सदस्यों व परिजनों की उपस्थिति में धोलाभाटा चौराहे पर श्री हरिशकंर सारस्वत जी द्वारा झण्डारोहण किया गया तथा भव्य रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन हुआ।इस समारोह की महत्वपूर्ण विशेषता यह रही कि ग्रुप की सभी महिला सदस्यों ने एक ही तरह की तिरंगे की वेशभूषा में उपस्थित होकर राष्ट्रीय समारोह में समा बांध दिया।

पोष बड़ा कार्यक्रम :

26 जनवरी, गणतंत्र दिवस के राष्ट्रीय पर्व पर पोषबड़ा कार्यक्रम धोलाभाटा चौराहे पर आयेजित किया गया, जिसमें दाल के बड़े व मीठे गुलगुले का प्रशाद करीब 1200 से अधिक व्यक्तियों को वितरण किया गया। राष्ट्रीय पर्व पर इस आयोजन की सभी ने बहुत प्रशंसा की। पोषबड़ा आयोजन का सम्पूर्ण खर्च समूह के एक सदस्य द्वारा वहन किया गया।

विशाल नि:शुल्क चिकित्सा शिविर :

धोलाभाटा समूह द्वारा दिनांक 18 मार्च 2018, रविवार को राजकीय सेटेलाइट चिकित्सालय एवम् जे.एल.एन. मेडिकल कॉलेज के संयुक्त तत्वाधान में ऑल सेन्ट स्कूल, धोलाभाटा के प्रागंण में विशाल नि:शुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया इसमें 583 मरीजों का नि:शुल्क उपचार किया गया। नि:शुल्क दवाई वितरण, ब्लड की जांच व ई.सी.जी की गई। शिविर में सेटेलाइट चिकित्सालय के 6 डॉक्टर, मेडिकल कॉलेज के 4 डॉक्टर व राजकीय चिकित्सालय के 1 डॉक्टर ने सेवाएँ दी। अजमेर के इतिहास में किसी भी नि:शुल्क चिकित्सा शिविर में जे.एल.एन. मेडिकल कॉलेज के डॉक्टरों ने पहली बार भाग लिया। सबसे महत्वपूर्ण बात यह रही कि इस चिकित्सा शिविर के सम्पूर्ण खर्चे, समूह के सदस्यों व धोला भाटा के जनप्रतिनिधियों द्वारा

वहन किये गये तथा सम्पूर्ण खर्च व्यय करने के बाद भी 10500/- रू. समूह के पास शेष बच गये। इस बार भी समूह की महिला सदस्यों का अभूर्तपूर्व योगदान रहा जो कि बहुत ही धन्यवाद के पात्र है।

इस वर्ष समूह-18 ने सफलता के नये किर्तिमान स्थापित किये है। सदा की तरह, पुरूष सदस्यों का योगदान तो रहा ही, पर समूह की महिला सदस्यों का असीम योगदान रहा। कुल मिलाकर, समूह 18 के सभी सदस्यों का हार्दिक आभार। कृपया ऐसा ही जोश व उत्साह आने वाले वर्षों में भी बनायें रखें।

समूह संख्या -20 (नाका मदार)



राजेन्द्र शिवहरे
समूह-20

वर्ष के दौरान 12 बैठकें नियमित रूप से सामुदायिक भवन, मधुबन कॉलोनी, नाका मदार में आयोजित हुई। इनमें औसत उपस्थिति 50 रही। वर्ष में 12 नये सदस्य बनें।

संस्था द्वारा दिनांक 1 अक्टूबर 2016 को मनाया जाने वाला वयोवृद्ध सम्मान समारोह 12 फरवरी 2017 को मनाया गया। इसके लिए समूह ने संस्था को रू.9,000/- (रू.नौ हजार) का आर्थिक योगदान दिया। सहयोग देने वाले सदस्य सर्वश्री एम.एस.सिंगला, एस.पी.मित्तल, बी.आर.सांघी, बी.आर.मोंगा, के.एल.राजपूत, विनोद कुमार माथुर, सुरेश चन्द गुप्ता, रामेश्वर सिसोदिया, गोरधन वरयानी, यू. तुकाराम, महेन्द्र कुमार पवाँर, बी.के. वाघवा, एच.एन.भटनागर, सुनिल मोहन जौहरी, सुरेन्द्र नाथ कपूर और श्री राजेन्द्र शिवहरे रहे। समारोह में समूह के श्री कैलाश चन्द पहाड़िया को सम्मानित किया जाना था, परन्तु वह अस्वस्थता के कारण अनुपस्थित रहे। उन्हें समूह की जून मास की बैठक में शॉल ओढ़ा कर और अभिनन्दन पत्र देकर सम्मानित किया गया।

मार्च मास की बैठक "होली स्नेह मिलन" के रूप में बड़े ही हर्षोउल्लास के साथ सम्पन्न हुई। संत डॉ.कृष्णानन्द जी, सेंसिट की अधिशाषी परिषद् के समस्त सदस्य, समूह संयोजकगण और विभिन्न समूहों के 8 अतिथि उपस्थित हुए। श्री एम.एस.सिंगला की आयु 85 वर्ष एवं 75 वर्ष की आयु वाले सदस्य सर्व श्री बी.आर.सांघी, एस.पी.मित्तल और श्रीमती पियूष लता क्षत्री को गुरूवर द्वारा माल्यार्पण कर, शॉल, श्रीफल और स्मृति चिन्ह देकर दीर्घायु होने और उत्तम स्वास्थ्य की कामना करते हुए सम्मानित किया गया।

समूह द्वारा सदस्यों के मध्य कैरम प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें कैरम एकल में श्री मुकेश भार्गव विजेता और श्री राजेन्द्र शिवहरे उप विजेता रहे। डबल्स में श्री राजेन्द्र शिवहरे एवं श्री रामेश्वर सिसोदिया विजेता और श्री मुकेश भार्गव एवं श्री एस.सी. गुप्ता उप विजेता रहे। विजेताओं को पुरस्कार दिया गया। डॉ. मोनिका वर्मा और श्री अभिनन्दन वर्मा युगल ने एडवांस एक्यूप्रेशर टेक्नोलॉजी के विषय में जानकारी दी। अक्टूबर मास की बैठक "दीपावली स्नेह मिलन" के रूप में आयोजित की गई। इसमें संत श्री कृष्णानन्द जी, अधिशाषी परिषद के सदस्य, संयोजक गण अतिथि और 66 सदस्य उपस्थित हुए। श्री वी.एस. शिवनानी की आयु 80 वर्ष और श्री सुरेश चन्द गुप्ता की आयु 75 वर्ष होने पर गुरूवर द्वारा माल्यार्पण कर शॉल, श्रीफल और स्मृति चिन्ह देकर दीर्घायु होने और उत्तम स्वास्थ्य की कामना करते हुए सम्मानित किया गया। समूह ने संस्था को वयोवृद्धों के सम्मान समारोह हेतु रू. 12001/- का आर्थिक सहयोग दिया। सहयोग करने वाले सदस्य सर्व श्री जसवन्त सिंह, यू. तुकाराम, बी.आर. मोंगा, एच.एन. भटनागर, बी.आर. सांघी, एल.एन. राजपूत, रामेश्वर सिसोदिया, बी.के. वाधवा, नरेन्द्र सिंह पंवार, डी.के. जैन, महेन्द्र कुमार पंवार, एस.एन. कपूर, एस.पी. मित्तल, एम.एस. सिंगला, वी.डी. गुप्ता, प्रतोद कुमार शर्मा, पी.एन. माथुर, महेन्द्र कनौजिया, राजेन्द्र शिवहरे, श्रीमती चन्दर ऐबट और श्रीमती बीना रानी को माल्यार्पण कर आभार प्रकट किया गया।

संस्था ने शीत कालीन भ्रमण एवं दीपावली स्नेह मिलन समारोह भी आयोजित किया, जिसमें कैरम प्रतियोगिता के एकल वर्ग में श्री मुकेश भार्गव विजेता और श्री रामेश्वर सिसोदिया उप विजेता रहे। डबल्स वर्ग श्री रामेश्वर सिसोदिया और श्री एस.एन. कपूर उपविजेता रहे।

वर्ष में श्री अमर सिंह क्षत्री ने रू. 1500/-, श्री सुरेश चन्द गुप्ता

ने 500/- और श्री शैलेन्द्र वर्मा ने रू. 500/- का आर्थिक योगदान दिया। समूह की प्रति माह बैठक होती है। बैठक में अन्य समूहों के सदस्यों को भी आंमत्रित किया जाता है। बैठक में वे अपने विचार भी रखते हैं। इसका उद्देश्य विचारों का आदान प्रदान करना होता है। सदस्यगण इन बैठकों में भजन, कविताऐं, गजल और चुटकलों द्वारा मनोरंजन कार्यक्रम देते हैं। वर्ष में समस्त सदस्यों को उनके जन्मदिन के उपलक्ष्य में माल्यार्पण कर सोसायटी का बधाई पत्र देकर जन्मदिन मनाया जाता है। सदस्यों द्वारा संस्था को रू. 4377/- और समूह को रू. 4377/- जन्मदिन भेंट दी गई। वर्ष में दो सदस्यों का देवलोक गमन हुआ।

प्रतिमाह बैठक के अन्त में समूह द्वारा अल्पाहार का आयोजन किया जाता है। होली स्नेह मिलन एवं दीपावली स्नेह मिलन पर भोजन की व्यवस्था की जाती है। वर्ष में समूह की आय रू. 22368/- और व्यय रू. 13785/- हुआ।

समूह संख्या - 21 (दौराई)



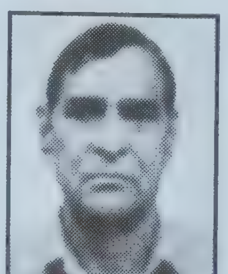
सत्यनारायण सिंह
समूह-21

समूह की मासिक मीटिंग माह के अंतिम रविवार को होती है, समूह में 75 सदस्य हैं , लेकिन घरेलू कार्यो अथवा अन्य परेशानियों के कारण मीटिंग में अक्सर 20-25 सदस्य ही उपस्थित होते हैं। समूह के नये सदस्यों का माल्यार्पण कर व बधाई कार्ड देकर उनका स्वागत किया जाता है। माह में जिन सदस्यों की शादी की सालगिरह होती है उन्हें भी माल्यार्पण कर सभी सदस्यों द्वारा मीटिंग में सम्मानित किया जाता है तथा उनके सुखमय वैवाहिक जीवन की कामना की जाती है तथा तालियों की गडगडाहट से उनका अभिवादन किया जाता है। रिटायर होने वाले सदस्यों को साफा व शॉल उडाकर व श्रीफल देकर सम्मानित किया जाता है। 75 साल की आयु पूर्ण होने पर सदस्यों का उस माह में हीरक जयन्ती के उपलक्ष्य में शॉल उडाकर माल्यार्पण कर श्रीफल व बधाई कार्ड देकर सम्मानित किया जाता है, साथ ही उन्हें अभिनन्दन पत्र भेंट किया जाता है। ऐसे अवसरों पर सोसायटी के अध्यक्ष, महासचिव या किसी वरिष्ठ सदस्य को बैठक में विशेष रूप से भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जाता है। समूह के सभी सदस्य होली तथा दीपावली जैसे त्यौहार एक साथ एक जगह वीर तेजाजी में स्थापित आश्रम में मिलन समारोह के रूप में मनाते हैं तथा इस अवसर पर गुलाल व चन्दन का तिलक लगाकर एक दूसरे का सम्मान व अभिनन्दन करते हैं।

सेवा संकल्प सभी सदस्यों के घर पर उसी दिन भिजवा दिये जाते हैं तथा सभी सदस्यों को अगली मीटिंग के बारे में भी उसी दिन सूचित कर दिया जाता है। समूह के पास एक वाचनालय दौराई फाटक के पास ब्यावर रोड पर है इस केन्द्र पर सदस्यगण सुबह शाम आकर अपनी उपस्थिति देते हैं ।यहां सरपंच महोदय की तरफ से एक दैनिक पत्र रोजाना आता है। समूह के पास अपना स्वयं का बहुत ही अच्छा कैरमबोर्ड व शतरंज भी है जिससे सदस्य अपना मनोरंजन के साथ-साथ अभ्यास भी करते हैं, कैरम बोर्ड के अच्छे खिलाड़ी भी हमारे ग्रुप में मौजूद है वे कभी भी प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए तैयार रहते हैं। वाचनालय में 10, 15 सदस्यों की रोजाना उपस्थिति होती है। यह अक्सर शाम को 4 से 8 बजे तक रोजाना खुला रहता है। सोसायटी से 400 रू. का अंशदान भी वाचनालय को चलाने हेतु मिलता है, जिससे लाइब्रेरी का किराया देने में ग्रुप को मदद मिलती है।

समूह संयोजक श्री सत्यनारायण सिंह राठौर समूह का संचालन सफलतापूर्वक कर रहे है। इनकी कार्यकुशलता तथा कर्मठता से ही यह ग्रुप सुचारू रूप से कार्यक्रम सम्पन्न कर रहा है। इस साल में जन्मदिन के उपलक्ष्य में भेजी गई राशि 6800/- रूपये मार्च तक राशि 50, 100/- प्रति सदस्य जन्मदिन के उपलक्ष्य में भिजवाई जाती थी लेकिन अप्रेल माह से हर सदस्य से 100/- भेजने की प्रक्रिया चालू हो चुकी है। इस प्रकार अभी तक 6800/- की राशि भेजी जा चुकी है।

समूह संख्या -22 (चन्द्रवरदाई नगर)



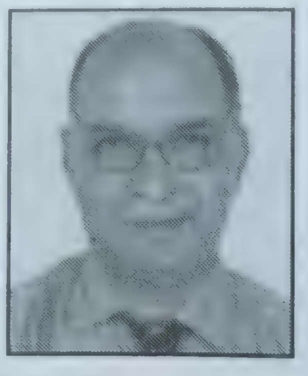
वीर बहादूर सिंह
समूह-22

समूह संख्या 22 चन्द्रवरदाई नगर, अजमेर की मासिक बैठक प्रत्येक माह में (आमतौर पर माह के तृतीय रविवार) मधुबन पार्क ए-ब्लॉक में नियमित आयोजित की जाती है। इन मासिक बैठकों में उपस्थित सदस्यों में से आयुक्रम में

वरिष्ठतम सदस्य को सभा की अध्यक्षता हेतु अनुरोध किया जाता है। वर्तमान में समूह 22 की सदस्य संख्या 130 के लगभग है। प्रत्येक माह की बैठक में औसतन 60 से 65 व्यक्तियों की उपस्थिति रहती है। वर्तमान में समूह 22 के संयोजक श्री बी.बी. सिंह सह संयोजक श्री एस.बी. माथुर कोषाध्यक्ष श्री आर.एस. टाक है। समूह के सभी सदस्य समूह के सभी कार्यक्रमों में मनोरंजन के साथ-साथ एक-दूसरे के साथ मिलजुल कर सुख शान्ति एवं भाईचारे का अनुभव करते है। प्रत्येक माह की बैठक में जन्में सदस्यों का जन्म दिवस उनको बधाई पत्र देकर, पुष्पहार पहनाकर व पुष्पगुच्छ देकर उनके स्वस्थ एवं दीर्घायु होने की शुभकामना दी जाती है। बैठक में सम सामयिक विषयों पर चर्चा तथा वरिष्ठजनों की विभिन्न समस्याओं पर चर्चा कर समाधान के प्रयत्न किये जाते है। अपने जन्म दिवस के उपलक्ष्य में सदस्यगण समूह एवं केन्द्र हेतु सहयोग राशि प्रदान करते हैं। नये सदस्यों का उपस्थित सदस्यों से परिचय कराकर माल्यार्पण कर स्वागत किया जाता है। 28 अक्टूबर 2017 की मासिक बैठक में 75 वर्ष से अधिक आयु वाले सदस्यों का सम्मान मुख्य अतिथि श्रीमान् कमल प्रकाश जी (समाज सेवी) द्वारा किया गया। जिन सदस्यों का सम्मान मुख्य अतिथि द्वारा किया गया उनके नाम है - श्रीमान् राधे लाल शर्मा, श्रीमान् महेन्द्र देव शर्मा, श्रीमती कान्ता शर्मा, श्रीमती शान्ति देवी शर्मा, श्रीमान् डा. राधावल्लभ उपाध्याय, श्रीमान् गिरिषचन्द्र पचौरी, श्रीमान् दीनदयाल विजय। समूह द्वारा हरवर्ष वर्षाकालीन गोठ / पिकनिक का आयोजन किसी रमणीक स्थल पर किया जाता है। समूह में जिन सदस्यों की शादी की सालगिरह होती है - उन्हें उनके सुखमय जीवन की कामना की जाती है तथा माल्यार्पण कर करतल ध्वनि से अभिनन्दन किया जाता है। समूह द्वारा माह दिसम्बर 2017 से मधुबन पार्क ए-ब्लॉक चन्द्रवरदाई नगर में पुस्तकालय (वाचनालय) जिसका उद्घाटन श्री बी. आर. छीपा उप कुलपति केशवानन्द विश्वविद्यालय बीकानेर के कर कमलों द्वारा फीता काट कर किया गया है। पुस्तकालय हेतु पुस्तकों का प्रबन्ध समूह सदस्य श्री कौशल किशोर गुप्ता तथा समाजसेवी श्री कमल प्रकाश जी एवं समूह सदस्यों के सौजन्य से उपलब्ध कराई गई है। इसके साथ ही सदस्यों के मनोरंजन हेतु कैरम, शतरंज, तम्बोला एवं एक कम्प्यूटर का प्रावधान किया गया है। कम्प्यूटर श्रीमान् संजय शर्मा (पता) ए-353, चन्द्रवरदाई नगर जी द्वारा समूह को भेंट किया गया है। हर वर्ष की भांति समूह के सदस्यों के सहयोग से समूह संयोजक श्री बी. बी. सिंह के नेतृत्व में अजमेर के आस-पास के गांवो में जाकर गरीब वर्ग के लोगों में कपडों का वितरण किया गया इसी प्रकार संस्था के वरिष्ठ सदस्यों श्री जे. एल. भाटी, श्री हरिसिंह चौहान, श्री एस. बी. माथुर, श्री गिरिषचन्द्र पचौरी अपने अन्य सहयोगियों के साथ निरीह पशु-पक्षियों को दाना पानी प्रतिदिन देने की व्यवस्था करते है। इस सराहनीय कार्य के लिये समूह द्वारा इन सभी का अभिनन्दन किया गया है। महिला सदस्यों का समूह की प्रत्येक गतिविधियों में बैठकों में, उत्सवो में, पिकनिक में पूर्ण योगदान रहा है। भजन, गीत, चुटकले अंताक्षरी एवं अन्य सामाजिक, धार्मिक विषयों की प्रस्तुति आदि भागीदारी प्रशंसनीय है। बैठकों में प्रत्येक सदस्य को अपनी बात रखने की स्वतंत्रता रहती है। प्रत्येक सदस्य शालीनता से बिना किसी द्वेषता के संस्था कार्य में अनुशासन में रहकर पूर्ण सहयोग करते है। समूह में दिवंगत सदस्यों के प्रति पूर्ण संवेदना सहित शोक सभा आयोजित कर दिवंगत आत्मा की शांति हेतु श्रद्धांजलि की जाती है। समूह की ओर से शॉल व देह पर पुष्पाजंलि दी जाती है। उठावने के दिन शोक सन्देश प्रेषित किया जाता है।

समूह 22 चन्द्रवरदाई नगर, अजमेर का आंकलन एक अनुशासित एवं संस्था के प्रति पूर्ण सहयोगी के रूप में की जा सकती है। श्री बी.बी. सिंह, श्री एस.बी. माथुर एवं श्री आर.एस. टाक के कुशल प्रंबधन से प्रगति पद पर निंरतर अग्रसर है। समूह का प्रत्येक सदस्य आपसी सहयोग, आत्मीयता हेतु सक्रिय भूमिका के लिये प्रयत्नशील है।

अत्यन्त दुःख के साथ में सूचित किया जाता है कि इस वार्षिक रिर्पोट के लेखक श्री कौशल किशोर गुप्ता अब हमारे बीच मे नहीं है। हम उनको भावभिनी श्रृद्धांजलि अर्पित करते है।



संस्था के सदस्यों द्वारा जन्मदिवस भेंट की सूची

1 अप्रेल 2017 से 31 मार्च 2018

– श्री बलबीर सिंह गहलोत, वित्त सचिव

नाम	ग्रुप नं.	रकम	नाम	ग्रुप नं.	रकम
श्रीमती ई. वेंजेलिन मैसी	अन्य	100	श्री दिनेश श्रीवास्तव	01	50
श्री महेश चन्द गुप्ता	अन्य	100	श्रीतिलक राज फागना	01	50
श्रीमती मधु गुप्ता	01	250	श्री राजेन्द्र पंवार	01	50
श्री दिनेश चन्द तायल	01	50	श्री ओमनारायण माथुर	01	50
श्री एच.के. गुप्ता	01	50	श्रीमती मंचन गुप्ता	01	50
श्रीमती विमला गुप्ता	01	50	श्री डी.पी. माथुर	01	50
श्री ओ.पी. मिश्रा	01	50	श्रीमती मधु सक्सेना	01	50
श्रीमती मिथलेश तायल	01	50	श्रीमती कुसुम माथुर	01	50
श्री सुधाकर बंधु	01	50	श्रीमती दीप्ती बसु	01	50
श्री ए.पी. गौड	01	50	श्री आर.सी. चतुर्वेदी	01	50
श्री महेश चंद गुप्ता	01	50	श्री जे.एन. पुरोहित	01	50
श्री के.एम. अग्रवाल	01	50	श्री अशोक शर्मा	01	50
श्रीमती आई.एच. सैम्यूअल	01	50	श्री मानसिंह वर्मा	01	50
श्रीमती प्रेमदेवी चौहान	01	50	श्रीमती प्रेमलता बाकलीवाल	01	50
श्री पुरूषोत्तम शर्मा	01	50	श्रीमती इन्द्रा गुप्ता	02	100
श्री नरेन्द्र कुमार मंगल	01	50	श्री सन्तोष कुमार रावत	02	100
श्रीमती रसीला शर्मा	01	50	श्री गोपाल शंकर शर्मा	02	100
श्री आर.एस. अग्रवाल	01	50	श्री अशोक कुमार शर्मा	02	100
श्रीमती माया गुप्ता	01	50	श्रीमती मैना देवी सतरावला	02	100
श्रीमती गुणमाला जैन	01	50	श्री रामगोपाल अग्रवाल	02	100
श्री रामजीलाल अरोड़ा	01	50	श्री आर.के. रोहिला	02	100
श्री उमेशचन्द गुप्ता	01	50	श्री उम्मेद राम काबरा	02	100
श्री जगदीश चन्द सैनी	01	50	श्री बाबू लाल साहू	02	100
श्री पी.सी. पन्त	01	50	श्री मंगल सिंह रावत	02	100
श्री हेमन्त रावत	01	50	श्री पांचूलाल चौधरी	02	100
श्रीमती कुसुम माथुर	01	50	श्री अशोक कुमार शर्मा II	02	100
श्री केदारनाथ अग्रवाल	01	50	डॉ. के.जी. गोयल	02	100
श्री राजेन्द्र प्रसाद अग्रवाल	01	50	श्री नरेन्द्र कुमार बनवीर	02	500
श्रीमती सुदर्शना गहलोत	01	50	श्री आर.एस. निर्वाण	02	500
श्री के.के. बचलस	01	50	श्री प्रतापसिंह थोरी	02	100

संस्था सदस्य जिन्होंने 500 रू. या अधिक की राशि वृद्धजन समारोह रूप में भेंट की संस्था इन सभी दानदाताओं का विशेष अभिनन्दन करती है।


श्री आर.एस. अग्रवाल
समूह-1


श्री यू.सी. गुप्ता
समूह-1


श्री द्वारकाप्रसाद माथुर
समूह-1


श्री सुधाकर बन्धु
समूह-1


श्री पुरूषोत्तम शर्मा
समूह-1


श्री राजेन्द्रप्रसाद अग्रवाल
समूह-1


श्री नरेन्द्र मंगल
समूह-1


श्रीमती स्नेहलता मंगल
समूह-1


श्री महेशचन्द गुप्ता
समूह-1


श्री अशोक शर्मा
समूह-1


श्रीमती आई.एच. सैम्यूअल
समूह-1


श्री अनिल कुमार अग्रवाल
समूह-1


श्रीमती कृष्णा अग्रवाल
समूह-2


श्री ओमप्रकाश वर्मा
समूह-2


सुश्री सन्तोष शर्मा
समूह-2


श्रीमती मधु सक्सेना
समूह-2


श्री बद्रीनारायण गर्ग
समूह-2


श्री श्रीगोपाल अग्रवाल
समूह-2


श्री जे. के. राघानी
समूह-2


श्री नरेन्द्र कुमार बनवीर
समूह-2


श्रीमती मंजुप्रभा जोशी
समूह-2


श्री कैलाशचन्द गोयल
समूह-2


श्री नवरतन चौधरी
समूह-2


श्री चिरंजीलाल शर्मा
समूह-2


श्री सन्तोष कुमार रावत
समूह-2

संस्था सदस्य जिन्होंने 500 रू. या अधिक की राशि वृद्धजन समारोह रूप में भेंट की संस्था इन सभी दानदाताओं का विशेष अभिनन्दन करती है।


श्री गोपाल शंकर शर्मा
समूह-2


श्री जगदीश कांकाणी
समूह-2


श्री मंगलसिंह रावत
समूह-2


श्री उम्मेदराम काबरा
समूह-2


श्री गोपाल प्रसाद माथुर
समूह-2


श्री अशोक कुमार शर्मा
समूह-2


श्री वी.पी. श्रीवास्तव
समूह-2


डॉ. एस.एन. माहेश्वरी
समूह-2

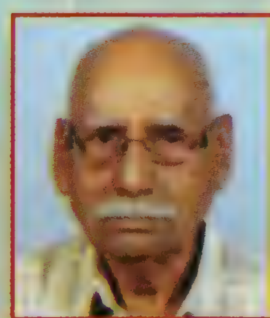

श्री जयदेव सांखला
समूह-2


श्री सुरेन्द्र विजय
समूह-3


श्री देवकृष्ण तोषनीवाल
समूह-3

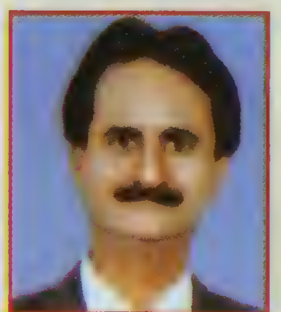

श्री सुरेश मित्तल
समूह-4


कमान्डर जे.एस.राजावत (Retd.)
समूह-4

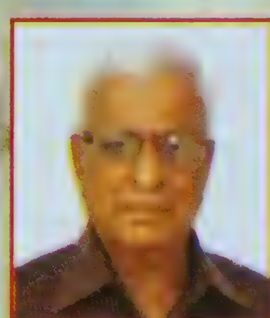

श्री बी.एल.कटियार
समूह-5


श्री जी.एस.यादव
समूह-5


श्रीमती सत्या यादव
समूह-5


श्री विरेन्द्र सिंह राठौर
समूह-5


श्री पी.एन. शर्मा
समूह-5


श्री जे.पी. विजय
समूह-5


श्री सादत कबीर
समूह-5


श्री जी. के. कपिल
समूह-5


श्री अमरसिंह शेखावत
समूह-5


श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा
समूह-5


श्री आर. एन. तापड़िया
समूह-5


श्री कैलाशचन्द शर्मा
समूह-5

संस्था सदस्य जिन्होंने 500 रू. या अधिक की राशि वृद्धजन समारोह रूप में भेंट की
संस्था इन सभी दानदाताओं का विशेष अभिनन्दन करती है।


श्री डी.सी. जैन
समूह-5


श्री खेमचन्द चतुर्वेदी
समूह-5


श्री सुरेशचन्द शर्मा
समूह-5


सरदार श्री राजेन्द्र सिंह
समूह-5


श्री सत्यनारायण सिंघल
समूह-6


श्री जे.के. तुलसीयानी
समूह-6


श्री पी.एन.माथुर
समूह-6


श्री सुनील सक्सेना
समूह-6


श्री वेदप्रकाश जोशी
समूह-6

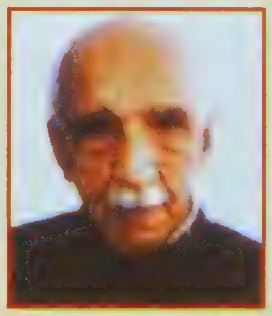

श्री भवंरलाल गोयल
समूह-7


श्री भवंरलाल शर्मा
समूह-7


श्रीमती कुसुम गौतम
समूह-9


श्री भगवानदास असमादिया
समूह-9

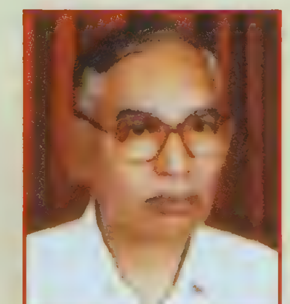

श्री ज्ञानचन्द गुप्ता
समूह-9


श्री नात्थूराम अरोड़ा
समूह-10


श्री कल्याणराय शर्मा
समूह-10


श्री मानकरण अग्रवाल
समूह-11


श्रीमती लक्ष्मी टण्डन
समूह-12


श्री महेश शर्मा
समूह-12


श्री दीनबन्धु सिंघल
समूह-12

श्री सी.पी. शुक्ला
समूह-12


श्री गौरीशंकर मिश्रा
समूह-12


श्रीमती उषा भटनागर
समूह-12

श्री वी.के. मित्तल
समूह-12


श्री दशरथ सिंह राठौड़
समूह-12

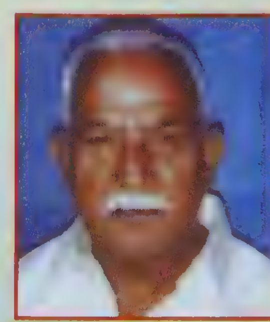
संस्था सदस्य जिन्होंने 500 रू. या अधिक की राशि वृद्धजन समारोह रूप में भेंट की संस्था इन सभी दानदाताओं का विशेष अभिनन्दन करती है।


श्री मदन रवि
समूह-12


श्री नरेन्द्र देव शर्मा
समूह-12


श्रीमती प्रेमकान्ता सिंघल
समूह-13


श्रीमती कैलाश पाराशर
समूह-13


श्री राधाकिशन टांक
समूह-13


श्री जगननाथ वेदवाल
समूह-13

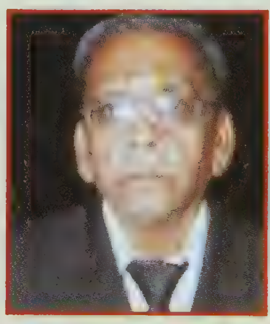

श्री रघुवीर सिंह शर्मा
समूह-13


श्री सुरेशचन्द अग्रवाल
समूह-13


श्रीमती राधा अग्रवाल
समूह-13


श्री बलबीर सिंह गहलोत
समूह-13

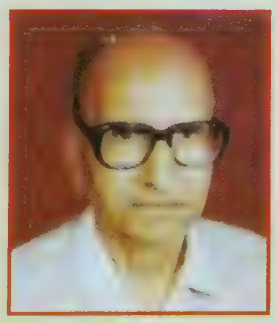

श्रीमती द्वारका देवी शर्मा
समूह-13


श्री सतीशचन्द श्रीवास्तव
समूह-14

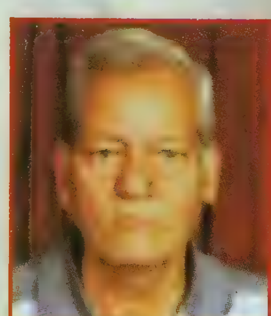

श्री श्रीकृष्ण शर्मा
समूह-14


श्री परमानन्द यादव
समूह-15


श्री जे.पी. शर्मा
समूह-15


श्री पी.सी. गुप्ता
समूह-15


श्री एच.पी. कोहली
समूह-15


श्री एस.आर. खण्डेलवाल
समूह-15


डॉ. एस.के. सिंह
समूह-15


श्रीमती पुष्पा शर्मा
समूह-15


श्री वाई.पी. शर्मा
समूह-15


श्री लक्ष्मण मटाई
समूह-15


श्री आर.एन. शर्मा
समूह-15


श्री वी.पी. झा
समूह-15


डॉ. सुभाष माहेश्वरी
समूह-15

संस्था सदस्य जिन्होंने 500 रू. या अधिक की राशि वृद्धजन समारोह रूप में भेंट की संस्था इन सभी दानदाताओं का विशेष अभिनन्दन करती है।


श्री प्रवीण कुमार शर्मा
समूह-15


श्री रतनलाल ऐरन
समूह-16

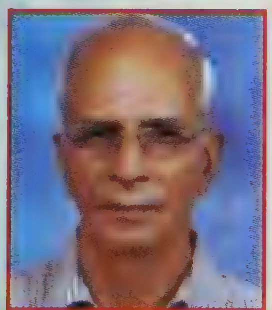

श्री मदनलाल भंसाली
समूह-16


श्री लालचन्द डोसी
समूह-16


श्री रामेश्वरलाल तत्ववेदी
समूह-16


श्रीमती मंजू माहेश्वरी
समूह-17


श्री के.के.गौड़
समूह-18


श्री वी.पी.कपूर
समूह-18


श्री महेश चन्द गुप्ता
समूह-18


श्री अर्जुन डोडानी
समूह-18


श्रीमती वीना रामसिंघानी
समूह-18


सुश्री सुरेन्द्र कुमारी
समूह-18


श्री महेन्द्र कन्नोजिया
समूह-20

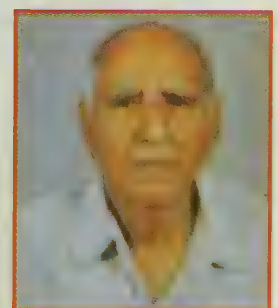

श्री जसवन्त सिंह
समूह-20


श्री यू. तुकाराम
समूह-20


श्री बी.आर. मोंगा
समूह-20


श्री एच.एन. भटनागर
समूह-20


श्री बी.आर. सांघी
समूह-20


श्री एल.एन. राजपूत
समूह-20


श्रीमती चन्दर ऐबट
समूह-20


श्री एम.एम. सिंगला
समूह-20


श्री एस.पी. मित्तल
समूह-20


श्री वी.डी. गुप्ता
समूह-20


श्री प्रतोद कुमार शर्मा
समूह-20


श्री पी.एन. माथुर
समूह-20

संस्था सदस्य जिन्होंने 500 रू. या अधिक की राशि वृद्धजन समारोह रूप में भेंट की संस्था इन सभी दानदाताओं का विशेष अभिनन्दन करती है।



श्रीमती बीना रानी
समूह-20



श्री आर.के. शिवहरे
समूह-20



श्री रामेश्वर सिसोदिया
समूह-20



श्री बी.के. वाधवा
समूह-20



श्री नरेन्द्र सिंह पँवार
समूह-20



श्री डी. के. जैन
समूह-20



श्री एस.एन. कपूर
समूह-20



श्री महेन्द्र कुमार पँवार
समूह-20

चिकित्सा शिविर - 2017 सहयोग राशि



श्री सुरेश अग्रवाल
समूह-13



श्री वाई. डी. शर्मा
समूह-13



श्री के.के. गुप्ता
समूह-13

श्रीमती सावित्री देवी शर्मा
समूह-13



श्री चिरंजीलाल शर्मा
समूह-02



श्री जे.पी. विजय
समूह-05



श्री एस.आर. खण्डेलवाल
समूह-15



श्रीमती कुसुम गौतम
समूह-09

संस्था सदस्य जिन्होंने 500 रू. या अधिक की राशि जन्मदिवस रूप में भेंट की संस्था इन सभी दानदाताओं का विशेष अभिनन्दन करती है।


श्री नरेन्द्र कुमार बनवीर
समूह-2


श्री आर.एस. निर्बान
समूह-2

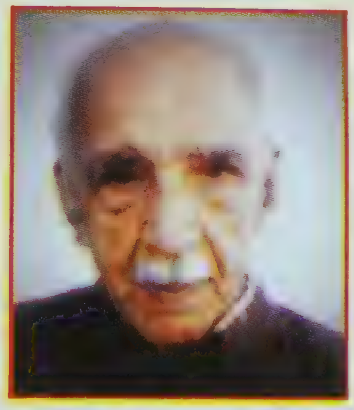

श्री विष्णु प्रकाश पालीवाल
समूह-2


श्री हरिप्रसाद असावा
समूह-3


श्री सादत कबीर
समूह-5


श्री रामदेव कुवांडा
समूह-6


श्री एस. पी. ओझा
समूह-9


श्री नाथूराम अरोड़ा
समूह-10


श्री ओमप्रकाश चौरसिया
समूह-10


श्री इन्दरराज डोगरा
समूह-13


श्रीमती मांगीदेवी टांक
समूह-13


श्री मांगीलाल देवल
समूह-13

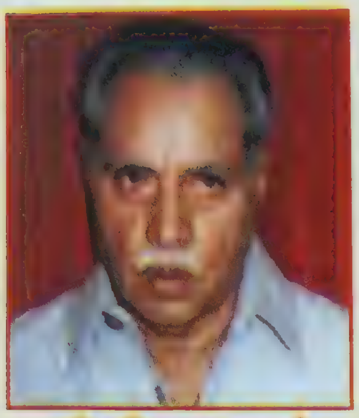

श्री बी.आर. दोहरे
समूह-13


श्री वाई.डी. शर्मा
समूह-13


श्री कौशल किशोर गुप्ता
समूह-13


श्रीमती कैलाश पाराशर
समूह-13

संस्था सदस्य जिन्होंने 500 रू. या अधिक की राशि जन्मदिवस रूप में भेंट की
संस्था इन सभी दानदाताओं का विशेष अभिनन्दन करती है।


श्री बी.एल. शर्मा
समूह-13

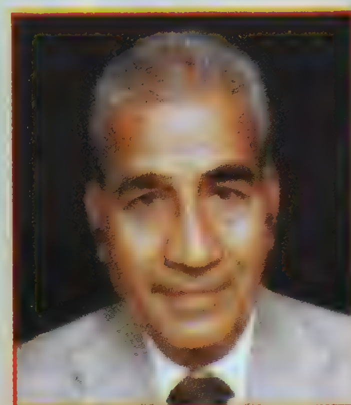

श्रीमती भंवरीदेवी शर्मा
समूह-13


श्रीमती शकुन्तला देवी
समूह-13


श्री सुरेशचन्द अग्रवाल
समूह-13


श्री राजेन्द्र कुमार संगेविया
समूह-13


श्री प्रकाश कुमार
समूह-13


श्री विष्णु देव शर्मा
समूह-13


श्री सेवाराम चौहान
समूह-13


श्रीमती राधा अग्रवाल
समूह-13


श्रीमती द्वारका देवी शर्मा
समूह-13


श्री गौरीशंकर शर्मा
समूह-13


श्री चिरंजीलाल शर्मा
समूह-13


श्री विष्णुकान्त खण्डेलवाल
समूह-15


श्री रतनलाल ऐरन
समूह-16


श्री बहादुर सिंह भाटी
समूह-17


श्रीमती मधु भाटी
समूह-17

नाम	ग्रुप नं.	रकम	नाम	ग्रुप नं.	रकम
श्री जगदीश कांकाणी	02	100	श्री एस.बी.माहेश्वरी	03	50
श्रीमती गीता देवी काबरा	02	100	श्री दशरथ तिलक	03	50
श्री ईश्वर चन्द अग्रवाल	02	100	श्रीमती विजय लक्ष्मी असावा	03	50
श्री के.जी. मोदानी	02	50	श्री हरि प्रसाद असावा	03	500
श्री बी.एस. सरीन	02	100	श्री आर.एस.वर्मा	04	50
श्री ओ.पी. वर्मा	02	100	श्री गिरीराज कच्छावा	04	50
श्री डी.के. शर्मा	02	100	श्री ओमप्रकाश परिहार	04	100
श्री देवेन्द्र कुमार शर्मा	02	100	श्री अशोक कुमार शर्मा	04	100
श्री चिरंजी लाल शर्मा	02	100	श्री एस.सी. मित्तल	04	100
श्री श्रीगोपाल अग्रवाल	02	100	श्री सम्मान सिंह बड़गुर्जर	04	100
श्री बाबूलाल छीपा	02	100	डॉ. राम चरण गोयल	04	100
श्रीमती दीपा रावत	02	100	श्री शांति लाल गर्ग	04	100
श्रीमती कैलाश उपाध्याय	02	100	श्रीमती कमला गर्ग	04	50
श्री कैलाश चन्द जोशी	02	100	श्री एम.सी. बडजात्या	04	100
श्री सांवलदान चारण	02	100	श्री अभय मल सखलेचा	04	100
श्रीमती शकुन्तला अग्रवाल	02	100	श्रीमती पुष्पा सखलेचा	04	100
श्री जयदेव सांखला	02	100	श्री नन्द सिंह राठौड़	04	100
श्री विष्णु प्रकाश पालीवाल	02	500	श्री गिरधारी सिंह	04	100
श्री ओमप्रकाश बाड़मेरा	03	100	श्री रतनपुरी गोस्वामी	04	100
श्री सुरेन्द्र कुमार विजय	03	100	श्री मांगीलाल गोयल	04	50
श्रीमती सुख शान्ति विजय	03	100	श्री रमेश चन्द गोयल	04	100
श्री जगदीश प्रसाद मन्त्री	03	100	श्री राधा किशन जोधा	04	100
श्री भंवरलाल मून्दड़ा	03	50	श्रीमती नंदू गौड़ जोधा	04	100
श्री ओ.पी. माहेश्वरी	03	50	श्री उत्तम चंद गुप्ता	04	50
श्रीमती कान्ता मालू	03	50	श्रीमती कान्ता गुप्ता	04	50
श्री भागचन्द सोनी	03	50	श्री पी.सी. भटनागर	04	100
श्री देवकिशन तोषनीवाल	03	50	श्री मोहनालाल तंवर	04	100
श्री श्रीकिशन अग्रवाल	03	100	श्री गोविन्द दाधीच	04	100
श्री अनिल कपूर	03	100	श्री जेठमल जादम	04	50
श्रीमती गायत्री विजय	03	100	श्री रतनलाल टांक	04	50
श्री प्रहलाद लाल मालू	03	50	श्री मकतूल सिंह गोठवाल	04	50
श्रीमती शान्ति देवी मूंदडा	03	50	श्री कैलाश नाथ गुप्ता	04	50
श्री हरीप्रसाद माहेश्वरी	03	50	श्री सूरज मित्तल	04	50
श्री हरीप्रसाद असावा	03	50	श्री रामपाल सांखला	04	50
श्री सन्तोष कुमार टण्डन	03	50	श्री श्याम बिहारी शर्मा	04	50
श्री महेशचन्द हेड़ा	03	50	श्री बलजीत सिंह कटियार	04	50

नाम	ग्रुप नं.	रकम	नाम	ग्रुप नं.	रकम
श्री रामचन्द्र चितलानी	04	50	श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा	05	100
श्रीमती लीला पारख	04	50	श्री सुरेन्द्र श्रीवास्तव	05	100
श्रीमती शान्ती गहलोत	04	50	श्री गजसिंह यादव	05	100
श्रीमती आशा तिवारी	04	50	श्री कैलाश चन्द्र शर्मा	05	100
श्री गोरधन लाल चौहान	04	50	श्री पी.एन. शर्मा	05	100
कमांडर जे.एस.राजावत (Retd.)	04	100	श्रीमती पुष्पा चौहान	05	100
श्री लियाकत हुसैन	04	50	श्री सादत कबीर	05	500
श्री धर्मेन्द्र कुमार गोयल	04	50	श्रीमती विमला देवी शर्मा	05	100
श्री गोरधनलाल चौहान	04	50	श्रीमती मनोहर विजय	05	100
श्रीमती आशा तिवारी	04	50	श्रीमती कमला शर्मा	05	100
श्रीमती लक्ष्मी गहलोत	04	50	श्रीमती विजयलक्ष्मी गोयल	05	100
श्रीमती लीला पारख	04	50	श्री राजेन्द्र सिंह चौहान	05	100
श्री जवाहर नानकानी	04	50	श्री शिव प्रकाश कौशिक	05	100
श्री नथमल मिश्रा	04	50	श्री विरेन्द्र सिंह राठौर	05	100
श्री आर.के.भार्गव	04	50	श्रीमती सत्या यादव	05	100
श्री के.एस.कच्छावा	04	50	श्री चन्द्रकान्त गौड़	05	101
श्री मनोहरलाल शर्मा	04	50	श्रीमती विजय लक्ष्मी गौड़	05	101
श्री त्रिलोक चन्द इन्दौरा	04	50	सरदार श्री राजेन्द्र सिंह	05	100
श्री दिनेशचन्द शर्मा	04	50	श्री धर्मीचन्द जैन	05	100
श्री एस.आर. खुबचंदानी	05	100	डॉ. एस. सी. ओझा	05	100
श्री पी. टाईटस	05	100	श्री लोकमन दास गोयल	06	100
श्री वी.के. चतुर्वेदी	05	100	श्रीमती लोचना गोयल	06	100
श्री जी.के. कपिल	05	100	श्री विष्णु कुमार गोयल	06	100
श्री आर.एन. तापड़िया	05	100	श्री जेठमल प्रजापति	06	50
श्रीमती गीता श्रीवास्तव	05	100	श्री ओमप्रकाश शर्मा	06	100
श्रीमती वत्सला चतुर्वेदी	05	100	श्रीमती विद्या शर्मा	06	100
श्री ए.एन. शर्मा	05	100	श्री किशन गोपाल चोरसिया	06	100
श्री अमरसिंह शेखावत	05	100	श्रीमती कंचन उपाध्याय	06	100
श्री झम्मन सिंह	05	100	श्री सत्यनारायण सिंघल	06	50
श्री आर.सी. शर्मा	05	100	श्री वेदप्रकाश जोशी	06	100
श्री दिनेश गोयल	05	100	श्री ओमप्रकाश उपाध्याय	06	50
श्री सुरेश चन्द शर्मा	05	100	श्री अमरसिंह मकवाना	06	100
श्री बी.एल. कटियार	05	100	श्री ओमदास महाराज	06	100
श्रीमती आशा कटियार	05	100	श्रीमती सुशीला खण्डेलवाल	06	100
श्री राजेन्द्र श्रीवास्तव	05	100	श्री पी.एन.माथुर	06	100
श्री जे.एस. सेंगर	05	100	श्री ज्ञानप्रकाश त्रिपाठी	06	100

नाम	ग्रुप नं.	रकम	नाम	ग्रुप नं.	रकम
श्री लज्जाशंकर गोयल	06	100	श्री एस.पी. ओझा	09	500
श्रीमती पुष्पा क्षेत्रपाल	06	100	श्री ओम प्रकाश चोरसिया	10	50
श्रीमती विद्या शास्त्री	06	100	श्रीमती सरोज श्रीवास्तव	10	50
श्री रामदेव शर्मा	06	100	श्री रामदेव कुन्वाडा	10	50
श्रीमती शोभा माथुर	06	100	श्रीमती मंगली बारिया	10	50
श्री बृजनारायण सारस्वत	06	100	श्री पुखराज बारिया	10	50
श्री रामस्वरूप खण्डेलवाल	06	100	श्रीमती मनोरमा गोयल	10	50
श्रीमती सुमनलता गोयल	06	100	श्री एस.के. भार्गव	10	50
श्री बालकिशन शर्मा	06	100	श्री सत्यनारायण पालडिया	10	50
श्री रामदेव कुवांडा	06	500	श्री रामकरण राव	10	50
श्री सी.एम. राठी	07	100	श्री रमेश सिंह राव	10	50
श्रीमती कमला राठी	07	100	श्री नत्थूराम अरोड़ा	10	50
श्री एन.सी. गुप्ता	07	100	श्री आर.सी. माथुर	10	50
श्री लक्ष्मीनारायण हटूका	07	100	श्री अमरचन्द चौहान	10	50
श्रीमती मुन्नीदेवी हटूका	07	100	श्री चॉदमल सोलंकी	10	50
श्री विष्णु प्रकाश गर्ग	07	100	श्री एस.के. जैन	10	50
श्रीमती ममता गर्ग	07	100	श्री विल्सन जैम्स	10	50
श्री के.सी. बन्सल	07	100	श्रीमती मार्टिन विल्सन	10	50
श्रीमती प्रभा बन्सल	07	100	श्री भंवरलाल चौहान	10	50
श्री भंवरलाल गोयल	07	100	श्रीमती प्रेमदेवी अग्रवाल	10	50
श्री दयाशंकर	08	100	श्री बी.सी. पँवार	10	50
श्री अशोक कुमार चौहान	08	100	श्री औम प्रकाश कच्छावा	10	50
श्री विजय सिंह	08	100	श्री औम प्रकाश चौहान	10	50
श्री आर.पी. खांडेकर	08	100	श्रीमती मंगनी बारिया	10	50
श्री पी.डी. अग्रवाल	08	100	श्रीमती बीना गुप्ता	10	50
श्री अजय मेहरा	08	100	श्री मनीराम कच्छावा	10	50
श्री भगवान दास असमादिया	09	100	श्री शिव कुमार शर्मा	10	50
श्री कश्मीर सिंह	09	100	श्री मदनलाल बारिया	10	50
श्री ज्ञानचन्द गुप्ता	09	100	श्रीमती आशा गुप्ता	10	50
श्रीमती सुधा गुप्ता	09	100	श्रीमती आशा पंवार	10	50
श्री कमल चंद सिंघवी	09	100	श्री नाथूराम अरोड़ा	10	500
श्री बेजिल डीसूजा	09	100	श्री ओमप्रकाश चौरसिया	10	500
श्रीमती कुसुम गौतम	09	100	श्री मानकरण अग्रवाल	11	100
श्रीमती सन्तोष वर्मा	09	100	श्री हरीशचन्द टांक	11	50
श्री जसवीर सिंह दुआ	09	100	श्री सुधीर कुमार शर्मा	11	50
श्री ओमप्रकाश गुप्ता	09	100	श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता	11	50

नाम	ग्रुप नं.	रकम	नाम	ग्रुप नं.	रकम
श्री जवरीलाल अग्रवाल	11	50	श्रीमती सरोज गुप्ता	12	100
श्री कृष्ण मुरारी गुप्ता	11	50	श्री दशरथ सिंह राठौड़	12	100
श्रीमती सुधा गुप्ता	11	50	श्रीमती प्रभारानी शर्मा	12	100
श्रीमती चन्दर ऐबट	11	100	श्रीमती सुशीला खण्डेलवाल	12	100
श्री मोहन सिंह राव	11	70	श्री के.एम. लवानियाँ	12	100
श्रीमती कमला बुटानी	11	50	श्रीमती गायत्री लवानियाँ	12	100
श्रीमती कमला अग्रवाल	11	50	श्री बक्शीस सिंह	12	100
श्री महेशचन्द शर्मा	11	50	श्री नरेन्द्र देव शर्मा	12	100
श्री के.सी. बुटानी	11	50	श्रीमती शान्तिदेवी त्यागी	12	100
श्री जीतमल उबाणा	11	50	श्री विनोद पाठक	12	100
श्रीमती संतोष मंगल	11	50	श्री लच्छीराम	12	100
श्रीमती कमला यादव	11	50	श्रीमती अनिता बेदरकर	12	100
श्री रामलाल मारोठिया	11	50	श्री गिरधर गोपाल गोयल	12	100
श्री मोहनसिंह राव	11	71	श्री ओमदत्त जोशी	12	100
श्रीमती कमला यादव	11	50	श्रीमती कल्पना नागर	12	200
श्रीमती चन्दर एबट	11	100	श्री दीनबन्धु सिंघल	12	100
श्री मोहनलाल राव	11	71	श्रीमती बीना सिंघल	12	100
श्री रामकिशन पंवार	12	100	श्री हरिप्रसाद तिवारी	12	100
श्रीमती उषा भटनागर	12	100	श्रीमती कमलेश	12	100
श्री मोहन किशन बस्सी	12	100	श्रीमती मंजू माथुर	12	100
श्रीमती प्रेम लक्सकर	12	100	श्री मुकेश माथुर	12	100
श्रीमती लक्ष्मी टंडन	12	100	श्री वी.पी. मित्तल	12	100
श्री सुरेश पंवार	12	100	श्रीमती प्रेमलता खण्डेलवाल	12	100
श्री प्रकाश चन्द जैन	12	100	श्रीमती लीला गुप्ता	12	100
श्री आर.पी. गढ़वाल	12	50	डा.पुष्पा गुप्ता	12	100
श्री रामजी लाल सांवरिया	12	100	श्री औम प्रकाश भारद्वाज	12	100
श्री गुलजीत सिंह	12	100	श्री रामभरोसे लाल गुप्ता	12	100
श्री दिलीप सिंह पीलकन्या	12	100	श्री विनायक प्रसाद माथुर	12	100
श्री त्रिवेदी प्रसाद शर्मा	12	100	श्रीमती लक्ष्मी टण्डन	12	100
श्रीमती शोभा शर्मा	12	100	श्रीमती अंगूरीदेवी मीणा	12	100
श्रीमती उषा पीलकन्या	12	100	श्री रामनिवास मीणा	12	100
श्री राजेन्द्र सिंह	12	100	श्री के.जी. रवि	12	100
श्री सुभाष चतुर्वेदी	12	100	श्री सतीशचन्द शर्मा	12	100
श्रीमती संतोष भार्गव	12	100	श्रीमती पुष्पा गोयल	12	100
श्री मधुसूदन सिंघल	12	100	श्री रमेश चन्द शर्मा	13	200
श्री भवानी शंकर खण्डेलवाल	12	100	श्रीमती मुन्नीदेवी बुन्देल	13	200

नाम	ग्रुप नं.	रकम	नाम	ग्रुप नं.	रकम
श्रीमती चन्द्रकान्ता अरोड़ा	13	200	श्री के.एन. चतुर्वेदी	13	100
श्री यादराम भाटी	13	200	श्री बी.एल. शर्मा	13	500
श्री डी.पी. सिंघल	13	100	श्रीमती भँवरीदेवी शर्मा	13	500
श्री नत्थीलाल गुप्ता	13	100	श्रीमती शकुन्तला देवी शर्मा	13	501
श्री शशि प्रकाश जैन	13	100	श्रीमती शारदा देवी वर्मा	13	100
श्रीमती मांगी देवी टांक	13	100	श्री दिनेश अग्रवाल	13	101
श्रीमती शीला बैनट	13	101	श्री सुरेशचन्द अग्रवाल	13	1100
श्री इन्दर राज डोगरा	13	511	श्री राजेन्द्रकुमार संगेविया	13	501
श्रीमती मांगीदेवी टांक	13	500	श्रीमती सुशीलादेवी कुमावत	13	100
डॉ. राम किशोर सिंह	13	100	श्रीमती सुशीला देवी शर्मा	13	100
श्री आर.के. गर्ग	13	100	श्रीमती उर्मिला देवी शर्मा	13	100
श्री मांगी लाल देवल	13	501	श्री प्रकाश कुमार	13	501
श्रीमती शंकुतला शर्मा	13	100	श्री विष्णुदेव शर्मा	13	500
श्री सुरेश चन्द वर्मा	13	100	श्री वेदप्रकाश सेंगर	13	100
श्री पी.के. शर्मा	13	105	श्री श्यामलाल	13	100
श्रीमती सुरेन्द्र बाला शर्मा	13	100	श्रीमती नर्बदा देवी	13	100
श्री मनोहर लाल मुरारिया	13	100	श्रीमती मधु शर्मा	13	100
श्री बी.आर. दोहरे	13	500	श्री चन्दन सिंह बुन्देल	13	100
श्री वाई.डी.शर्मा	13	500	श्री सेवाराम चौहान	13	500
श्रीमती सरोज जैन	13	100	श्रीमती चन्द्रकला शर्मा	13	101
श्रीमती सावित्री चतुर्वेदी	13	101	श्री परमानन्द शर्मा	13	100
श्री राधेश्याम धामा	13	100	श्री बिशनलाल अग्रवाल	13	100
श्री गणेशीलाल बैरवा	13	100	श्री बलबीर सिंह गहलोत	13	100
श्री किरोड़ीमल गुप्ता	13	100	श्रीमती राधिका अग्रवाल	13	500
श्री राधाकिशन टांक	13	101	श्रीमती द्वारका देवी शर्मा	13	500
श्री राधेश्याम शर्मा	13	100	श्री गौरीशंकर	13	501
श्री कुसुम अग्रवाल	13	100	श्री चिरंजीलाल शर्मा	13	501
श्री सुगनचन्द जोनवाल	13	100	श्रीमती चन्द्रकान्ता सोमानी	14	100
श्रीमती कलावती	13	100	श्री यशवन्त सिंह गोगावत	14	50
श्री जगननाथ वेदवाल	13	100	श्री टीकमचन्द सांखला	14	50
श्री जौहरीलाल लवास	13	100	श्री रमेश चन्द शर्मा	14	100
श्री चिरंजीलाल शर्मा	13	100	श्रीमती शांति कंवर	14	100
श्री कौशल किशोर गुप्ता	13	500	श्री आर.एस. जयसवाल	14	200
श्रीमती कैलाश पाराशर	13	500	श्री श्रीकृष्ण शर्मा	14	100
श्री सत्यदेव शर्मा	13	100	श्री तारासिंह वर्मा	14	100
श्री सोहनलाल जोनवाल	13	100	श्री गोविन्दराम कच्छावा	14	100

नाम	ग्रुप नं.	रकम
श्री प्रभुदयाल चौहान	14	100
श्री श्रीकिशन शर्मा	14	100
श्री चुन्नीलाल	15	100
श्रीमती सन्तोष भटनागर	15	50
श्री के .सी. शर्मा	15	50
श्रीमती सावित्री खण्डेलवाल	15	50
श्री भगवान सिंह कटिहार	15	100
श्रीमती बीना मनचन्दिया	15	100
श्री अजीत सिंह	15	100
सुश्री सत्या शर्मा	15	100
श्री दिलीप कुमार शर्मा	15	100
श्री हीराचंद गहलोत	15	100
श्री लक्ष्मण मटाई	15	100
श्रीमती जुगेश बहल	15	50
श्रीमती सरला गंभीर	15	100
सुश्री संतोष गुप्ता	15	50
श्रीमती आशा गर्ग	15	50
श्रीमती जयन्ती तिवारी	15	100
श्री एन.सी. चौहान	15	100
श्री रामगोपाल खण्डेलवाल	15	50
श्री एस.सी. निर्मल	15	50
श्री एम.एस. परिहार	15	100
श्री महेश भटनागर	15	100
श्रीमती चन्द्रकला भटनागर	15	100
श्रीमती मिथलेश शर्मा	15	100
श्री नाहरसिंह चौहान	15	100
श्री प्रवीण कुमार शर्मा	15	100
श्री विष्णुकान्त खण्डेलवाल	15	100
श्रीमती कला लालवानी	15	50
श्री कन्हैयालाल खण्डेलवाल	15	50
श्रीमती पुष्पा शर्मा	15	100
श्रीमती उर्मिला सिंह	15	100
श्रीमती भँवरी देवी शर्मा	15	100
श्रीमती परमेश्वरी देवी शर्मा	15	100
श्री भीमसिंह गहलोत	15	100
श्री कँवर मंजर	15	100

नाम	ग्रुप नं.	रकम
श्री प्रदीप अग्रवाल	15	50
श्री अरूण गुप्ता	15	100
श्री सुरेश झा	15	100
श्री मनोहरलाल चावला	15	100
श्री जी.एस. रूनीवाल	15	100
श्री अशोक कुमार शर्मा	15	100
श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा	15	50
श्री डी.के. जैन	15	100
श्री एम.एल. कमलावत	15	100
श्री सी.एल. खोरवाल	15	50
श्री कुलदीप राय सूद	15	50
श्री एस.आर. खण्डेलवाल	15	150
श्री अभय गर्ग	15	75
श्रीमती आशा रूनीवाल	15	75
श्रीमती आशा रायजादा सक्सेना	15	100
श्री आर.के. प्रसाद	15	50
श्रीमती ललीता कंवर चौहान	15	50
श्री एस.एन. मंगल	15	100
श्री पी.सी. गुप्ता	15	100
श्री एन.के. अरोड़ा	15	100
श्री नीरज शर्मा	15	100
श्री तेजपाल भावलिया	15	100
श्री सन्तोष कुमार शर्मा	15	50
श्रीमती आशा गुप्ता	15	50
श्रीमती सावित्री मिश्रा	15	50
श्री विष्णुकान्त खण्डेलवाल	15	500
श्री पदमचन्द डाणी	16	100
श्री बाबू सिंह पंवार	16	100
श्रीमती प्रताप कुमारी डोसी	16	100
श्री सुरेशचन्द गुप्ता	16	100
श्रीमती सुशीला पीपाड़ा	16	100
श्री जे.सी. ऐरन	16	100
श्री सत्यनारायण शर्मा	16	100
श्री घनश्याम वैष्णव	16	100
श्री बी.एल. साहू	16	100
श्री घनश्याम वर्मा	16	100
श्रीमती धनेश्वरी कटारिया	16	100

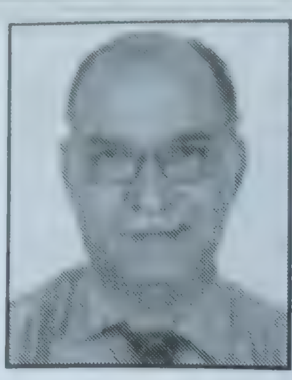
नाम	ग्रुप नं.	रकम	नाम	ग्रुप नं.	रकम
श्री नाथूलाल काकानी	16	100	डॉ. कैलाश चन्द्र त्रिपाठी	16	100
श्रीमती अमिता गुलाटी	16	100	श्रीमती सुलोचना पाराशर	16	100
श्री राजेन्द्र प्रसाद शर्मा	16	100	श्रीमती पवित्रा देवी काकानी	16	100
श्री निर्मल कुमार भार्गव	16	100	श्री मुन्नालाल भाटी	16	100
श्री हरिशरण कम्बोज	16	100	श्री गणेशराम अग्रवाल	16	100
श्री शक्ति नारायण नवाल	16	50	श्री लालचन्द डोसी	16	100
श्री भागीरथ कटारिया	16	50	श्री रामेश्वरलाल सुगंध	16	100
श्रीमती कल्पना लवानिया	16	50	श्री रामेश्वरलाल तत्ववेदी	16	100
श्री रामचन्द्र बंसल	16	50	श्री राजेन्द्र प्रसाद मित्तल	16	100
श्री किशनगोपाल गर्ग	16	100	श्री अशोक गोयल	16	100
श्री नरेन्द्र नाथ मिश्रा	16	100	श्री ओम प्रकाश गर्ग	16	100
श्री किशोर दत्त ओझा	16	50	श्रीमती मंजू गर्ग	16	100
श्री सूरज नारायण अग्रवाल	16	100	श्रीमती रूपादेवी वर्मा	16	100
श्री रतनलाल ऐरन	16	500	श्री रामरतन अग्रवाल	16	100
श्रीमती कमला अग्रवाल	16	100	श्री श्याम सुन्दर शर्मा	16	100
श्री नवल किशोर गोयल	16	50	श्रीमती लक्ष्मी गुप्ता	16	100
श्री राजकुमार जैन	16	100	श्रीमती बीना बंसल	16	100
श्री राधेश्याम अग्रवाल	16	100	श्रीमती कान्ता वर्मा	16	100
श्रीमती जया नरवानी	16	100	श्री सुगनसिंह भाटी	16	100
डॉ. पूर्णिमा भाटिया	16	100	श्रीमती पुष्पा शर्मा	16	100
श्री हरिकृष्ण गुप्ता	16	100	श्री अनिल कुमार गोयल	16	100
श्री राधेश्याम माहेश्वरी	16	100	श्री विमल कुमार बराड़िया	16	100
श्रीमती सीता गोयल	16	100	श्री रतनलाल ऐरन	16	500
श्री के.एस. चड्ढा	16	100	श्रीमती शैल बाला भारद्वाज	17	100
डॉ. राजेश कुमार शर्मा	16	100	श्रीमती दीपाली गोसांई	17	100
श्री भागवत जैन	16	100	श्रीमती नात्थीदेवी बाच्छीवाल	17	100
श्रीमती कँवरी देवी अग्रवाल	16	100	श्रीमती रेखा चतुर्वेदी	17	100
श्री स्वरूपचन्द चौऋषिया	16	100	श्रीमती सुगनी देवी	17	100
श्रीमती कमलेश मिश्रा	16	100	श्रीमती रमा शर्मा	17	100
श्रीमती शकुन्तला गुप्ता	16	100	श्रीमती मधु भाटी	17	100
श्रीमती विक्टोरिया रानी डाणी	16	100	श्रीमती ममता भार्गव	17	100
श्रीमती रामकन्या जोशी	16	100	श्रीमती मधु ऐरन	17	100
श्री कैलाश मल लोढ़ा	16	100	श्री पुखराज पुरोहित	17	100
श्री चम्पालाल गुप्ता	16	100	श्री एम.सी. बाच्छीवाल	17	100
श्री गोविन्द नारायण अग्रवाल	16	100	श्री एच.के. अजमेरा	17	100
श्री गोविन्द नारायण तिवारी	16	100	श्रीमती गुणमाला अजमेरा	17	100

नाम	ग्रुप नं.	रकम	नाम	ग्रुप नं.	रकम
श्री सुधीर कुमार भारद्वाज	17	100	श्रीमती पिस्तादेवी	17	100
श्रीमती ममता भारद्वाज	17	100	श्रीमती पवित्रा चौहान	17	100
श्रीमती मंजू माहेश्वरी	17	100	श्रीमती फूल कंवर	17	100
श्रीमती आशा भल्ला	17	100	श्री रामसिंह	17	100
श्री नीरज जैन	17	100	श्री एच.एन. माथुर	17	100
श्रीमती पुष्पलता शर्मा	17	100	श्री छीतरमल शर्मा	17	100
श्री गोविन्द प्रसाद शर्मा	17	100	श्री प्रेमशंकर माथुर	17	100
श्रीमती चक्रेश कंवर	17	100	श्री श्यामसुन्दर व्यास	17	100
श्रीमती मान कंवर	17	100	श्री श्यामलाल ए. चौहान	17	100
श्री उच्छव पोकरणा	17	100	श्री मांगीलाल तिवारी	17	100
श्रीमती किरण विजयवर्गीय	17	100	श्री वी.के. गुप्ता	17	100
श्रीमती सुमन गोयल	17	100	श्री जे.एन. शर्मा	17	100
श्री गोपाल कृष्ण जोशी	17	100	श्री वी.के.शर्मा	17	100
श्रीमती मुन्नी देवी जैन	17	100	श्री आर.के. महावर	17	100
श्रीमती कमला जैन	17	100	श्री रामअवतार टिंकर	17	100
श्रीमती समता शर्मा.	17	100	श्री किशनलाल जालोटिया	17	100
श्री आर.सी. ओझा	17	100	श्री श्यामसुन्दर विजयवर्गीय	17	100
श्री सी.एस. गहलोत	17	100	श्री पदमसिंह	17	100
श्री वी.के. पाठक	17	100	श्रीमती सीतादेवी	17	100
श्री बी.एल. मीणा	17	100	श्रीमती शीला शर्मा	17	100
श्री जीतेन्द्र भारद्वाज	17	100	श्रीमती रजंना सिंह	17	100
श्रीमती शंकुतला सिंघल	17	100	श्री जयश्री वशिष्ठ	17	100
श्री प्रकाश गंगवाल	17	100	श्री राजकिशोर चतुर्वेदी	17	100
श्रीमती मालती देवी गंगवाल	17	100	श्री महेशचन्द मिश्रा	17	100
श्री बहादुर सिंह भाटी	17	100	श्री प्रेमप्रकाश माथुर	17	100
श्रीमती लाड कंवर जैन	17	100	श्री रविन्द्र गोयल	17	100
श्री अशोक विधानी	17	100	श्री गोवर्धनदास शर्मा	17	100
श्रीमती निशा शर्मा	17	100	श्री घनश्याम दास शर्मा	17	100
श्रीमती जया भारद्वाज	17	100	श्रीमती उर्मिला शर्मा	17	100
श्रीमती ज्योति देवड़ा	17	100	श्री एच.के.प्रजापति	17	50
श्रीमती प्रेमलता जैन	17	100	श्री एच.के. ऐरन	17	50
श्रीमती रामश्री देवी	17	100	श्री सुरेश सक्सेना	17	50
श्रीमती रूपकंवर	17	100	श्री सुभाष पाराशर	17	50
श्री जी.डी. नागरानी	17	100	श्रीमती विमला गहलोत	17	50
श्री के.के. खन्ना	17	100	श्रीमती सत्या खन्ना	17	50
श्रीमती माधुरी शर्मा	17	100	श्रीमती देवकी पुरोहित	17	50

नाम	ग्रुप नं.	रकम	नाम	ग्रुप नं.	रकम
श्री ओ.पी.यादव	17	50	श्री अखिलेश अग्रवाल	18	50
श्री बी.पी.अग्रवाल	17	50	श्रीमती कृष्णा अग्रवाल	18	50
श्रीमती सुशीला अजमेरा	17	50	श्रीमती कमला वालिया	18	50
श्री मूल शकंर	17	50	श्रीमती वीना रामसिंघानी	18	100
श्री गोपीचन्द अग्रवाल	17	50	श्रीमती सरोज कपूर	18	100
श्रीमती सूर्यकान्ता मालू	17	50	श्री नारायण लाल	18	50
श्री जे.सी.शर्मा	17	50	श्रीमती स्नेहलता शर्मा	18	50
श्रीमती सुधा माथुर	17	50	श्री देवेन्द्र कुमार गोयल	18	50
श्रीमती शिवा पाण्डे	17	50	श्री देवीराम प्रजापति	18	50
श्रीमती स्नेहलता पाराशर	17	50	श्रीमती कस्तूरी देवी	18	50
श्रीमती मनीषा विधानी	17	50	श्री हीरालाल	18	50
श्रीमती सीतादेवी शर्मा	17	50	श्री प्रेमचन्द गहलोत	18	50
श्री आर.सी.राजवंशी	17	50	श्री गिरधारी लाल	18	50
श्रीमती ललिता राजवंशी	17	50	श्री विनय कुमार भारद्वाज	18	50
श्री पी.बी.एल माथुर	17	50	श्री श्रवण कुमार राजोरिया	18	100
श्री विरेन्द्र मोहन माथुर	17	50	श्रीमती पुष्पा पंत	18	50
श्री आर.एल.बारी	17	50	श्री के.के. गौड	18	100
श्रीमती सरोज अरोड़ा	17	50	श्री राम हासानी	18	50
श्रीमती मधुबाला माथुर	17	50	श्री जितेन्द्र कुमार	18	100
श्री मुन्नालाल जैन	17	50	श्री राजकुमार गुप्ता	18	100
श्री सत्यप्रकाश पुरोहित	17	50	श्री धनसिंह	18	50
श्रीमती कलावती शर्मा	17	50	श्री रामकरण पलासिया	18	50
श्रीमती अंजिला माथुर	17	50	श्री तेजसिंह कच्छावा	18	50
श्रीमती कमला जाधव	17	50	श्रीमती मोंदिरा दत्ता	18	50
श्रीमती गीता देवी	17	50	श्रीमती स्नेह लोईवाल	18	50
श्री राजेश वशिष्ठ	17	50	श्री प्रेमसिंह टांक	18	50
श्री बहादुर सिंह भाटी	17	500	श्री सूरजमल गहलोत	18	50
श्रीमती मधु भाटी	17	500	श्री रूपचन्द चिन्तन	18	50
श्रीमती आत्मा छबलानी	18	50	श्रीमती वीना जालोटा	18	50
श्री डालचन्द जनूठिया	18	50	श्री बाबूलाल नाथरीवाल	18	50
श्री मानसिंह	18	50	श्री राजकुमार वालिया	18	50
श्री नरेन्द्र जालोटा	18	50	श्री गणपतलाल	18	50
श्री ब्रह्मदत्त चौधरी	18	50	श्री रामचन्द सोंलकी	18	50
श्री निहालचन्द टांक	18	50	श्री घीसूलाल	18	50
श्रीमती स्नेहलता शर्मा	18	50	श्री नेमीचन्द	18	50
श्री बाबूलाल परिहार	18	100	श्रीमती शोभा प्रजापति	18	50

नाम	ग्रुप नं.	रकम	नाम	ग्रुप नं.	रकम
श्रीमती उर्मिला परिहार	18	50	श्री एल.एन. राजपूत	20	200
श्रीमती प्रभा शर्मा	18	100	श्री डी.के. जैन	20	200
श्री प्रियतोष दत्ता	18	50	श्री बी.आर. मोंगा	20	100
श्री अर्जुन डोडानी	18	100	श्री पी.पी. खण्डेलवाल	20	100
श्रीमती सुरेन्द्र कौर सोहल	18	50	श्री अशोक जैक्सन जैकब	20	100
श्री महेशचन्द गुप्ता	18	50	श्री पी.एन. माथुर	20	100
श्री वी.पी. कपूर	18	100	श्रीमती निर्मला जोहरी	20	100
श्री कैलाश टेकवानी	18	50	श्री अमर सिंह वर्मा	20	50
श्री हरलाल जिरोता	18	50	श्री जे.के. बिन्दल	20	50
सुश्री सुरेन्द्र कुमारी	18	50	श्रीमती विजयलक्ष्मी शर्मा	20	100
श्रीमती पदमा देवी	18	50	श्रीमती मंजू पंवार	20	100
श्री भगवानदास	18	100	श्रीमती रामेश्वरी खण्डेलवाल	20	100
श्री भवंरलाल साँखला	18	50	श्री सुनील मोहन जौहरी	20	100
श्री हरकिशन थावानी	18	50	श्रीमती चन्दर ऐबट	20	100
श्री के.सी.पंत	18	100	श्री आर.एस. सिघंल	20	100
श्रीमती संगीता डोडानी	18	50	श्री अमरसिंह क्षत्रिय	20	100
श्रीमती मंजू मिश्रा	18	50	श्री बी.एस. शिवनानी	20	100
श्रीमती चेतन कौर	18	50	श्रीमती शोभा बापना	20	50
श्रीमती सरोज मामोडिया	18	50	श्री प्रेमप्रकाश	20	51
श्री प्रेमसिंह तवंर	18	50	श्रीमती शशीबाला चौबे	20	100
श्री हरिशंकर सारस्वत	18	50	श्रीमती आशा कौशिक	20	100
श्री राधेश्याम मामोडिया	18	50	श्रीमती मीना जैकब	20	50
श्री जयन्त कुमार बुन्देल	18	50	श्री एल. एन. राजपूत	20	100
श्री महेश शिरालकर	18	50	श्री जे.के. बिन्दल	20	100
श्री चन्द्रप्रकाश बंसल	18	50	श्री डी.के. जैन	20	200
श्री भगवानदास आहुजा	18	50	श्री पी.एन. माथुर	20	100
श्री सुखवन्त सिंह	18	50	श्रीमती निर्मला जौहरी	20	100
श्रीमती प्रेरणा गौड़	18	100	श्री राजेन्द्र कुमार शिवहरे	20	100
श्री नरेन्द्र व अनीता बंसल	20	100	श्री बी.के. वाधवा	20	100
श्री बी.के. वाधवा	20	100	श्री ओ.पी. पीपल	21	50
श्री एस.सी. गुप्ता	20	100	श्रीमती उर्मिला मिश्रा	21	50
श्री एच.एन. भटनागर	20	100	श्री ओ.पी. शर्मा	21	50
श्री विनोद कुमार माथुर	20	100	श्री नन्दलाल वर्मा	21	50
श्रीमती मधु चुघ	20	50	श्री रामसिंह शर्मा	21	50
श्री शिवकरण	20	50	श्री वी.एस. शेखावत	21	50
श्री एस.एन. कपूर	20	50	श्री मोहनसिंह जोधाना	21	50

नाम	ग्रुप नं.	रकम	नाम	ग्रुप नं.	रकम
श्री रमेश नोगिया	21	50	श्री आर.डी. शर्मा	22	50
श्रीमती कान्ताबेन पाटिल	21	50	श्री आर.एस. टांक	22	50
श्रीमती मंजू बेन पाटिल	21	50	श्री सुरेश नारायण गुप्ता	22	50
श्री ए.के. मिश्रा	21	50	श्रीमती अरूणा मिश्रा	22	50
श्रीमती रजंना झा	21	50	श्री महादेव प्रसाद मारोठिया	22	50
श्री ओ.पी. शर्मा	21	50	श्री ताराचन्द शर्मा	22	50
श्री पुरूषोत्तम पाटिल	21	50	श्री जे.एल. भाटी	22	50
श्री आर.एस.एन. राव	21	50	श्री कुशल सिंह वर्मा	22	50
श्रीमती बसन्ती देवी	21	50	श्रीमती स्नेहलता शर्मा	22	50
श्री चन्दू भाई पाटिल	21	50	श्री राधेश्याम शर्मा	22	50
श्रीमती प्रमिला पाटिल	21	50	श्रीमती कान्ता शर्मा	22	50
श्री एस.एन. सिंह राठौड	21	100	श्री चन्द्राराम गुर्जर	22	50
श्री पुरूषोत्तम पटेल	21	100	श्रीमती रमा बंसल	22	50
श्रीमती चन्द्रप्रभा शेखावत	21	100	श्री विजेन्द्र सार्मरिया	22	50
श्रीमती अयोध्या चन्दावत	21	100	श्रीमती अन्जना यादव	22	50
श्री ओ.पी. मंडरावलिया	21	100	श्रीमती सुभाषनी देवी	22	50
श्री रामसिंह शर्मा	21	100	श्रीमती चित्रा माथुर	22	50
कैप्टन एस.एन. सिंह राठौड	21	50	श्री जी.सी.पचौरी	22	50
श्रीमती चन्द्रप्रभा कंवर	21	50	श्री अनिल सक्सेना	22	50
श्रीमती अयोघ्या कंवर	21	50	श्रीमती उमा शर्मा	22	50
श्री ओ.पी. मण्डरावलिया	21	100	श्री धर्मू ज्ञानचन्दानी	22	50
श्री रामसिंह शर्मा	21	50	श्रीमती ईश्वरी ज्ञानचन्दानी	22	50
श्रीमती देवता देवी	21	50	श्री राजेन्द्र शर्मा	22	50
श्री चन्द्रशेखर शर्मा	21	50	श्री पुरूषोत्तम उरजानी	22	50
श्री राधेश्याम धवन	21	50	श्री अशोक पंचवानी	22	50
श्रीमती बीना डडलानी	21	50	श्री गोपाल शर्मा	22	50
श्री रामजी भाई पटेल	21	100	श्रीमती कमलेश कुलश्रेष्ठ	22	50
श्री हीरालाल पटेल	21	100	श्रीमती शकुन्तला शर्मा	22	50
श्री एम.एम. शर्मा	21	100	श्रीमती सीतादेवी	22	50
श्री भंवर लाल तंवर	22	50	श्री मीनाक्षी आजाद	22	50
श्री रमेश चंद गुप्ता	22	50			
श्री राजेन्द्र बंसल	22	50			
श्री पी.आर. सोनी	22	50			
श्रीमती शंकुतला विजय	22	50			
श्रीमती बीना फालके	22	50			
श्रीमती ललिता सुराणा	22	50			



वृद्धजन सम्मान समारोह 2017-18
दानदाताओं की सूची

- श्री बलबीर सिंह गहलोत, वित्त सचिव

नाम	ग्रुप नं.	रकम
श्री सी.एम. राठी	अन्य	500
श्री रतनलाल कंवरलाल पाटनी	अन्य	2100
श्री आर.एस.अग्रवाल	01	500
श्री यू.सी.गुप्ता	01	500
श्री द्वारकाप्रसाद माथुर	01	500
श्री सुधाकर बन्धु	01	500
श्री पुरूषोत्तम शर्मा	01	500
श्रीमती गुणमाला जैन	01	250
श्री राजेन्द्र प्रसाद अग्रवाल	01	500
श्री नरेन्द्र मंगल	01	500
श्रीमती स्नेहलता मंगल	01	500
श्री महेशचन्द गुप्ता	01	500
श्री अशोक शर्मा	01	700
श्रीमती आई.एच. सैम्युअल	01	500
श्री अनिल कुमार अग्रवाल	01	500
श्रीमती कृष्णा अग्रवाल	02	500
श्री औमप्रकाश वर्मा	02	500
सुश्री सन्तोष शर्मा एडवोकेट	02	500
श्रीमती मधु सक्सेना	02	500
श्री बद्रीनारायण गर्ग	02	500
श्री श्रीगोपाल अग्रवाल	02	500
श्री जयकृष्ण राघानी	02	500
श्री नरेन्द्र कुमार बनवीर	02	500
श्रीमती मंजू प्रभा जोशी	02	500
श्री कैलाशचन्द गोयल	02	500
श्री नवरतन चौधरी	02	500
श्री चिरंजीलाल शर्मा	02	500
श्री सन्तोष कुमार रावत	02	500
श्री गोपाल शकंर शर्मा	02	500
श्री जगदीश कांकाणी	02	500
श्री मंगल सिंह रावत	02	500
श्री उम्मेदराम काबरा	02	500
श्री गोपाल प्रसाद माथुर	02	500
श्री अशोक कुमार शर्मा	02	500
श्री वी.पी.श्रीवास्तव	02	500
डा.एस.एन.माहेश्वरी	02	500
श्री जयदेव सांखला	02	500
श्री सुरेन्द्र विजय	03	500
श्री देवकृष्ण तोषनीवाल	03	500
श्री सुरेश मित्तल	04	500
कमान्डर जे.एस. राजावत (Retd.)	04	500
श्री बी.एल. कटियार	05	500
श्री जी.एस.यादव	05	500
श्रीमती सत्या यादव	05	500
श्री विरेन्द्र सिंह राठौर	05	500
श्री पी.एन.शर्मा	05	500
श्री जे.पी.विजय	05	500
श्री सादत कबीर	05	500
श्री जी.के.कपिल	05	500
श्री अमरसिंह शेखावत	05	500
श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा	05	500
श्री आर.एन.तापड़िया	05	500
श्री कैलाशचन्द शर्मा	05	500
श्री डी.सी.जैन	05	500
श्री खेमचन्द चतुर्वेदी	05	500
श्री सुरेशचन्द शर्मा	05	500
सरदार श्री राजेन्द्र सिंह	05	500
श्री सत्यनारायण सिंघल	06	500
श्री जे.के.तुलसीयानी	06	500
श्री पी.एन. माथुर	06	500
श्रीमती बीना आहुजा	06	100
श्रीमती विद्या शास्त्री	06	100
ठा.श्री नवरत्न सिंह	06	300
श्री सुनील सक्सेना	06	500
श्री वेदप्रकाश जोशी	06	500
श्री भवंरलाल गोयल	07	500
श्री भवंरलाल शर्मा	07	500
श्रीमती कुसुम गौतम	09	500

नाम	ग्रुप नं.	रकम
श्री भगवानदास असमादिया	09	500
श्री ज्ञानचन्द गुप्ता	09	500
श्री नात्थूराम अरोड़ा	10	1100
श्री कल्याणराय शर्मा	10	500
श्री मानकरण अग्रवाल	11	500
श्रीमती लक्ष्मी टण्डन	12	500
श्री महेश शर्मा	12	500
श्री दीनबन्धु सिंघल	12	500
श्री सी.पी. शुक्ला	12	500
श्री गौरीशंकर मिश्रा	12	500
श्रीमती उषा भटनागर	12	500
श्री वी.के.मित्तल	12	500
श्री दशरथ सिंह राठौड़	12	500
श्री मदन रवि	12	500
श्री नरेन्द्र देव शर्मा	12	500
श्रीमती प्रेमकान्ता सिंघल	13	500
श्रीमती कैलाश पाराशर	13	500
श्री राधाकिशन टांक	13	500
श्री जगननाथ वेदवाल	13	500
श्री रघुवीर सिंह शर्मा	13	1000
श्री सुरेशचन्द अग्रवाल	13	1100
श्रीमती राधिका अग्रवाल	13	1100
श्री बलबीर सिंह गहलोत	13	500
श्रीमती द्वारका देवी शर्मा	13	500
सुश्री अरूणा गुप्ता	13/अन्य	250
श्री सतीशचन्द श्रीवास्तव	14	500
श्री श्रीकृष्ण शर्मा	14	500
श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता	14	100
श्री बलवन्त सिंह	14	100
श्री परमानन्द यादव	15	1100
श्री जे.पी. शर्मा	15	500
श्री पी.सी. गुप्ता	15	500
श्री एच.पी. कोहली	15	500
श्री एस.आर. खण्डेलवाल	15	500
डॉ. एस. के. सिंह	15	500
श्रीमती पुष्पा शर्मा	15	500
श्री वाई.पी. शर्मा	15	500
श्री लक्ष्मण मटाई	15	500
श्री आर.एन. शर्मा	15	500
श्री वी.पी. झा	15	500
डॉ. सुभाष माहेश्वरी	15	1000

नाम	ग्रुप नं.	रकम
श्री प्रवीण कुमार शर्मा	15	500
श्री रतनलाल ऐरन	16	500
श्री मदनलाल भंसाली	16	500
श्री लालचन्द डोसी	16	500
श्रीरामेश्वर लाल तत्ववेदी	16	500
श्री रामेश्वर लाल सुगन्ध	16	200
श्री आर.सी.माहेश्वरी	17	500
श्रीमती मंजू माहेश्वरी	17	500
श्री उम.सी.बाच्छीवाल	17	500
श्रीमती सोम खतोरिया	17	500
श्री जे.सी.शर्मा	17	500
श्री नारायण सिंह	17	500
श्री के.के.गौड़	18	500
श्री वी.पी.कपूर	18	500
श्री महेशचन्द गुप्ता	18	500
श्री अर्जुन डोडानी	18	500
श्रीमती वीना रामसिघांनी	18	500
सुश्री सुरेन्द्र कुमारी	18	500
श्री महेन्द्र कनोजिया	20	501
श्री जसवन्त सिंह	20	500
श्री यू.तुकाराम	20	500
श्री बी.आर.मोंगा	20	500
श्री एच.एन.भटनागर	20	500
श्री बी.आर.सांघी	20	500
श्री एल.एन.राजपूत	20	500
श्रीमती चन्दर ऐबट	20	500
श्री एम.एस. सिंगला	20	500
श्री एस.पी. मित्तल	20	500
श्री वी.डी. गुप्ता	20	500
श्री प्रतोद कुमार शर्मा	20	500
श्री पी.एन. माथुर	20	500
श्रीमती बीना रानी	20	700
श्री आर.के. शिवहरे	20	1300
श्री रामेश्वर सिसोदिया	20	500
श्री बी.के.बाधवा	20	500
श्री नरेन्द्रसिंह पवाँर	20	500
श्री डी.के.जैन	20	500
श्री एस.एन.कपूर	20	500
श्री महेन्द्र कुमार पवाँर	20	1000
समुह 21 की ओर से सामुहिक	21	500



संस्था के सदस्यों द्वारा दी गई वार्षिक सहयोग राशि

1 अप्रेल 2017 से 31 जुलाई 2018

- श्री बलबीर सिंह गहलोत, वित्त सचिव

नाम	ग्रुप नं.	रकम	नाम	ग्रुप नं.	रकम
श्रीमती रेखा मौर्य	अन्य	5000	श्री केशवराम सिंहल	01	100
श्री जगदीश चन्द्र सैनी	01	100	श्री पूनमचंद चौहान	01	100
श्रीमती मधु सक्सेना	01	100	श्रीमती प्रेमदेवी चौहान	01	100
श्री प्रकाश जेठरा	01	100	श्री राजेन्द्र पंवार	01	100
श्री दिनेश श्रीवास्तव	01	100	श्री पुरूषोत्तम शर्मा	01	100
श्री बालकिशन जोशी	01	100	श्री तिलकराज फागना	01	100
श्री अशोक शर्मा	01	100	श्री हरिकृष्ण गुप्ता	01	100
श्री मानसिंह वर्मा	01	100	श्रीमती विमला गुप्ता	01	100
श्री महेशनारायण माथुर	01	100	श्री अशोक कुमार गोयल	01	100
श्रीमती कुसुम माथुर	01	100	श्रीमती लता गोयल	01	100
श्री महेशचन्द्र गुप्ता	01	100	श्री डी.पी. माथुर	01	100
श्रीमती मंचन गुप्ता	01	100	श्री रमेश धनोपिया	01	100
श्री गुलाबचन्द्र अग्रवाल	01	100	श्रीमती शारदा धनोपिया	01	100
श्री आर.एस. अग्रवाल	01	100	श्री के.एम. अग्रवाल	01	100
श्रीमती शशी अग्रवाल	01	100	श्रीमती प्रेमलता बाकलीवाल	01	100
श्री जे.एन. पुरोहित	01	100	श्री उमेशचन्द्र गुप्ता	01	100
श्री के.के. बचलस	01	100	श्री कैलाशचन्द्र चौधरी जैन	01	100
श्री पी.सी. पंत	01	100	श्री नरेन्द्र कुमार मंगल	01	100
श्रीमती शांता पंत	01	100	श्रीमती स्नेहलता मंगल	01	100
श्रीमती दीप्ति बसु	01	100	श्रीमती आई.एच. सैमुअल	01	100
श्रीमती कुसुम मित्तल	01	100	श्री ओमनारायण माथुर	01	100
श्री अनिल कुमार अग्रवाल	01	100	श्रीमती गुणमाला जैन	01	100
श्री सुधाकर बंधु शर्मा	01	100	श्री जे.एन. माथुर	01	100
श्रीमती रसीला शर्मा	01	100	श्रीमती सुशीला माथुर	01	100
श्रीमती मधु गुप्ता	01	100	श्री आर.सी. चतुर्वेदी	01	100
श्री अमृतपाल चोपड़ा	01	100	श्री चिरंजी लाल शर्मा	02	100
श्री राजेन्द्रप्रसाद अग्रवाल	01	100	श्री भगवान लालवानी	02	100
श्रीमती उमा रानी अग्रवाल	01	100	श्री के.के. शर्मा	02	100
श्रीमती सुदर्शना गहलोत	01	100	श्री सूरजनारायण जोशी	02	100
श्री रामजीलाल अरोड़ा	01	100	श्री गोपाल प्रसाद माथुर	02	100

नाम	ग्रुप नं.	रकम	नाम	ग्रुप नं.	रकम
श्रीमती स्टीफन एम.डोरथी	02	100	डॉ. के.जी गोयल	02	100
श्रीमती मोनिका मिश्रा	02	100	श्रीमती सुरेखा गोयल	02	100
श्रीमती इन्द्रा गुप्ता	02	100	श्री मोतीलाल पाटोदिया	02	100
श्री आर.डी. गुप्ता	02	100	श्रीमती कमला पाटोदिया	02	100
श्री गोपाल शंकर शर्मा	02	100	श्री साँवलदान चारण	02	100
श्रीमती शकुन्तला शर्मा	02	100	श्री वी.पी. श्रीवास्तव	02	100
श्री रामसिंह निर्वाण	02	100	श्री एस.एस. ओझा	02	100
श्री जयदेव साँखला	02	100	श्री हैरीसन सैमुअल	02	100
श्रीमती सुशीला साँखला	02	100	श्री पाँचूलाल चौधरी	02	100
श्री महेन्द्र देव मुरारी	02	100	श्री धीरेन्द्र सरीन	02	100
श्री प्रताप सिंह थोरी	02	100	श्री आर्.के. रोहिल्ला	02	100
श्रीमती केसर देवी	02	100	श्रीमती सुधा रोहिल्ला	02	100
श्रीमती शकुन्तला अग्रवाल	02	100	श्री के.जी. मोदानी	02	100
श्री नरेन्द्र कुमार अग्रवाल	02	100	श्रीमती तारा मोदानी	02	100
श्री ओ.पी. वर्मा	02	100	श्री ओमप्रकाश खण्डेलवाल	02	100
श्री मंगलसिंह रावत	02	100	श्रीमती रामकन्या खण्डेलवाल	02	100
श्री जे.के. राघानी	02	100	श्री रमेश अग्रवाल	02	100
श्रीमती गोपी खबरानी	02	100	श्रीमती पुष्पा अग्रवाल	02	100
श्री अशोक कुमार शर्मा	02	100	श्री मेघराज शर्मा	02	100
श्री कृष्ण कुमार टांक	02	100	श्रीमती विमला शर्मा	02	100
श्री के.जी त्रिपाठी	02	100	श्री राजेन्द्र जोशी	02	100
श्रीमती गीता त्रिपाठी	02	100	श्री जे.एन. माथुर	02	100
श्रीमती राजरानी सारस्वत	02	100	श्री बंशीलाल सतरावला	02	100
श्री भैंरूलाल शर्मा	02	100	श्रीमती मैनादेवी सतरावला	02	100
श्रीमती कमला शर्मा	02	100	श्री किशन आर. खुराना	02	100
श्री सन्तोष कुमार रावत	02	100	श्री सीतराम शर्मा	02	100
श्रीमती दीपा रावत	02	100	श्री कुलदीप व्यास	02	100
श्री श्रीगोपाल अग्रवाल	02	100	श्री बाबूलाल साहू	02	100
श्रीमती चन्द्रकान्ता	02	100	सुश्री सन्तोष शर्मा	02	100
श्री प्रेमप्रकाश गर्ग	02	100	श्री रामस्वरूप शर्मा	02	100
श्रीमती कृष्णा गर्ग	02	100	श्री आई.सी. अग्रवाल	02	100
श्रीमती सन्तोष कंवर निर्वाण	02	100	श्री बाबूलाल छीपा	02	100
श्री चान्दकरण पालीवाल	02	100	श्रीमती भँवरीदेवी छीपा	02	100
डॉ. एस.एन. माहेश्वरी	02	100	श्री कैलाश जोशी	02	100
श्रीमती शकुन्तला माहेश्वरी	02	100	श्रीमती मंजू प्रभा जोशी	02	100
श्रीमती यशोदा पालीवाल	02	100	श्री बैजनाथ शर्मा	02	100

नाम	ग्रुप नं.	रकम	नाम	ग्रुप नं.	रकम
श्री सैमसन सुरेन्द्र	02	100	श्री सूरजनारायण लखोटिया	03	100
श्री के.सी. गोयल	02	100	श्री सुभाषचन्द माहेश्वरी	03	100
श्रीमती मोहिनीदेवी गोयल	02	100	श्री लवकिशोर खन्ना	03	100
श्री जगदीश काकांणी	02	100	श्री भँवरलाल मूंदडा	03	100
श्री नरेन्द्र कुमार मेहरा	02	100	श्री महेशचन्द हेड़ा	03	100
श्रीमती आशा मेहरा	02	100	श्री प्रहलाद लाल मालू	03	100
श्री उम्मेदराम काबरा	02	100	श्री ओ.पी. माहेश्वरी	03	100
श्रीमती गीतादेवी काबरा	02	100	श्री हरिप्रसाद माहेश्वरी	03	100
श्री बी.एस.सरीन	02	100	श्री राधेश्याम हेड़ा	03	100
श्रीमती मंगला सरीन	02	100	श्री घनश्याम सोमानी	03	100
श्री नरेन्द्र कुमार बनवीर	02	100	श्री रामेश्वर लाल तापड़िया	03	100
श्री देवेन्द्र कुमार शर्मा	02	100	श्री सोहनलाल बारूपाल	03	100
श्री डी.के.शर्मा	02	100	श्री सन्तोष कुमार टण्डन	03	100
श्री हरीशचन्द्र काबरा	02	100	श्री श्याम सुन्दर टण्डन	03	100
श्रीमती प्रेमलता काबरा	02	100	श्री देवकिशन तोषनीवाल	03	100
श्री बी.एन. सारस्वत	02	100	श्रीमती शशि तोषनीवाल	03	100
श्रीमती मधु सारस्वत	02	100	श्री जगदीश प्रसाद गोयल	03	100
श्री ताराचन्द छीपा	02	100	श्री बालकिशन माहेश्वरी	03	100
श्री जसराज शर्मा	02	100	श्री ओमप्रकाश परिहार	04	100
श्री किशन सिंह	02	100	श्री किशन गोपाल सिसोदिया	04	100
श्री बी.एम. जोशी	02	100	श्री रतनलाल टाक	04	100
श्री जयदेव सांखला	02	100	श्री प्रकाशचन्द चन्दावत	04	100
श्री नन्दकिशोर विजय	03	100	श्रीमती पुष्पा देवी चन्दावत	04	100
श्री अनिल कपूर	03	100	श्री आर.के. भार्गव	04	100
श्री बनवारीलाल शर्मा	03	100	श्री धर्मेन्द कुमार गोयल	04	100
श्री अशोक विजयवर्गीय	03	100	श्री टीकम चन्द छीपा	04	100
श्री सुरेन्द्र कुमार विजय	03	100	श्री अशोक शर्मा	04	100
श्री छीतरमल प्रजापति	03	100	कमान्डर जे.एस. राजावत (Retd.)	04	100
श्री जगदीश प्रसाद मन्त्री	03	100	श्री राधाकिशन जोधा	04	100
श्री विजय कन्दोई	03	100	श्रीमती नन्दू जोधा	04	100
श्री गोविन्द प्रसाद असावा	03	100	श्री मोहनलाल तवँर	04	100
श्री हरिप्रसाद असावा	03	100	श्री शान्तिलाल गर्ग	04	100
श्री कैलाशचन्द तापड़िया	03	100	श्रीमती कमला गर्ग	04	100
श्रीमती शान्तिदेवी तिवारी	03	100	श्री अशोक सक्सेना	04	100
श्री गणपत सिंह	03	100	श्री गिरीराज कच्छावा	04	100
श्री अशोक कुमार गोयल	03	100	श्री के.एन.गुप्ता	04	100

नाम	ग्रुप नं.	रकम	नाम	ग्रुप नं.	रकम
श्री जवाहर ननकानी	04	100	श्री विरेन्द्र सिंह राठौर	05	100
श्री ओमप्रकाश परिहार	04	100	श्री दिनेश गोयल	05	100
श्री रतनपुरी गोस्वामी	04	100	श्री एस.सी.ओझा	05	100
श्रीमती लक्ष्मी गहलोत	04	100	श्री राजेन्द्र	05	100
श्री सुरेशचन्द मित्तल	04	100	श्री सुरेन्द्र श्रीवास्तव	05	100
श्री जगदीश प्रसाद सोलंकी	04	100	श्री सादत कबीर	05	100
श्री जेठमल जादम	04	100	श्री अमरसिंह शेखावत	05	100
श्री कृष्ण स्वरूप कच्छावा	04	100	श्री जी.के.कपिल	05	100
श्री आत्माराम गर्ग	04	100	श्री जे.एस.सेंगर	05	100
श्री गिरधारी सिंह चुंडावत	04	100	श्री राजेन्द्र सिंह चौहान	05	100
श्री नन्दसिंह राठौर	04	100	श्री राजेन्द्र सिंह (सरदार जी)	05	100
श्री पी.के.बोगावत	04	100	श्री राजेन्द्र कुमार शर्मा	05	100
श्री चन्द्रकान्त शर्मा	04	100	श्री एस.पी.कौशिक	05	100
श्री रामचरण गोयल	04	100	श्री आर.एन.तापड़िया	05	100
श्री सी.पी. भटनागर	04	100	श्री कैलाशचन्द्र शर्मा	05	100
श्रीमती शशी भटनागर	04	100	श्री सुरेशचन्द्र शर्मा	05	100
श्रीमती पुष्पा कुमार सक्सेना	04	100	श्री धर्मीचन्द जैन	05	100
श्री अभयमल सक्लेचा	04	100	श्री खेमचन्द चतुर्वेदी	05	100
श्री मांगीलाल गोयल	04	100	श्री ए.एन. शर्मा	05	100
श्री कृष्णगोपाल सिसोदिया	04	100	श्री राजेन्द्रप्रसाद पाण्डे	05	100
श्री सूरज मित्तल	04	100	श्रीमती आशा कटियार	05	100
श्री महावीर चन्द बड़जात्या	04	100	श्रीमती विमला शर्मा	05	100
श्री मोहनलाल तँवर	04	100	श्री विजयलक्ष्मी गौड़	05	100
श्री राजकुमार तायल	04	100	श्रीमती सत्या यादव	05	100
श्री जे.पी. विजय	05	100	श्रीमती कमला शर्मा	05	100
श्रीमती किरण श्रीवास्तव	05	100	श्री अशोक कंवर राठौर	05	100
श्री अशोक कंवर राठौर	05	100	श्री मनोहर विजय	05	100
श्रीमती प्रकाश भल्ला	05	100	श्रीमती विजयलक्ष्मी गोयल	05	100
श्री झम्मनसिंह	05	100	श्रीमती गीता श्रीवास्तव	05	100
श्री एस.आर.खूबचन्दानी	05	100	श्रीमती गीता पाण्डे	05	100
श्री पी.टाईटस	05	100	श्रीमती पुष्पलता चौहान	05	100
श्री बी.एल. कटियार	05	100	श्रीमती सुशीलादेवी पुरोहित	05	100
श्री रमेशचन्द शर्मा	05	100	श्री प्रेमप्रकाश उपाध्याय	06	100
श्री चन्द्रकान्त गौड़	05	100	श्रीमती कंचन उपाध्याय	06	100
श्री गजसिंह यादव	05	100	श्री लज्जा शंकर गोयल	06	100
श्री पी.एन.शर्मा	05	100	श्री जे.के. तुलसीयानी	06	100

नाम	ग्रुप नं.	रकम	नाम	ग्रुप नं.	रकम
श्रीमती प्रेम गर्ग	06	100	श्रीमती मधु सारस्वत	06	100
श्री बालकिशन शर्मा	06	100	श्री बृजनारायण सारस्वत	06	100
श्री हरिप्रकाश	06	100	श्रीमती विद्या शास्त्री	06	100
श्री रामदेव कुवाड़ा	06	100	श्री रामकिशोर अग्रवाल	06	100
श्री भँवरलाल गोयल	06	100	श्रीमती चन्द्रकान्ता अग्रवाल	06	100
श्री ओमप्रकाश शर्मा	06	100	श्री महेशचन्द शर्मा	06	100
श्रीमती विद्यादेवी शर्मा	06	100	श्री वेदप्रकाश जोशी	06	100
श्री पी.एन. माथुर	06	100	श्री मुरली नारायण सिमलोठ	06	100
श्रीमती शोभा माथुर	06	100	श्रीमती बीना आहुजा	06	100
श्री गोविन्द लाल गोयल	06	100	श्री प्रेमचन्द सिघंल	08	100
श्री वेणी गोपाल	06	100	श्री अजय मेहरा	08	100
श्री सुनील सक्सैना	06	100	श्री सूरजनारायण कपूर	08	100
श्रीमती भारती सक्सैना	06	100	श्री रमेशचन्द गुप्ता	08	100
श्रीमती पुष्पा क्षेत्रपाल	06	100	श्री पी.डी.शर्मा	08	100
श्री सत्यनारायण सिंघल	06	100	श्री बाबूलाल अग्रवाल	08	200
श्री ओमप्रकाश सोगानी	06	100	श्री के. जे. ज्ञानी	09	100
श्रीमती शान्ति अग्रवाल	06	100	श्रीमती कुसुम गौतम	09	100
श्री ओमदास	06	100	श्रीमती शशिकला रीगो	09	100
श्री ज्ञानप्रकाश त्रिपाठी	06	100	श्री राधेश्याम गर्ग	09	100
श्री विष्णु गोयल	06	100	श्री पी.के. मिश्रा	09	100
श्री अनिल अग्रवाल	06	100	श्री ज्ञानचन्द गुप्ता	09	100
श्री रामदेव शर्मा	06	100	श्रीमती सुधा गुप्ता	09	100
श्री रामस्वरूप खण्डेलवाल	06	100	श्री रमेश शुक्ला	09	100
श्री लोकमनदास गोयल	06	100	श्री कमलचन्द सिंघवी	09	100
श्रीमती लोचना देवी गोयल	06	100	श्रीमती जतनकंवर सिंघवी	09	100
श्री अमरसिंह मकवाना	06	100	श्री भगवानदास असमादिया	09	100
श्रीमती सुशीला खण्डेलवाल	06	100	श्री गंगासहाय शर्मा	09	100
डा.ओमप्रकाश गर्ग	06	100	श्री कश्मीर सिंह	09	100
श्री सुरेन्द्र नारायण मेहरा	06	100	श्रीमती लता मिश्रा	09	100
श्री महेश जोशी	06	100	श्री के.के.तामरा	09	100
श्री चन्द्रनारायण अग्रवाल	06	100	श्री आर.सी.बजाज	09	100
श्री स्नेह कुमार गोयल	06	100	श्रीमती सुशीला शर्मा	09	100
श्री जेठमल प्रजापति	06	100	श्री ओमप्रकाश गुप्ता हलवाई	09	100
श्री आनन्दी प्रसाद सेन	06	100	श्री नन्दकिशोर शर्मा	09	100
श्री अर्जुन सिंह मकवाना	06	100	श्रीमती मुन्नीदेवी	09	100
श्री नवल किशोर टांक	06	100	श्री सुगनो लालचन्दानी	09	100

नाम	ग्रुप नं.	रकम	नाम	ग्रुप नं.	रकम
श्री अनूप सिंह वर्मा	09	100	श्री भागचन्द कस्तूरिया	12	100
श्री ओमप्रकाश गुप्ता	09	100	श्रीमती गीता रवि	12	100
श्रीमती हेमन्त कुमारी सिंह	09	100	श्रीमती स्नेह प्रभा झा	12	100
श्री नाथूराम अरोड़ा	10	100	श्री यतीश झा	12	100
श्री सूरजकरण जैन	10	100	श्री गौरीशंकर मिश्रा	12	100
श्री दिनेश पालडिया	10	100	श्री दिलीप सिंह पीलकन्या	12	100
श्रीमती सरोज श्रीवास्तव	10	100	श्रीमती उषादेवी पीलकन्या	12	100
श्री रामचन्द्र चौहान	10	100	श्री विनायक प्रसाद माथुर	12	100
श्री अरूण कुमार गुप्ता	10	100	श्री एम.सी. शर्मा	12	100
श्रीमती बीना गुप्ता	10	100	श्रीमती प्रभारानी शर्मा	12	100
श्री लक्ष्मण सिंह अखावत	10	100	श्री प्रकाशचन्द जैन	12	100
श्रीमती प्रेम भार्गव	10	100	श्रीमती शोभा शर्मा	12	100
श्री सत्यनारायण पालड़िया	10	100	श्रीमती कुशल पाठक	12	100
श्रीमती सुनीता बारिया	10	100	श्रीमती राजकुमारी जोशी	12	100
श्री ओमप्रकाश कच्छावा	10	100	श्री ओमदत्त जोशी	12	100
श्रीमती पुष्पा कच्छावा	10	100	श्री सुभाष साहनी	12	100
श्रीमती चन्दर ऐबट	11	100	श्री बाबूलाल शर्मा	12	100
श्री मानकरण अग्रवाल	11	100	श्री मदनलाल सैनी	12	100
श्री सुधीर कुमार शर्मा	11	100	श्री सतीशचन्द शर्मा	12	100
श्रीमती शकुन्तला अग्रवाल	11	100	श्री पुष्करनारायण अरोड़ा	12	100
श्री कृष्ण मुरारी गुप्ता	11	100	श्री कृष्ण गोपाल वैष्णव	12	100
श्री विजय प्रकाश रॉय	11	100	श्री अनिल बेदरकर	12	100
श्री सन्तोष मंगल	11	100	श्री रामजीलाल खण्डेलवाल	12	100
श्रीमती वीना मून्दड़ा	11	100	श्रीमती सन्तोष भार्गव	12	100
श्री हरीशचन्द टांक	11	100	श्री त्रिवेणी प्रसाद शर्मा	12	100
श्री महेशदत्त शर्मा	11	100	श्री बी.पी. मित्तल	12	100
श्रीमती मुन्नीदेवी गुप्ता	11	100	श्री रामनिवास मीणा	12	100
श्रीमती सुधा गुप्ता	11	100	श्रीमती प्रभा शर्मा	12	100
श्री एम.सी. शर्मा	12	100	श्री रामकिशन पँवार	12	100
श्री पवनेश गौड	12	100	श्री यतीश चन्द शर्मा	12	100
श्री रामस्वरूप शर्मा	12	100	श्री दशरथ सिंह राठौड	12	100
श्रीमती कल्पना नागर	12	100	श्री हरिप्रसाद तिवारी	12	100
श्री गिरधर गोपाल गोयल	12	100	श्री मुकेश माथुर	12	100
श्रीमती पुष्पा गोयल	12	100	श्रीमती मंजू माथुर	12	100
श्री ओमप्रकाश शर्मा	12	100	श्री सुरेश बंसल	12	100
श्री गुलजीत सिंह	12	100			

नाम	ग्रुप नं.	रकम	नाम	ग्रुप नं.	रकम
श्री ओमप्रकाश भारद्वाज	12	100	श्री सुरेश अग्रवाल	13	100
श्रीमती लीला गुप्ता	12	100	श्रीमती राधिका अग्रवाल	13	100
श्री यतीशचन्द्र शर्मा	12	100	श्रीमती कैलाश पाराशर	13	100
श्रीमती सुषमा रानी मित्तल	12	100	श्री नरेन्द्र कुमार	13	100
श्री विजयकृष्ण मित्तल	12	100	श्री रामरतन टाँक	13	100
श्री के.एम. लवानिया	12	100	श्री शिवदयाल चौहान	13	100
श्रीमती गायत्री लवानिया	12	100	श्री बी.आर. दोहरे	13	100
श्री गोपीकिशन अग्रवाल	12	100	श्री बलबीर सिंह गहलोत	13	100
श्री मधुसुदन सिंघल	12	100	श्री यादराम भाटी	13	100
श्री जी.बी.मवाल	12	100	श्री बी.एल. आनन्द शास्त्री	13	100
श्रीमती रजनी मवाल	12	100	श्रीमती अंजना गुप्ता	13	100
श्री जयप्रकाश गुप्ता	12	100	श्री अमरचन्द	13	100
श्रीमती शीला गुप्ता	12	100	श्री बिहारीलाल	13	100
श्रीमती सुशीला खण्डेलवाल	12	100	श्रीमती प्रेमबाई	13	100
श्री भागचन्द कस्तूरिया	12	100	श्री गणेशीलाल बैरवा	13	100
श्रीमती गीता तिवारी	12	100	श्री जगन्नाथ वेदवाल	13	100
श्री मंजू अग्रवाल	12	100	श्रीमती रघुवीर सिंह शर्मा	13	100
श्री रामचन्द शर्मा	12	100	श्री वी.के.शर्मा	13	100
श्री आर.सी. गढवाल	12	100	श्रीमती हेमलता	13	100
श्री दीनबन्धु सिंघल	12	100	श्री देवेन्द्र कुमार	13	100
श्रीमती वीना सिंघल	12	100	श्री मांगीलाल देवल	13	100
श्री श्रीगोपाल मित्तल	12	100	श्री राजेन्द्र कुमार संगेविया	13	100
श्रीमती सरोज शर्मा	13	100	श्री राधेश्याम शर्मा	13	100
श्री जे.पी. झा	13	100	श्री मनोहर लाल मुरारिया	13	100
श्रीमती सरोज झा	13	100	श्री प्रकाश कुमार	13	100
श्री बी.के. खेमराज	13	100	श्री सेवाराम चौहान	13	100
श्री रामगोपाल कुमावत	13	100	श्री चिरंजीलाल शर्मा	13	100
डॉ. रामप्रसाद लवास	13	100	श्री सुन्दरलाल अरोड़ा	13	100
श्री सुभाष शर्मा	13	100	श्रीमती इन्द्रा गोयल	13	100
श्रीमती कुसुम शर्मा	13	100	श्री रामस्वरूप शर्मा	13	100
श्री सत्यनारायण गुप्ता	13	100	श्रीमती सुरेन्द्र बाला शर्मा	13	100
श्री बद्रीप्रसाद आकोदिया	13	100	श्री पी.के. शर्मा	13	100
श्री प्रकाश चन्द शर्मा	13	100	श्री सुरेश चन्द वर्मा	13	100
श्री ओ.पी. शर्मा	13	100	श्री रमेशचन्द शर्मा	13	100
श्री धर्मवीर शर्मा	13	100	श्रीमती शकुन्तला शर्मा	13	100
श्रीमती विजय कुमारी शर्मा	13	100	श्री दिनेश अग्रवाल	13	100

नाम	ग्रुप नं.	रकम	नाम	ग्रुप नं.	रकम
श्रीमती कुसुम अग्रवाल	13	100	श्री जगन्नाथ टेदवाल	13	100
श्री सुगनचन्द जोनवाल	13	100	श्री गणेशलाल बैरवा	13	100
श्री इन्द्रराज डोगरा	13	100	श्री मोहनलाल सांखला	13	100
श्रीमती सुधा डोगरा	13	100	श्रीमती शकुन्तला शर्मा	13	100
श्री चन्दन सिंह धनेरिया	13	100	श्री कृष्ण शर्मा	14	100
श्रीमती द्वारका देवी शर्मा	13	100	श्रीमती उषा शर्मा	14	100
श्री नत्थीलाल गुप्ता	13	100	श्री आर.एस. जैसवाल	14	100
श्रीमती मांगीदेवी टांक	13	100	श्री रमेशचन्द शर्मा	14	100
श्री शशीप्रकाश जैन	13	100	श्रीमती दुर्गा शर्मा	14	100
श्री बाबूलाल शर्मा	13	100	श्रीमती सुनीता टण्डन	14	100
श्री रमेशचन्द्र शर्मा	13	100	श्री अशोक टण्डन	14	100
श्री जे.पी. मिश्रा	13	100	श्री डी.पी. सोमानी	14	100
श्रीमती हेमलता मिश्रा	13	100	श्रीमती चन्द्रकान्ता माहेश्वरी	14	100
श्री इन्द्रराज डोगरा	13	100	श्री बलवन्त सिंह	14	100
श्रीमती राजरानी गुसांई	13	100	श्री जयप्रकाश गुप्ता	14	100
श्री विष्णुदेव शर्मा	13	100	श्री तारासिंह वर्मा	14	100
श्री बी.एल. शर्मा	13	100	श्री एम.बी. चतुर्वेदी	14	100
श्रीमती भंवरीदेवी शर्मा	13	100	सुश्री कुसुमलता आहुजा	14	100
श्री देवकीनन्दन बघेल	13	100	श्री गजानन्द प्रसाद	14	100
श्रीमती मुन्नीदेवी बुन्देल	13	100	श्री नात्थूसिंह गहरवार	14	100
श्रीमती कमला महावर	13	100	श्री प्रहलाद दास सोगरा	14	100
श्री श्यामलाल	13	100	श्री सतीशचन्द श्रीवास्तव	14	100
श्री नर्वदा देवी	13	100	श्रीमती वीना श्रीवास्तव	14	100
श्री पी.के. शर्मा	13	100	श्री महावीरप्रसाद बाकलीवाल	14	100
श्रीमती सुरेन्द्रबाला शर्मा	13	100	श्री चरण सिंह धारीवाल	14	100
श्री मांगीलाल देवल	13	100	श्री रविनन्दन शर्मा	14	100
श्री आर.के. गर्ग	13	100	श्री सूरज सिंह तंवर	14	100
श्री बी.आर. दोहरे	13	100	श्री कैलाशचन्द जादम	14	100
श्री सुरेशचन्द वर्मा	13	100	श्री विजय सिंह सिसोदिया	14	100
श्री मनोहरलाल मुरारिया	13	100	श्री गोविन्दराम कच्छावा	14	100
श्रीमती सरोज जैन	13	100	श्री अशोक कुमार शर्मा	15	100
श्रीमती सावित्रीदेवी चतुर्वेदी	13	100	श्री मुरारी लाल सिंह	15	100
श्री राधेश्याम धामा	13	100	श्री विष्णुकान्त खण्डेलवाल	15	100
श्रीमती कैलाश पाराशर	13	100	श्रीमती शशि खण्डेलवाल	15	100
श्रीमती कुसुम अग्रवाल	13	100	श्री वी पी झा	15	100
श्री सुगनचन्द जोनवाल	13	100	श्रीमती चन्द्र प्रभा झा	15	100

नाम	ग्रुप नं.	रकम	नाम	ग्रुप नं.	रकम
श्री जे.पी.शर्मा	15	100	श्री मानसिंह चौहान	15	100
श्रीमती प्रेम शर्मा	15	100	श्री चुन्नीलाल	15	100
श्री राधेश्याम शर्मा	15	100	डॉ. राघवेन्द्र महर्षि	15	100
श्रीमती शीला सक्सेना	15	100	श्री रामदयाल माच्छीवाल	15	100
श्री सुरेन्द्र कुमार गोयल	15	100	श्री देवकीनन्दन नागाल	15	100
श्रीमती चन्द्रावती निर्मल	15	100	श्री एम.एस. परिहार	15	100
श्री एन.वी.नायर	15	100	श्री आर.एल. मेहता	15	100
श्रीमती नीलकण्ठ पिल्लई	15	100	श्रीमती चन्द्र प्रभा झा	15	100
श्रीमती कलावती गोयल	15	100	श्री विद्या प्रकाश झा	15	100
श्री रघुनन्दन अग्रवाल	15	100	श्री मोहनलाल शर्मा	15	100
श्री एच.सी.कालरा	15	100	श्रीमती अरूणा शर्मा	15	100
श्रीमती लीना अरोड़ा	15	100	श्रीमती सावित्री खण्डेलवाल	15	100
श्री अशोक कुमार शर्मा	15	100	श्री रामगोपाल खण्डेलवाल	15	100
श्री वेद प्रकाश गुप्ता	15	100	श्री प्रदीप अग्रवाल	15	100
श्री वासुदेव खटरानी	15	100	श्री सुभाष अरोड़ा	15	100
श्री राजेन्द्र स्वरूप शर्मा	15	100	श्री सुरेश झा	15	100
श्रीमती शीला शर्मा	15	100	श्री महेश भटनागर	15	100
श्री राजेश मिश्रा	15	100	श्री नवीन कुमार शर्मा	15	100
श्री जे.पी. जांगिड	15	100	श्रीमती उषा गौड.	15	100
श्री दिलीप कुमार शर्मा	15	100	श्रीमती सन्तोष भटनागर	15	100
सुश्री सत्या शर्मा	15	100	श्री वासुदेव खटरानी	15	100
श्री जयप्रकाश गुप्ता	15	100	श्री बंशीलाल सहवाल	15	100
श्री डी.के. जैन	15	100	श्री हरीश पंजाबी	15	100
श्री पी.सी. गुप्ता	15	100	श्री भीमसेन बतरा	15	100
श्री एस.आर. खण्डेलवाल	15	100	श्री जगदीश चन्द खण्डेलवाल	15	100
श्री वाई.पी. शर्मा	15	100	श्रीमती कृष्णा खण्डेलवाल	15	100
श्री अशोक कुमार शर्मा	15	100	श्री तेजपाल भावलिया	15	100
श्री सत्यनारायण मंगल	15	100	श्री वेदप्रकाश गुप्ता	15	100
श्रीमती जयमाला जैन	15	100	श्रीमती प्रेम गुप्ता	15	100
श्रीमती आशा खण्डेलवाल	15	100	श्री मुकेश मिश्रा	15	100
श्रीमती लक्ष्मी गुप्ता	15	100	सुश्री जी.एस. स्टीफन	15	100
श्रीमती सुशीला गुप्ता	15	100	श्रीमती मैरी गार्डनर	15	100
श्रीमती पुष्पा शर्मा	15	100	श्री किशोर कुमार शर्मा	15	100
श्रीमती मिथलेश शर्मा	15	100	श्री राजकिशोर प्रसाद	15	100
श्री रामनारायण शर्मा	15	100	श्री उमाशंकर शर्मा	15	100
श्रीमती भवँरी देवी शर्मा	15	100	श्री नारायण स्वामी	15	100

नाम	ग्रुप नं.	रकम	नाम	ग्रुप नं.	रकम
श्रीमती सरला गम्भीर	15	100	श्री कृष्ण सहाय चड्ढा	16	100
श्री चतुर्भुज उबाणा	15	100	श्री विजय सिंह गहलोत	16	100
श्री गणेशीलाल गोयल	15	100	श्री मुन्नालाल भाटी	16	100
श्री सज्जन सिंह अग्रवाल	15	100	श्री सुगनसिंह भाटी	16	100
श्रीमती मधुबाला अग्रवाल	15	100	श्री रामनिवास चौधरी	16	100
श्री गणेशराम अग्रवाल	16	100	श्री स्वरूपचन्द चौऋषिया	16	100
श्री गोविन्द नारायण अग्रवाल	16	100	श्री अनिल कुमार गोयल	16	100
श्री नटवरलाल अग्रवाल	16	100	श्री अमरचन्द गुप्ता	16	100
श्री सूरज नारायण अग्रवाल	16	100	श्री चम्पालाल गुप्ता	16	100
श्री जगदीश चन्द ऐरन	16	100	डा.महेशचन्द गुप्ता	16	100
श्री रतन लाल ऐरन	16	100	श्री भागीरथ कटारिया	16	100
श्री रामचन्द्र बंसल	16	100	श्री कैलाशमल लोढ़ा	16	100
श्री बिमल कुमार बरडिया	16	100	श्री सुरेन्द्रमल लोढ़ा	16	100
डॉ. कैलाशचन्द्र त्रिपाठी	16	100	श्री राजेन्द्र प्रसाद मित्तल	16	100
श्री अशोक गोयल	16	100	डा.प्रकाश नारवाणी	16	100
श्री नवलकिशोर गोयल	16	100	श्री किशोरदत्त ओझा	16	100
श्री सुरेश चन्द गुप्ता	16	100	श्री बाबूसिंह पवाँर	16	100
श्री महेश जोशी	16	100	श्री बेनी गोपाल शर्मा	16	100
श्री राधेश्याम माहेश्वरी	16	100	डा.राजेश कुमार शर्मा	16	100
श्री बी.एल. साहू	16	100	श्री श्यामसुन्दर शर्मा	16	100
श्री सीताराम सैनी	16	100	श्री शकंरलाल सोनी	16	100
श्री सत्यनारायण शर्मा	16	100	श्री रामेश्वरलाल सुगंध	16	100
श्री घनश्याम वैष्णव	16	100	श्री घनश्याम वर्मा	16	100
श्री जगमाल सिंह यादव	16	100	श्री सत्यनारायण वर्मा	16	100
श्री ओमप्रकाश यादव	16	100	श्री महेश कुमार यादव	16	100
श्री राधेश्याम अग्रवाल	16	100	श्री पदमचन्द डाणी	16	100
श्री गोविन्द नारायण बंसल	16	100	श्री लालचन्द डोसी	16	100
श्री अजय कुमार गर्ग	16	100	श्री शक्तिनारायण नवाल	16	100
श्री गोविन्द लाल गोयल	16	100	श्री राजकुमार जैन	16	100
श्री हरिकृष्ण गुप्ता	16	100	श्री अमरसिंह यादव	16	100
श्री भागवत सिंह जैन	16	100	श्री लक्ष्मीनारायण अग्रवाल	16	100
श्री रामगोपाल जांगिड	16	100	श्री कमलकिशोर मल्होत्रा	16	100
श्री रामनिवास पाराशर	16	100	श्री चतुर्भुज वर्मा	16	100
श्री परमेश्वर लाल पारीक	16	100	श्रीमती रमणीक जैन	16	100
श्री राजपाल सिंह चड्ढा	16	100	श्रीमती धनेश्वरी कटारिया	16	100
श्री गोविन्द नारायण तिवारी	16	100			

नाम	ग्रुप नं.	रकम	नाम	ग्रुप नं.	रकम
श्रीमती डॉ. पूर्णिमा भाटिया	16	100	श्रीमती मनीषा विघानी	17	100
श्री सोहनलाल यादव	16	100	श्री सुरेश सक्सेना	17	100
श्रीमती संगीता गोयल	16	100	श्री जितेन्द्र भारद्वाज	17	100
श्री दिनेश कुमार गुप्ता	16	100	श्रीमती जया भारद्वाज	17	100
श्री निर्मल कुमार भार्गव	16	100	श्रीमती शैल बाला भारद्वाज	17	100
श्री नरेन्द्रनाथ मिश्रा	16	100	श्री गोविन्द प्रसाद शर्मा	17	100
श्री पी.आर. प्रतिहार	16	100	श्रीमती कलावती शर्मा	17	100
श्री रामेश्वरलाल तत्ववेदी	16	100	श्री ओ.पी. शर्मा	17	100
श्री द्वारकादास अग्रवाल	16	100	श्रीमती पुष्पलता शर्मा	17	100
श्री ओमप्रकाश गर्ग	16	100	श्री शंकर चटर्जी	17	100
श्री नाथुलाल काकाणी	16	100	श्री जे.एन. शर्मा	17	100
श्री किशनगोपाल गर्ग	16	100	श्रीमती रामश्री देवी	17	100
डॉ. गीता अग्रवाल	16	100	श्रीमती सोम खतोरिया	17	100
श्रीमती गीता सैनी	16	100	श्री एस.एन. मालू	17	100
श्रीमती प्रेमलता सिंह	16	100	श्री श्याम सुन्दर साँखला	17	100
श्रीमती कमला अग्रवाल	16	100	श्री मूलचन्द शर्मा	17	100
श्रीमती कल्पना लवाणिया	16	100	श्री ओ.पी. शर्मा	17	100
श्री एस.एस. साखँला	17	100	श्रीमती स्वर्णलता मालेश्वर	17	100
श्री गोविन्द प्रसाद पाराशर	17	100	श्री आर.के. चतुर्वेदी	17	100
श्री आर.सी. माहेश्वरी	17	100	श्री चेतन स्वरूप शर्मा	17	100
श्रीमती मंजू माहेश्वरी	17	100	श्री किशनलाल जालोटिया	17	100
श्री आर.के. गोयल	17	100	श्री गोपीचन्द अग्रवाल	17	100
श्रीमती सुमन गोयल	17	100	श्रीमती शकुन्तला सिंघल	17	100
श्रीमती किरण विजय	17	100	श्रीमती कौशल्या जोशी	17	100
श्री एस.एस. विजयवर्गीय	17	100	श्री नारायण सिंह	17	100
श्री एच.के. प्रजापति	17	100	श्रीमती दीपाली गुसांई	17	100
श्री ए.के. भार्गव	17	100	श्री जे.सी. शर्मा	17	100
श्रीमती ममता भार्गव	17	100	श्रीमती बनीतारानी शर्मा	17	100
श्री वी.के. शर्मा	17	100	श्री महेशचन्द मिश्रा	17	100
श्रीमती समता शर्मा	17	100	श्रीमती अनिता मिश्रा	17	100
श्री सत्यप्रकाश पुरोहित	17	100	श्री महेश कुमार जैन	17	100
श्रीमती देवकी पुरोहित	17	100	श्री रामअवतार टिंकर	17	100
श्री विष्णु अग्रवाल	17	100	श्रीमती पिस्तादेवी	17	100
श्रीमती सन्तोष अग्रवाल	17	100	श्री बद्रीप्रसाद अग्रवाल	17	100
श्री अशोक विघानी	17	100	श्रीमती मानकँवर	17	100
			श्री दिनेशचन्द पाण्डे	17	100

नाम	ग्रुप नं.	रकम	नाम	ग्रुप नं.	रकम
श्रीमती शिवा पाण्डे	17	100	श्री संजीव गुप्ता	18	100
श्रीमती कमला जैन	17	100	श्री प्रेमचन्द गहलोत	18	100
श्री पुखराज पुरोहित	17	100	श्री अर्जुन डोडानी	18	100
श्री सुधीर कुमार भारद्वाज	17	100	श्री हरलाल जिरोता	18	100
श्रीमती ममता भारद्वाज	17	100	श्रीमती पदमा देवी	18	100
श्रीमती ममता भार्गव	17	100	श्री महेश गुप्ता	18	100
श्री अरूण कुमार भार्गव	17	100	श्रीमती निर्मला गुप्ता	18	100
श्री बी.एस. भाटी	17	100	श्री वी.पी.कपूर	18	100
श्रीमती मधु भाटी	17	100	श्रीमती सरोज कपूर	18	100
श्री एच.के ऐरन	17	100	श्री हीरालाल	18	100
श्री रमेशचन्द वर्मा	17	100	श्री तेजसिंह कच्छावा	18	100
श्री एच.के. अजमेरा	17	100	श्रीमती भारती सुजानानी	18	100
श्रीमती पवित्रा चौहान	17	100	श्री महेश सुजानानी	18	100
श्रीमती नाथी देवी बाच्छीवाल	17	100	श्रीमती वीना रामसिघांनी	18	100
श्री एम.सी. बाच्छीवाल	17	100	श्रीमती सुरेन्द्र कौर सोहल	18	100
श्री आर सी ओझा	17	100	श्री चन्द्रकान्त उपाध्याय	18	100
श्री नवीनचंद जैन	17	100	श्री डालचन्द जनुठिया	18	100
श्रीमती उच्छव पोकरणा	17	100	श्री अशोक भारती	18	100
श्रीमती मुन्नीदेवी जैन	17	100	श्री गौरीशंकर	18	100
श्री चन्द्रसेन गहलोत	17	100	श्री धनसिंह	18	100
डॉ बी.एल. मीना	17	100	श्री बाबूलाल नाथरीवाल	18	100
श्री छीतरमल शर्मा	17	100	श्री बाबूलाल परिहार	18	100
श्री राजूलाला	17	100	श्री आर.के. पलासिया	18	100
श्रीमती चक्रेश कवँर	17	100	श्रीमती शीला गोठवाल	18	100
श्रीमती कमला जाधव	17	100	श्रीमती स्नेह लोईवाल	18	100
श्रीमती गुणमाला अजमेरा	17	100	सुश्री चम्पा भाटिया	18	100
श्री नटवर गोपाल आचार्य	17	100	श्रीमती सरोज देवी	18	100
श्रीमती तारामती आचार्य	17	100	श्रीमती आत्मा छबलानी	18	100
श्री के.के. खन्ना	17	100	श्रीमती कृष्णा गोस्वामी	18	100
श्रीमती शकुन्तला शर्मा	17	100	श्रीमती मधु कपूर	18	100
श्री विष्णुदत्त शर्मा	17	100	श्रीमती पूर्णशशि सरना	18	100
श्रीमती रमादेवी जाजपुरा	17	100	श्रीमती मंजू	18	100
श्री के.के.गौड़	18	100	श्री आर.एस. वर्मा	18	100
श्रीमती प्रेरणा गौड़	18	100	श्री जितेन्द्र सिंगारिया	18	100
श्रीमती रेखा गुप्ता	18	100	श्री रामरतन	18	100
श्री राजकुमार गुप्ता	18	100	श्री हरकिशन थावानी	18	100

नाम	ग्रुप नं.	रकम	नाम	ग्रुप नं.	रकम
श्री हरिशंकर	18	100	श्री मानसिंह खण्डेलवाल	18	100
श्री करनसिंह	18	100	श्री कैलाश टेकवानी	18	100
श्री नारायणलाल	18	100	श्री सोहनलाल	18	100
श्री त्रिलोकीनाथ शर्मा	18	100	श्री विनय कुमार भारद्वाज	18	100
श्री मोहनलाल डांगरिया	18	100	श्री सुखवन्त सिंह	18	100
श्री युसुफ खान	18	100	श्रीमती चेतन कौर	18	100
श्री घीसूलाल	18	100	श्रीमती संगीता डोडानी	18	100
श्री तेजसिंह वालिया	18	100	श्री महेश शिरालकर	18	100
श्री नरेन्द्र कुमार गोयल	18	100	श्री देवेन्द्र कुमार गोयल	18	100
श्रीमती चन्द्रकला गोयल	18	100	श्री योगेन्द्र गुप्ता	18	100
श्री सूरजमल गहलोत	18	100	श्रीमती सन्नोदेवी	18	100
श्री श्रवण कुमार राजोरिया	18	100	डॉ दयाल वरियानी	18	100
श्री देवीराम प्रजापति	18	100	श्रीमती स्नेहलता शर्मा	18	100
श्री जयन्त कुमार बुन्देल	18	100	श्री रमेशचन्द मामोडिया	18	100
श्री मोहनलाल यादव	18	100	श्रीमती सरोज मामोडिया	18	100
श्रीमती शारदा यादव	18	100	श्री भगवानदास एस.	18	100
श्री रामचन्द सोलंकी	18	100	श्री भंवरलाल टांक	18	100
श्री राजकुमार वालिया	18	100	श्री नेमीचन्द	18	100
श्रीमती कमला वालिया	18	100	श्री विरेन्द्र कुमार शर्मा	18	100
श्रीमती कस्तुरी सेवरिया	18	100	श्रीमती सविता शर्मा	18	100
श्री भगवानदास आहुजा	18	100	श्री लालाराम सेन	18	100
श्री सुधीर कुमार माथुर	18	100	श्री अखिलेश कुमार अग्रवाल	18	100
श्रीमती नीलम धीर	18	100	श्रीमती कृष्णा अग्रवाल	18	100
श्री निहालचन्द टांक	18	100	श्रीमती मंजू मिश्रा	18	100
श्रीमती शोभादेवी प्रजापति	18	100	श्री भारत भूषण	18	100
डॉ. वीररत्न आर्य	18	100	श्री रामचन्द्र हासानी	18	100
श्रीमती सोनी हासानी	18	100	श्रीमती मिथलेश चौहान	18	100
श्री प्रकाश कुमार हासानी	18	100	श्रीमती कैलाश देवी	18	100
श्रीमती उर्मिला परिहार	18	100	श्री रामस्वरूप रारिया	18	100
श्री के.सी. पंत	18	100	श्रीमती ललिता एन.	18	100
श्रीमती प्रभा शर्मा	18	100	श्रीमती सुनिता आर्य	18	100
श्री रूपचन्द चिन्तन	18	100	श्रीमती मनजीत कौर साहनी	18	100
श्री नरेन्द्र जलोटा	18	100	श्री सुरेश देवरानी	18	100
श्रीमती वीना जलोटा	18	100	श्री ब्रह्मदत्त चौधरी	18	100
श्री मोहनाला पाथरा	18	100	श्री सुरेन्द्र कुमार	18	100

नाम	ग्रुप नं.	रकम	नाम	ग्रुप नं.	रकम
श्री एच.एन. भटनागर	20	100	श्री महेन्द्र कनौजिया	20	100
श्री अशोक जैकब	20	100	श्री के.एल. दुखाडिया	20	100
श्रीमती मीना ए. जैकब	20	100	श्रीमती इन्दू कपूर	20	100
श्री जे.के. बिन्दल	20	100	श्री पी.एन. मित्तल	20	100
श्री सुरेन्द्र बापना	20	100	श्री सुरेशचन्द गुप्ता	20	100
श्रीमती शोभा बापना	20	100	श्री वी.एस. शिवनानी	20	100
श्री एल.एन. राजपूत	20	100	श्री राधेश्याम सिंघल	20	100
श्री पंकज कुमार माथुर	20	100	श्रीमती शशि सिंघल	20	100
श्रीमती रश्मि माथुर	20	100	श्री एम.एस. सिंगला	20	100
श्री वी डी गुप्ता	20	100	श्री यू. तुकाराम	20	100
श्रीमती शारदा अग्रवाल	20	100	श्रीमती आशा कौशिक	20	100
श्री प्रतोद कुमार शर्मा	20	100	श्री अमरसिंह क्षत्री	20	100
श्री पी.पी. खण्डेलवाल	20	100	श्री महेन्द्र कुमार पंवार	20	100
श्रीमती रामेश्वरी खण्डेलवाल	20	100	श्रीमती शशिबाला चौबे	20	100
श्री बी.आर. सांघी	20	100	श्री दामोदर लाल काबरा	20	100
श्री नरेन्द्र सिंह पंवार	20	100	श्री दयाल शिवानी	20	100
श्रीमती मंजू पंवार	20	100	श्री जसवन्त सिंह	20	100
श्री सुरेश चन्द शर्मा	20	100	श्री शैलेन्द्र वर्मा	20	100
श्री बी.के. वाधवा	20	100	श्री रमापति शर्मा	20	100
श्रीमती चन्दर ऐबट	20	100	श्री सत्यदेव शर्मा	20	100
श्रीमती पीयुष लता क्षत्रिय	20	100	श्रीमती विजय लक्ष्मी शर्मा	20	100
श्री सुनील मोहन जौहरी	20	100	श्री अमरसिंह वर्मा	20	100
श्रीमती निर्मला जौहरी	20	100	सुश्री मिथलेश कुमारी श्रीवास्तव	20	100
श्री एस.एन. कपूर	20	100	श्रीमती हीरादेवी सोनी	20	100
श्री के.सी. पहाड़िया	20	100	श्री सन्तोष जसराय	20	100
श्री विनोद कुमार माथुर	20	100	डॉ. एन.के. माथुर	20	100
श्री बी.आर. मोंगा	20	100	श्रीमती राजेश माथुर	20	100
श्री डी.के. जैन	20	100	श्री सूरजमल अग्रवाल	20	100
श्री एस.पी. मित्तल	20	100	श्रीमती मंजूलता अग्रवाल	20	100
श्रीमती बीना रानी	20	100	श्रीमती मधु चुध	20	100
श्री रामेश्वर सिसोदिया	20	100	श्री प्रेम प्रकाश	20	100
श्री पी.एन. माथुर	20	100	श्री नन्दलाल मुद्गल	20	100
श्री सुबोध कुमार गर्ग	20	100	श्री कमलसिंह पवाँर	20	100
श्रीमती शकुन्तला गर्ग	20	100	श्रीमती सुमनलता पवाँर	20	100
श्री आर.के. शिवहरे	20	100	श्री गोरधन वरयानी	20	100
श्री मुकेश भार्गव	20	100	श्री नारायणलाल अग्रवाल	20	100

नाम	ग्रुप नं.	रकम	नाम	ग्रुप नं.	रकम
श्री ए.पी.माथुर	20	100	श्रीमती सुशीला शर्मा	21	100
श्री राजरतन शर्मा	20	100	श्री ओ.पी. शर्मा	21	100
श्री मन महेन्द्र सिंह	20	100	श्रीमती चन्द्रकान्ता शर्मा	21	100
श्री एम. जी. मेहरा	20	100	श्री आर.एस. एन. राव	21	100
श्री शिवकरण	20	100	श्रीमती तनुजा राव	21	100
श्रीमती शकुन्तला अग्रवाल	20	100	श्री गोविन्द बिहारी शर्मा	21	100
श्रीमती चन्द्रकला तोषनीवाल	21	100	श्रीमती मधु शर्मा	21	100
श्री एस.एन. सिंह राठौर	21	100	श्री एन.के. वर्मा	21	100
श्रीमती अयोध्या कँवर	21	100	श्रीमती बसन्ती देवी	21	100
श्री हीरालाल पटेल	21	100	सुश्री नादिरा बेगम	21	100
श्रीमती मंजू बेन पटेल	21	100	श्री ओ.पी. मण्डरावलिया	21	100
श्री ओ.पी. पीपल	21	100	श्री डी.एन. तोषनीवाल	21	100
श्री इन्द्रलाल दादलानी	21	100	श्रीमती शकुन्तला डोरिया	21	100
श्री ए.के. मिश्रा	21	100	श्री रमेश नोगिया	21	100
श्रीमती उर्मिला मिश्रा	21	100	श्रीमती मैना नोगिया	21	100
श्री नवलसिंह परमार	21	100	श्री चन्द्रशेखर शर्मा	21	100
श्री हरिशंकर शर्मा	21	100	श्रीमती गीतादेवी शर्मा	21	100
श्रीमती चन्द्रकान्ता शर्मा	21	100	सुश्री नादिरा बेगम	21	100
श्री रामजी भाई पटेल	21	100	श्री आर.एस. धवन	21	100
श्रीमती कान्ताबेन पटेल	21	100	श्री देवेन्द्र कुमार शुक्ला	21	100
श्री पुरूषोत्तम पटेल	21	100	श्री रणजीत सिंह चौधरी	22	100
श्रीमती पार्बती पटेल	21	100	श्री सुरेशचन्द माहेश्वरी	22	100
श्री चन्दूभाई पटेल	21	100	श्रीमती कमला मारोठिया	22	100
श्री राजेन्द्र व्यास	21	100	श्री एस.बी.माथुर	22	100
श्री मोहनसिंह जोधाना	21	100	श्री महेशचन्द शर्मा	22	100
श्री प्रेमदत्त शर्मा	21	100	श्रीमती कान्ता सोनी	22	100
श्रीमती प्रेमलता त्रिपाठी	21	100	श्री ताराचन्द शर्मा	22	100
श्री वीरेन्द्र शेखावत	21	100	श्री दीनदयाल शर्मा	22	100
श्रीमती चन्द्रप्रभा पटेल	21	100	श्री रविन्द्र वर्मा	22	100
श्री हस्तीमल जैन	21	100	श्रीमती सरोज	22	100
श्रीमती रंजना झा	21	100	श्रीमती सुभाषिनी देवी	22	100
श्री रामगोपाल जांगिड	21	100	श्रीमती गुलाब देवी	22	100
श्री एस.एन. तोषनीवाल	21	100	श्रीमती बीना फाल्के	22	100
श्रीमती चन्द्रकला तोषनीवाल	21	100	श्री भीष्म गगनानी	22	100
श्रीमती कमलेश गुप्ता	21	100	श्री विजेन्द्र सांवरिया	22	100
श्री मदनमोहन शर्मा	21	100	श्री जी.एस.भाटी	22	100

नाम	ग्रुप नं.	रकम	नाम	ग्रुप नं.	रकम
श्री महेन्द्र देव शर्मा	22	100	श्री जयचन्द जयसवाल	22	100
श्री जी.सी.पचौरी	22	100	श्रीमती माधुरी शर्मा	22	100
श्री भवँरलाल तवँर	22	100	श्री धर्मु ज्ञानचन्दानी	22	100
श्री आर.एस.टाक	22	100	श्री सत्यनारायण माहेश्वरी	22	100
श्री एच.एस.वर्मा	22	100	श्री आर.एल. बंसल	22	100
श्री गणेश गुर्जर	22	100	श्री चौथमल कच्छावा	22	100
श्री चन्द्रा गुर्जर	22	100	श्री गोपाल शर्मा	22	100
श्री रामदेव गुर्जर	22	100	श्रीमती प्रभादेवी उपाध्याय	22	100
श्रीमती अरूणा मिश्रा	22	100	श्री देवदत्त गहरवाल	22	100
श्री राधेलाल शर्मा	22	100	श्री एस.के. टण्डन	22	100
श्री बुद्धीप्रकाश जोशी	22	100	श्री देवाराम पोसवाल	22	100
श्री हरिसिंह चौहान	22	100	श्रीमती भारती जगासिया	22	100
श्री आर.डी.शर्मा	22	100	श्रीमती प्रीति भाटिया	22	100
श्री राजेन्द्र शर्मा	22	100	श्री महेन्द्र कुमार शर्मा	22	100
श्री कौशल किशोर गुप्ता	22	100	श्री अशोक मेहरा	22	100
श्री अशोक सुराणा	22	100	श्री रमेशचन्द अरोड़ा	22	100
श्री कमलसिंह	22	100	श्री जी.एस. भूतडा	22	100
श्रीमती चन्द्रा गोठवाल	22	100	श्री पुरूषोत्तम मूरझानी	22	100
श्री बीरबहादुर सिंह यादव	22	100	श्रीमती मनोरमा गुप्ता	22	100
श्री बलजीत सिंह चौधरी	22	100	श्रीमती लता मनकानी	22	100
श्री मोतीलाल सांमरिया	22	100	लाजवन्ती सुखानी	22	100
श्री सुन्दर लखवानी	22	100	श्रीमती शान्तिदेवी	22	100
श्रीमती मुन्नी देवी	22	100	श्री रामस्वरूप हिनोरिया	22	100
श्रीमती विमला यादव	22	100	श्री सोहनलाल नोगिया	22	100
श्री कुशालसिंह वर्मा	22	100	श्री सोहनलाल पंचौली	22	100
श्री शकंरलाल मिश्रा	22	100	श्री भंवरसिंह चौहान	22	100
श्री सूरजमल उजिरपुरिया	22	100	श्री गोविन्द कंवर	22	100
श्रीमती कान्ता शर्मा	22	100	श्री राजेन्द्र मेहता	22	100
श्री अनिल कुमार सक्सेना	22	100	श्री गंगाराम डाबरिया	22	100
श्री रमेशचन्द गुप्ता	22	100	श्री डी.डी. विजय	22	100
श्री विजेन्द्र कुलश्रेष्ठ	22	100	श्रीमती शान्ति देवी शर्मा	22	100
श्री मदनलाल खण्डेलवाल	22	100	श्री जसवन्त सिंह	22	100
श्रीमती सरला त्रेहान	22	100	श्री प्रेमचन्द माहेश्वरी	22	100
श्री मंघन सेवानी	22	100	श्रीमती चन्द्रकान्ता शर्मा	22	100
श्रीमती उमा शर्मा	22	100	श्री अशोक पंजवानी	22	100
श्रीमती कौशल्या बहिरानी	22	100			

बिना अक्ल नर पर नारी भारी

(हास्य कविता)

– देवकृष्ण तोषनीवाल



अक्ल बांटाने लगे विधाता, लंबी लगी कतार।
सभी आदमी खड़े हुये थे, कहीं नहीं थी नारी।
सभी नारियां कहां रह गई, था ये अचरज भारी।
पता चला ब्यूटी पार्लर में, पहुंच गई थी सारी।
मेकअप की थी गहन प्रक्रिया, एक-एक पल भारी।
बैठी थी कुछ इन्तजार में, कब आएगी बारी।
उधर विधाता ने पुरूषों में, अक्ल बांट दी सारी।
ब्यूटी पार्लर से फुर्सत पाकर, जब पहुंची सब नारी।
बोर्ड लगा था स्टॉक खत्म हैं, नहीं अक्ल अब बाकी।
रोने लगी सभी महिलाएं, नींद खुली ब्रह्मा की।
पूछा कैसा शोर हो रहा है, ब्रह्मलोक के द्वारे ?
पता चला कि स्टॉक अक्ल का पुरूष ले गए सारे।
ब्रह्मा जी ने कहा देवियों, बहुत देर कर दी है।
जितनी भी थी अक्ल वो मैंने, पुरूषों में भर दी है।
लगी चीखनें महिलायें, ये कैसा न्याय तुम्हारा ?
कुछ भी करो हमें तो चाहिए, आधा भाग हमारा।
पुरूषों में शारीरिक बल है, हम ठहरी अबलाएं।
अक्ल हमारे लिए जरूरी, निज रक्षा कर पाएं।

सोचकर दाढ़ी सहलाकर, तब बोले ब्रह्मा जी।
एक वरदान तुम्हें देता हूं, अब हो जाओं राजी।
थोड़ी सी भी हंसी तुम्हारी, रहे पुरूष पर भारी।
कितना भी वह अक्लमंद हो, अक्ल जाएगी मारी।
एक औरत ने तर्क दिया, मुश्किल बहुत होती हैं।
हंसने से ज्यादा महिलाएं, जीवन भर रोती हैं।
ब्रह्मा बोलें यही कार्य तब, रोना भी कर देगा।
औरत का रोना भी नर की, अक्ल हर लेगा।
एक अधेड़ बोली बाबा, हंसना-रोना नहीं आता।
झगड़े में हैं सिद्वहस्त हम, खूब झगड़ना भाता।
ब्रह्मा बोलें चलो मान ली, यह भी बात तुम्हारी।
झगड़े के आगे भी नर की, अक्ल जायेगी मारी।
ब्रह्मा बोले सुनो ध्यान से, अंतिम वचन हमारा।
तीन शस्त्र अब तुम्हें दिये, पूरा न्याय हमारा।
इन अचूक शस्त्रों में भी, जो मानव नहीं फंसेगा।
निश्चित समझों, उसका घर नहीं बसेगा।
कहें कवि मित्र ध्यान से, सुन लो बात हमारी।
बिना अक्ल के भी होती है, नर पर नारी भारी।

****

मृत्युञ्जय मंत्र

ऊँ त्र्यंबकं यजा महे सुगंधि पुष्टिवर्द्धनम।
उर्वारूक मिव बन्धानान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतम्।।

अर्थात् –

यह रोग, शोक, व्याधि नाश कर आयुवृद्धि में सहायक है।
इससे मार्तण्ड ऋषि को अनन्तकाल की आयु प्राप्त हुयी।

– मार्कण्डेय पुराण

मुनि तरुण सागर जी के 20 मंत्र

– श्रीमती शशि तोषनीवाल



- खुद की कमाई से कम खर्च हो ऐसी जिन्दगी बनाओं....।
- दिन में कम से कम 3 लोगों की प्रशंसा करो ....।
- खुद की भूल स्वीकारने में कभी भी संकोच मत करो....।
- किसी के सपनों पर हंसो मत....।
- आपके पीछे खड़े व्यक्ति को भी कभी कभी आगे जाने का मौका दो ....।
- रोज हो सकें तो सूरज को उगता हुए देखें ....।
- खूब जरूरी हो तभी कोई चीज उधार लो ....।
- किसी के पास से कुछ जानना हो तो विवेक से दो बार.. पूछो ....।
- कर्ज और शत्रु को कभी बड़ा मत होने दो ....।
- स्वंय पर पूरा भरोसा रखो ....।
- प्रार्थना करना कभी मत भूलो, प्रार्थना में अपार शक्ति होती हैं ....।
- अपने काम से मतलब रखो ....।
- समय सबसे ज्यादा कीमती है, इसको फालतु कामों में खर्च मत करो ....।
- जो आपके पास है, उसी में खुश रहना सीखो ....।
- बुराई कभी भी किसी की भी मत करो, बुराई छोटी हो या बड़ी यह डूबो ही देती है ....।
- हमेशा सकारात्मक सोच रखो ....।
- हर व्यक्ति एक हुनर लेकर पैदा होता है, बस उस हुनर को दुनिया के सामने लाओं ....।
- कोई काम छोटा नहीं होता हर काम बड़ा होता है सोचो वह काम आप नहीं करते तो दुनिया पर क्या असर होता ....?
- सफलता उनको ही मिलती है जो कुछ करते हैं ....।
- कुछ पाने के लिए कुछ खोना नहीं बल्कि कुछ करना पड़ता हैं ....।

****

मन ही बन्धन व मोक्षकारक

मन एवं मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः।
बन्धाय विषयासक्तं मुक्तं निर्विषयं स्मृतम्।।

– ब्रह्मबिन्दु 02/3

भावार्थ

बन्धन और मोक्ष मन में ही है।
विषयासक्त स्वयं हुए हो निर्विषयी बन कर स्वयं मोक्ष को प्राप्त करलो।

हिन्दी मेरी पहचान

– रामेश्वर सिसोदिया



हिन्दी मेरा इमान है, हिन्दी मेरी पहचान है।
हिन्दी हूँ मैं वतन भी मेरा प्यारा हिन्दुस्तान है।
हिन्दी को आगे बढ़ाना, उन्नति की राह ले जाना है।
केवल एक दिन ही नहीं नित हिन्दी दिवस मनाना है।
हिन्दी राष्ट्र की पहचान है, जो भाषाओं में महान है।
जो सरल सहज समझी जाए उस हिन्दी को सम्मान दो।
हिन्दी की बिन्दी को मस्तक पे सजा के रखना है।
सर आँखो पे बिठाएँगे यह भारत माँ का गहना है।
निज भाषा का नहीं गर्व जिसे क्या प्रेम देश से होगा उसे।
वही वीर देश का प्यारा है हिन्दी ही जिसका नारा है।
हिन्दी ही हिन्दुस्तान का नारा है प्रवाहित हिन्दी धारा है।
लाखों बाधाएँ हो फिर भी नहीं रूकना काम हमारा है।
हम हिन्दी ही अपनाएँगें इसको ऊँचा ले जाएँगें।
हिन्दी भारत की भाषा है हम दुनिया को दिखाएँगें।
जय हिन्दी जय जय हिन्दी

****

प्यारा भारत

– श्रीमती प्रेमलता त्रिपाठी



यही हिमालय सा पहाड़ है।
और गंग की धारा हैं।।
यमुना लहराती है सुन्दर।
भारत कितना प्यारा है।।
फल-फूलों से भरी भूमियाँ।
खेतों में हरियाली हैं।।
आमों की डाली पर बैठी।
गाती कोयल काली है।।

बच्चों माँ ने पाल पोस कर।
तुमको बड़ा बनाया हैं।।
पर यह मत भूलों बच्चों तुमने।
अन्न कहाँ का खाया हैं।।
पले हवा में किसकी बच्चों।
खेलें मिट्टी में किसकी।।
बोलो प्यारे जय भारत की!
जय भारत की !

****

माँ

– श्रीमती मन्जुबेन पटेल



प्यारा सा है चेहरा जिसका, जिसने दिया मुझे प्रेम अपार
आज बयान करूँगी उन अनगिनत नगीनों को,
जिसने लूटाया मुझपे अपने सपनों का भंडार।
किया मुझे इस काबिल आज, इतनी भीड़ में कर सकूँ अपनी बात ...
ये मेरी माँ ही है जिसने छोड़ा, अपना काम-काज, काटे मेरे साथ, दिन-रात
माथे पर नहीं शिकन चेहरे पर सदा ही मुस्कान सजी, हा ये माँ ही थी,
जिसने दी मुझे ताकत, जब कभी हारी दुनिया से बाजी।
माँ तेरा तो अंश हूँ मैं, तेरी तो जान हूँ मैं..
जब कभी तू उदास हुई, तेरे संग रोई हूँ मैं।
तूने मुझे है जीना सिखाया, मेरे कदमों को आगे बढ़ाया..
जब आई रात अँधेरी, कभी न छोड़ मेरा साथ निभाया।
चली जाऊँ मैं तुमसे दूर अगर, तो रखना ख्याल अपना..
तेरी यादों के सजदे में ही ये सिर झुका है,
करना इंतजार मेरा दिल रखके हाथों में अपना।
हे भगवान चमत्कार दिखा दें, माँ जैसा आत्मविश्वासी बना दें..

****

हमारा देश

– श्रीमती शिवा पाण्डे



हमारा देश एक शान्ति प्रिय देश है
हम इसी शान्ति प्रिय देश में रहते है
हम लड़ना नहीं जानते और हम
हम सब्र से काम लेते है
और अच्छे बनने की कोशिश कर रहे है।
पाकिस्तान एक उज्जड देश है
जब चाहें हम पर वार कर देता है
गांधी जी ने कहा था कोई तुमको मारे
तुम दुसरा गाल भी आगे कर दो
हम अच्छे बनने की कोशिश करते है
और गाँधी जी का कहना मानते है।
पाकिस्तान फिर हम पर हमला करता है
हमारे जवानों को मार जाता है और
हम अपना आक्रोश दिखाते है
फिर हम अपना विरोध करते है
हम अमरीका के पास जाते है
पाकिस्तान को सचेत करने का भरोसा दिखाते है
और हमको धैर्य रखने की सलाह देते है
हम फिर अच्छे बच्चों की तरह शान्त हो जाते है।
पाकिस्तान फिर हमला करता है
हम फिर अमेरिका के पास दौड़ जाते है और
कहते है आपने कहा था, हमने पाकिस्तान
को समझा दिया है, बुरी तरह डाँट दिया है
अब तो जागो देश के नेताओं अपने देश को बचाओ
रोज रोज मिसाइले बनाके, दुनिया को दिखाते है
पर वार कब करोगे एक दफा की लडाई आर या पार
फिर देखो देश का कितना भला होता
सब देशवासी आपके पीछे खड़े है
आप आगे-आगे बढो, हम गाते चलेंगे
कदम से कदम बढाये जा, खुशी के गीत गाये जा
ये जिन्दगी है वतन की, वतन पे लुटाये जा।

****

माँ-बाप

– हीरालाल पटेल



बिन बाप से माँ कहाँ, बिन माँ-बाप से औलाद कहाँ,
हो अगर माँ-बाप साथ में, औलादों को फिकर कहाँ।
बिन सोचे समझें औलादों ने, घर से निकाला माँ-बाप को,
घर अकेले छोड़कर, चल दिये रहने कहीं ओर को।
माँ-बाप स्वंय भगवान है, कहता हूँ मैं औलादों को,
मंदिर जाये तीरथ जाये, क्यों जाये अन्य स्थानों को।
जब माँ-बाप पास अपने, व्यर्थ समझो पूजा-पाठ को,
सेवा से मेवा मिले, सब तीरथ है समझों उनके चरणों को।
माँ-बाप की सेवा से, प्रभु कृपा बरसती रहती हैं,
करके देखो सेवा उनकी, कैसे भाग्य संवरता है।
पुत्र पत्नी ओर संयुक्त परिवार, सब चैन से रह सकते है,
अति उत्तम सेवा मातपिता की, गीता ग्रंथ भी कहते हैं।
सोचो समझो बिन मातपिता, औलादें कहाँ खुश रहती हैं।
दुखी है जो माँ-बाप अगर, कैसे उनका ऋण उतार पाओगें।
सेवा की श्रवण ने मात-पिता की, अमर हुआ नाम सृष्टि में,
मात-पिता ही भगवान है, सोचो समझों अपने ह्दय में।
भूलो भले और बंधु को, माँ-बाप को भूलना नहीं,
लाखों है उपकार उनके, उनसे छल करना नहीं।।

****

होली पर कविता

– तानसिंह शेखावत



ब्रह्माजी का प्यार और ख्वाजा का दुलार,
स्नेहिल शब्दों के रंग साथ लिए मैं आ पहुँचा सपरिवार।
हम सब ऐसे खेले होली, सब जन बनजाए ज्यों हमजोली।
होली आकर के जाए अकेली, सब जन बस जाएँ ज्यों हमजोली।
चुटकी भर लाल गुलाल ले साथ में तिलक लगाने आए
लाल रंग की कृति में तुम पर बरसाने आए।
लाल रंग की तेजस्विता अब छुए तुमको, ऐसी तेजस्वी होली हम खेलन आए
पीले रंग की शालीनता अब छुए तुमको, ऐसी शालीन होली हम खेलन आए
हरे रंग की हरितिमा में हम तुम पर बरसाने आए
हरे रंग की खुशहालिताएं अब छुए तुमको, ऐसी खुशहाल होली हम खेलन आए।
गुलाबी रंग की रूमानियत हम तुम पर बरसाने आए
गुलाबी रंग की सौम्यता अब छुए तुमको, ऐसी सौम्य होली हम खेलन आए
खूबसूरत रंग और ज्ञान का निखार, छोटों का प्यार और बड़ों का दुलार
ऐसे स्नेहिल और निराली तिलक होली हम खेलें सब मिल परिवार।

****

समय की उड़ान

- जे.पी. शर्मा



समय चला, पर कैसे चला..
पता ही नहीं चला..
जिन्दगी की आपाधापी में,
कब निकली उम्र हमारी यारों
पता ही नहीं चला।
कंधे पर चढ़ने वाले बच्चे,
कब कंधे तक आ गए,
पता ही नहीं चला।
किराये के घर से,
शुरू हुआ था सफर अपना,
कब अपने घर तक आ गए,
पता ही नहीं चला।
साइकिल के
पैंडल मारते हुए,
हांफते थे उस वक्त,
कब से हम,
कारों में घूमने लगे हैं,
पता ही नहीं चला।
कभी थी जिम्मेदारी
हमारे माँ बाप की हमारी
कब बच्चों के लिए
हुए जिम्मेदार हम,
पता ही नहीं चला।
एक दौर था जब
दिन में भी बेखबर सो जाते थे,
कब रातों की उड़ गई नींद,
पता ही नहीं चला।
जिन काले घने बालों पर
इतराते थे कभी हम
सफेद हो कब झड़ गये
पता ही नहीं चला।

****

विश्वास

- मंजु पंवार



मैंने रोपी थी इक पौध
विश्वास की
जो समय पाकर बड़ी हुई
पौधा बन गयी
उसका आकार भी बढ़ा
और जड़े गहरा आई।
कुछ समय और बीता
वह पौधा बन गई
पौधे से बढ़ते-बढ़ते
एक अच्छा खारा वृक्ष।
और फिर धीरे-धीरे
विश्वास वृक्ष बौराने लगा।
तभी आंधियों के थपेड़ो ने
झाड़ दिया बौर विश्वास वृक्ष का
तबसे ही विश्वास शब्द में
विश्वास खो बैठी हूँ मैं
यह ठीक है कि विश्वास पर ही
यह दुनिया टिकी हुई।
पर दुनिया पर भी अब
मैं विश्वास नहीं कर पाती
सब कुछ जानकर भी
घोर अविश्वासी हो गयी हूँ मैं।
अविश्वास में तो खुद-ब-खुद
छुपा है एक बहुत बड़ा विश्वास
इसलिये बन्धु विश्वास वृक्ष के
बौरों को तो तुम झड़ जाने दो
विश्वास वृक्ष को लगन से सींचो
उसकी जड़ों को और गहराई में उतर जाने दो
ताकि मामूली आंधियों के थपेड़े उसको डरा न सकें
बड़े से बड़े तूफां भी उसको डिगा न सकें।

****

तीन कविताएं

– आर.के. प्रसाद



मनमोहक फूल

पाऊँ कैसे फूल को जो काँटों के बीच खिला है,
पैर बढाऊँ कांटा चुभे, हाथ बढाऊँ लहुलुहान हो जाएं,
डंडे के सहारो से, वहाँ तक पहुँच नही पाता हूँ,
कोशिश करके थका, सोचते–सोचते अंधियारा छा जाता है
थका–मादा नींद के आगोश में कैसे पाऊँ समझ नहीं पाता हूँ
हल्की सी आहट, अंधियारे के बीच चमक, कौतुहल जागा।
पाना है तो रास्ता खोजो, तितली बन उड़ चलो।
स्वछन्द विचरणकर, भक्ति से शक्ति पा सकते हो,
इसे राज ही रहने दो, कोई तुम्हारी खिल्ली न उड़ायें।

गाँठ

कैसे करूं अरदास तुम्हारा, दोनों हाथ बँधे हैं,
कैसी गाँठ लगाई तुमने, खुल नहीं पाती है,
किसे बुलाऊँ, पुकारूँ, समझ नहीं पाता।
ऐसी इलम दो मुझमें, इस गाँठ को खोल पाऊँ
मतलबी दुनिया है, एक तुम्हीं रहमदिल हो,
समझ इस दुनिया को, सोच–सोच कर हारा,
बिन पेंदे की भीड़ यहाँ, चाहे जिधर लुढ़क जाय
कैसे दिव्य दृष्टि पाऊँ, कब तक सबको गले लगाउँ।

हकीकत

पलकों के झुरमुट में आँसुओं को न रोका करो,
हसीन ख्वाब को हकीकत में बदल जाने दो
गम हो चाहे खुशी, अपनी रफ्तार से चलने दो,
परदे के पीछे क्या है, सामने आ जाने दो,
मन चंगा, तन हल्का, कटौती में गंगा होगी,
ये आँसू नहीं मोती हैं, उसे पिरोकर रखो मन हल्का होगा
परवाह न करो, लोगों को कहने दो
यह दुनिया तुम्हारी नहीं, उसे अपनी न बनाया करो

****

विनती

– सुधाकर 'बन्धु'



श्लोक :

ओम् तच्चक्षुर्देहितं पुरस्ताच्छ क्रमुच्चरत्।
पश्येम शरदः शतं
जीवेम शरदः शतं
शृणुयाम शरदः शतं
प्रब्रवाम शरदः शतम्
अदीनाः स्याम शरदः शतं
भूयश्च शरदः शतात्।
–यजुर्वेद 36।24।

भावानुवाद –

पूजनीय, सर्वदृष्टा स्वामी सदा आपका ध्यान धरें।
शुद्ध स्वरूप, हितकारी प्रभु का हम मानव गुणगान करें।।
इन नयनों से सौ वर्षों तक प्रभु का दर्शन–लाभ करें।
हे प्रभो! वर दो हमको ऐसा, शत् शत् आयु प्राप्त करें।।
सौ वर्षों तक सुने कर्ण मम मधुर, ज्ञानमय, सद्वाणी।
मुख से उच्चारित हो हमसे प्रभु के गुण की ही वाणी।।
सौ वर्षों तक स्वाभिमान से जीवन व्यापन हो मेराँ

****

आतंक पर आक्रोश

– कैप्टेन सत्यनारायण सिंह राठौर



ये थप्पड़ है आंतकी का हिन्दुस्तानी गालों पर।
ये थप्पड़ है सीमाओं पर रक्त चढ़ाते भालों पर।।
ये थप्पड़ है राजगुरू सुखदेव–भगत की टोली पर।
ये थप्पड़ है शेखर वाली हर उस अंतिम गोली पर।।
ये थप्पड़ है राणा सांगा के चौरासी घावों पर।
ये थप्पड़ है पुत्र कटाती हर पन्ना के दावों पर।।
ये थप्पड़ है वीर शिवाजी की बलिदानी माटी पर।
ये थप्पड़ है राणा तेरी पावन हल्दीघाटी पर।।
ये थप्पड़ है भारतवालों स्वाभिमान से जीनें पर।
ये थप्पड़ है हमारे छप्पन इंची सीने पर।।
कहाँ गये वो भाँड जिन्होने पुरस्कार लौटाये थे
कहाँ गये वो भाँड जिन्होंने न्यायालय खुलवाये थे।।
कहाँ गये वो भाँड जिन्हें था खौफ देश में रहने में।
शर्म जिन्हे आया करती थी भारत की जय कहने में।।
अब कोई क्यों नहीं बोलता सबके मुँह पर ताले है।
सिद्ध हो गया ये सारे टुकडों पर पलने वाले है।
हर वो घटना जो भारत की लाज डुबोती प्यारी है
ये कुत्ते है इनको केवल अपनी बोटी प्यारी है।
एक मेमना शेरों के सिर चढ़ जाये ये ठीक नहीं
सहनशीलता, कायरता तक बढ़ जाये ये ठीक नहीं।।
ये तो ठीक हुआ सेना का सब नहीं टूटा प्यारे।
एक.के. 47 वाला हाथ नहीं छूटा प्यारे।।
घाटी पहले ठीक करो तुम रावलपिंडी छोडो जी।
मैं कहता हूँ– पहले धारा–370 तोड़ो जी।।

****

भगवान और मैं

– श्रीमती मंजूप्रभा जोशी



मैनें भगवान से कहा,
मेरी सारी पीडाएं छीन लो।
भगवान ने कहा, मुझे छीनने की क्या जरूरत।
तुम साथ लिये घूम रही हो, तुम ही त्याग दो।
मैनें कहा मुझे सहन शक्ति दो, धीरज दो,
उसने कहा धीरज आसमान से नहीं टपकता,
परेशानियों के बीच उपजता है, उसे तुम्हें
खुद ही उगाना पड़ेगा।
मैनें कहा मुझे खुशियाँ दो,
उसने कहा, मैं तुम्हें आशीर्वाद दे सकता हूँ,
खुशी तुम्हें अपने अन्दर से जगानी पड़ेगी।
मैने कहा, अच्छा फिर मुझे वो सारी चींजे दो
जिससे मैं जिन्दगी का आनन्द ले सकूँ।
उसने कहा, संसारी चीजों में अल्पकाल का आनन्द है,
मेरी याद के सिवाय किसी और चीजों से
तुझे सदाकाल का आनन्द मिल ही नहीं सकता।
मैनें कहा ठीक है, फिर मुझे शक्ति तो देना
कि मैं दूसरों से उतना ही प्यार करूँ,
जितना कि तुम मुझसे करते हो।
भगवान मुस्कुराकर बोले,
तुम मेरा दिया हुआ प्यार जितना बाटोगे,
उससे कई गुना ज्यादा प्यार तुम्हारे अन्दर स्वतः ही भरेगा।

****

शैतानी शैतान की

- अशोक कुमार मिश्रा



आओं बच्चो तुम्हें दिखाये,
शैतानी शैतान की।
नेताओं से बहुत दुखी है,
जनता हिन्दुस्तान की।।
बड़े-बड़े नेता शामील हैं,
घोटालों की थाली में।
सूटकेस भरके चलते हैं,
अपने यहाँ दलाली में।।
देश धर्म की नहीं है चिन्ता,
चिन्ता निज सन्तान की।
नेताओं से बहुत दुखी है,
जनता हिन्दुस्तान की।।
चोर लुटेरे भी अब देखो,
सांसद और विधायक हैं।
सुरा-सुन्दरी के प्रेमी ये,
सचमुच के खलनायक है।।
भिखमगों में गिनती कर दी,
भारत देश महान की।
नेताओं से बहुत दुखी है
जनता हिन्दुस्तान की।।
जनता के आंवटित धन को
आधा मंत्री खाते हैं।
बाकी में अफसर ठेकेदार,
मिलकर मौज उड़ाते हैं।
लूट खसोट मचा रखी है,
सरकारी अनुदान की।
नेताओं से बहुत दुखी है
जनता हिन्दुस्तान की।।
थर्ड क्लास अफसर बन जाता,
फर्स्ट क्लास चपरासी है।
होशियार बच्चों के मन में
छायी आज उदासी है।।
गंवार सारे मंत्री बन गये,
मेधावी खलासी हैं।
नेताओं से बहुत दुखी है
जनता हिन्दुस्तान की।

****

दैनिक भजन

- सरला गंभीर



तीन बार भोजन, भजन एक बार। उसमें भी आते है झंझट हजार।।
मन कहता ब्रह्ममुहुत में उठ ध्यान लगाऊँ पर आती झपकी बार-बार
मन कहता है, तीर्थ जाऊँ पुण्य कमाऊँ
माँगे से मिले ना पैसे उधार उसमें आते झंझट हजार
मन कहता मंदिर जाऊँ दर्शन पाऊँ
बंद हो जाते मंदिर के द्वार उसमें आते झंझट हजार
मन कहता सत्संग जाऊँ आनन्द पाऊँ
आ जाती आलस की मार उसमें आते झंझट हजार
मन कहता गंगा नहाऊँ जमना में नहाऊँ
आ जाता मुझको बुखार उसमें आते झंझट हजार
मन कहता गृहस्थी निभाऊँ रिश्तेदारी निभाऊँ
उसमें भी आते है झंझट हजार
मन कहता भजन गाऊँ जीवन सफल बनाऊँ
आ जाती मौत की पुकार उसमें आते झंझट हजार

****

गरीब किसान

- श्रीमती अयोध्या कँवर राठौर



जिस दिन धूप शीत सहकर जो अपना खून बहाते हैं।
उनकी यह दशा हूई जग में, तारे गिन रात बिताते हैं।।
जो काम न करते धेली का वे हरदम चाय मँगाते हैं।
यदि देर हो लानें में तो उल्टी डाँट पिलाते हैं।

बतलाओ इसका क्या मतलब जो तोंद बढाये जाते हैं।
कोई मरता भूखों से, तो कोई रसगुल्ले खाते हैं।।
हलवाहे खेतों पर रहते वे पेट नहीं भर पाते हैं।
अफसर कुर्सी पर बैठे नोट नहीं गिन पाते हैं।।

दिन भर खेतों पर रह करके मुँह मूँद व सो जाते हैं।
मालिक हैं जिनकी तोंद बड़ी, कुत्तों को दूध पिलात हैं।।
यह दशा देख नित कृषकों की हम सदा मौन रह जाते हैं।
भगवान बिना इस जग में सब, अपने को लोग कहाते हैं।।

नेताजी सड़को पर घूमे दिन भर में लाख कमाते हैं।
कुछ केस नहीं, कुछ काम नहीं हर दिन दीवानी जाते है।।
कहते हैं तेरा काम करूँ, कुछ तो पॉकिट में जमा करो।
फिर नेताओं को ढूंढो, फिर ढूंढो वे हाथ कभी ना आते है।।

****

रिटायर पापा

- श्रीमती उर्मिला मिश्रा



कितने ज्यादा बदल गये है, जबसे हुए रिटायर पापा
भीतर-भीतर बिखर गये है, सधे हुए हैं बाहर पापा।

कड़कदार आवाज रही जो, धीमी से हो गई अचानक
समझौतों की लाचारी अब, जीवन का लिख रही कथानक
घर के न्यायाधीश कभी थे, न्याय माँगते कातर पापा।

बेटे बहुएँ आँख परखते थे लेकिन अब आँख दिखाते
चले पकड़कर जो उँगली को, वो उँगली पर आज नचाते
बच्चों की रफ्तार तेज है, घिसे हुए से टायर पापा।

माँ अब पहले से भी ज्यादा, देख-रेख पापा की करती
नहीं किसी से कभी डरी माँ, लेकिन अब बच्चों से डरती
घर में रहकर भी लगते है, जैसे हो यायावर पापा।

पापा को आनन्दित करती, नाती पोतों की मुस्कानें
मन मयूर भी लगे थिरकनें, मिल जाते जब मित्र पुराने
कहाँ गया परिवार प्रेम अब, जिस पर रहे निछावर पापा।

कितने ज्यादा बदल गये हैं, जबसे हुए रिटायर पापा
भीतर-भीतर बिखर गये हैं, सधे हुए हैं बाहर पापा।

****

तुलसी भजन
(तर्ज - मीठे रस से भर्योड़ी राधारानी लागे)

- श्रीमती सुशीला खण्डेलवाल



मीठी सुगंध से भर्योडी तुलसीरानी लागे । महारानी लागे ।
म्हाने ठाकुरजी मंदिर प्यारो प्यारो लागे ।।
अन्न-धन-लक्ष्मी तुलसा देवें, भक्ति अटल बिहारी ।
बिडला मायरी तुलसा प्यारी प्यारी लागे ।

म्हाने ठाकुरजी को मंदिर प्यारो प्यारो लागे ।
सत्यभामा को गर्व हुयो है तोल दिया गिरधारी ।
अन्न-धन-लक्ष्मी सब धरदीयो कमरो किनो खाली ।
तो भी हरजी को पलडों नीचों नीचों लागे
म्हाने ठाकुरजी को मंदिर प्यारो प्यारो लागे ।

तुलसा रखदी पलडा ऊपर तोल दिया गिरधारी ।
सत्यभामा को गर्व हुरयो है तुलसा पड़ गई भारी ।
अब तो हरजी को पलडो ऊँचो ऊँचो लागे
म्हाने ठाकुरजी मंदीर प्यारो प्यारो लागे ।।
बिडला मायरी तुलसा प्यारी प्यारी लागे ।।

****

चरित्र का महत्त्व

- श्रीमती शारदा जिंदल



एक प्रसिद्ध कहावत है :-

If wealth is lost, nothing is lost
If health is lost, something is lost
If character is lost, everything is lost

अर्थात् धन गया तो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो कुछ गया और चरित्र गया तो सब कुछ गया। परन्तु आजकल - चरित्र गया तो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो कुछ गया और धन गया तो सब कुछ गया। रूपयों का महत्व इतना बढ़ गया है कि उसके बदले अपना चरित्र भी बेचा जा रहा है। धन के लोभ से अच्छे घर की स्त्रियां भी दुष्कर्म में प्रवृत हो रही है। कई स्त्रियां तो बूढ़े से घन के लोभ में विवाह कर लेती है यह सोच कर कि कुछ सालों में इसकी मृत्यु पश्चात् इसका सारा धन हमारा हो जायेगा और फिर हम दूसरा विवाह कर लेंगी। टी.वी. में एक अभिनेत्री तो यह तक कह रही थी कि यदि मुझे रूपये मिले तो मैं कुछ भी करने को तैयार हूँ। ऐसा इसलिए हो रहा है क्योंकि समाज मे ''दुश्चरित्र धनी'' का बहुत सम्मान किया जाता है और ''सच्चरित्र निर्धन'' की ओर कोई देखता भी नही। लेकिल साथियों पैसा कुछ कुछ है परन्तु सब कुछ नहीं है।

****

छाया बबूलों की

– रामगोपाल जांगिड



हर संस्था में छाया पसर गई कांटेदार बंबूलो की।
शान्ति शकुन की आस नहीं जहाँ चुभन हो तीखी शूलौ की।।
इस जन कल्याणी ताने बाने को ईर्ष्या लपटो ने जला दिया
खेचातानी, फूट फाड़ और खटकटास ने अजीब उलझन से नहला दिया
सेवा विकास हुआ झूठा झांसा, लूट लिया हमें शोषण गर्द विचारो ने।
जन सेवा के नाम थोथा झुणझुणियां, थमा दिया मेरे प्यारो नें।।
फिर वही थाम ली बाहें हमनें उस बीते अंग्रेजी युग की भूलों की।
शान्ति शकुन की आस नहीं जहाँ चुभन हो तीखी शूलौ की।।
ज्वालामुखी द्वेषता का फूटा लावा बह चला हर मानव की नीति और प्रकृति में।
शोषणगर्दों की खूब बजे बांसुरिया ओछे हथकन्डे भरी मस्ती में।।
बिन सेवा चाले हर पद पर ताबूत ज्यूं खड़े अड़वों ने डूबो दी संस्थाओं की नैया।
बाड़ खेत ने रूच रूच खा रही स्वार्थ नाच रहा ता था थैय्या।।
हर जगह धज्यियां उड़ती देखी अच्छे खासे नियम और असूलों की।
शान्ति शकुन की आस नहीं जहाँ चुभन हो तीखी शूलौ की।।
अग्न बरसा रही खूब ईर्ष्यायें आज अंगारे चहुं ओर।
एक दूजे पर घृणा की बंदूके तन रही मच रहे भेदभाव के छोर।।
जूनून चढ़ा आज हर भाई को पद प्रतिष्ठा व माला मंच की ओर।
भारी पड़ रहा इन संस्थाओं पर शोषणी तूफानों का जोर।।
प्यार भरी मस्ती छोड, बंसती हवा भी साथ दे रही धूर्त और बड़बोलो की।
शान्ति शकुन की आस नहीं जहाँ चुभन हो तीखी शूलौ की।।
संस्थाओं की हर डाली आज बलवानों के कब्जे पात पात धनवानों की दादागिरी।
गरीबों का इन संस्थाओं से जुड़ने का औचित्य नहीं बन चुकी यह धनवानों की जागिरी।।
हर मंच पे आवाजे थोथी रोजी रोटी और विकास की बातों की।
किस महानुभाव को है फुरसत जो सेवा से खुजली मिटावे हाथों की।।
उच्च पद की शपथ ग्रहण कर तोड़ रहे कसम खा रहे आन रसूलौं की।
शान्ति शकुन की आस नहीं जहाँ चुभन हो तीखी शूलौ की।।
रोजगार से हो आतंकित ग्रहण लगा हर बच्चे, बूढे व युवाओं की मुस्कानों को।
कमर तोड़ती मंहगाई में कोर्ट कचहरी के चक्करों न कुचल दिये अरमानों को।।
पद पाते ही गर्व छा जाता बजाय सेवा के नाम कमाये या वाह वाह लूटे।
फेवीक्वीक से पद पर ऐसे चिपक बैठते कि आखरी श्वास भी उसी पर छूटे।।
कथन गाजवा का सत्य समझो कि यह करतूत है, सिर्फ मत दाता की भूलों की
शान्ति शकुन की आस नहीं जहाँ चुभन हो तीखी शूलौ की।।

****

पाथल और पीथल

(सौजन्य - डॉ. के.एल. सेठिया)

- रामनिवास मीना

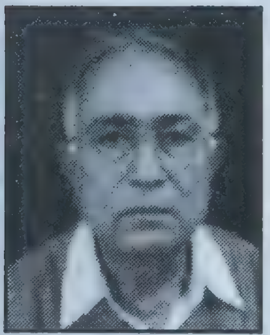


अरे घास री रोटी ही जद, बन बिलावड़ो ले भाग्यो।
नान्यो सो अमरयो चीख पडयों, राणा रो सोयो दुख: जाग्यो।।
हूँ लड़यो घणो हूँ सहयो घणो, मेवाड़ी मान बचावण नै।
मैं पाछ नहीं राखी रण मैं, बैरया रो खून बहावण नै।।
जद याद करू हल्दीघाटी, नैणा में रक्त उतर आवै।
सुख दुख रो साथी चेतक्ड़ो, सूती सी हूंक जगा जावै।।
पण आज बिलखतो देखूँ हूँ, जद राजकँवर ने रोटी नै।
तो क्षात्र धर्म नै भूलूं हूँ, भूलू हिन्दवाणी चोटी नै।।
आ सोच हुई दो टूक तड़क, राणा री भीम बजर छाती।
आख्यां मैं आँसू भर बोल्या, मैं लिखस्यू अकबर नै पाती।।
राणा रो कागद बाँच हुयो, अकबर रो सपनो सो सौचो।
पण नैण करयो विश्वास नहीं, जद बाँच बाँच नै फिर बांच्यो।।
के आज हिमालो पिघल गयो, के आज हुयो सूरज सीतल।
के आज शेष रो सिर डोलयो, आ सोच हुयो सम्राट विकल।।
म्हे बांध लियो है पीथल सुण, पिजड़े में जंगली शेर पकड़।
ओ देख हाथ रो कागद है......
मैं आज बादशाह धरती रो, मेवाड़ी पाग पगा मैं है।
अब बता मनै किण रजवट के, राजपूती खून रगा मैं है।।
जद पीथल कागद ले देखी, राणा री सागी सेवाणी।
नीचे सू धरती खसक गई, आँख्यों में आयो भर पाणी।।
पण फेर कहीं तत्काल संभल, आ बात सफा ही झूठी है।
राणा री पाग सदा उँची, राणी री आण अटूटी है।।
लो हुकुम हुवै तो लिख पूँछ, राणा ने कागद रै खातर।
ले पूछ भला ही पीथल तू, आ बात सही बोल्यो अकबर।।
म्हे आज सुणी है नाहरियो, स्याला रै सागे सोवेलो।
म्हे आज सुणी है सूरजड़ा, बादल री ओटया खोवैलो।।
म्हे आज सुणी जै चातकड़ों, धरती रो पाणी पीवैलो।
म्हे आज सुणी है हाथीडो, कूकर री जूण्या जीवैलो।।
म्हे आज सुणी है छता खसम, अब राँड हुवैली रजपूती।
म्हे आज सुणी है म्याना मैं, तलवार रवैली अब सूती।।
हूँ म्हारो हिवड़ो काँपे हैं, मूंछना री मोड़ मरोड़ गई।
पीथल मैं राणा लिखत भेजो,
पीथल रा आखर पढ़ता ही, राणा जी आंख्या लाल हुई।
धिक्कार मनैं मैं कायर हूँ, नाहर री एक दक्काल हुई।।
हूँ भूख मरू हूँ प्यास मरू, मेवाड़ धरा आजाद रवै।
हूँ घोर उजाड़ा मैं भटकू, मन मैं मां री याद रहे।।
हूँ रजपूतण रो जायो हूँ, रजपूती कर्ज चुकाउला।
ओ शीश पड़ै पर पाग नहीं, दिल्ली रो मान झुकाउला।।
पीथल के खिमता बादल री, जो रोके सूर्य उगाली नैं।
सिंहा री हाथल सह लैवे, वा कूँख मिली कद स्याली नैं।।
धरती रो पाणी पीवै जिसी, चातक की चूच बणी कोनी।
कूकर री जूण्या जीवै जिसी, धन्नी री बात सुणी कोनी।।
जब राणा रो संदेश गयो, पीथल री छाती दूणी ही।
हिन्दवाणी सूरज चमकै हो, अकबर री दूनियां सूनी ही।।

* * * *

रुबाइयाँ

- कैलाश पंत



दर्द पीकर मुस्करा सकता यदि मानव,
आह भरकर गीत गा सकता यदि मानव,
क्या जरूरत थी पत्थर पूजने की,
इन्सान को इन्सान कह सकता यदि मानव।

निराशा सिमिटती है पर आशा-पास नहीं आती,
सरोवर में उठी सरगम किनारे तक नहीं आती,
ना जाने रो रही तुम क्यों, किसी उजड़े सदन में,
पुकारो अब न मुझको, यहां तक आवाज नहीं आती।

पलकों के भीतर सपनों का संसार लिये हूँ,
बन्सी की सरगम के भीतर उच्छवासों का भार लिये हूँ,
मेरे स्वर की बर्बादी परहंसने वालों,
झुककर देखो आशा का आधार लिये हूँ।

आँसुओं का हार मुझको मिल गया है।
दर्द का संसार मुझको मिल गया है।
मैं तड़पता ही नहीं क्योंकि
गीत का आधार मुझको मिल गया है।

****

लापता

- के.के. गौड़



सज्जनों,

एक दुबली पतली, गोरी चिट्टी सी लड़की
जिसकी उम्र कुछ हजार साल है
जो सच्चाई की बेदाग उजड़ी साड़ी
और विकासोन्मुख मूल्यों की
विचित्र कंचुकी पहने हुये है
विश्व के बाजार से
गायब हो गयी है।

कहते है सभ्यता की सड़क पर
अनैतिकता की मोटर में सवार
कुछ घोर भौतिकवादी अपराधी
उसे उठा ले गये
और बुद्धिवादिनी पुलिस
देखती ही रह गयी।

आप सब से प्रार्थना है
जो उसे पाये घर पहुंचा दें
राह खर्च के अतिरिक्त
ईनाम भी दिया जायेगा

लड़की का नाम है ...... "मानवता"

****

नयन लड़े होंगे

कवि/शायर
डॉ. तेजसिंह कछवाहा ''भ्रमर''



इश्क की आग में जो जले होंगे,
अवश्य वो आशिक के खानदान के होंगे।
इश्के दरिया है गहरा बहुत,
डूबे तो बहुत बिरले ही पार निकले होंगे।।

आशिक के नयन जब माशुक से लड़े होंगे,
कितने ही ख्वाब उसकी आँखों में पले होंगे।
आसां नहीं है इश्क की राह पर चलना,
न जाने कितने छाले पाँव में पड़े होंगे।।

वक्त की ठोकर खाकर जो संभलता है,
अवश्य ही वो गम के साये में पले होंगे।
सोना आग में तप कर ही कुन्दन बनता है,
आदमी वो अवश्य ही बहुत भले होंगे।।

ऊँची-ऊँची बातें जो फैंका करते हैं,
हो सकता है वो पैसे वाले होंगे।
मगर जिसके पास संस्कारों की दौलत है,
उसकी किस्मत के दर हर वक्त खुले होंगे।।

सीना तान कर चलता है सच बोलने वाला,
झूठ और कपट करने वालों के सर झुके होंगे।
वक्त की कदर करता है नेक इन्सां,
आलसियों ने तो हमेशा हाथ मले होंगे।।

मजबूरी में जो झूठ का सहारा लेता है,
अवश्य ही उसके होठ सिले होंगे।
चमन का ज़र्रा ज़र्रा आज महका है,
अवश्य ही वो टहल रहे होंगे।।

बसन्त की ये कैसी बयार चली,
शायद वो उधर से गुजर रहे होंगे।
बे मौसम की ये बरसात कैसी ''भ्रमर''
अवश्य आशिकों के आँसू झर रहे होंगे।।

****

जीवन की आपाधापी

प्रभा शर्मा



जीवन की आपाधापी में न जाने।
समय कब पीछे छूट गया।।
बचपन से जवानी, जवानी से बुढ़ापा कब आया।
कब न जाने सपनों से नाता टूट गया।।
अब कोई साथ नहीं रहता है।
मेरे पास समय नहीं, यही कहता है।।
छड़ी उठाती है बोझ जिदंगी का।
साथ के नाम पे दवाई का डिब्बा रहता है।।
वक्त पुराना अब पीछे छूट गया।
नासमझ पीढ़ी नहीं जानती कि, बुढ़ापा कभी बूढ़ा नहीं होता है
बल्कि उनमें अनुभव दूना होता है।।
जीवन की आपाधापी में न जाने।
समय कब पीछे छूट गया।।

****

अमर शहीदों को प्रणाम साथियों

डालचन्द जनूठिया



मेरा अमर शहीदों को प्रणाम साथियों।
बार-बार उन्हें करता सलाम साथियों।।
जो जबानी में ही देश को जवानी दे गये।
मैंने गीत लिखा है उनके नाम साथियों।।
कारगिल की चोटी पर चढ़ते चले गये।
बैरियों को ललकार कर बढ़ते चले गये।।
भारी युद्ध में लड़े थे, सीना तान के परन्तु,
गोली खाके आये भारत के काम साथियों।। 1।। मेरा अमर...
माता ने कहा था बेटे दूध ना लजाना तू।
भाई ने कहा था, भइया पीठ ना दिखाना तू।।
बहना ने किया तिलक पत्नी आरती उतार,
देती सौगन्ध सिंदूर की, तमाम साथियों।। 2।। मेरा अमर...
लाडले लढेते लाल काल से डरे नहीं।
बलिदानों ने पांव पीछे को धरे नहीं।।
आन मान हेतु जान देके स्वाभिमानी बन,
गये राष्ट्र सेवकों के, मुक्तिधाम साथियों।। 3।। मेरा अमर...

****

परिवार

– श्रीमती प्रेम शर्मा



परिवार अब कहाँ, परिवार तो कब के मर गए
आज जो है, वह उसका केवल
टुकड़ा भर रह गए।
पहले होता था दादा का
बेटों पोतों सहित भरा पूरा परिवार
एक ही छत के नीचे।
एक ही चूल्हे पर
पलता था उनके मध्य
अगाध स्नेह और प्यार
अब तो रिश्तों के आईने
तड़क कर हो गए हैं कच्चे
केवल मैं और मेरे बच्चे
माँ बाप भी नहीं रहे
परिवार का हिस्सा
तो समझिये खत्म ही हो गया किस्सा।
होगा भी क्यों नहीं
माँ बाप भी आर्थिक चकाचौंध में
बेटों को घर से दूर
ठूंस देते हैं किसी होस्टल में
पढ़ने के बहाने
वंचित कर देते हैं प्रेम से
जाने अनजाने
आज की शिक्षा
हुनर तो सिखाती है।
पर संस्कार कहाँ दे पाती है।
पढ़ लिख कर बेटा डॉलर की
चकाचौंध में
यूरोप या अमेरिका
बस जाता है।
बाप को कंधा देने भी कहाँ पहुँच पाता है।
बाकी बस जाते हैं बंगलोर
हैदराबाद, मुम्बई
नोएडा या गुडगांव में।
फिर लौट कर नहीं आते
माँ बाप की छांव में
बीते वर्ष का है किस्सा
ऐसा ही एक बेटा, पुस्तैनी घर बेचकर
माँ के विश्वास को तोड़ गया।
उसको यतीमों की तरह
दिल्ली के एयर पोर्ट पर छोड़ गया।
अभी कुछ समय एक नालायक ने
माँ से बात नहीं की, पूरे एक साल।
आया तो देखा माँ का आठ माह पुराना कंकाल।
माँ से मिलने का तो केवल एक बहाना था।
असली मकसद फ्लैट बेचकर खाना था
अर्थ की भागमभाग में
मीलों पीछे छूट गए हैं
रिश्ते नातेदार।
टूट रहे हैं घर परिवार
सूख रहा है प्रेम और प्यार

परिवारों का इस पीढ़ी ने ऐसा सत्यानाश किया कि आनेवाली पीढ़ियां सिर्फ किताबों में पढ़ेगी
''वन्स अपोंन अ टाइम, देयर वाज लिवींग अ जोइंट फैमिली इन इंडिया, दैट इज कॉल्ड परिवार''

****

ज़माने का दस्तूर

- रामजीलाल अरोड़ा



किसी की किसी से तुलना नहीं करें
किसी की आलोचना भी नहीं करें
क्योंकि हर व्यक्ति स्वभाव
व प्रवृति के अनुसार
अलग होता है।
समाज में सर्वत्र, भिन्नता व्याप्त है।
व्यक्ति पंसद व इच्छा से व्यवहार करेगा
यह आवश्यक नहीं कि उसका
आचार, विचार, व्यवहार आप
के अनुकूल हो।
स्वस्थ रहने के लिए तनाव व
चिंता से से मुक्त रहे।
अपने लिये नहीं, औरों कि लिये जीयें,
जिसका न कोई गम, न कोई गरूर।
उससे दिल में मिलती है खुशी।
यहीं है जमाने का है दस्तूर।

****

रंजिशों को दिलों में

- वी.पी. श्रीवास्तव



रंजिशों को दिलों में पालने वाले
अभी हैं सलामत मुफलिसों के रखवाले
मंदिर मस्जिद की दूरियाँ कम करदें
अय नाखुदा ऐसे गीत तू गाले
कहीं भूखा न सो जाये बचपन
मत छीन तू इनके हाथों से निवाले
ये सरजमीं है, हमें दिलोजाँ से अजीज
मत करना इसे घुसपैठियों के हवाले
यह कलम जो पकड़ा दी गई है तुम्हें
लिखते ही जाना पड़ेगें न हाथों में छाले
खड़े शहरों की बातें हैं निराली
गुम सुम से जीते हैं लोग लगा जुबानों पे ताले
कहीं शहरों की नजर न लग जाये गावों को
इनमें रहते है लोग बड़े भोले भाले
सरहदों पर जिन्होनें अपनी जान है गंवाई
यहाँ कितने है लोग उन्हें याद करने वाले

****

अविनाशी तु तद्विद्धि येन सर्व मिदं ततम्।
विनाशमव्यय स्यास्य न कश्चित् कर्तुमर्हति ।।
भावार्थ -
इस शरीर में व्याप्त आत्मा अविनाशी है।
उसे कोई नष्ट नहीं कर सकता।
श्रीमद. 2/17

जयंती पर्व

– राजकुमार जैन



ज्ञान और दर्शन की एक नई चेतना, नया आयाम जिसने दिया जमाने को,
आज हम रह गये हैं सिर्फ उनकी जयंती मनाने को।
अंधकार को दूर भगाया जिसने स्व का ज्ञान कराया,
पूरब की महिमा बतलाई और पश्चिम का भ्रम मिटाया,
एक याद काफी है सौ बात भूल जाने को,
आज हम रह गये हैं सिर्फ उनकी जयंती मनाने को।
गीता कहती बलवान बनो, आत्म बल में धनवान बनो,
अपने पौरूष का ख्याल रहे, हर दिल जलती चट्टान बनो,
कर्तव्य बुलाता है तुमको निकलो फिर देश बनाने को,
ज्ञान और दर्शन की एक नई चेतना नया आयाम जिसने दिया जमाने को,
आज हम रह गये हैं सिर्फ उनकी जयंती मनाने को।

****

सावन आया

– मूलचंद बाछीवाल



सावन आया सावन आया।
इठलाता गाता सावन आया।।
सावन को किसने आता देखा
सावन को किसने जाते देखा
तन को स्पर्श कर
मन को उल्लासित करने सावन आया सावन आया
वनों में उपवनों में बागों और बहारों में
पक्षियों के कलखों में गीत गाता सावन आया सावन आया
किसानों की मुस्कानों में खेतों और खलिहानों में
धरती की प्यास बुझाने सावन आया, सावन आया
किसी ने सावन को लूटा सावन किसी को लूट गया
किसी का पिया परदेस गया तो किसी का पिया घर आया
विरह की अग्नि में आस जगाता
सावन आया सावन आया।।
किसी पर सावन छाया है, किसी का सावन बीत गया
किसी का मन आनंद से सीचं गया किसी मन रीत गया
खट्टे–मीठे अनुभव सुनाता व छल गया
सावन आया, सावन आया।

****

सबका मालिक एक

- भंवरलाल गोयल



मेरे परम पिता, निरंजन निराकार।
हे आनन्द के दाता, तेरी महिमा अपरम्पार।।
कोई तुझको ईश्वर कहता, कोई कहता अल्लाह।
कोई ईशू मसीह कहता है कोई कहता रब।।
धर्म भले ही अलग-अलग है, पर
पिता सभी का एक है। सबका मालिक एक है।।
भांति-भांति के पुष्प खिले हैं
रंग सुंगध न्यारी-न्यारी है
पर जिस माटी में बड़े हुऐ है
माटी सबकी एक है। सबका मालिक एक है।।
यह दुनिया अजब दुरंगी है,
यहां कोई नहीं है अपना।
साथ छोड़ सब गए बारी-बारी।
ले लो शरण बनवारी।।
तेरे फूलों से भी प्यार
तेरे कांटों से भी प्यार
जो भी देना चाहे, दे दे करतार।
दुनियां के पालनहार ।।

****

पौते की चाह

- मांगीलाल तिवाड़ी



दादो सा – दे दो आज से मुझे आपकी लकड़ी
खेलकूद में लकड़ी चलाना सीखूंगा तगड़ी
दुष्टजन के एक मार दू, फोड़ दू उसकी खोपड़ी
दादो सा – ताकतवर बन कर पढ़ाई करूंगा तगड़ी
फौज का अफसर बनूंगा, शैतानसिंह जैसा
सीमा की रक्षा करूंगा 15 वर्ष तक तगड़ी
दादो सा – पाक के आतंकियों से खून की होली खेलूंगा
सिर पर बाधूंगा – कफन की पगड़ी
कूचल डालूंगा पैरो तले, ज्यें चींटी मकड़ी
दादो सा – दुश्मन के सिर को काटूगा ज्यूं मतीरा ककड़ी
मिसाइलों से उड़ा दूंगा उनके टेंट झौपड़ी
टैंकरों को तोड़ दूंगा – पंचर कर दूंगा छकड़ी
दादो सा – काश्मीर, वाल्टी स्थान हमारा है, हमारा रहेगा अगड़ी
नामो निशान मिटा दूंगा चीन पाक का
तिरंगे की विश्व में शान रखूंगा तगड़ी
दादो सा – आप तो कुदरत में घूमने जाओ घडी दो घड़ी
तन्दरूस्ती हो जायेगी आपकी तगड़ी
छूट जायेगी आपके हाथों से लकड़ी
दादो सा – आपके मुरझाये चहरे पर रौनक आयेगी तगड़ी
100 वर्षों से ज्यादा जीकर पेन्शन पावोगे तगड़ी
दौड़-दौड़ कर हम करेंगे आपके सेवा तगड़ी
देता विराम, शहीदों को शत-शत प्रणाम।

****

मुझे लव हो गया

– मेवालाल जादम



मुझे प्यार हो गया उड़ते पक्षियों से
खेतों में लहराती फसलों से
लव हो गया बच्चों की किलकारी से
हंसी आ गई हल्की मुस्कान से
मुझे प्यार हो गया अपने आप से
चाँदनी को देखकर खुश हो गया
सागर की अपार गहराई को
प्यार हो गया बहते झरने से
मुझे प्यार हो गया बरसात के आने से
प्यार हो गया बच्चों के झूलों से
चार की जिन्दगी से लव हो गया
वक्त पहचान बन गया
हाँ पल से लव हो गया
प्यार मेरा दोस्त बन गया
मुझे प्यार हो गया अच्छे दिन से
मुझे समाज और देश से प्यार हो गया
मधुर संगीत से लव हो गया
गुलाब के छोटे-बड़े फूलों से
पानी के बहते ठण्ड़े झरने से
मुझे प्यार हो गया अपनी तकदीर से
मुझ लव हो गया एक गोरी .... से ?

****

राख पत की रखापत

– जसवन्त सिंह चौहान



राख पत की रखापत, अगर दुनिया मान लेवे
सोने में सुहागा होवें, उस को सब जान लेवे।

मीठा बोलो मुख से, कड़वा किसी से नहीं
इस से बढ़ता प्रेम है, हानि कभी होती नहीं।

मीठा बोल भाषा में है, मधुर भाषा बोलिये
दुनिया तो दिखावा है, अपना मुख: नहीं मोडिये।

अगर झुक कर बात करे, तो दुनिया झुक जायगी
राखपत की रखापत को, दुनिया सरायेंगी।

राख पत की रखापत को, जो नहीं मानते
इससे होती उनकी हानि , इसे सब जानते।

****

जीवन के दिन बीत गये

- धर्मीचन्द जैन



बीत गये, जीवन के दिन बीत गये।।
वे प्रिय से दिन बीत गये।। जीवन के दिन ....
बचपन के थे प्रिय से मधु दिन, सरल झगडते मित्रों के संग।
गिल्ली-डंडा, गैंद लकुटिया, आँख मिचौनी के प्यारे रंग।
बचपन प्यारा इन्द्रधनुष सा वे दिन कैसे बीत गये।। जीवने के ....
तब प्रियजन का सुखद संग था, केन्द्र धुरी तो मात-पिता थे।
सघन वृक्ष सी शीतल छाया, सुख में - दुख में सभी एक थे।
जो युग बीता कथा सरीखा, स्वप्न बने सब गीत गये।। जीवन के ....
बचपन गया जवानी आई, लेकिन गृहस्थी साथ ही लाई।
बोझ ढोते झुक गये कन्धे, दृढ़ तन में बैचेनी आई।
बीते दिन तो कभी न आते, मेरे प्रिय कई मीत गये।। जीवन के ....
संसार श्रंखला सदा अटूटी, नव पीढ़ी में हम ही तो है।
जीवन धारा सतत् प्रवाहित मृत्यु जन्म का बीज ही तो है।
जीवन सरल, सहज बनाओ, कभी न कहना रीत गये।। जीवन के ....
जीवन क्या है, ऋतु परिवर्तन, मधुमास कभी पतझड़ है आता।
परिवर्तन है सदा शाश्वत, जीवन क्रम गतिशील बनाना।
जीवन के कई रंग है, प्रियजन,जो समझे वे जीत गये।। जीवन के ....

****

गज़ल

- लोकमन दास गोयल



तमाम उम्र तरसते रहे खुशी के लिए
फिर दिल की आरजुओं की शम्मे न जल पडे,
इतना भी न सताओ कि आंसू निकल पडे।
फिर किस तरह करे कोई इजहारे आरजू,
जब इल्तजा से आपके माथे पे बल पड़े।।
करार पा न सके हम तो दो घड़ी के लिए
तमाम उमर तरसते रहे खुशी के लिए, करार ...
सजा का एक फक्त मैं हूँ मुस्तहिक लोगों
कि मैंने हाथ बढ़ाया था दोस्ती के लिए तमाम
अमीर लोगों को कैसे निराग दे हम लोग
गरीब खुद ही तरसते है रोशनी के लिए तमाम ...
उसे नजर न आया कोई और दुनिया में
क्या रह गया था मेरा दिल ही दिल्लगी के लिए,
तमाम
जो बहलता नहीं साँस की भुनकारों से,
फोलू सर न कही जिस्म की दीवारों से।
जिन्दा लाशें भी दुकानों में सजी है देखो,
यू अब आती है खुलते हुए बाजारों से।
सिवाये अश्को के बख्शा न जिसको कुछ 'इशरत'
न जाने क्यों तडपा रहा खुशी के लिए
क्या रह गया था मेरा दिल ही दिल्लगी के लिए
तमाम उमर तरसते करारे पा न ... तमाम .....

****

बुढ़ापे का रोना

- श्रीमती पुष्पा क्षेत्रपाल



हम बुढ़ापे का रोना नहीं रोएगें
इसे कभी भी नहीं कोसेंगे
क्योंकि अब यही है अपना
बस इसी के सपने देखेंगे।
घर में आश्रम की तरह रहेंगे,
आश्रम में घर की तरह रहेंगे
न किसी जंजाल में फंसेंगे
न पुरानी यादों को कुरेदेंगे।
हमारे समय को ना रोएंगे
दिल खोल नया अपनाएंगे
दिन रात आनन्द बाटेंगे
वर्तमान को ही अपना लेंगे।
प्यार हुआ बटोर लेंगे
उपेक्षा का झटकेंगे
सब को गले लगा लेंगे
राग द्वेष को दूर रखेंगे।

जिंदगी के चौथे द्वार पर
खुशी से गाकर झूमेंगे,
बुढ़ापा भी बढ़िया होता है
लैंस ट्रांसप्लांट से साफ दिखता है।
नए दाँतों से सहज चबता है
हियरिंग एड से सब सुनता है,
दिल खोलकर दावत करेंगे
सुरों की संगत जमकर करेंगे।
हम स्वाद लेंगे दाद देंगे
तृप्त मन से जीने का आंनद लेंगे,
वो पेड़ की सूखी पत्ती देख रहे हैं
बस उसी की तरह यहाँ से धीरे से चल देंगे।
दिलों में समा जायेंगे, यादों में बस जायेंगे
हम भी 60 के बाद का आनन्द लेंगे।।

****

भजन

- अर्जुनसिंह मकवाना



अजब हैरान हूँ भगवन तुम्हें कैसे रिझांऊ मैं।
नहीं वस्तु कोई ऐसी जिसे सेवा में लाऊ मैं।।
तुम्हारी ज्योति से रोशन है, सूरज-चाँद और तारे।
महा अंघेर है तुमको यदि दीपक दिखाऊं मैं।। अजब ...
तुम्हीं हो मूर्ति में भी, तुम्ही व्यापक हो फूलों मैं।
भला भगवान को भगवान पर कैसे चडाऊ मैं ।। अजब...
लगाना भोग कुछ तुमको ये एक अपमान करना है।
खिलाता है जो सब जग को उसे कैसे खिलाऊं मैं।। अजब...
भुजाऐं हैं ना गर्दन है, ना सीना है ना पैशानी।
तुम्ह हो निर्लेप नारायण कहां चन्दन चड़ाऊ मैं।। अजब...

****

चिन्ता और चिता

- मदनलाल सैनी



हे सखे चिन्ता और चिता में अन्तर मात्र बिन्दु का
पर सच में देखा जाय तो अन्तर है पूरे सिन्धु सा।
चिन्ता और चिता दोनों ही अग्नि है,
एक जलाती मन को, एक जलाती मृत शव को।
दोनों मिल कर देती तबाह जीवन को
तुझे बाल की चिन्ता है फिर खाल की चिन्ता है
ससुराल के माल की चिन्ता, तेरे लाल की चिन्ता है।
लाल को भविष्य की चिन्ता है, फिर अस्पताल की चिन्ता है,
पाताल की चिन्ता है, फिर हडताल की चिन्ता है
रोटी दाल की चिन्ता है, लोटा थाल की चिन्ता है
पत्नी के विरह की चिन्ता है तो पड़ौसी के खुशहाल की चिन्ता है
भूचाल की चिन्ता है, और समय काल की चिन्ता है
चिन्ता ने चेतना की बना दी चिता, चिता से खोखली हुई जीवन सरिता।
चिन्ता को छोड़, चिता से मुख मोड़, कर तू अर्हत भजन
हर दिन इस तरह बीते कि रात चैन की आ जाय।
और हर रात इस तरह बीते, कि जागो तो मुंह दिखाने में न शरमायें,
जवानी को इस तरह बितायें कि बुढ़ापे में न पछताना पडे
बुढापे को इस तरह बितायें कि खाली हाथ खड़ा ना होना पड़े।

****

नारियल से मेरे 'पा'

- पुरूषोत्तम पटेल



नारियल को देखा है न गौर से
ऊपर से सख्त अंदर से
कितना नर्म-मुलायम
एकदम मलाई-सा
बिल्कुल ऐसे ही हैं
मेरे पा।
मां की तरह लोरी नहीं सुनाते,
मेरे आंसुओं का आंचल नहीं थमाते
तो क्या?
अंगुली पकड़ कर जिंदगी के कठोर धरातल
पर पहला कदम रख, चलना सिखाते मेरे पा।
ठोकर खा के गिरने पर दर्द को सहना सिखाते
मेरे पा।
मां की तरह परी लोक की सैर नहीं कराते,
दुनिया की ऊंच-नीच नहीं समझाते
तो क्या?
मेरे इम्तिहानों में मेरे साथ रात भर जागते
मेरे लिए चाय बनाते
मेरे पा।
मेरे बेहतर 'कल' के लिए
अपना सुनहरा 'आज' खर्च करते,
मेरे पा।

****

बुदबुदाते सवाल

- श्रीमती पार्वती पटेल



मेहनत मेरी हवा हो जाती, हाथ मेरे सिर्फ घास आती,
गांधी जी ने सबसे बड़े लोकतंत्र को नाम तो दिलाया,
पर क्या समानता के भाव ने एक जनरल कैटेगरी के
इंसान को अपना हक दिलाया........?
वो बात सदियों पुरानी थी, मैं बात आज की करती,
मैं रोज सवेरे बिस्तर पर सवाल खुद से करती हूँ।।
रिजर्व्ड कैटेगरी के नाम पर एक डॉलर गिनता है,
दूसरा नौकरी ना मिलने पर भूखा मरता है,
होता नहीं हर जनरल अमीर, होता नहीं, हर sc,st,obc गरीब
समझ चुकी ये करोड़ो जनता, पर समझ ना पाई सरकार हमारी,
एक इंसान दिन-रात पढ़ रहा, दूसरा इंसान सोके दिन गुजार रहा
एक दाखिला ना मिलने पर आँसू बहा रहा, दूसरा जाकर गुलछरे उडा रहा
फर्क कहा दिखाते है जनाब, बिना काठी, घोड़ा, हर sc, st, obc बना नवाब।
रिज़र्वेशन के जोक और मज़ाक अनेक, पर क्या जली आग वो फोटो देख?
खुद का हक उनके चरणों में रख दिया, सोच कर देखा क्या खुद को अप्रैल फूल नहीं बना दिया?
सोचकर जहन में आग लगे समझना जाग गए, बदल न पाए सोच किसी की, ये हकीकत जान गए,
कैसे समझू मैं खुशकिस्मत जब ''49'' रिजर्व्ड कैटेगरी
हित सदा सताये मुझे, शिक्षा हो या फिर सत्ता, पुरानी सोच तड़पाये मुझे।
गंदगी नहीं आस-पास सोचकर काम चलता है, साफ करने गया और फंस गया सोच हर इंसान डरता है।
लगता नहीं अब आरक्षण की जरूरत हैं,
आज भारत के युवाओं को मजबूत इरादों की जरूरत है।

****

मन की शान्ति

एक जाट-जाटनी में खटपट होती रहती है। जाट ने सोचा यह इज्जत खराब करें, इससे पहले मुझे ही छोड़ देना चाहिये। एक दिन कह दिया मैंनं पत्नी का त्याग कर दिया है। वैसे ही आरक्षण सबकी इज्जत से खेल रहा है। इज्जत वाले भी इसे पाने को तरस रहे हैं। ऐसे में खटपट बढाने से अच्छा है। जाट की तरह घोषणा कर परित्याग कर दे। जिससे इज्जत बढ़ेगी और मन को भी शान्ति मिलेगी।

सत्य वचन

- बलवीर सिंह गहलोत



अच्छे विचारों को वश में रखो
क्यूंकि यही तुम्हारी वाणी बनेगी,
अपनी वाणी को वश में रखो
क्यूंकि यही तुम्हारा कर्म बनेगी,
अपने कर्मों को वश में रखो क्यूंकि
यही तुम्हारी आदत बनेंगे, अपनी
आदतों को वश में रखो क्यंकि
यही तुम्हारा चरित्र बनेंगे, और
अपने चरित्र को वश में रखो
क्यंकि इसी से तुम्हारा भाग्य बनेगा....

****

लगता है बुढ़ापा मँडराने लगा है

- बलवीर सिंह हुंजन



उम्र ढ़लने लगी है
जीवन सिमटने लगा है
ना हार का दुख
ना जीत का जश्न
अपनों का साथ
अब अच्छा लगने लगा है
लगता है बुढ़ापा मँडराने लगा है
ना रिश्तों की ठंडक
ना रिश्तों की मिठास
बदले बदले चेहरे
चेहरों पर रंगों का बिखराव
धीरे-धीरे मन
उदास होने लगा है
लगता है बुढ़ापा मँडराने लगा है
ना पाने की खुशी
ना खोने का गम
सब कुछ भूला
मन एकाकी होने लगा है
जमा पूंजी के हिसाब से
मन घबराने लगा है
लगता है बुढ़ापा मँडराने लगा है
अच्छे बुरे वक्त से परे
सकुन जब बन जाये जरूरी
सिमरन में मन लगने लगे
धर्म की परिभाषा समझ आने लगी
लगता है बुढ़ापा मँडराने लगा है
जब औलाद अनसुनी करने लगे
हर बात को छिपाने लगे
अपनी खुद की दूनिया बसाने लगे
हर मौके पर तुम्हें भुलाने लगे
सब देख मन सब कुछ समझने लगे
दिल ही दिल मन जब रोने लगे
लगता है बुढ़ापा मँडराने लगा है।

****

थैलासीमिया - एक जानलेवा रोग और इससे बचाव

- अशोक कुमार गोयल



थैलासीमिया 20 वीं सदी में जन्मी एक खतरनाक बीमारी है जिसकी सामान्यजन को जानकारी नहीं के बराबर है। यह एक दर्दनाक और घातक रोग है परंतु इससे बचाव बहुत ही आसान है।

थैलीसीमिया एक रक्त विकार है यह एक वंशानुगत आनुवांशिक रोग (Genetic Blood Disorder) है। अर्थात यह जन्मजात बीमारी हमें सिर्फ और सिर्फ अपने माता-पिता के अज्ञान के कारण ही होती है।

थैलासीमिया मुख्यत: दो तरह का होता है- प्रथम थैलासीमिया माइनर, जिसे थैलासीमिया कैरियर भी कहते हैं तथा दूसरा थैलासीमिया मेजर।

1. थैलासीमिया माइनर कोई रोग नहीं है, इस रोग के होने के बावजूद रोगी एक लगभग सामान्य जीवन बिना इस रोग की किसी भी जटिलता के गुजारता है।

2. थैलासीमिया रोग या थैलेसेमिया मेजर एक जानलेवा रोग होता है -

इस रोग में सामान्यत: जीवनभर बाहरी खून चढ़ाते रहना होता है (औसतन सप्ताह में दो बार और पूरे जीवनकाल में 500 से 800 बोतल)

बाहरी खून चढ़ाने से शरीर में लोह तत्व बढ़ता जाता है, जिसे नहीं निकाला गया तो वो विभिन्न अंगों के लिए घातक सिद्ध हो सकता है। लौह तत्व निकालने की प्रक्रिया (Chelation Therapy) काफी खर्चीली और दर्ददायक होती है, तथा मरीज को जीवन भर इस दर्द से गुजरते रहना होता है। कई मामालों में 20 वर्ष की उम्र तक रोगी को 30000 घंटे इंजेक्शन् की सुई का दर्द भोगना होता है।

इस रोग में मरीज की औसतन उम्र 20 से 25 वर्ष की होती है।

थैलासीमिया मेजर का एक मात्र निदान बोन मेरो ट्रांसप्लांट (BMT) है। लेकिन BMT की प्रक्रिया अत्यंत जटिल, जोखिम भरी और खर्चीली होने से तथा मेचिंग बोन मेरो (HLA matching) की अत्यंत कम संभावना के चलते यह उपचार सामान्यत: 1 प्रतिशत मरीजों को ही सफलतापूर्वक उपलब्ध हो पाता है।

इस बीमारी का एक दिलचस्प पहलू यह है कि स्वयं माता-पिता ही थैलासीमिया मेजर बच्चे को जन्म दे सकते हैं।

माता-पिता दोनों ही थैलासीमिया माइनर हो सिर्फ तभी थैलासीमिया मेजर बच्चा हो सकता है। यदि दोनों में से एक ही थैलासीमिया माइनर है और दूसरा सामान्य है तो कभी भी थैलासीमिया मेजर बच्चा नहीं हो सकता। यह इतनी सी जानकारी सभी युवाओं को शादी से पूर्व हो जाए और वो इसकी सावधानी रख ले तो दुनिया में कभी भी थैलासीमिया मेजर बच्चे का जन्म न हो।

इस बीमारी से जागरूकता के लिए हमेशा याद रखें -

1. सभी युवा अपना थैलासीमिया का टेस्ट (HbA2) यथा शीघ्र, लेकिन शादी से पूर्व अवश्य करवाएँ।
2. यदि आप उक्त टेस्ट में थैलासीमिया माइनर हों तो संभावित जीवनसाथी का भी उक्त टेस्ट अवश्य करवाएँ।
3. आप थैलासीमिया माइनर हो और आपका संभावित साथी भी यदि थैलासीमिया माइनर निकले तो यह शादी कभी भी न करें।
4. संयोगवश या अनजाने में यदि दो थैलासीमिया माइनर की शादी हो गई हो तो हर प्रसव में 10-12 सप्ताह के भ्रूण का थैलासीमिया परीक्षण (CVS) अवश्य करवाएँ।
5. यदि दुर्भाग्य से गर्भस्थ आने वाला शिशु थैलासीमिया मेजर निकले, तो जरूरी कानूनी प्रक्रिया पूरी करके उसका गर्भपात ही इस बीमारी के कष्ट से निजात दिला सकता है, जो कि विधिक रूप से मान्य है।

****

SWEET MEMORY



Shri K.C. Gupta
September 17, 1939
November 19, 2016

&
Born
Heavenly Abode

Smt. Manju Gupta
August 08, 1942
November 09, 2008

ADARSH CONFECTIONER'S AND GENERAL STORE
Adarsh Nagar, Ajmer

Gopal - Beena
Shail Mittal
Jyoti - Mithlesh Ji Bansal
Preety - Anupamji Gupta
Anjali - Sandeep Ji
Archana - Rahul Ji Singhal
Rachna - Vikas Ji Gupta
Abhinav Mittal

Dr. Deepak Gupta - Arti
Sandeep Gupta - Kirti
Snehlata Gupta
Alok Gupta - Rakhi
Vivek Gupta - Shruti
Aditya, Kruti

Shreeraj, Kartik, Abhishek, Tanmay, Dhruv, Vartika, Shivi, Ritisha







।। श्री हनुमते नमः ।।

अजमेर जिला गौड़ ब्राह्मण सभा, अजमेर

रेलवे डी.आर.एम. कार्यालय के पास, मालरोड, अजमेर फोन : 0145-2424100







अध्यक्ष
अनिल भारद्वाज
मो. : 9414008699, 9214975199
निवास : 0145-2633699

सचिव
कैलाश चन्द्र शर्मा
मो. : 9460611254
निवास : 0145-2625831

समाज हित कार्य :-

1. समाज के मेधावी विद्यार्थियों का सम्मान एवं आर्थिक रूप से कमजोर को उच्च तकनीकी अध्ययन हेतु आर्थिक सहयोग, विशेषकर बालिकाओं को प्राथमिकता।
2. समाज के सभी विशेष योग्यता एवं 75 वर्ष से अधिक आयु वर्ग को विशेष अवसरों पर सम्मानित करना।
3. समाज द्वारा बचत एवं साख समिति का समाज के सदस्यों की सुविधा का संचालन करना।
4. निर्मित भवन में वृद्धि के सतत् प्रयास।
5. प्रदेश भर से विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने आने वाले ब्राह्मण बच्चों को ठहरने की निःशुल्क व्यवस्था।
6. समाज के आर्थिक दृष्टि से कमजोर व्यक्ति की आपात काल में यथा संभव चिकित्सा सुविधा में सहयोग देना

हमारा प्रयास समाज का पूर्ण विकास

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

Ph. : 0145-2633699
9414008699, 9214975199 (Anil)
9414237853 (Arvind)
9414314295 (Vikas)

अनिल भारद्वाज, अरविन्द भारद्वाज

नीति पत्र लेखक

हमारे यहाँ जायदाद सम्बन्धी हर प्रकार के कानूनी
दस्तावेज कम्प्यूटर एवं टाईप द्वारा तैयार किये जाते है।

निवास : ''स्नेह'', गेट-2 के सामने, भगवान मेडिकल के पास, पुलिस लाईन, अजमेर
E-mail : bhardwajanil02@gmail.com

विनम्र श्रद्धांजलि



लेफ्टिनेन्ट स्व. श्री मुकुल यादव

जन्म : 2 जुलाई 1961 स्वर्गवास : 21 सितम्बर1983

आपका जन्म कमाडेण्ट सेवानिवृत श्री गजसिंह यादव एवं श्रीमती सत्या यादव के सभ्रांत परिवार अजमेर में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा राष्ट्रीय मिलेट्री स्कूल अजमेर तथा कॉलेज शिक्षा बी.ए. ऑनर्स राजकीय महाविद्यालय, अजमेर में हुयी। 19 वर्ष की आयु में इण्डियन मिलेट्री एकेडमी में चयन हुआ और 12 जून 1982 में कमीशन्ड ऑफीसर बने। इनकी नियुक्ति 19वीं ग्रेनेडियर रेजिमेण्ट जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा जिले में हुयी।

आप 'नागपोस्ट' की ऊँची पहाड़ी चोटी पर लाईन ऑफ कन्ट्रोल की कमाण्ड की हिफाजत में थे। यह स्थान वर्ष में चार माह बर्फ से ढका रहता है। यहां से पाकिस्तान की हरकत पर कड़ी नजर रखी जाती है। 21 दिसम्बर 1983 को भयंकर बर्फीला तूफान आया जिसमें यह अपने जाबांज साथियों के साथ राष्ट्र की चौकसी सुरक्षा में बर्फ की मोटी चट्टान की चपेट में आकर शहीद हो गये। राष्ट्र के इस जाबांज सपूत को नगर परिषद्, अजमेर द्वारा कुन्दन नगर चौराहा तथा सड़क का नाम उनके नाम से कर सम्मानित किया गया है। ऐसे कर्मनिष्ट, कर्त्तव्य परायण और राष्ट्र को समर्पित बलिदानी को उसके परिवार व ईष्ट मित्रों की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए सभी गौरवान्वित हैं।

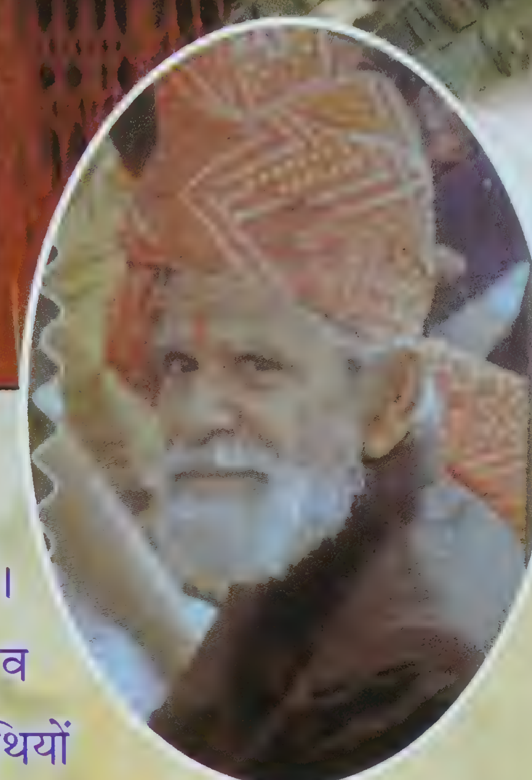


कमांडेन्ट गजसिंह यादव एवं श्रीमती सत्या यादव

समस्त परिवार एवं ईष्ट मित्रगण

191-सी, लेफ्टि. मुकुल यादव मार्ग,
कुन्दन नगर, अजमेर (राज.) - 305007
मो. : 9413040665, फोन : 0145-2623995





श्री गुलाब चन्द गढ़वाल की कलम से ....

लगभग 6 दशक पूर्व यहां तांगा स्टैण्ड हुआ करता था। जानवरों के पानी पीने की एक खेली थी। पेड़ की छाया में राहगीर व तांगे वाले विश्राम किया करते थे। एक शिवभक्त श्री ढालूमल ने साथियों के साथ चबुतरा बनवाकर शिवलिंग की स्थापना कर दी। पूजा-अर्चना होने लगी। श्री ढालूमल जी का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहने लगा उन्होंने पूजा-पाठ का दायित्त्व श्री कन्हैयालाल जी को सौंप दिया। इस पुनीत कार्य में श्री कारू व बाघ पहलवान जैसे उत्साही व्यक्ति भी जुड गये। बाबा कन्हैयालाल जी ने मृत्यु से पूर्व मुझे कहा कि आप प्रयास कर शिव जी व माता जी की मार्बल मूर्तियाँ बनवाने हेतु कहा। जिसे कुछ साथियों के साथ किशनगढ़ जाकर पौने पाँच फीट ऊँची शिवजी की और पौने चार फीट ऊँची माता जी की मूर्तियाँ तैयार करायी। एक माह में मूर्तियाँ तैयार हो गई और 10 फरवरी 2018 को मैं घर ले आया। 11 फरवरी 2018 को गाजे-बाजे के साथ व कलश यात्रा के साथ राजेन्द्रपुरा, हाथीभाटा से रवाना होकर प्राण प्रतिष्ठा मंदिर में कराई। उस दिन आम भंडार रखा गया। जो गत 15 वर्षों से निरंतर प्रत्येक शिवरात्रि पर भजन संध्या के साथ रखा जाता है।

चक्केश्वर महादेव मन्दिर

अंधेरी पुलिया, स्टेशन रोड़, अजमेर

बुजुर्गों के लिए बजट के फायदे

- श्रीमती अंजू अग्रवाल



अभी तक बुजुर्ग अपनी आय को लेकर चिंतित थे। बैंको में ब्याज दरें काफी कम थी उपर से उस पर टी डी एस भी कट जाता था। सीनियर सिटीजन के पास आमद का कोई और साधन नहीं होता और अपनी जमा पूंजी को किसी रिस्की स्कीम में वे इन्वेस्ट नहीं कर सकते । ऐसे में वे बैंक ब्याज पर ही निर्भर रहते है। सरकार ने उनकी परेशानी को समझा और कुछ प्रावधान किये। इन उपायों का सीधा लाभ बुजुर्गों को मिलेगा, जिससे रिटायरमेन्ट के बाद की उनकी जिन्दगी थोड़ी आसान हो जाएगी।

1. बजट में बैंक इंट्रेस्ट पर इनकम की छूट 10000 से बढ़ाकर 50000 कर दी गई है। इसमें सेविंग अकाउंट, एफडीआर और आईडी पर मिलने वाला ब्याज भी शामिल है। इस आमदनी पर टीडीएस से भी छूट रहेगी। ये अकाउंट बैंक या पोस्ट ऑफिस में होने चाहिए। पहले एफडीआर और आरडी अकांउट में मिले ब्याज पर टीडीएस कटता था लेकिन अब एक नई धारा 80 टीटीबी को जोड़कर 50000 तक का ब्याज कर मुक्त कर दिया गया। यह छूट केवल 60 वर्ष से अधिक वरिष्ठ नागरिकों के लिए है बाकी अन्य को पूर्ववत धारा 80 टीटीए के तहत बचत खाते से मिलने वाले ब्याज में 10,000 की छूट ही उपलब्ध होगी।
2. हेल्थ इंश्योरेन्स प्रीमियम के तौर पर खर्च की जा रही रकम पर 80 बी के तहत यह छूट 30,000 रूपये से बढ़ाकर 50,000 कर दी गई है। यह सेक्शन 80 सी में दी गई 1.50 लाख रूपये की छूट के अलावा है जो सेक्शन 80 डी में उपलब्ध है। इस तरह वरिष्ठ नागरिकों को आयकर में काफी राहत मिलेगी।
3. क्रिटिकल बीमारी के इलाज में खर्चें पर छूट 1 लाख कर दी गई है। पहले ये सीनियर सिटीजन के लिए 60,000 और 80 साल से ज्यादा के सीनियर सिटीजंस के लिए 80,000 रूपये थी सेक्शन 80 डीडीबी के तहत अब दोनों के लिए यह 1 लाख रूपये होगी। यह एक बड़ा फायदा है।
4. बुजुर्गों के लिए एलआईसी में इन्वेस्टमेंट की लिमिट 7.5 लाख रूपये थी जिस पर 8 प्रतिशत ब्याज मिलता था। अब इस लिमिट को बढ़ाकर 15 लाख कर दिया गया है। यह स्कीम प्रधानमंत्री वय बंदना योजना के तहत आती है जिसमें 10 साल के लिए वन टाइम इन्वेस्टमेंट होता है। यह योजना 3 मई 2018 तक मान्य थी जिसे बढ़ाकर मार्च 2020 तक कर दिया है। इसी तरह की योजना बैंकों में भी थी, लेकिन उसमें जमा की जाने वाली रकम की लिमिट पहले से ही 15 लाख रूपये है और वह निवेश 3 साल तक के लिए होता है। बैंकों के मामले में इनकम टैक्सेबल होती है, जबकि एलआईसी से इनकम टैक्स फ्री है।
5. स्टैडर्ड डिडेक्शन भी 40,000 तक कर दिया गया है लेकिन इसमें ट्रांसपोर्ट अलाउन्स (1,9200 रूपये सालाना) और मेडिकल अलाउन्स (15,000 रूपये सालाना) की छूट वापस ले ली है। क्यों सीनियर सिटीजन आमतौर पर अलाउंस का क्लेम नहीं करते। अत: स्टैडर्ड डिडेक्शन से सीधा फायदा 40,000 रूपये का होगा। क्या है स्टैडर्ड डिडेक्शन - स्टैडर्ड डिडेक्शन उसी एक मुश्त रकम को कहा जाता है जिसे वेतन से हुई कुल कमाई में से घटा दिया जाता है और उसके बाद कर पात्र आय का हिसाब किया जाता है।
6. सीनियर सिटीजंस को बढ़ाए गई सेस में कोई छूट न हीं दी गई है और 1 अप्रैल 2019 से 3 प्रतिशत की बजाए 4 प्रतिशत सेस उन्हें भी देना होगा। सेस का नया नाम हैल्थ एण्ड एजूकेशन सेस होगा। पहले यह प्राइमरी एजुकेशन से 2 प्रतिशत और हायर एजुकेशन पे 1 प्रतिशत लगता था।

आधे श्लोक का महत्त्व

- श्रीमती संतोष भार्गव



एक राज्य में एक राजा राज्य करता था। वह इतना पापी था कि उसका सारा शरीर पाप से काला पड़ गया था। राजा ने अपने पंडित से पूछा कि मुझे क्या करना चाहिये ? मैं काला पड़ चुका हूँ। पंडित ने कहा कि ऐसा इसलिये हुआ है कि आपने पाप बहुत किये हैं। राजा ने कहा कोई पूजा-पाठ बताओ जिससे मेरी समस्या का समाधान हो सके। पंडित ने कहा आप कृष्ण की आराधना करो और उन्हीं पर आश्रित हो जाओ। राजा ने कृष्ण की आराधना प्रारम्भ कर दी और पंडित से कहा कोई और भी मार्ग दिखा सकते हो तो दिखाओ।

पंडित ने कहा तुम एक पुरूष और एक स्त्री की सोने की मूर्ति बनवाओ। मैं 18 दिन तक यज्ञ करूँगा फिर तुम्हारे सारे पाप उन मूर्तियों में भर दूँगा। फिर किसी ब्राह्मण को वो मूर्ति दान करनी होंगी। राजा ने हाँ कर दी तो पंडित ने यज्ञ प्रारम्भ कर दिया। 18 दिन में यज्ञ समाप्त हुआ। अंत में पूर्ण आहुति के बाद पंडित ने जल लिया और राजा से स्पर्श किया फिर सोने की मूर्तियों को स्पर्श किया। मूर्तियों को दान में लेने कोई ब्राह्मण नहीं आया। सभी उठ कर चले गये। पंडित ने कहा दो-चार दिन में शायद कोई लेने आ जाये। लेकिन पाप की काली मूर्ति लेने कोई ब्राह्मण नहीं आया। राजा ने कहा जो इन मूर्तियों को लेगा उसे मैं अपना आधा राज्य दे दूँगा लेकिन फिर भी कोई नहीं आया।

तीन चार दिन बाद एक ब्राह्मण पास के राज्य से आया और बोला तुम्हारी काली प्रतिमाओं का दान में ग्रहण करूंगा। मुझे तुम्हारा आधा राज्य भी नहीं चाहिये। मैं तो केवल आपकी मदद करना चाहता हूँ।

राजा ने जैसे ही वह मूर्तियाँ उस ब्राह्मण को दी, ब्राह्मण के स्पर्श करते ही सोने की मूर्तियां जीवित हो गई। दोनों बहुत ही कुरूप प्रतीत हो रही थी। दोनों के शरीर पर घाव हो रहे थे। ब्राह्मण भाग रहा था, मूर्तियां उसके पीछे भाग रही थी, राजा भी घोड़े पर सवार होकर पीछे भागने लगा। ब्राह्मण एक सरोवर के पानी में घुस गया और कुछ उच्चारण करने लगा। उस मंत्र से विष्णु दूत प्रगट हो गये और धीरे-धीरे इतने ज्यादा हो गये कि पूरे सरोवर में फैल गये। उनके हाथों में शंख, चक्र, गदा एवं पदम थे। वे दूत उस सरोवर की सुरक्षा करने लगे और जैसे ही व पाप की प्रतिमाऐं वहाँ पहुंची, दूतों ने उन पर दृष्टि डाली जिससे दोनों प्रतिमाऐं भस्म हो गई। विष्णु दूत वापिस लौट गये, ब्राह्मण सरोवर से बाहर निकल आया। राजा ने यह सब देखा था, वह ब्राह्मण के चरणों में गिर पड़ा।

राजा ने उस ब्राह्मण से कहा, यह गुप्त मंत्र मुझे बताइये मैं किसी से नहीं कहूँगा। ब्राह्मण बोला मैं कोई मंत्र नहीं जानता। राजा ने कहा फिर ये विष्णु दूत कैसे प्रगट हुए ? ब्राह्मण ने कहा जब मैं गुरूकुल में शिक्षा ग्रहण करने गया था तब मैं बिल्कुल मूर्ख था। वहां से मुझे निकाल दिया गया, मैं इधर उधर भटकता रहा। एक दिन मुझे एक पेड़ के नीचे एक कृष्ण भक्त दिखाई दिये, उन्होनें मुझसे कहा तुम अपना जीवन क्यो व्यर्थ कर रहे हो ? तुम भगवदगीता क्यों नहीं याद कर लेते। तो मैंने कहा मुझमें इतनी बुद्धि नहीं कि मैं गीता याद कर सकूँ। तब भक्त ने कहा कि आप श्लोक ही याद करलो, तो ब्राह्मण ने कहा मैं आधा श्लोक भी याद नहीं कर सकता, तो भक्त ने कहा कि तुम जितना भी याद करो मैं उसी में प्रसन्न हो जाऊँगा। भक्त ने उसे जप करना सिखा दिया।

ब्राह्मण सारा समय जप करता रहता। एक दिन उस आधे श लोक को करते करते मैनें देखा कि मेरे सामने एक चतुर्भुज व्यक्ति खड़े हैं। मैने सोचा वह विष्णु हैं, तो उन्होंने कहा मैं विष्णु दुत हूँ। तो मैंने कहा आप क्यों प्रगट हुए हैं। तो उन्होंने बताया मैं तुम्हारे आधे श्लोक के जप से प्रगट हुआ हूँ। तो मैंने उस दूत से पूछा, मुझे तुम्हें प्रगट करने की सिद्धि प्राप्त हो गयी अब मुझे क्या करना चाहिये। तब उन्होंने कहा लोगों के कष्ट मिटाने और कृष्ण भक्त बनाने का काम करो। तबसे मैं लोगों के कष्ट मिटाता हूँ

और भगवद गीता का प्रचार भी करता हूँ। तब राजा ने कहा मुझे भी यह मंत्र सिखा सकते हो तो उसने राजा का मंत्र सिखा दिय- तो सुनिये वह मंत्र-

''मन्मना भव् मद् भक्तों मद्याजी माँ नमस्कुरू''

तब राजा ने ब्राह्मण से पूछा कि आपको पूरा मंत्र नहीं आता क्या ? ब्राह्मण ने कहा मुझे नहीं आता। राजा ने सोचा आधे श्लोक का इतना प्रभाव है, तो पूरी गीता से कितना प्रभाव होगा। उन्होंने अपने बेटे को राज्य देकर, राज्य का त्याग कर दिया और स्वयं भगवद् गीता का अध्ययन करने में लग गये। अंत समय में कृष्ण धाम में पहुँचे। भगवद गीता का यह प्रभाव होता है।

समस्त गीता के श्लोक बहुत ही प्रभावशाली हैं। जो भी उनके मरम को जान लेता है, व भगवान की भक्ति करता है। उसकी शक्ति व प्रभाव बढ़ जाता है।

****

दूसरों की खुशी का कारण बने

- पी.सी. गुप्ता



कभी फुर्सत में सोचों की एक वो लौग है जो आपको देख कर खुश होते हैं और दूसरे वो लौग है जिनको आप देखकर खुश होते हैं। जब हम काम-काज करके अपने घर जाते हैं तो बच्चों, बीवी और घर के पालतू पशु तक हमें देखकर निस्वार्थ खुश होते हैं। उनकी यह खुशी हमें भी खुश होने पर मजबूर कर देती है।

बाहर की दुनिया में जो लौग हमें देखकर खुश होते हैं या जिन्हं देखकर हम खुश होते हैं तब उनकी संख्या तय करेगी कि आप कितने खुश नसीब हैं,

जब आप अपने व्यवसाय की जगह में हो तो सर्वश्रेष्ठ परिणाम लेना चाहते हैं। अपनी लिस्ट में कुछ नाम बढ़ाते रहें जो आपको देखकर खुशी महसूस करें। आप को दूसरों की खुशी का कारण बनने के लिये अपने भीतर बहुत सफाई करनी पड़ेगी। घर आये तो जीवन साथी को देखकर प्रसन्न रहने का प्रयास करें। स्वयं को इस लाईक बनाये कि आपको देखकर जीवन साथी प्रसन्न हो।

देखा यह जाता है दो चार घंटे बाद या दिनभर के गैप के बाद जब एक-दूसरे से मिलते हैं तो अजनबी की तरह मिलते हैं। होना यह चाहिये कि दोनों एक दूसरे के लिये खुशी का कारण बनें - लगे कि कोई है जिसके लिए हम खुश होते हैं या जो हमें चाहता है। और खुश रहता है।

****

यदादित्यगतं तेजो जगद भासयतेऽखिलम्।
यच्चन्द्रमसि मच्चाग्नौ तत् तेजो विद्धि मामकम्।। - गीता 15/12

भावार्थ- सूर्य चन्द्र और अग्नि में जो तेज है वह उसी परमात्मा का है।
जो सभी में उसके दर्शन करता है उसकी आत्मा तेजवान हो जाती है।

सेवा में श्याम सुन्दर दर्शन

– मदन रवि



हम अपने जीवन में सेवा भावना को उतार ले तो हम प्राणी जीवन में ईश्वर को प्राप्त करने और उससे मिलने में, अपने जीवन को सार्थक कर सकते है। इसके लिए एक कहानी याद आती है। दक्षिण भारत में एक अदभूत सेवा स्थान है। इस गांव का नाम रंजनम् था, यहां पर शन्तोवा नाम के धनी व्यापारी रहते थे, शुरू में उनका व्यापार काफी फैला हुआ था, और वह परिवार बहुत धनवान था। धनवान होते हुए वह व्यापारी विलासी प्रवृति का बन गया था, लेकिन अचानक उसके जीवन में ईश्वर के प्रति आस्था जगी और अपनी धन सम्पति को साधु महात्माओं में वितरित कर दी, और पर्वत पर चला गया। पत्नी भी साध्वी थी। उसे यह सब सहन नहीं हुआ। परिवार कटाक्ष करने लगे, कहने लगे तू भी उसी के पास चली जा, वह भी पति के बिना अपने आप को निरर्थक समझने लगी। पहले तो सोच रही थी, पति की तपस्या में मैं व्यवधान न करूं, लेकिन परिवार वालों के तानों के कारण वह भी पति के पास पहुँची। पति से अनुनय विनय की कि मुझे यही रहने दो अथवा आप वापस आ जाओ और उसने पति के चरण पकड़ लिये और शान्तोवा के चरण आंसुओं से भीगो दिये।।

उसने कहा जब आपने परिवार त्याग दिया तो मैं भी यहीं रहूँगी।

मैं विश्वास दिलाती हूं कि मैं आपके प्रत्येक कार्य में सहयोग दूंगी, मुझे अपने चरणों में रखें। पत्नी की प्रार्थना सुन शान्तोवा बोले यदि तुम मेरे संग रहना चाहती हो तो तुम्हें मेरी तरह जीवन जीना होगा और शरीर के सभी अहंकार उतारकर तपस्विनी की भांति जीना होगा। पत्नी बोली मैं तैयार हूँ। वह भी पति के साथ भगवान नाम का जप करने लगी।

पत्नी के त्याग और लोगों से रहित शान्तोवा को परम सुख और शान्ति मिल रही थी। एक दिन शान्तोवा की इच्छा हुई कि मुझे रोटी खाये बहुत दिन हो गये, तू गांव से सूखी रोटी मांग ला। सती चल पड़ी वह एक धनी परिवार की वधू थी भीख किस प्रकार माँगती, वह अनभिज्ञ थी, साड़ी फट चली थी, वह रोटी के लिए घूम रही थी। गलती से वह अपनी ननद के यहां चली गयी। उसे पूरी कथा सुनायी वह रोने लगी और सती ने कहा मेरे पति भूखे होंगे आप जल्दी से सूखी रोटी दे दो वह बाट देख रहे होंगे। ननद ने तुरन्त थाली में विभिन्न प्रकार के व्यंजन तैयार करके भाई के लिए दिये, लेकिन सती ने कहा वह सिर्फ सूखी रोटी ही खायेंगे, लेकिन ननद के आग्रह पर वह थाल लेकर शान्तोवा के पास पहुँची, लेकिन पति ने कहा वह सिर्फ रोटी ही खायेंगे, और उन्होंने वह भोजन स्वीकार नहीं किया। पत्नी का शरीर थर थर कांप रहा था। पांव भी कांटों से छलनी हो गये थे और हांफ रही थी, फिर भी खुशी से पति के लिए सूखी रोटी के लिए फिर निकल पड़ी फिर गांव में गयी और कई घरों से सूखी रोटी मांग कर शीघ्रता से लौट आयी।

थोड़ी दूरी पर माही नदी विकराल रूप लेकर वेग से थी, चारों और अन्धेरा छा गया था, पत्नी घबरा गयी और इस सोच में कि मेरे पति भूखें होंगे और भूख से वह प्रतिक्षा कर रहे होंगे। चारो तरफ अंधेरा छा गया। नदी पार करना किसी प्रकार संभव नहीं था। सती अधिरता से व्याकुल होकर पावन पाण्डुरंग से प्रार्थना करने लगी, हे प्रभु मेरे स्वामी भूखे है और मैं यहां पड़ी हूँ इस समय आपके अतिरिक्त मेरा सहायक कोई नहीं है, दया करिये, सती फूट-फूट कर रोने लगी।

श्री........ भगवान का आसन हिला वे केवट बन कर सती के सामने खड़े हो गये, कड़कती बिजली के प्रकाश में उन्होंने सती से कहा मैं केवट हूँ। सती ने कहां मेरा यहां कोई और सहायक नहीं है भैया मुझे किसी प्रकार उस पार पहुँचा दो मेरे पति भूखें है और इस प्रकार कह कर सती बेहोश हो गयी। भगवान ने उसे कन्धे पर उठा लिया और शान्तोवा की कुटिया के सामने छोड़कर अर्न्तध्यान हो गये। सती की चेतना जागृत हुई उसने देखा शरीर का समस्त वस्त्र रोटी के टुकडों पर लिपटा है। केवट कितना लज्जित हुआ होगा। सती ने रोटी के टुकडे शान्तोवा के सामने रख दिये, शान्तोवा ने कहां देवी तू धन्य है बडे भाग्य है मेरे जो मैने तुझे पत्नी के रूप में पाया है। सती के रूप में इतना तेज और अगाध सौंदर्य था कि जीवन में कभी नहीं देखा दोनो दम्पति उपवास करने लगे, विवश होकर श्यामसुन्दर को दर्शन देने पडे।

****

गर्मी लू लगने का मौसम

- सुगन चन्द जौनवाल



तपते मौसम में जब हमारे शरीर का तापमान सामान्य से ज्यादा हो जाये और निरन्तर बढ़ता ही रहे तो इसे ''लू'' लगना कहते हैं। ''लू'' की चपेट में आने के अन्य कारण भी है। जैसे शरीर में पानी की कमी होना, गर्मियों में भूखे रहकर बहुत देर तक काम करना। शरीर में एकाएक नमक की मात्रा घटना आदि। इसके लिए कुछ उपाय आगे दिये गये हैं।

जहाँ तक हो सके रोगी से कम से कम बातचीत करें तथा उसे ए.सी. या कूलर की हवा में आराम करने की सलाह दें।

''लू'' लगने पर प्यास अधिक लगती है ऐसे में शरीर का तापमान 101° फारनहाईट से 106° या 107° फारनहाईट तक चला जाता है। शरीर का तापमान बढ़ने के कारण घबराहट होती है। एक तरह से हाथ-पैर सुस्त हो जाते है। उठने-बैठने में परेशानी हो जाती है।

''लू'' लगने पर शरीर का उपचार कैसे करें?

(1) जिसे ''लू'' लग गई हो उसके बदन के कुछ कपड़े उतार दें। उसे खुले हवादार कमरे में लिटा दें। फिर बार-बार उसके शरीर पर स्पंज करें ताकि उसका बढ़ा हुआ तापमान कम हो जाये।

(2) रोगी को पीने के लिए ठंडे पदार्थ दें। जैसे - कैरी का पनाह, नींबू की शिकंजी, सन्तरे का रस, बर्फ में ठंडा किया नारियल पानी आदि। इन्हें पीने से रोगी के शरीर में ठंडक आ जायेगी।

(3) अगर रोगी को साँस लेने में दिक्कत आ रही हो तो उसे मुँह द्वारा कृत्रिम साँस दें।

(4) अगर रोगी पानी या ठंडे पदार्थ लेने में असमर्थ हो तो बेओ-इंजेक्शन द्वारा ग्लूकॉज चटायें।

(5) यदि रोगी के शरीर पर बार-बार पसीना आ रहा हो तो उसके माथे पर बर्फ की ठंडी पट्टियाँ रखें।

(6) रोगी को इलैक्ट्रॉल पाउडर भी दें। इससे शरीर में नमक व प्यास की पूर्ति होती है।

(7) ''लू'' लगने पर रोगी को भोजन के बजाय फलों का रस, ठंडी छाछ या दही की लस्सी दें।

(8) जब रोगी के शरीर का तापमान कम होने लगे या सामान्य हो जाये तो उसे नहला दें। नहलाने से उसके शरीर का बढ़ा तापमान कम हो जायेगा। उसके शरीर में धीरे-धीरे स्फूर्ति व ताजगी का एहसास होने लगेगा।

''लू'' से बचने के अन्य सुझाव

(1) तेज धूप में घर से आते ही ठंडे पानी का सेवन ना करें। दरअसल ऐसा करना सेहत के लिए हानिकारक होता है। धूप की तपिस से बाह्य और अन्दरूनी तापमानों में भारी अन्तर आ जाता है। अत: 10-15 मिनट तक रूक कर ही पानी का सेवन करें।

(2) अगर देर तक बाहर रहने की सम्भावना हो तो पानी की बोतल साथ रखे और थोड़ी-थोड़ी देर बार पानी पीते रहें। इससे शरीर में नमी बनी रहेगी।

(3) ''लू'' से बचने के लिए प्याज, कैरी, पौदीने, नींबू, सन्तरे आदि का सेवन करें।

(4) प्याज पकाकर उसमें जीरा, चीनी और घी मिलाकर खाने से ''लू'' के आक्रमण से बचा जा सकता है।

(5) धूप में निकलते समय छाता तानकर चलें ताकि तेज गर्मी से शरीर का बचाव हो सके।

(6) विटामिन ''सी'' या कोई भी खट्टा फल का सेवन करें। आपको गर्मियों में कभी भी ''लू'' नहीं लगेगी।

जीवन का उपसंहार

– तेजपाल भावलिया



विश्व में भारत ही ऐसा राष्ट्र है, जहाँ विभिन्न धर्मों के अनुयायी/मतों से संस्कारित मानव जीवन समाज रूप में निवास करते हैं। अपने-अपने धर्म पर आधारित क्रियाकलाप जारी रखे हुए हैं। रीति रिवाज, भाषा, कर्मकाण्ड, व्यवहार, वेशभूषा अपनायें हुए हैं।

मानव जीवन में मुख्यत: तीन घटनाऐं ही परिलक्षित होती है।

(1) जीवन (नए जीव का संसार में आना) हर्ष होता है।

(2) परण (नए जीव का नए जीव से मिलन) विवाह होता है।

(3) मरण (जीवन का अन्त-शव रूप को प्राप्त होना) विषाद

यह जीवन का संचालित होना ही ज्ञान होता है। इस प्रकार हम सभी जीवों (मनुष्य रूप में) पर लागू होता है।

जीवन से मृत्यु तक जीव (मनुष्य) स्वयं भोग व आनन्द का आवरण ओढ़े रहता है। स्वयं ही इस ओढ़े आवरण में, सात्विक, राजसिक, तामसिक व आध्यात्मिक परिभाषा को कुछ अंश तक भूलकर स्वयं निर्धारित आधार पर जीवन जीने की ओर अग्रसर रहता है। और क्यों न हो ? उसे प्रकृति ने अपने जीवन जीने हेतु ही धरा पर अवतरित किया है। अब क्यों कर, दूसरे के जीवन से प्रेरणा ले, वह स्वयं ही दूसरे को प्रेरित कर जीवन समर्पित करता है। प्रेरणा महज एक शब्द है। इसी एक शब्द में जीवन को नई दिशा देने का सामर्थ्य है। जो किसी भी जीवन को सार्थक कर नई दिशा प्रदान करती है। ज्यों-ज्यों जीवन रथ अपने पहियों को आधार मानकर बढ़ता है, रथ के पहिए भी अपनी गति को सार्थक कर, धुरी पर घिस-घिस कर अनंत: आधारहीन अवस्था में पहुँचने का संदेश देते हैं। यदि रथी, पहियों की स्थिति/परिस्थिति से समयानुसार ज्ञात अवस्था को समझ, अनुसरण कर ले, तो अपने नश्वर शरीर का ज्ञान सहज उपलब्धि में बदल सकता है।

यह जीवन भी ऐसी ही पहेली है। जीवन के सारथी हम हैं। रथ शरीर है, दौड़ते घोड़े मन का रूप है, सारथी ज्ञान है, लगाम लगाना बुद्धि है। जीवन सार भी यही है। हम अपने आप मन, बुद्धि, ज्ञान, धनबल, बाहुबल, सामाजिक बल पर इतराते रहें, तो क्षण भंगुर जीवन का रहस्य नहीं समझ सकते। समय की गति को भाँपकर स्वयं में स्वयं को संग्रहित करना ही होगा, अन्यथा आत्ममंथन से विरक्ति स्वयं के लिए घातक हो सकती है। स्वयं से स्वयं को माफी माँगना हितकर नहीं होगा।

क्योंकर, हम ऐसी राह चुनते हैं। जो आत्मा को स्वीकार नहीं। कोई साथी साथ नहीं देता स्वयं को ही पछतावा कर गुजर जाना पड़ता है। हमारा जीवन भी एक कहानी या उपन्यास की तरह है। जीवन के आरम्भ से बाल्यकाल, यौवन अवस्था, प्रौढ़काल, अंत में बुढ़ापा आ घेर लेता है। इस आधुनिक व्यवस्था ने चार आरम्भवस्था को चकनाचूर किया है। यथा -बाल्य अवस्था में - शिक्षा हेतु - गुरूकुल प्रणाली (ब्रह्मचर्य आश्रम), यौवन अवस्था में - गृहस्थाश्रम, प्रौढ़ावस्था में - वानप्रस्थ आश्रम, वृद्धावस्था में - सन्यास आश्रम

जीवन के उप संहार में -

जीवन में किये गये अपने कर्म ही हमारी समालोचना करते हैं। गुण, अवगुण, अच्छा, बुरा, जीवन के भोग ही अन्तिम समय हमारी छाया बन समाज के सामने जीवन वृतांत सुनाते हैं, हम कुछ कर नहीं सकते, और कह नहीं सकते।

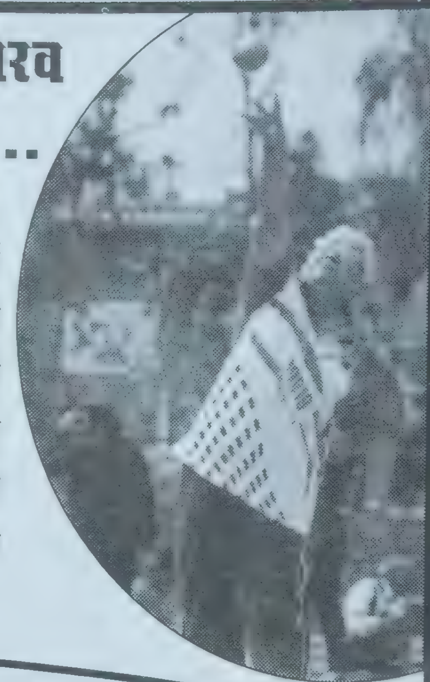
अनन्त ब्रह्माण्ड में समाने के बाद हमारी आत्मा द्वारा छोड़ गये शरीर (शव) के कर्मों की अवहेलना/समालोचना/व्याख्या समाज करता है।

अन्त में सही निष्कर्ष निकलता है, शरीर अपने कर्मों का नियोक्ता, भोक्ता है। संचित धर्म, सत्कर्म ही ज्ञात अवस्था में जीवित रहते हैं।

हो सकता है, आंसुओं में घोटाला। खुशी की बात न कीजिये।
उठे है दुआ के लिए हाथों में फफोले भी। दूर हो ऐसा दु:ख कुछ तो कीजिये।

* * * *

धोलाभाटा की आन, अजमेर की शान और राजस्थान का गौरव श्रीमती सुरेन्द्र सोहल व श्रीमती मंजु मिश्रा को हमारा सलाम...



धोलाभाटा ग्रुप 18 की दो महिला सदस्य - श्रीमती सुरेन्द्र सोहल व श्रीमती मंजू मिश्रा ने 1 से 5 अप्रेल 2018 तक आयोजित प्रथम राष्ट्रीय वेटरन एथलेटिक्स प्रतियोगिता में भाग लिया। 70 वर्ष से अधिक आयु में श्रीमती सोहल ने डिस्कस् थ्रो व जेवलिन थ्रो में प्रथम स्थान प्राप्त कर 2 गोल्ड मेडल व गोला फेंक में द्वितीय स्थान प्राप्त कर सिल्वर मेडल जीता। 55 वर्ष से अधिक आयु वर्ग में श्रीमती मंजू मिश्रा ने डिस्कस् थ्रो व जेवलिन थ्रो में प्रथम स्थान प्राप्त कर 2 गोल्ड मेडल व गोला फेंक में तृतीय स्थान प्राप्त कर कांस्य पदकर प्राप्त किया। यह केवल अजमेर ही नहीं पूरी राजस्थान का गौरव है। ये दोनों महिला खिलाड़ी सितम्बर माह में आयोजित होने वाली अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता में हमारे देश का प्रतिनिधित्व करेंगी। हम सब इनको बहुत सारी शुभकामनाएँ व "बेस्ट ऑफ लक" प्रेषित करते हैं।

72 वर्ष का होते हुए भी अहसास 27 वर्ष का होना - श्रीमती सुरेन्द्र कौर सोहल

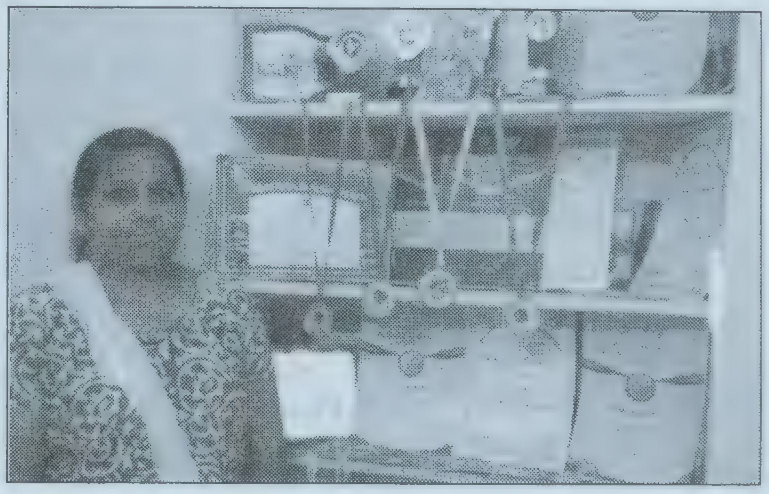


"जब मैं खेल के मैदान में उतरती हूँ तो मुझे अपनी उम्र 27 वर्ष की लगती है" ऐसा 24 स्वर्ण व 5 रजत पदक जीतने वाली श्रीमती सुरेन्द्र कौर सोहल का कहना है। परमात्मा ने इन्हें बुद्धि, दृष्टि, विवेक व स्वस्थ शरीर प्रदान किया है। दूसरों के दुख-दर्दो के निवारण में यथा संभव सहयोग देकर ही इन्हें प्रसन्नता प्राप्त होती है।

इनका जन्म 3 अगस्त 1946 में अजमेर जिले में हुआ। प्रांरभिक शिक्षा सावित्री कन्या विद्यालय से ली। वहीं से खेलों में भाग लेना शुरू किया। वॉलीबाल व खो-खो इनके प्रिय खेल रहे है। 1963 में स्कूल की तरफ से ही खो-खो की नेशनल प्रतियोगिता में भाग लेकर जीत हासिल की।

आपको 52 वर्ष की आयु में ही अपने पति की मृत्यु का दु:ख झेलना पड़ा परन्तु आपने हार नहीं मानी व सभी पारिवारिक जिम्मेदारियों को निडरता पूर्वक निभाते हुए आपने 2011 में पुन: अपना ध्यान खेलों की ओर लगाया। और कहते हैं न "जहाँ चाह, वहाँ राह"।

श्रीमती मंजू मिश्रा की अपनी कलम से ...



"सन् 1975 से मैं खेल प्रतियोगिताओं में भाग ले रही हूँ। मैं राज्य स्तर तथा इन्टरनेशनल लेवल तक खेल चुकी हूँ। मैनें अनेक प्रकार के गेम्स में भाग लिया है। जैसे खो-खो, कबड्डी, लोंग जम्प आदि। मगर मेरी पसंदीदा डिस्कस थ्रो, जैवेलिन व शॉटपुट आदि है। मैनें 1980 से 1983 तक वेस्टर्न रेल्वे की खेल प्रतियोगिताओं में भी भाग लिया जहाँ मैं प्रथम व द्वितीय स्थान पर रही। 1985 में मेरा विवाह हो गया। शादी के 30 साल बाद मैं खेलों से वापस जुड़ी हूँ। आज भी सन् 2017 व 2018 में मैं तीन नेशनल खेल चुकी हूँ जिसमें मैने दो स्वर्ण व एक रजत पदक प्राप्त किया है। आगे भी इसी तरह खेलती रहूँगी। मेरी उम्र 55 वर्ष है, आज भी जब मैं ग्राउण्ड में उतरती हूँ तो ऐसा लगता है मेरे पुराने दिन वापस आ गये है, वही जोश रहता है। सारा दुख-सुख भुलाकर अपनी नई जिन्दगी की ओर बढ़ते कदम एक नई मंजिल की और बस आगे और आगे बढ़ती ही जाऊं।"

हम सभी ईश्वर से आप दोनों के उज्जवल भविष्य, उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायु की मंगल कामना करते कि आप इसी तरह अपना हौंसला बनाये रखें, लक्ष्य हासिल करें। आज की युवा पीढ़ी के लिए भी आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करते हुए उन्हें भी खेल द्वारा जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान करें।

आप बीती

-नरेन्द्र कुमार मंगल



यह बात 1980-81 की है। तब मेरी पोस्टिंग केंद्र सरकार के रीजनल डायरेक्टरेट ऑफ अप्रेंटिसशिप ट्रेनिंग कानपुर में थी। मैं राजस्थान से हूँ, यह जान कर एक सहकर्मी मेरे निवास पर मुझसे मिलने आयें तथा बताया कि उनकी बेटी को किशनगढ़ के एक संस्थान में नियुक्ति मिली है। वे वहाँ कैसे जाएं इसके बारे में मुझसे मार्गदर्शन माँगा। चूंकि मैं अजमेर का रहने वाला हूँ, मैनें उन्हें आसानी से किशनगढ़ (अजमेर जिला) जाने के बारे में जानकारी दे दी। साथ ही मैंने उन्हें अपने रिश्तेदार के नाम से पत्र देने का वादा भी किया जो उनकी बेटी को वहाँ सैंटल करने में सहायता करते। अब मैंने उनसे बेटी का नियुक्ति पत्र दिखाने को कहा। वास्तव में उनकी बेटी को अजमेर जिले के किशनगढ़ में नहीं वरन् जयपुर जिले के किशनगढ़ - रेनवाल में नियुक्ति मिली थी। अत: मेरे द्वारा दी गई जानकारी उनके काम की नहीं रही। किशनगढ़ - रेनवाल के बारे में मैंने उन्हें अगले दिन पता करके आवश्यक जानकारी दी कि यह स्थान रींगस - फुलेरा रेल मार्ग पर पड़ता हैं।

कहानी अभी बाकी थी। कुछ समय के बाद मुझे एक कमेटी के सदस्य के रूप में किशनगढ़ - रेनवाल जाने को कहा गया। इसके लिए मुझे रेल से जयपुर आकर कमेटी के अन्य सदस्यों के साथ सड़क मार्ग से किशनगढ़ - रेनवाल जाना था। तदनुसार मैं जयपुर पहुँच गया किंतु कुछ गलतफहमी के कारण कमेटी के अन्य सदस्य मुझे लिए बिना निकल गए। अब मुझे वहां जाने का अकेले प्रयास करना था। पूछताछ से पता चला कि बस से जाना ठीक रहेगा। चूंकि मैं इस स्थान के नाम के बारे में परिचित व दूध जला था, अत: कार्य में त्रुटि न हो छाछ को भी फूंक फूंक कर पी रहा था। मैंने बस का टिकट लेते समय विशेष ध्यान रखा कि मैं किशनगढ़ का उल्लेख न करूँ। मैंने रेनवाल का टिकट लिया और बस में बैठ गया। लगभग दो घंटे की यात्रा के बाद रेनवाल पहुंचा। बस से उतर कर जब मैंने संस्था का पता पूछा तो क्या देखता हूँ कि मैं किशनगढ़ के स्थान पर रेनवाल - चित्तौड़ा पहुँच गया हूँ। जहां जाने के लिए मुझे वापस जयपुर जाना होगा। इस प्रकार मैं उस दिन कमेटी के अन्य सदस्यों के साथ अनुपस्थित रह कर कार्य नहीं कर पाया।

इस आप बीती घटना से सीख ली कि किसी स्थान के नाम में एक से अधिक शब्द हैं तो वे सभी शब्द मिलकर ही उस स्थान की पहचान रखते हैं। मन में इस आप बीती का गहरा असर हुआ। ऐसा औरों के साथ न हो इसलिए शेयर करना उचित समझ रहा हूँ।

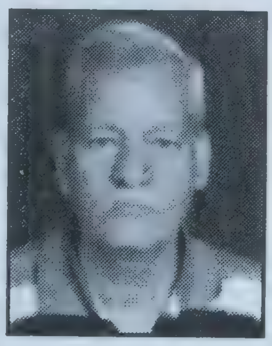
****

जब तक स्वास्थ्य ठीक है, वृद्धावस्था दूर है। इन्दियों में सार्मथ्य है, आयु समाप्त नहीं हुयी है। बुद्धिमान विवेकी आध्यत्मिक उन्नति का प्रयास करें। बीमारी की आग लगने पर कोई उद्योग काम नहीं आता। सब समाप्त हो जाता है।

- रामसुखदास जी

यादों का झरोखा

-एस.आर.खण्डेलवाल



एक वो दौर था जब पति भाभी को आवाज देकर अपने घर आने की खबर पत्नी को देता, पत्नी छनकती पायल, खनकतें कंगन से पति का स्वागत करती। बाऊजी की बातों का हाँ के अलावा कोई जवाब नहीं होता था। आज बेटा बाप से बड़ा हो गया, रिश्तों का केवल नाम रह गया। समय की नहीं, समझने की बात है। बीवी को तो दूर बड़ों के सामने हम अपने बच्चों तक को नहीं बतलाते थे। आज बड़े बैठे रहते है पर सिर्फ बीवी से ही बतियाते हैं।

दादू के कंधे मानों पोतो-पोतियों के लिए आरक्षित होते थे, काका जी ही भतीजों के दोस्त हुआ करते थें। आज वही दादू **OLD HOUSE** की पहचान है, काकाजी बस रिश्तेदारों की सूची का एक नाम है। बड़े पापा सभी का ख्याल रखते थे, अपने बेटे के लिए जो खिलौना खरीदा वैसा ही खिलौना परिवार के सभी बच्चों के लिए लाते थे। ताऊजी आज सिर्फ पहचान रह गए और छोटे के बच्चे पता नहीं कब जवान हो गये।

दादी जब बिलोना करती थी बेटों को भले ही छाछ दे पर मक्खन तो वो केवल पोतों में ही बाँटती थी। दादी के बिलोने ने पोतों की आस छोड़ दी क्योकि पोतों ने अपनी राह अलग मोड़ दी। राखी पर बुआजी आते थे, घर में नहीं मोहल्ले में फूफाजी को चाय -नाश्ते पर बुलाते थे। अब बुआजी बस दादा-दादी के बीमार होने पर आते है, किसी और को उनसे मतलब नही चुपचाप नयननीर बरसाकर वो भी चले जाते हैं।

शायद मेरे शब्दों का कोई महत्व ना हो पर कोशिश करना इस भीड़ में खुद को पहचान ने की कि हम जिंदा है या बस "जी रहे" हैं। ये समय-समय की नहीं समझ-समझ की बात है। अंग्रेजी ने अपना स्वांग रचादिया, शिक्षा के चक्कर में हमने संस्कारों को ही भुला दिया। बालक की प्रथम पाठशाला परिवार व पहला शिक्षक उसकी माँ होती थी, आज परिवार ही नहीं रहे तो पहली शिक्षक का क्या काम ?

जब बच्चा घर पर जिद करता तो मास्टरजी के नाम से उसको डराया जाता था, जिन गुरूओं की भूमि को विश्वगुरू कहा जाता था आज वहीं गुरू को सरेआम पिटा जाता है वही बच्चा बड़ा होकर राजनेता बन जाता । भला क्या करेगा वो नेता जिसको अच्छे-बुरे का ज्ञान नही, जिसने किसी का किया कभी सम्मान नहीं? ये समय-समय की नहीं समझ-समझ की बात हैं।

****

मार्मिक प्रसंग

- भीष्म कुमार वाधवा



राजा विश्वजीत अपनी प्रजा को अत्यधिक प्रेम करते थे उनके सुख सुविधाओं का ध्यान रखते थे। एक बार उनके नागरिक का सम्राट तोमराज ने अपमान कर दिया। विश्वजीत ने सेना लेकर आक्रमण कर दिया व नगर को चारों ओर से घेर लिया।

तोमराज के एक प्रसिद्ध संत "देव लाख" वहां से गुजर रहे थे सैनिकों ने उन्हें गुप्तचर समझ कर बन्दी बना दिया राजा। विश्वजीत ने उन बन्दी बने संत को प्राण दण्ड की सजा सुना दी। यह समाचार तोमराज तक पहुँचे राजा विश्वजीत से बोले महाराज ! सम्भव है युद्ध हम दोनों के मध्य वर्षो तक चले अतः युद्ध न हो हम आपके समक्ष आत्म समर्पण करते हैं। परन्तु एक शर्त है आप संत देव लाख को मुक्त कर दें। राजा विश्वजीत ने ऐसा करने का कारण पूछा? तो तोमराज बोले - राजन ! संत राष्ट्र की आत्मा होते हैं उनके द्वारा हम पुनः राष्ट्र खडा कर लेंगे परन्तु उनके बिना राष्ट्र का होना मूल्यविहीन होगा। उनकी यह बात सुन विश्वजीत के हृदय को छू लिया और उन्होनें संत को मुक्त कर तोमराज को अपने हृदय से लगा लिया।

सैनिकों ने संत से पूछा मनुष्य को बन्धन व मुक्ति कैसे मिलती है तब संत बोले मनुष्य का मन ही बन्धन और मोक्ष का कारण होता है। गुण में असक्त मन से बंधन और तप के लगने से मोक्ष प्राप्त होता है। मन के बंधने से ही संसार है और मन के मुक्त हो जाने से ही मोक्ष मिलता है।

"तुलसी यह तन खेत है, मन विच करम किसान।
पाप पुण्य दो बीज है, बोवे सो लेवे निदान।"

****

ईश्वर/खुदा का खत

– कैलाशचन्द जोशी



मेरे बच्चे,

आज सवेरे जब आप निन्द्रा से उठे, तब एक आाशा लिये मैं आपको देख रहा था कि आप जरूर मुझसे कुछ बाते करेंगे। चाहे केवल थोडे शब्दों में ही क्यों न हो, मगर आप मुझसे अवश्य ही कुछ बाते करेंगे। आप मेरा अभिप्राय जानना चाहेंगे या फिर कल आप के जीवन में जो जो भी शुभ घटनाएं घटी आप उसके लिय मुझे अवश्य धन्यवाद देंगे। किन्तु मैने देखा कि आप अत्यन्त ही व्यस्त थे। कार्य स्थल पर पहुँचने की जल्दी में आप अपने प्रातःकार्यों से निपटने में रत थे। मैंने सोचा कि जब आप अपने प्रातःकार्यों से निपट लेंगे तब आप मुझे याद करेंगे....... जब आप तैयार होकर घर से निकल पडे, तब मैं समझता था कुछ समय ठहरकर आप मुझसे नमस्कार या हैलो तो जरूर करोगे, किन्तु मैनें देखा कि आप तब भी बहुत व्यस्त थे और आप मुझसे बात किये बिना ही अपने कार्य–स्थल पर पहुँच गये। कार्य स्थल पर पहुंचने के बाद भी आपके पास पर्याप्त समय था मुझे याद करने के लिये, परन्तु आपने मुझे याद नहीं किया बल्कि आप उठे और अपना फोन उठाकर अपने किसी मित्र से गपशप करने लगे। मैनें सोचा शायद अपने मित्र से बात करने के बाद आपको मुझ "खुदा दोस्त" की याद अवश्य आयेगी और आप मुझसे जरूर कुछ बात करेंगे...... और मैं प्रतीक्षा करता रहा.......

आप की इन प्रवृतियों को दख कर मैंने अनुमान लगाया कि आप इतने व्यस्त थे जो आपके पास मुझसे बात तक करने का समय नहीं है और मैं धैर्यतापूर्वक आपको कार्य करते हुए देखता रहा तथा इन्तजार करता रहा कि कब आप समय निकाल कर मुझसे बात करेंगे। भोजन के पूर्व जब आपने आसपास नजर दौड़ाई तो मुझे लगा था कि शायद आप मुझसे बात करने के लिय व्याकुल है। परन्तु आप मुझे नहीं बल्कि अपने किसी अन्य मित्र को देख रहे थे जिस पर नजर पड़ते ही आपने उसे अपने पास बुलाया और साथ खाने के लिए कहा। आपने मुझे एक बार भी याद नहीं किया.... और मैं प्रतीक्षा करता रहा कि शायद आप मुझे याद करेंगे .....

जब कार्य स्थल से वापस घर पहुँचे तो मैनें यह आशा रखी थी कि अब तो आप अवश्य मुझसे बात करेंगे। परन्तु कुछेक कार्यपूर्ण हो जाने के बाद आपने टीवी चालू किया और उसके सामने बैठ गये। मैं यह समझ नही पा रहा हूँ कि आपको टीवी इतना पसन्द क्यूँ है ? प्रतिदिन आप टीवी देखने में अपना बहुत समय व्यय करते है। मैं सब्रपूर्वक आपका इन्तजार करता रहा और आाशा भरी निगाहों से आपको टीवी देखते हुए रात्रि भोजन लेते हुए, गपशप करते हुए निहारता रहा कि शायद आप मुझसे बात करेंगे परन्तु आपने मुझसे कोई बातचीत नहीं की। थके हारे जब आप अपने बिस्तर की ओर जा रहे थे तो मैनें सोचा कि सोने से पहले तो आप अवश्य ही मुझे याद करेंगे और मुझसे कुछ क्षण बात करेंगे। परन्तु अपने परिवारजन को शुभरात्रि कहते हुए आप बिस्तर पर लेट गये और कुछ ही क्षणों में आप निद्राधीन हो गये ..... और मैं प्रतीक्षा करता रहा।

शायद आपको यह अहसास ही नहीं होगा कि मैं सदा आपके आस पास ही रहता हूँ। मेरे पास आपके देखने के लिये बहुत कुछ है और वह सब कुछ मैं आपको देना चाहता हूँ। मैं आपको इतना अधिक प्यार करता हूँ कि मैं हर रोज आपकी आराधना, आपके दिल का प्यार, हृदय के उद्‌गारों को सुनने की प्रतीक्षा करता रहता हूँ। अच्छा नींद से आप सोकर उठ रहे है और मैं ...... फिर एक बार प्रतीक्षारत हूँ....कभी मेरा तो मेरा ख्याल आयेगा।

दिल में सभी के प्रति बेहद प्यार लेकर, इसी आशा में कि आप कभी न कभी व्यस्तता से मेरे लिये जरूर कुछ समय निकालेंगे.....

आपका

आसमानी मित्र

महात्मा कबीर

- नवरत्न चौधरी



सन्त कबीर साहब निर्गुण काव्य धारा के प्रर्वतक थे। लगभग पांच सौ वर्ष पूर्व उनका मुगल कालीन युग में जन्म हुआ। इतिहास में उनके जन्म आदि के विषय में स्पष्टता नहीं है। कबीर साहब सिकन्दर लोदी के समकालीन माने जाते हैं। कबीर काशी के जुलाहे थे। हिन्दू थे या मुसलमान कहना कठिन है। कबीर साहब के सतलोक कूच करने पर उनके पार्थिव देह को लेकर राजा वीरसिंह वाघेला और बिजली खां में लड़ाई हुई और जब शवपर पड़ी चादर हटाई तो वहां पर कुछ फूल ही पड़े मिले।

सिखों के धर्मग्रन्ध श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में कबीर वाणी के बहुत से अंश मिलते है उससे भी सिद्ध होता है कि कबीर साहब उच्च कोटि के सन्त महात्मा थे। कबीर दास जी के गुरू रामानन्द जी थे। अपने गुरू से वह आध्यात्म और मानवता के नजदीक हुए। कबीरदास सद्गृहस्थ थे। शील स्वभाव था। पाखण्ड और अंधविश्वास का खण्डन करते और हिन्दू मुसलमान दोनो की कुरीतियों पर जमकर प्रहार करते। सन्त और सदाचारी व्यक्ति किस प्रकार का आचरण करते है उनकी भावना केसी निस्प्रह होती है विचार आचार में में कैसी शुचिता और महानता होती है और जीते जी ईश्वर उन्हें कैसे मोक्ष स्थिति में ला देता है उसका एक सुन्दर दृष्टान्त प्रस्तुत है:

कहते है कबीर साहब के दो पत्नियां थी एक लोइ और दूसरी धनिया। लोइ साधारण स्त्री थी लेकिन धनिया सुन्दर थी। धनिया संभवत: वैश्या रही हो लेकिन कबीर साहब के सम्पर्क में आने से वैश्यावृति त्याग कर कबीर की पत्नी बन गयी। सुन्दर पत्नी धनिया पर मौहल्ले के सेठ की विशेष रूचि रहती थी वह आते जाते हंसी ठिठोली कर लिया करता और मन ही मन कामना किया करता कि धनिया मेरी हो जाये। कबीर दास जी सब देखा करते लेकिन वह तो अपने आध्यत्म में खोय रहते। एक दिन सांय को घनघोर वर्षा हो रही थी संत कबीर के घर कुछ साधु, जोगी आ गये कबीर साहब ने उन्हें आदर से बैठाया और भोजन की व्यवस्था करने भीतर पत्नियों के पास गये कि साधुओं के लिए कुछ बना दो। भगवान भक्तों की परीक्षा ऐसे ही लिया करते हैं। पत्नियों ने कहा घर में खाने को कुछ भी नहीं है और ऐसी वर्षा में कैसे व्यवस्था हो। कबीर दास जी का नियम था साधु भूखा कैसे सोयेगा वह भी उनके घर में। कुछ व्यवस्था तो करनी ही होगी। थोड़ा विचार किया और धनिया को आग्रह पूर्वक कहा कि सेठजी तुझ पर आसिक्त रखते हैं तू जाकर उन्हीं से कुछ ले आ ताकि साधु भूखा न रहे। धनिया ने सहमति दी श्रृंगार किया और अच्छे वस्त्र पहने। अब समस्या थी वर्षा की, ऐसी वर्षा में बिना भीगे कैसे जाया जाये। पल की भी देरी किए बिना कबीर साहब ने पत्नी को कन्धे पर बिठाया, कम्बल उसे ओढ़ा दिया और सेठ के मुख्यद्वार पर छोड कर एक तरफ खड़े हो गये। धनिया ने द्वार पर दस्तक दी इतनी रात गये वर्षा में कौन आया होगा। देखने के लिए सेठ जी लालटेन लिए द्वार पर आये, द्वार खोला तो देखा धनिया सजी-धजी कंचन कामिनी सी खड़ी है और नमस्कार कर रही है। सेठ ने धनिया को भीतर लाकर बैठाया और पूछा आज इतनी वर्षा में रात्रि में कैसे आना हुआ। धनिया ने पूरी बात संक्षेप में कही। फिर विनती की पहले खाने की सामग्री की व्यवस्था सेठ जी कर दे फिर वह रात भर सेठ जी के पास रहेगी। सेठ जी नौकर बुलाकर सब व्यवस्था करने का हुक्म दिया और धनिया के पास आकर बैठे। देखा धनिया सर से पाव तक बिल्कुल भी नहीं भीगी। उन्होंने पूछा धनिया, तुम इस वर्षा में बिना भीगे किस प्रकार मेरे यहाँ आयी हो। धनिया ने कहा मेरे पति कबीरदास जी कम्बल ओढ़ाकर कन्धे पर बैठा कर आपके द्वार तक छोड़ने आये और सामग्री का इन्तजार कर रहे है अभी द्वार के पास ही खड़े है। सेठ जी का सारा उत्साह और जोश ठंडा पड गया वह उठे और द्वार की तरफ दौड़े। जाकर कबीर साहब के चरणों पर लिपट कर क्षमा मांगने लगे। कबीर दास जी ने उन्हें उठाया और गले लगाया। सेठ जी धनिया से भी क्षमा प्रार्थी हुए और कबीर के घर अन्न आदि की पूर्ण व्यवस्था करने लगे।

''कबिरा खड़ा बाजार में लिए लकुटी हाथ।
जो घर जोर आपना, चलै हमारे साथ।''

आत्म विश्वास

- सुन्दर लखवानी



हम मान ले कि संसार कोई भी काम एक इंसान कर सकता है तो यकीन मानिये वो काम आप और हम भी कर सकते है।

स्मारिका का यह लेख हमारे लिये तो उपयोगी है ही लेकिन मैं सोचता हूँ कि विद्यार्थीयों को भी इस लेख को जरूर पढ़ाया जाये, यह उनके लिये प्रेरणा का काम करेगा। और जीवन में बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगा। आत्म विश्वास का सही मायने में अर्थ है अपने ऊपर विश्वास करना। बिना आत्म विश्वास के जीवन में सफलता नहीं मिल सकती। यह वो फेक्टर है जिससे असंभव को भी संभव किया जा सकता है। क्योंकि इसी से संकल्प शक्ति को ताकत मिलती है। संकल्प शक्ति से आत्मिक बल बढ़ता है जिससे कठिन कार्य आसानी से कर सकते है।

आत्म विश्वास असफलता /डिप्रेशन नामक बीमारी को मारने की दवाई है। आप आत्म विश्वास से गगन चूम सकते है। और बिना आत्म विश्वास के उपलब्धि को छोड़, हार सकते हैं। आप अपने मन के जिस हिस्से में नकारात्मक विचार पनपते है उन्हें सकारात्मक की तरफ मोड़े। इसके लिए रोज निरीक्षण करें कि मन में कैसे विचार चल रहे हैं? सकारात्मक विचार से पूरे शरीर में तरंग उठेगी, वह हर उस चीज से सम्पर्क करेगी जो सकारात्मक है, जिसे आप चाहते है। इस तरह सारी सकारात्मक चीजें आपके जीवन में आने लगती हैं। क्योंकि विचार ही विश्वास का आइना है। सब जानते हैं कि जिनका विश्वास पक्का, स्थायी व पूर्ण होता है उसके साथ सभी सुरक्षित महसूस करते है। ऐसे लोग आत्म विश्वास से भरे होते है। उनके साथ व्यवहार व व्यापार करना अच्छा लगता है। जीवन में नहीं शब्द से मत जुड़ो आपने घर से निकलते वक्त शंका न हो तो प्रकृति सोचेनुसार आपके रास्ते में व्यवस्था करगी। आप लेट नहीं पहुंचेंगे। यह सब आपके सोचने का कमाल है।

आत्म विश्वास की बुनियाद सकारात्मक सोच है। आशावादी आत्म विश्वास के शिखर तक पहुँच सकता है। नकारात्मकता जीवन में असफलता लाती है। एक तरीका बताता हूं, सबसे पहले मन को जहां तक हो सके वर्तमान में लेकर आइये। जो इंसान वर्तमान में रहना सीख लेता है, उसमें एकाग्रता जल्दी आ जाती है। आप अपने मन के खिड़की व दरवाजे नकारात्मक विचारों के लिए बंद कर लीजिये कहिये यहां पर आपका कोई काम नहीं । आप देखेंगे कि धीरे-धीरे निगेटिव विचार आना कम हो जायेंगे। आत्म विश्वास के रास्ते में रूकावट, डर, शंका और शिकायत है जिन्हें निकालना होगा। डर को विश्वास बढ़ाने की सीढ़ी बनायें। निडर होकर विश्वास से काम शुरू करेंगे तो सफलता अवश्य मिलेगी। पेड पर बैठा पंछी नहीं डरता कि डाली हिल रही है। उसे अपने पंखों पर भरोसा है। आत्म विश्वास की रोशनी में आये, डर के अंधेरे से निकलें। जब भी डर आने की कोशिश करे गेट मत खोलिये। वह भाग जायेगा।

आत्म विश्वास से धीरज बढ़ता है। दृष्टिकोण में बदलाव सोने की खान में खुदाई करते हुए मिट्टी से सना सोना निकलता है। हमारा ध्यान सोने की तरफ हो। तभी सकारात्मकता नजर आयेगी। प्रत्येक इंसान बंद घडी की तरह होता है। उसे आत्म विश्वास की चाबी से स्टार्ट करें। आत्म विश्वास से प्रत्येक क्षण जोड़े। सब कुछ सही होने लगेगा। आत्म विश्वास प्रबल होने से चेतना स्थायी हो जाती है।

****

सृष्टि में विनाश की आहट

- जयप्रकाश गुप्ता



सृष्टि को वर्चस्व में आए अनगिनत वर्ष हो गए हैं। ऋषि-मुनियों ने तपस्या के आधार पर युग वर्गीकृत किए जो सतयुग, द्वापर, त्रेता, कलियुग के नाम से प्रचलित हैं। ग्रन्थों की रचना की गई जिन्हें आज यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, आयुर्वेद से जानते है। वैसे चारों युग अनेक बार अवतरित होते रहे। सृष्टि अनादि काल से है। ऋषि-मुनि भी वैज्ञानिकों का स्वदेशी नाम था। ये मंत्र-तंत्र, यंत्रो द्वारा ऐसे आविष्कार कर लेते थे जो आश्चर्यजनक होते थे। मनुष्य की जैसे-जैसे प्रवृति बढ़ती गई उसकी शक्ति भी बढ़ती गई। उसके लिए आवश्यक हुआ ऐसे शस्त्रों का निर्माण करना जो कल्पना से परे हो।

सृष्टि में जीव उत्पत्ति हुई। जल,थल, वायु, आकाश में विचरण करने वाले अनेक जीव है। इनमें मानव प्राणी ऐसा उत्पन्न हुआ जिसका ज्ञान दिन प्रतिदिन बढ़ता ही गया। उसकी खोज की जिज्ञासा विज्ञान की ओर अग्रसर हुई। आकाश में भ्रमण करते हुए अनेक गृह खोज लिए। बाद में वैज्ञानिकों ने पृथ्वी से भी कई गुना बड़ा गृह खोज लिया। इनमें सबसे बड़ा ब्लैक होल गृह कहलाया। यह अन्य ग्रहों को अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। तथा अपने अन्दर समाहित कर लेता है। वैज्ञानिकों का कहना है कि यह गृह ऐसे ही आकर्षण को बढ़ाता रहा तो पृथ्वी को भी कुछ हजार वर्षों में समाहित कर लेगा।

उपरोक्त घटनाओं की जानकारी से मनुष्य में ईष्या की बढ़ोतरी होती गई। ऋषि-मुनियों ने मंत्र-तंत्र यंत्रो के प्रयोग से ऐसे उत्पादन तैयार कर लिए जो बिना शंका के थे जो अधिक शक्तिशाली होता वह कमजोर पर अधिकार करके शासन करने लगा। इसका प्रमाण अपने समय में हुए दो महायुद्धों की जानकारी से होता है। पहला युद्ध राम रावण युद्ध तथा दूसरा युद्ध कौरव-पांडव युद्ध।

तंत्र, मंत्र, यंत्र की शक्ति का प्रमाण महाभारत काल में हुए भीष्ण युद्ध से होता है। जहाँ बहुब्रीह जो भीम का पौत्र था ने युद्ध मैदान में आकर घोषणा कि वह हारने वाले की ओर से युद्ध करेगा तथा एक ही बाण को प्रयोग में लेगा। वास्तव में वह बाण मांत्रिक शक्ति से अभिमंत्रित था। कृष्ण जो महाभारत के युद्ध के संचालक थे, ने बहुब्रीह की मारक क्षमता को तपासा। उन्हें साम-दाम-दंड की नीति करके बाहुब्रीह का शीष दान में मांग लिया। तथा उसे युद्ध दर्शन की स्वीकृति दे दी। युद्ध शुरू होने से पूर्व बाहुब्रीह का शीष ऊँची पहाड़ी पर सुरक्षित रखवा दिया गया। युद्ध की समाप्ति पर बाहुब्रीह के शीष से प्रश्न किया गया कि तुमने क्या देखा? बाहुब्रीह के शीष का उत्तर था कि युद्ध मैदान में एक चक्र घूम रहा था। चारों ओर कृष्ण की माया थी। आज भी बाहुब्रीह के शीष की पूजा "खाटू वाले श्याम बाबा " के नाम पर की जाती है।

मानव रचित एटमिक शास्त्रों की क्षमता इस कलियुग में अत्यन्त बढ़ गई है। अनेक देश परीक्षण कर रहे हैं। दूसरी ओर राष्ट्र की शक्ति आंतकी गतिविधियों में लिप्त नरसंहार को निमन्त्रण दे रही है। इस से सृष्टि का विनाश असमय हो रहा है। इन्हें रोका जाना चाहिए।

कलियुग के शेष रहे 5 हजार वर्ष एटेमिक पावर का विकास कहीं विनाश का कारण न बने जिसे रोके जाने का प्रयत्न होना चाहिये। ।अन्य विषय में तो यहीं कहा जाएगा कि-

जैसी करनी करेगा बन्दे वैसा फल तू पायेगा।

* * * *

यूथ हॉस्टल आन्दोलन
संस्थापक के स्वप्न साकार होने का सफर

– मुकेश भार्गव



भूतपूर्व सदस्य राष्ट्रीय कार्यकारिणी यूथ हॉस्टल ऐसोसिएशन ऑफ इण्डिया नई दिल्ली।
भूतपूर्व चेयरमैन यूथ हॉस्टल ऐसोसिएशन ऑफ इण्डिया अजमेर यूनिट

मेरा नाम मुकेश भार्गव है मैं सन् 1969 में यूथ हॉस्टल ऐसोसिएशन ऑफ इण्डिया का सदस्य बना। इसके बाद बीकानेर यूनिट यूथ हॉस्टल ऐसोसिएशन ऑफ इण्डिया की स्थापना की। बीकानेर में राष्ट्रीय एकता बढ़ाने के कार्यक्रम आयोजित किए। मेरे द्वारा कियें कार्यों का विवरण इस प्रकार है –

1972 : यूथ हॉस्टल ऐसोसिएशन की बीकानेर यूनिट की स्थापना की। 1969 से 1977 तक यूथ हॉस्टल आन्दोलन का बीकानेर में रहते हुये सम्पूर्ण राजस्थान में प्रचार प्रसार किया।

1978 : यूथ हॉस्टल ऐसोसिएशन मेयो कॉलेज अजमेर यूनिट की स्थापना की तथा राजस्थान स्टेट ब्रांच का संयुक्त सचिव मनोनीत हुआ।

1979 : यूथ हॉस्टल ऐसोसिएशन की अलवर यूनिट की स्थापना की।

1980 : यूथ हॉस्टल ऐसोसिएशन के राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रमों में राजस्थान की टीम का नेतृत्व किया।

1981 : यूथ हॉस्टल ऐसोसिएशन भीलवाड़ा यूनिट की स्थापना की।

1982 : यूथ हॉस्टल ऐसोसिएशन किशनगढ़ यूनिट की स्थापना की।

1983 : भारतीय पर्वतारोहण फाउडेशन द्वारा आयोजित हिमालय पर्वतारोहण एवं पर्यटन सम्मेलन में भाग लेने के लिए रजिस्टर किया गया।

1984 : राजस्थान स्टेट कान्फ्रेस का बीकानेर में आयोजन किया।

1985 : यूथ हॉस्टल उदयपुर यूनिट की स्थापना की। राष्ट्रीय कौसिंल यूथ हॉस्टल ऐसोसिएशन ऑफ इण्डिया का सदस्य मनोनीत हुआ। अजमेर की समस्त शिक्षण संस्थाओं के आन्दोलन का शैक्षणिक सदस्य बनाया व ट्रेकिंग तथा राष्ट्रीय एकता के कार्यक्रम विशाल स्तर पर आयोजित किये।

1986 : यूथ हॉस्टल ऐसोसिएशन श्री गंगानगर यूनिट की स्थापना की।

1986 : अजमेर में यू.आई.टी. द्वारा यूथ हॉस्टल हेतु भूखण्ड आवंटन हेतु निर्णय हुए।

1987 : जैसलमेर में यूथ हॉस्टल हेतु भूखण्ड आवंटन तथा यूथ हॉस्टल ऐसोसिएशसन ऑफ इण्डिया ने अजमेर में यूथ हॉस्टल हेतु भूखण्ड प्राप्ति के लिये अधिकृत किया।

1988 : स्वतन्त्रता दिवस समारोह 15 अगस्त 1988 को जिला प्रशासन अजमेर द्वारा यूथ हॉस्टल ऐसोसिएशन के माध्यम से राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने पर सम्मानित किया गया। तथा महाराष्ट्र स्टेट ब्रांच यूथ हॉस्टल ऐसोसिएशन इंडिया द्वारा यूथ हॉस्टल आन्दोलन के माध्यम से भी सम्मानित किया गया। इसी वर्ष राजस्थान में यूथ हॉस्टल के निर्माण हेतु नि:शुल्क भूखण्ड आंवटन हेतु राज्य सरकार से आदेश निकलवाए। किन्तु रीजनल कॉलेज के पास हाई टैनशन विद्युत लाईन के कारण दूसरा भूखण्ड लेने के प्रयास किये। सातवीं पंचवर्षीय योजना में देशभर में बनने वाले 60 यूथ हॉस्टलों की स्वीकृति में केन्द्रीय पर्यटन मंत्री श्री खुर्शीद आलम खां से सम्पर्क कर राजस्थान में पांच हॉस्टल स्वीकृत कराये। उस समय देश में बनने वाले 16 यूथ हॉस्टलों में अजमेर व जोधपुर को शामिल करवाया गया। इसके साथ जैसलमेर

में नेशनल डेजर्ड टेकिंग के रूट का सर्वे/रेकी किया गया जहां राष्ट्रीय स्तर पर नेशनल डेजर्ट ट्रैकिंग प्रोग्राम आयोजित किये जा रहे है।

1989 : यूथ हॉस्टल ऐसोसिएशन ऑफ इण्डिया की राष्ट्रीय कार्यकारिणी का सदस्य मनोनीत किया गया।

1990 : यूथ हॉस्टल ऐसोसिएशन इण्डिया द्वारा 38 वीं अंतर्राष्ट्रीय यूथ हॉस्टल कॉन्फ्रेन्स जापान में भारतीय संस्था की और से ऑफिशियल डेलीगेट के रूप में भाग लेने जापान गया। तथा भारतीय संस्था का प्रतिनिधित्व किया।

1992 : 15 अगस्त 1992 को स्वतंत्रता दिवस समारोह में ब्यावर नगर परिषद द्वारा सम्मानित किया गया।

1993 : जयपुर रोड अजमेर में पर यूथ हॉस्टल के भूखण्ड का प्रोविजनल कब्जा प्राप्त किया तथा बांउड्रीवाल के निर्माण की राज्य सरकार से पर्याप्त राशि केन्द्रीय सार्वजनिक निर्माण विभाग में जमा करवाने का प्रयास किया।

1994 : अजमेर में बनने वाले यूथ हॉस्टल के निर्माण को एक व्यक्ति ने रोकने के प्रयास किये जिन्हें व्यक्तिगत समझाइश कर यूथ हॉस्टल के राष्ट्रीय महत्त्व से अवगत करवाया गया।

1995 : यूथ हॉस्टल निर्माण को रोकने वाली याचिका पर सिविल न्यायाधीश कनिष्ठ खण्ड अजमेर में यूथ हॉस्टल के पक्ष में राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार का पक्ष रखा।

1997 : यूथ हॉस्टल ऐसोसिएशन इण्डिया द्वारा पुनः राष्ट्रीय स्तर पर यूथ हॉस्टल विकास समिति का सदस्य मनोनीत किया गया। निर्माण रोकने वाली याचिका के विरूद्ध अजमेर में विभिन्न माननीय न्यायालयों/माननीय राजस्थान राजस्व बोर्ड में यूथ हॉस्टल के निर्माण के लिए राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार का पक्ष रखा। माननीय अपर सत्र न्यायाधीश 1 अजमेर ने यूथ हॉस्टल के निर्माण की अपील खारिज की। केन्द्रीय सार्वजनिक निर्माण विभाग अजमेर से यूथ हॉस्टल भूखण्ड पर चार दीवारी का टेण्डर प्रकाशित करवाया।

1998 : अजमेर यूथ हॉस्टल के निर्माण हेतु प्राप्त भूखण्ड के विवाद रहित (क्लीयर टाइटल) होने की रिपोर्ट भारत सरकार एवं राजस्थान सरकार को प्रस्तुत की गई। जिससे निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ।

2005 : राजस्थान की माननीय मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे तथा माननीय खेलमंत्री श्री युनुस खान द्वारा हॉस्टल आन्दोलन का दिये गए अभूतपूर्व संरक्षण के चलते उनके द्वारा यूथ हॉस्टल अजमेर के निर्माण में ली गई व्यक्तिगत रूचि के कारण वर्तमान यूथ हॉस्टल अजमेर सम्पूर्ण खुबसूरती के साथ बनकर तैयार हुआ।

2006 : अजमेर यूथ हॉस्टल के निर्माण से अन्तर्राष्ट्रीय यूथ हॉस्टल आन्दोलन के साथ-साथ विश्व यूथ हॉस्टल मानचित्र में अजमेर का नाम भी शामिल होने का गौरव प्राप्त हुआ। अजमेर राजस्थान का तीसरा शहर है इसमें उदयपुर का नाम जुडना शेष है।

2008 : जिला कलक्टर अजमेर ने अपने आदेश दिनांक 24.5.08 से यूथ हॉस्टल अजमेर की मैनेजमेन्ट कमेटी मे मनोनीत किया।

2013 : सभी आजीवन सदस्यों से आग्रह है कि वे व्यकितगत मुझसे सम्पर्क रखें ताकि भावी योजनाओं से अवगत कराया जा सकेगा।

किस महीने में पैदा होने वाले को कौन सी बीमारी होती है।

- महेशचन्द्र शर्मा



महीना	पुरुष	महिला
जनवरी	कब्ज, पेट और कमर दर्द	माइग्रेन, मेनोपांस, हार्ट अटैक
फरवरी	थायराइड, दिल और हड्डी की बीमारी	थायराइड, ब्लडक्लाट, हड्डी की बीमारी
मार्च	मोतियाबिंद, दिल की बीमारी, अस्थमा	गठिया रोग, कब्ज, मांसपेशियों में दर्द
अप्रैल	अस्थमा, ओस्टियोपोरोसिस, थायराइड	ओस्टियोपोरोसिस, ट्यूमर, फेफडें में सूजन
मई	डिप्रेशन, अस्थमा, डायबिटीज	एलर्जी, ओस्टियोपोरोसिस, कब्ज
जून	दिल-फेफडे की बीमारी, मोतियाबिंद	असंयमी, गठियारोग, मांसपेशियों में दर्द
जुलाई	गठिया रोग, अस्थमा, ट्यूमर	गर्दन दर्द, अस्थमा, ट्यूमर
अगस्त	अस्थमा, ओस्टियोपोरोसिस, थायराइड	ब्लडक्लाटस, गठिया, मांसपेशियों में दर्द
सितम्बर	अस्थमा, ओस्टियोपोरोसिस, थायराइड	ओस्टियोपोरोसिस, थायराइड, ट्यूमर
अक्टूबर	थायराइड, ओस्टियोपोरोसिस, माइग्रेन	कोलेस्ट्राल, ओस्टियोपोरोसिस, अस्थमा
नवम्बर	स्किन और दिल की बीमारी, थायराइड	कब्ज, हार्टअटैक, नसों में सूजन
दिसम्बर	मोतियाबिंद, डिप्रेशन, दिल की बीमारी	फेफडें में सूजन, अस्थमा, ब्लडक्लाटस।

****

वास्तविक भाग्यशाली

-परमानन्द यादव



हर व्यक्ति भाग्यशाली व सम्पूर्ण रूप से सौभाग्यशाली बनना चाहता है। परन्तु अधिकतर जीवन में निराशा के घेरे में फँसे अच्छे व खुशहाल भाग्य की कामना करते है। जिससे उनके भाग्य में बदहाली, पीड़ा, संकट, परेशानियां व विफलताएं व घोर निराशा आ जाती हैं।

प्रश्न उठता है कि वास्तविक भाग्यशाली कौन है ? जो कर्म की कलम से अपना भाग्य लिखता है व सतत् परिश्रम करता है। कर्मशील पुरूषार्थी ही अपनी मंजिल की ओर बढ़ सकता है। ऐसा व्यक्ति विघ्न बाधाओं को पार करते हुए गन्तव्य व निर्धारित मंजिल तक पहुँचकर ही दम लेता है। वही वास्तविक भाग्यशाली होने का हकदार है। अच्छा भाग्य पुरूषार्थ, दृढ़ निश्चय, व कठोर इरादे से हासिल होता है। भगवान भरोसे हाथ पर हाथ रखे बिना कर्म के अच्छा भाग्य नहीं मिलता । परिश्रम व सकारात्मक सोच से सौभाग्य जागता है और दुर्भाग्य भागता है। पुरूषार्थी बने अपना नसीब जगाये। ठालें बैठे कोरी कल्पना, विचारों से खुशहाली नहीं आ सकती ।

पुरूषार्थ, कठोर, परिश्रम व सतत् प्रयास से क्षमता व योग्यता के आधार पर नसीब जागता हैं। कर्म की गंगा में डुबकी लगाकर भाग्यशाली बनें। कर्मशील को उपलब्धियां व सफलता मिलती है इसके लिए सकारात्मक सोच, दृढ़ निश्चयी की आवश्यकता होती है।

****

हिंगलाज माता (शक्ति पीठ)

- गोपालदास नागरानी



धर्मशास्त्रों में 51 शक्तिपीठों का वर्णन है। जहां-जहां पर शिव पत्नी मां सती की देह के खंड (टुकड़े) गिरे थे वे ही शक्तिपीठ कहलाएँ। हिंगलाज में मां का कपाल गिरा था इसलिए 51 शक्तिपीठों में 'हिंगलाज' सर्वश्रेष्ट माना गया है। 'हिंगलाज देवी' का मंदिर 'अग्निदेवी' के नाम से स्थापित किया हुआ है। स्थानीयवासी 'हिंगलाज' को हिंगंदा भी कहते है। पश्चिम एशिया तथा पाकिस्तान के लोग 'नानीदेवी' के नाम से पुकारते है।

हिंगलाज माता के दर्षन हेतु विभाजन पूर्व देश के सभी ग्रन्थो तथा नेपाल, तिब्बत, श्रीलंका, बर्मा से भी बड़ी संख्या में तीर्थयात्री जाते थे। यह स्थान पहले दुर्गम महापीठ मरूस्थलीय होने से पैदल अथवा ऊँट पर सवारी कर जाते थे। अब पाकिरूतान के कराची से जाने का रास्ता साफ हो जाने से जहां पहले यात्रा में 10 दिन लग जाते थे वहां अब वाहनों द्वारा एक दिन में ही पहुंच जाते है। कराची से यह स्थान 225 किलोमीटर पड़ता है।

चैत्र मास में प्रतिवर्ष पाकिस्तान के कराची स्थित स्वामी नारायण मंदिर से तीर्थयात्री समूह बनाकर यात्रा को जाते है। यह स्थल 'खीरधार' पर्वतमाला श्रृंखला के मध्य में है। यात्री कराची के लागबांध अखाड़े से जाते है।

यात्रा का पहला पड़ाव 'बटुक भैरव' है। जिसे गोरख इमली भी कहते हैं। दूसरा पकोड़ा वाला, तीसरा राज चौकी चौका आमवाड़ी (आंबाबाड़ी) तथा पांचवां शोणा वेणी या सोन मियाणी भी कहते है। यह एक प्रसिद्ध बंदरगाह भी है। यहां भी एक हिंगलाज माता का मंदिर है। जो यात्री किसी कारणवश आगे की यात्रा करने में असमर्थ है। वे यहां से ही दर्शन कर लौट जाते है। अगला पड़ाव कोमला बाड़ी है। फिर मंगला वाला तथा केदावाला। दसवां स्थान महत्त्वपूर्ण चंद्रकूप पड़ाव है। यहां पहाड़ पर एक ज्वालामुखी है। इसमें निरंतर लावा उबलता रहता है। यहां यात्री अपनी श्रद्धा से नारियल, तांबे व चांदी के सिक्केभेंट करते है। तथा ऐसी मान्यता है कि यात्रा का पुण्य लाभ प्राप्त करना हो तो यात्री को अपने द्वारा किए गए पाप का उच्चारण कर प्रायश्चित करना पड़ता है। इसके बाद हिंगुला नदी के किनारे सींगलाव अघोर पड़ाव विश्राम स्थल है। यहां यात्री समूह अपने सह यात्रियों से धार्मिक भाई-बहन का रिश्ता निभाने की रस्म पूरी करते है। तथा जीवन भर उसको निभाने का संकल्प लेते है।

आगे आसापुरा माता का स्थान है। फिर श्रद्धा के चरमोंत्कर्थ तक पहुंचाने वाला हिंगलाज माता का पवित्र स्थल आता है। यह एक पहाड़ीनुमा है। यहां एक निर्मल झरना हर समय बहता रहता है। यहां एक पवित्र जलकुंड है। यात्री इस पवित्र कुंड में स्नान कर गुफा में 'हिंगलाज माता' के दर्शन कर घुटनों के बल झुक कर परिक्रमा पूरी करते है। मंदिर के पास एक अलीलकुंड नामक स्थान है। आगे सूर्य व चंद्रमा की निशानी है। मान्यता है कि भगवान रामचंद्र ने निशानी स्वरू प यह रखी थी।

हिंगलाज यात्रा कर आने वालों को 'हिंगलाजी' कहा जाता है। धार्मिक मान्यतानुसार यह यात्रा करने वालों को जीवनकाल का पुण्य प्राप्त होता है।

हिंगलाज तीर्थ के निकट अन्य तीर्थ स्थल - आशापुरा, मंगोल देवी, तलोह कुंड, चौरासी का पहाड, गुरू नानक देव महाराज का स्थान, गुरू गोरखानाथ का घूणा, झूली जल व अलील कुंड है। हिंगलाज का भैरव-भीम-लोचन है।

HOW TO LEAD A HAPPY LIFE BY AGEING PEPOLE

- J.L. BHATI



- In 21st century population of older people is increasing faster than any other age group. In our country, during last decade population growth rate has gone down but the population of senior citizens has gone up by 2.8% because of rise in average life expectancy. With the present trend we may surpass and may touch 20% by 2050, 90% of Indian elderly are suffering from hypertension, diabetes, arthritis, cardiac problems and dementia. If India is not to be a nation of cripple, the society and the govt. will have to take care of them.
- For happier, or say healthier ageing, Govt. support, law and acts though are a necessity, but it is the second part of the story. The first part rests with older persons themselves. Every person right from the age of 50 years needs to prepare for the old age Govt. alone cannot do it. Senior citizen federation can be a powerful tool and should come forward to train them to save for the rainy days, to improve lifestyle and eating habits to keep fit.
- Although, the senior citizens problems are extremely complex yet financial security, healthcare and abuse are the-three major concerns of elderly. Finance-and health have to go side by side. In today's scenario for continued financial security healthcare is very important. Health is wealth is more true in case of senior citizens as one hospitalization may push the entire family below the poverty line.
- The National Policy on older persons (NPOP) was announced almost 19 years ago has witnessed a very slow momentum so far as various welfare programmes for senior citizen are concerned. It may -be due to lack of specific budgetary provision or nonchalant attitude of Govt. agencies. Some officers take interests while others never - so also the ministers- this is how the democracy in the country works.
- To enable the elderly to live in enriching and productive lives, they need to remain connected to the world, staying among and in harmony with their beloved ones and other friends of all ages in their communities.
- The senior citizens should not seen as a burden on productive population. Rather growing old should be seen as an Opportunity to bring benefit to the life of millions of children, young and adults through their experience, knowledge and wisdom.
- Elder abuse .can also, be handled by strict enforcement of Citizen Charter and strong grievance redressal mechanism with strict timeline, punitive clause and monitoring at different-levels.
- Remember, we have lived our life the way we wanted. And now let others live as they want. Senior citizens should not interfere or render advise unless asked for. Never loose control over your assets during your lifetime. Do not yield to emotions. As far as may be, do not loose your usefulness-in the family, volunteer yourself for the job you can easily do. Every senior citizen owns a treasure of wisdom, ' knowledge and experience you have no right to keep it to yourself, share with the -society as much as you . can. At the end, I still remember of Shri Kofiannan former United Nations Secretary General statement which I quote " **In Africa it is said that when an old man dies an library vanishes. That proverb may Vary among continents, but its meaning is equally true in any culture. Older person are intermediaries between the past, the present and the "future. Their wisdom and experience form a Veritable lifeline in society".**

****

वेद वाङ्मय में अवतारवाद

- डॉ. कैलाशचन्द्र त्रिपाठी



वस्तुत: भारतीय संस्कृति के अनन्य निरपेक्ष, सर्वोत्कृष्ट प्रमाण और उसके मूल स्रोत वेद हैं तथा यह अकाट्य सत्य है। यदि वेद-वाङ्न्मंत्र का पूर्णत: गहराई से परिशीलन-मनन-चिन्तन किया जाय तो मस्तिष्क एवं हृदय पटल पर आदृत शंकाये स्वत: निर्मूल हो जावेगी। सत्य तो यह है कि वेद के कितने ही मंत्र पुकार पुकार कर न केवल अवतार बल्कि उसके विभिन्न स्वरूपों, विग्रहों तक का उल्लेख करते हैं। मेरा करबद्ध विनम्र निवेदन है उन वेद प्रामाण्य वादी नव्य आचार्यों से कि कृपा कर अवतार के अस्तित्व-सूचक वेद मन्त्र देखें- ऋग्वेद के छठे मण्डल के ४८ वे सूक्त का १७ वाँ मन्त्र

रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव तदस्य रूपं प्रतिचक्षणाय।

इन्द्रो मायामि: पुरू रूप ईयते युक्ता ह्यस्य हरय: शता दश।।

अर्थात भक्तों की प्रार्थना सुनकर संसार के कल्याणार्थ भगवान माया के संयोग से व्यापादनीय के अनुरूप अनेक विभिन्न रूप धारण करते हैं। ताकि भक्तलोग उनके चरण कमलों का प्रेम रस पीने के लिए मधुकर बन जाये। यजुर्वेद तो और भी स्पष्ट शब्दों में अवतारों की सत्ता बताता है-

''प्रजापतिश्वरति गर्भेऽन्तर्जायमानो बहुधा विजायते।

तस्य योनि परिपश्यन्ति धीरास्तास्मेन् ह तस्युर्भुवनानि विश्वा।। (यजु ०३१-१९)

अर्थात सर्वात्मा प्रजापति माया द्वारा कौशल्या, देवकी आदि माताओं के गर्भों में प्रविष्ट होते है। यद्यपि वे अजन्मा हैं फिर भी माया-सम्पर्क से राम कृष्णादि नाना रूपों में अवतीर्ण होते हैं। ब्रह्मज्ञानी योगिजन उनके वास्तविक सच्चिदानन्द धन, अद्वितीय रूप का साक्षात्कार करते हैं। सम्पूर्ण भूत-समूह उसकी कारणात्मा ब्रह्म में स्थित है। इन वचनों से सामान्यत: स्पष्ट ही अवतार वाद सिद्ध हो जाता है। इतना ही नहीं, वेद के मन्त्रों एवं ब्राह्मणादि ग्रंथों में मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण आदि अवतारों का भी प्रभूत वर्णन पाया जाता है। शत पथ ब्राह्मण (१-८-१-१) में मत्स्यावतार हीलें-''मनवे ह वै प्रात:.... मत्स्य: प्राणी आपेदे सहास्मै वाचमुवाच विभुहि मा पारिष्यामि त्वेति। कस्मान्मा पारमिष्यति-इति औघ इमा: सर्वा: प्रजा निर्वोढास्ततस्त्वा पारयितास्मि।'' पुराणों में वर्णित मत्स्यावतार की आगे की सारी कथा अर्थात् उस मत्स्य का बढना, समुद्र में पहुँचना, प्रलय होना आदि भी शतपथ की छह कण्डिका तक वर्णित है। ''मन्त्र ब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्'' (आपस्तम्व, परिभाषा १-२३) के अनुसार मन्त्र और ब्राह्मणभाग दोनों में ही वेदत्व माना गया है। तब इससे बढ़कर मत्स्यावतार की वैदिकता का क्या प्रमाण हो सकता है। अब वराहावतार सम्बन्धी वैदिक मन्त्र देखे- ''वराहेणपृथिवीसंविदाना।'' (अथर्व ०१२-१-४८) अर्थात् वराह के पृथ्वी का उद्धार किया। तैत्तिरीय में भी वराहावतार सम्बन्धी एक मन्त्र प्रासवय है- ''उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शत बाहुना।'' (१-१-३०) अर्थात् है पृथ्वी, शतभुजाधारी वराह भगवान ने तुम्हें ऊपर उठाया।

नृसिंहावतार का उल्लेख ऋग्वेद, यजुर्वेद और तैत्तिरीय में भी है। प्रथम तैत्तिरीय (१-१-३१) का गायत्री मंत्र दृष्टव्य है-

''वज्रनखाय विद्महे तीक्ष्णदंष्ट्राय धीमहि।

तन्नो नारसिंह: प्रचोदयात्।।

ऋग्वेद १-१५४-२, युजर्वेद ५-२०, अथर्ववेद ७-२६-२, तैत्तिरीय ब्राह्मण २-४-३-४ और निरूक्त १-२० में भी नृसिंहावतार सम्बन्धी ऊपर मंत्र एक ही रूप में पाया जाता है।

''प्रतद् विष्णु: स्तवते वीर्येण, मृगो न भीम: कुचरो गिरिष्ठा:।

यस्योसषु त्रिषु विक्रमेषु, अधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा।।''

अर्थात् जिसके विशाल चरणन्यास के स्थान तीनों लोकों में सभी प्राणी निवास करते हैं, जो उपरिभाग में गिरिस्थिति सिंह के सदृश भंयकर और अधोभाग में कुचर, पृथिवीचारी दर्शनीय मानवाकृति नृसिंहाकार है, उस अलौकिक पराक्रम स्वरूप विष्णु का सभी लोग स्तवन करते हैं।

भगवान के वामनावतार के विषय में निम्नलिखित वेद मन्त्र है जो ऋग्वेद १-२२-१७, यजुर्वेद ५-१५, सामवेद २२२, अथर्व ०७-२६-४, तैत्तिरीय संहिता १-२-१३-१, और निरूक्त १२-१८ में पाया जाता है।'' इदंविष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे

पदम्। समूढमस्य पांसुरे।'' शतपथ ब्राह्मण (१-२-५-५) भी वामन को प्रत्यक्ष विष्णु का अवतार कहता है- ''वामनो ह विष्णुरास।'' (निश्चय ही विष्णु भगवान् वामन बने)। वामनावतार का सूचक एक और मन्त्र क्रमशः ऋग्वेद १-१५४-१, यजुर्वेद ५-१८, अथर्वेद ७-२६-१ और तैत्तिरीय संहिता १-२-१३-२ में समान रूप से मिलता है

''विष्णोर्नु कं वीर्याणि प्र वोचं यः पार्थिवानि विभमें रंजासि।

यो अस्कभायदुतरं सघस्थं विचक्रमाणस्येधोरूगाय।।

ऐतरेय ब्राह्मण (७-५-३४) में परशुरामावतार का दिग्दर्शन है- ''प्रोवाच रामो भार्गवियो विश्वान्तराय।'' भृगुकुलनन्दन परशुराम ने विश्वान्तर को यह ज्ञान सुनाया। अब रामावतार की चार लीलाएँ एक ही मन्त्र में दृष्टव्य है-

''भद्रोभद्रया सचमान आगात् स्वसारं जारो अभ्येति पश्चात्।

सु प्रकेतैर्धुमिरग्निर्वितिष्ठन रूशदभिर्वर्णैरमि राममस्यात्।।

मंगलमय प्रभु राम मंगलमयी जानकी के साथ वन में गये। राम की अनुपस्थिति में जार अर्थात् धर्मविरोधी आचरण कर अपनी आयु को नष्ट करने वाला रावण (अपने पिता आदि ऋषियों के रक्त से उत्पन्न होने के कारण) अपनी बहन सीता को चुराने आया। तब तापस वेषधारी राम ने उसे ललकारा तो वह आग-बबूला हो विचित्र वर्णों के रथों एवं कुम्मकर्णादि हिंसक वीरों के साथ युद्धार्थ राम के सामने खड़ा हो गया। अथवा-''रावण-वध के पश्चात् सीता जी की अग्नि-परीक्षा के समय रक्तादि वर्णोपंत ज्वालाओं से युक्त अग्निदेव (स्वामी के समक्ष किसी सेवक की तरह) व्यवस्थित हो, हाथ जोड़ सीता जी को ले रामचन्द्र जी के सामने उपस्थित हो गये। वैदिक वाड्मय में भगवान राम की अयोध्या एवं सरयू की झांकी दृष्टव्य है -

''अष्टाचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या ।

तेषां हिरण्मयः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः।।''

(आट चक्र अर्थात् गोल बाजार, नौ दरवाजों वाली अयोध्या साक्षात् देवपुरी है, जहां स्वर्ण पूरित (खजाना) स्वर्गीय ज्योति से चमक रहा है।)

''सरयुः सिन्धुरूर्मिर्मिहो महीरवसा यन्तु वक्षर्णोः। ''

अर्थात् सरयु नदी अपनी महान् तरंगों से हमारे यज्ञ के रक्षार्थ यहाँ उपस्थित हो।

''चत्वारिंशद् दशरथस्य शोणाः।''

महाराज दशरथ के घोड़े थे चालीस उनका रंग था शोण (लाल)

''अर्वाची सुभगे भी सीते वन्दामहे त्वा।''

हे सुभगे सीते! हम आपको प्रणाम करते हैं। आप हमारे अनुकूल हों हम पर कृपा करें।

''अहं रूद्राय धनुरातनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवा उ।''

भगवान कहते है मैं ही ब्रह्मद्वेषी राक्षसों का विनाश करने के लिए रामावतार धारणकर शिव के धनुष पर प्रत्यन्चा चढ़ाता हूँ।

''इन्द्रः सीतां नि गृहानातु तां पूषान् यच्छतु।''

राम सीता को ग्रहण करें और महाराज जनक उन्हें प्रदान करें।

पुनश्च रावण की समीक्षा हेतु भी अथर्ववेद का यह मन्त्र प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत है-

''ब्रह्माणो जज्ञे प्रथमों दशशीर्षे दशास्यः।

स सामं प्रथमः पपौ स चकाररसं विषम्।।

अर्थात पहले दसमुख और दस सिरों वाला एक ब्राह्मण पैदा हुआ था। उसने प्रथम तो यज्ञानुष्ठान, तप, आदि रूप अमृतपान किया, फिर वर प्राप्त हो जाने के बाद उसे विष बना दिया, अपनी शक्ति का घोर दुरूपयोग किया। इसी प्रकार कृष्णावतार की विभिन्न जीवन लीलाओं के अनेक प्रकरण वेद वाङमय में पूर्ण रूपेण दृष्टव्य है। लेख विस्तार मय से लेखनी को विश्राम अभिप्रेत है। पुनः भगवान राम के अवतार से सम्बन्धित विभिन्न घटनाओं पात्रों एवं स्थानों के सूचक इन मन्त्रों के रहते कौन वेदप्रामाण्यवादी नव्य आचार्य इस अवतार के विषय में सन्देह कर सकता है।

किं अधिकम्। इति शुभम्।

* * * *

प्रतिष्ठा और चरित्र

- जयदेव साँखला



- प्रतिष्ठा वह है जो लोग हमारे बारे में सोचते है
- प्रतिष्ठा एक तस्वीर है।
- प्रतिष्ठा एक भ्रान्ति हो सकती है।
- प्रतिष्ठा को दूसरे लोग नुकसान पहुँचा सकते है।
- प्रतिष्ठा एक बोनस है।
- प्रतिष्ठा प्रशंसा को आमंत्रण देती है।
- प्रतिष्ठा एक बाहरी चीज है।
- प्रतिष्ठा में हेरफेर हो सकती है।
- प्रतिष्ठा एक मसौदा या खाका हो सकती है।
- प्रतिष्ठा एक कार्य से भी मिल सकती है।
- प्रतिष्ठा एक बरसाती पौधे की तरह हो सकती है जो मौसम रहने तक कायम रहते है।
- प्रतिष्ठा को बुद्धि या बनावटी सुन्दरता से बनाया जा सकता है।
- प्रतिष्ठा कांच के समान नाजुक होती है।
- प्रतिष्ठा आपको विरासत में मिल सकती है।
- प्रतिष्ठा वह है जिसमें लोग आसानी से फंस जाते है।
- प्रतिष्ठा एक हल्की चीज है।

- चरित्र वह है जो हम अपने बारे में सोचते है।
- चरित्र एक हकीकत/असलियत है।
- चरित्र एक सच्चाई है।
- चरित्र को केवल हम ही नुकसान पहुँचा सकते है।
- चरित्र एक उपलब्धि है।
- चरित्र विश्वास को बुलावा देता है।
- चरित्र एक अन्दरूनी चीज है।
- चरित्र मूल आदर्शों को प्रतिबिंबित करता है।
- चरित्र आपकी अपनी जमा पूँजी के समान है।
- चरित्र कई कार्यों से मिलकर बनता है।
- चरित्र एक बरगद के पेड़ के समान है जो धीरे-धीरे विकसित होता है।
- चरित्र मूल्यों और दूरदर्शिता से ही बनता है।
- चरित्र एक नींव की तरह मजबूत और पक्का होता है।
- चरित्र वह है जो आप विरासत में छोड़ जाते है।
- चरित्र वह है जिस पर आप दृढ़ या अटल रहते है।
- चरित्र एक ठोस वस्तु सार है।

****

चाह गयी चिंता मिटी, मनुवा बेपरवाह।
जिनको कछू न चाहिये, सो जग शहन्शाह।।

आयुर्वेदिक दोहे

– श्रीमती लोचना देवी गोयल



- रक्त चाप बढ़ने लगे, तब मत सोचे भाय, सौगंध राम की खायेके, तुरन्त छोड़ दो चाय।
- भोजन करके खाइए, सौंफ, गुड़, अजवायन, पत्थर भी पच जायेगा, जानै सकल जहान।
- पानी में गुड़ डालिए, बीत जाए जब रात, सुबह छानकर पीजिए, अच्छे हो हालात।
- सुबह खाइये कुंवर-सा, दुपहर यथा नरेश, भोजन लीजै रात में, जैसे रंक सुरेश।
- भोजन करके जोहिये, केवल घन्टा डेढ़, पानी इसके बाद पिये, ये औषधि का पेड़।
- अल्यूमिन के पात्र का, करता है जो उपयोग, आमंत्रित करता सदा, वह अड़तालिस रोग।
- धनिया की पत्ती मसल, बूंद नैन में डार, दुखती अंखियाँ ठीक हो, पल लागे दो चार।
- प्रात:काल पानी पिएँ, घूंट-घूंट कर आप, बस दो तीन गिलास है, हर औषधि का बाप।
- पहला स्थान सेंधानमक, पहाड़ी नमक सु जान, खेत नमक है सागरी, ये है जहर समान।
- देर रात तक जागना, रोगों का जंजाल, अपच, आंख के रोग संग तन भी रहे निढ़ाल।
- घूंट-घूंट पानी पियो, रह तनाव से दूर, एसिडिटी या मोटापा होवे चकनाचूर।
- फल या मिठा खाइके, तुरन्त न पीज नीर, ये सब छोटी आंत में, बनते विषधर तीर।
- भोजन करें धरती पर, अल्थी पल्थी मार, चबा-चबा कर खाइए, वैद्य न झांके द्वार।
- तुलसी का पत्ता करें, यदि हर दम उपयोग, मिट जाते हर उम्र में, तन में सारे रोग।
- भोजन करके रात में, घूमें कदम हजार, डॉक्टर, ओझा, वैद्य का लुट जाए व्यापार।
- प्रात:काल फल रस लो, दुपहर लस्सी-छाछ, सदा रात में दूध पी, सभी रोग का नाश।

****

बदलते परिवेश में वृद्धजनों का सहयोग

– रामकुमार महावर

पूर्व समय में समाज में वर्ण व्यवस्था कर्म के हिसाब से बनाई गई थी पर आज समय परिवर्तन के साथ सभी वर्ण सभी कार्य कर रहे हैं। हर वर्ण के लोग शासक भी बन रहे हैं व्यापारी, कृषि व सेवा में भी भागीदार हैं। संस्कृति को बनाए रखने के लिए आपसी प्रेम, सद्भाव, देशप्रेम, वन्यजीव, प्रकृति की रक्षा करना सच्चा धर्म होना चाहिए। आजकल वानप्रस्थ व सन्यास तो ग्रहस्थ में ही करने पड़ते हैं। धीरे-धीरे आसक्तियों का त्याग कर बिना फल की इच्छा के कृत्य (कर्म) करते रहना चाहिए। अगर आप समर्थ हैं तो जो भी गरीब लाचार एवं समाज के दिव्यांग सीनियर सिटीजन ध्यान में आए तो उसकी सेवा करना भगवान की सेवा करने में कमतर नहीं है। शिक्षित तो पेंशन से गुजारा कर लेते हैं परंतु वे वृद्ध जिनके बच्चों ने घर छोड़ने को मजबूर कर दिया वे कहाँ जाये ऐसे वृद्धजनों की मदद करें। अपनी आय का 10 प्रतिशत असहाय व निर्धन, नि:शक्त लोगों की सेवा में लगाएँ ऐसा करके आपको निश्चित ही आत्म संतोष मिलेगा और आप लोगों के दिल में घर बनाकर अमरत्व को प्राप्त होंगे।

****

बुद्धत्व और प्रेम

– ओ.पी. चौरसिया



प्रेम के इन्द्रधनुष को देखने पर, हम जितने नीचे के तल पर उतरते हैं, उतनी ही घृणा की मात्रा बढ़ती है, प्रेम कम हो जाता है। जितने ऊपर जायगें, घृणा की मात्रा कम हो जाऐगी। प्रेम का शुद्धीकरण होता जायेगा। यदि आप स्वयं को देह समझते हैं तो आपका सम्बन्ध दोस्ती का बनेगा। अगर स्वयं को हृदय मानते हैं, भावनाओं के तल पर जीते हैं तो आपका प्रेम मध्य में होगा। यदि आप स्वयं को चैतन्य, साक्षी आत्मा समझते हो, तब औरों से आपका प्रेम चेतना के तल पर होगा।

दूसरों में हम नहीं देखते हैं, जो स्वयं के भीतर देख पाते हैं। स्वयं देह केन्द्रित रहते हुए दूसरे के भीतर की चेतना को जान पाना संभव नहीं है। जो स्वयं के भीतर अपनी चेतना को महसूस करेगा, वही दूसरे के भीतर चेतना को महसूस कर पाऐगा, और जो अपने भीतर भगवत सत्ता को जान लेता है, वहीं सारे जगत के कण-कण में उस भगवान को पहचान पाता है, तब उसका प्रेम भक्ति बन जाता है और प्रेम में अंतत: वह अद्‌भुत घटना भी घटती है, जिसका नाम बुद्धत्व है। उतार दें, मान्यताओं का बोझ –

पत पर पड़ी हुई मान्यताओं का बोझ, हमारी आत्मोन्नति में बाधक है, इसलिये इस बोझ को उतार देना ही श्रेयस्कर है.....

एक प्रसिद्ध जैन-बौद्ध कहानी है। दो बौद्ध सन्यासी कहीं जा रहे थे। वे कीचड़ से भरे मार्ग पर आ गए। उन्हें सड़क के किनारे एक किशोरी दिखती है, जो सड़क पार करने से इसलिऐ कतरा रही थी कि उसके कपड़े कहीं गंदे न हो जाये। पुराना सन्यासी किशोरी तक जाता है और उसे गोद में उठाकर कीचड़ में डग भरता हुआ सड़क के दूसरी ओर ले जाकर छोड़ देता है। उसी रात भोजन करते समय नए सन्यासी ने पुराने सन्यासी से कहा, 'हम सन्यासी हैं और हमें स्त्रियों से बातें करना भी निषेध है, फिर भी आपने उस स्त्री को अपनी गोद में उठा लिया।' पुराने सन्यासी ने कहा, "मैनें तो उस लड़की को उसी समय सड़क के दूसरी और छोड़ दिया था, तुम तो उसे अभी भी उठाये घूम रहे हो।"

क्रमश: – ऐसा ही है। हम विचारों और मान्यताओं से जकड़े हुए हैं। वे हमारे मन-मस्तिष्क को दुविधाओं और चिन्ताओं से ग्रस्त रखती है। हम सर्वथा उनके खण्डन-मंडन के द्वन्द में ही उलझे रहते हैं। इनके कारण हमारी आत्मोन्नति की राह में नित नये अवरोध आते रहते हैं।

मेरे लिये आध्यात्मिकता किसी दर्शन या मत विशेष से जुडाव नहीं, बल्कि मानव चेतना के सबसे शुद्ध सद्‌गुणों की स्थापना है। क्षमा, करूणा, दया, जागृति बोध, प्रेम, बन्धुत्व, मैत्री, उपकार, अगर्व और ऐसे ही अनेक सद्‌गुण आध्यात्मिकता का आधार है। इनमें भी करूणा और सहनशीलता का महत्व औरों से बढ़कर है। इसमें चित्त में गहराई तक व्याप्त हो चुके अहंकार से उपजे क्रोध के समाप्त होने के उपरान्त ही ऐसे सर्वहितकारी भाव उपजते हैं, स्वयं को दूसरों की स्थिति में रखकर विचार करना भी करूणा का ही एक प्रमुख लक्षण है। जब तक हम स्वयं को उनके स्थान पर नहीं रखेंगे, हम उनके दुख और वेदना का अनुभव नहीं कर सकते। क्या स्वयं के प्रति करूणा भाव का जागना क्षमाशीलता नहीं है? इसमें किसी दूसरे व्यक्ति को उनके दुखों से मुक्त करने का नहीं, बल्कि स्वयं को उस अप्रसन्नता से उबारने का यत्न है, जो किसी घटना के प्रति खिन्नता होने या किसी व्यक्ति को क्षमा नहीं करने से पैदा हुई हो।

नये सन्यासी की ही भांति हम भी उन घटनाओं और विचारों का बोझ उठाये फिर रहे हैं, जो अयथार्थ है। वे मानवीय कमजोरियाँ है, जिनका हमें कभी पता ही नहीं चल पाता। वे पैरों से बंधे हुए अदृश्य पाषाण खण्ड हैं, जिनके साथ दुर्गम चढ़ाई करना असम्भव है। इस तथ्य का भाव बहुत कम ही होता है कि क्षमाशीलता का तात्पर्य केवल किसी अनुचित/अवैध कर्म को क्षमा कर देना ही नहीं है, बल्कि उसे कार्य, कारण एवं कर्म सिद्धांत के हवाले छोड़कर आगे बढ़ जाना है। इसका अर्थ यह भी नहीं कि अनुचित या अवांछित कर्म करने वाले को किसी प्रकार का प्रोत्साहन या बुराई को आश्रय मिले। जीवन का उद्देश्य बस इतना ही है कि हमें सतत् यह होश बना रहे कि सड़क के दूसरी ओर पहुँचने के बाद सिर पर बोझ नहीं रहें। यर्थाथ बुद्धत्व है इससे प्रेम, करूणा, विश्वबन्धुत्व अंकुरित होते हैं।

****

धर्म

- ओमप्रकाश कच्छावा



''क्या आप धार्मिक है?'' यदि हैं तो बहुत-बहुत बधाई। धर्म क्या है? जाने, समझे व व्यवहार में लावें। इन्द्रियों को संयम में लाने का नाम धर्म है। धर्म का मूल सत्य है और यही इसकी आभा है। अपने कर्त्तव्य, ज्ञान, विवेक, निष्ठा व ईमानदारी की पालना धर्म है। सत्य को सत्य और मिथ्या को मिथ्या कहा जावें - यही धर्म सम्मत है। धर्मात्मा का अर्थ जीवन को उच्च बनाकर 'आत्मा' रूपी दर्पण पर आये नाना प्रकार के मलों को नष्ट करना है। नेत्रों का धर्म है - दृष्टिपात करना। नेत्रों में सुदृष्टि धर्म है, और कुदृष्टि हैं, वह अधर्म है। वाणी का धर्म है उच्चारण करना, यदि मधुर, प्रिय, यथार्थ व हितकर कथा प्रभावी है तो धर्म है। यदि वाणी कटु, कर्कश, क्रोध, अहंकार व अभिमान प्रदर्शित करने वाली है तो - अधर्म है। धर्म के पालन में सत्य, तप, दान, मर्यादा और अहिंसा है। धर्म के पालन से जीवन-आनन्दमय व सुन्दर बनता है।

धर्म /प्राणी मात्र में ईश्वर के दर्शन कराता है। मन, वचन व कर्म से कोई पाप/हिंसा न हो। हिंसा वाणी से प्रारम्भ होती है। किसी भी प्राणी को कटु वाणी से अपमानित करना हिंसा औरअधर्म है।

धर्म व्यापकता है, अधर्म सर्कीणता है।

आत्म साक्षात्कार जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है - धार्मिक होने पर यह उपलब्धि हो सकती है। आत्मबल, बुद्धि व विवेक से पूर्ण जीवन को कुन्दन बनाने की कला सीखें।

आज मानवीय मूल्य परिधि हमारे अर्थ है। तो पूर्ण धार्मिक कैसे हो सकते हैं? इच्छाएँ, हिंसा और परिग्रह तीनों में परस्पर संबंध है। अनैतिक तरीके से अर्जित धन-सम्पदा क्षणिक सुख दे सकता है लेकिन यह आत्मा को कमजोर करता है। धर्म सम्मत नहीं है। 84 लाख योनियों में भटकने के बाद महान पुण्य के उदय से ही मनुष्य जन्म मिला है। इसे सार्थक बनायें।

परिश्रम करें, धन कमाएँ, यशस्वी बने, परन्तु साधनों की पवित्रता का ध्यान रखें। वृद्ध, निर्बल, गरीब दीन-दुखी की यथा संभव सहायता करें इससे नैतिकता व आत्मबल में वृद्धि होगी यही मनुष्य का असली धर्म है।

परमात्मा ने यह शरीर अपना व दूसरों का परोपकार करने के लिए दिया है।

वेद का उपदेश है कि - ''हे मानव! तुम एक दूसरे से प्रीति करो, परस्पर प्रेमपूर्वक व्यवहार करो। प्रकाश जीवन है तथा अन्धकार मृत्यु है। संसार में शुभकर्म करने के लिए भेजा है, दुष्ट कर्म करने के लिए नहीं।''

वृक्ष छाया देता है। सूर्य सभी को प्रकाश देता है। हमारे विचार, आचरण व व्यवहार से दूसरों को लाभ हो तभी जीवन का सार्थकता हैं। सभी से स्नेह है तो आप धार्मिक है।

हम आत्मा (ईश्वर का निवास स्थान) पर चिन्तन करें तथा अपने कर्त्तव्य का पालन करें। देवत्व प्राप्ति के लिए प्रयासरत रहें यही धर्म है। भोग विलास व ऐश्वर्य में फंसे रहना अधर्म है। हृदय उस समय पवित्र होता है जब मन स्थिर, रहता है। परमात्मा हमें धर्म पर डटे रहने की क्षमता सदैव देता है। हम देवत्व प्राप्ति की ओर अग्रसर हो-

ज्योति कलश है जिन्दगी, सब में सबका राम।
भीतर बैठा देवता, उसको करो प्रणाम।।

****

व्यक्तित्व की पहचान वस्त्रों से नहीं, उसके गुणों और सम्भाषण से होती है।
- राजाभोज

अमृत सूत्र

- श्रीमती पुष्पा कच्छावा



- ईश्वर सर्वव्यापी है, न्यायकारी है। उसके अनुशासन को जीवन में उतारें।
- प्रतिदिन कम से कम तीन बार तन्मयता व पूर्ण समर्पण के साथ ईश वन्दना/प्रार्थना करें।
- प्रभु प्रार्थना से –

  मन में घमण्ड नहीं आता है। कर्त्तव्य-कर्म के प्रति उत्साह बना रहता है। तन, मन, मस्तिष्क, विचारों व सोच में पवित्रता बनी रहती है।

  हजरत मुहम्मद "प्रार्थना को स्वर्ग और पृथ्वी के बीच एक सीढ़ी के समान कहा, जिसके माध्यम से हम स्वर्ग तक पहुँच जाते हैं।"

  महात्मा गाँधी इसे जीवन का ध्रुवतारा कहा है कि मैं एक बार भोजन करना भूल सकता हूँ, लेकिन प्रार्थना नहीं। ....

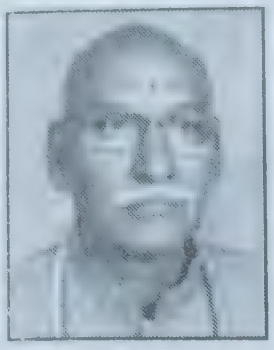
  प्रार्थना में हम भगवान से बात करते हैं और ध्यान में भगवान हमसे बात करते हैं। प्रार्थना से शारीरिक और मानसिक आरोग्य की रक्षा होती है। एक पिता अपने पुत्र को सब कुछ देता है यदि वह सुपुत्र है। परमात्मा के सुपुत्र बनने पर वह हमें सब कुछ देने का सामर्थ्य रखता है।
- स्वयं को समाज का एक अभिन्न अंग मानकर – सबके हित में अपना हित समझें। बुद्धि और विवेक को अपना सच्चा मित्र समझें। ये मित्र हमें आपदाओं से बचाते हैं। काम, क्रोध, लोभ-लालच, माया, अहंकार आदि कसायों (राक्षसों) से रक्षा करते हैं। जीव मात्र को सुख देना धर्म है, दु:ख देना व 'अधर्म' व पवित्र है।
- दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार करें, जैसा दूसरों से स्वयं के लिए चाहते हैं। काँच के बरतनों की तरह मानव के साथ बहुत सावधानी, धीरज, प्रेमपूर्वक मानवता से पेश आना चाहिए। यही सद्व्यवहार कहलाता है। हम चारों ओर प्रेम, मधुरता, सादगी एवं सज्जनता का वातावरण उत्पन्न करें। अनीति से प्राप्त धन व सफलता की अपेक्षा, नीति पर चलते हुए अभाव व असफलता को शिरोधार्य करें। साधनों की पवित्रता पर ध्यान रखें तभी सच्चा सुख मिल सकता है। अनीति से प्राप्त धन-सम्पदा, ऐश्वर्य आत्मा को कचौटते रहते हैं जिससे शारीरिक व मानसिक व्याधियाँ घेर लेती है।
- धर्म मानव कल्याण के लिए समाज में व्याप्त कुरीतियों, प्रचलन व बुराईयों को दूर करने के लिए स्थापित हैं। अत: सभी धर्मों का आदर-सम्मान करें। शुभ बोलें, शुभ सोचे, शुभ करें।

****

तुलसी सीताराम कहु, दृढ़ राखहु विस्वास।
कबहूँ बिगेर ना सुने, रामचन्द्र के दास।।

नवधा भक्ति

- पं. नारायण दास शर्मा (स्वामी जी)



जब शबरी हाथ जोड़कर प्रभु के सामने खड़ी हो गयी और कहने लगी मैं किस प्रकार आपकी स्तुति करूँ? मैं नीच जाति की और अत्यन्त मूढ़ बुद्धि हूँ, तब भी रघुनाथ जी ने कहा - हे भामिनी! मेरी बात सुन! मैं तो केवल एक भक्ति ही का सम्बन्ध मानता हूँ।

मैं तुमसे अब अपनी नवधा भक्ति कहता हूँ। तू सावधान होकर सुन और मन में धारण कर।

(1) पहली भक्ति है संतों का सत्संङ्ग करना।

(2) दूसरी भक्ति है मेरे कथा प्रसंङ्ग में प्रेम रखना।

(3) तीसरी भक्ति है अभिमान रहित होकर गुरू के चरण कमलों की सेवा करना।

(4) चौथी भक्ति यह है कि कपट छोड़कर मेरे गुण समूहों का गान करना।

(5) पांचवी भक्ति यह है कि मेरे (राम) मन्त्र का जाप करना और मुझ में दृढ़ विश्वास रखना।

(6) छठी भक्ति है इन्द्रियों का निग्रह, शील (अच्छा स्वभाव या चरित्र) बहुत कार्यों से वैराग्य और निरन्तर संत पुरूषों के धर्म (आचरण) में लगे रहना।

(7) सातवी भक्ति है जगत भर को समभाव से मुझ मे ओत-प्रोत (राममय) देखना और संतों को मुझ से भी अधिक करके मानना।

(8) आठवीं भक्ति है, जो कुछ मिल जाय उसी में सन्तोष करना और स्वप्न में पराये दोषों को न देखना।

(9) नवी भक्ति है सरलता और सबके साथ कपट रहित बर्ताव करना, हृदय में मेरा भरोसा रखना और किसी भी अवस्था में हर्ष व दैन्य (विषाद) का नहीं होना।

प्रभु कहते हैं कि इन नवों में से जिनके एक भी होती है, वह स्त्री-पुरूष, जड़-चेतन, कोई भी हो मुझे अत्यन्त प्रिय है।
(अरण्य काण्ड दोहा स. 35 से 36 का सार)

बंधनों से मुक्ति

- अनिल बेदरकर



आषाढ़ माह की गर्म दोपहर थी। भगवान बुद्ध अपने शिष्यों के साथ भ्रमण पर जा रहे थे। चारों तरफ बिखरी थी तो बस रेत ही रेत। रेत पर चलने के कारण स्थागत के पैरों के निशान बनते जो रहे थे। उसी रास्ते से एक ज्योतिषी भी अपने घर जा रहे थे। उन्होंने रेत पर बुद्ध के पैरों के निशान देखे और देखते ही रह गए उन्हें कुछ समझ नहीं आ रहा था। ज्योतिषी ने अपने जीवन में ऐसे पदचिन्ह पहले कभी नहीं देखे थे। ज्योतिषी ने सोचा शायद यह पदचिन्ह किसी चक्रवर्ती सम्राट के हो सकते हैं। लेकिन सामने जब उन्होंने बुद्ध को देखा तो उन्हें यकीन नहीं हुआ क्योंकि यह पदचिन्ह एक सन्यासी व्यक्ति के थे।

बुद्ध के चेहरे पर एक चमकती कांति थी। ज्योतिषी ने हाथ जोड़कर निवेदन किया कि आपके पैरों में जो पद्म (पदम्) है वह अति दुर्लभ है। हमारी ज्योतिष विद्या कहती है कि आपको चक्रवर्ती सम्राट होना चाहिए परन्तु आप तो सन्यासी है। भगवान बुद्ध हंसे और कहा आपका ज्योतिष काम करता था अब मैं सब बंधनों से मुक्त हो गया हूँ।

जब आप सारे बंधनों से मुक्त हो जाते हैं तो कोई ज्योतिष विद्या काम नहीं करती है। बस रहता है एक परम तत्व ज्ञान और मोक्ष का रास्ता। यह प्रसंग इंगित करता है कि सबसे बड़ा चक्रवर्ती वही है जो स्वेच्छा से त्याग कर सकता है। तुलसीदास जी कहते है कलियुग में एक राम नाम आधारा है।

स्वाध्याय साधना का अंग

– अमरसिंह मकवाना (गुरूजी)



स्वाध्याय में प्रमाद न करें। भावनाओ, विचारणाओं को प्रेरणा देने का मुख्य आधार स्वाध्याय ही है। शास्त्रकारों ने भोजन, स्नान एवं शयन की भाँति ही स्वाध्याय को भी नित्य कर्म माना है। आत्मशोधन और आत्मनिर्माण का सबसे प्रधान विधान स्वाध्याय ही माना गया है। स्वाध्याय युक्त साधना से ही परमात्मा का साक्षात्कार होता है। हममें से प्रत्येक को स्वाध्याय के लिये कुछ समय निश्चित रूप से निकालना चाहिए। स्वाध्याय वहीं कहा जाएगा, जो हमारी जीवन की समस्याओं पर आंतरिक उलझनों पर प्रकाश डालता है, और मानवता को उज्जवल करने वाली सत्प्रवृत्तियों को अपनाने की प्रेरणा देता है।

****

सच और झूठ

– किशनचन्द बुटानी



सच और झूठ दो भाई थे। सच साफ-सुथरे, सुन्दर व सलोने लगते थे। उससे उल्टे झूठ असुन्दर, मैला व अप्रिय लगता था। सच जहां जाते सम्मान पाते, स्वागत पाते और सब को खुश कर देते थे।

झूठ जहाँ जाते धिक्कारे जाते, नफरत से देखे जाते, सब उनसे मुंह मोड़ते, नज़र बचाते नज़र आते। एक बार दोनों तीर्थ यात्रा पर निकले वहां भी उन्हें वैसा ही व्यवहार मिला। झूठ बदले की भावना से भर गए उसने निश्चय किया कि बदला जरूर लूंगा।

घूमते-घूमते दोनों बद्रीनाथ पहुंचे। स्नान हेतु नदी पर पहुंचे। सच ईश्वर का ध्यान करते स्नान-ध्यान में लीन हो गए तो झूठ ने आव देखा न ताव और सच के लिए स्वच्छ, सुन्दर व पवित्र वस्त्र पहन कर वहां से नौ दो ग्यारह हो गए।

सच पानी से बाहर निकले तो देखा कपड़े हैं ही नहीं। मजबूरन उसे झूठ के मैले, असुन्दर व अपवित्र कपड़े पहनने पड़े। तब से दोनों बराबर घूम रहे हैं एक दूसरे की लुक्का छिपी की कोशिश में हर कोई अपना-अपना रूतबा दिखाने की कोशिश में है सत्य अपनी सत्यता की चिल्ला-चिल्ला कर दुहाई दे रहा है पर कोई उसकी सुनने को तैयार नहीं। उस दिन से झूठ की पूजा, स्वागत्, सम्मान हो रहा है।

सच बिचारा दर-दर मारा-मारा फिर रहा है। क्योंकि सच के कपड़े झूठ ने पहन रखे हैं और झूठ के कपड़े मजबूरन सत्य को पहनने पड़े हैं।

****

सम्बन्ध विच्छेद का भेद

मन से छोड़ देने पर पदार्थ सुख देते है। जोर जब्रदस्ती से नहीं।

दस रूपये चोरी हो जाय दु:ख होता है किन्तु वही इच्छा से दान दे दिया जाय तो सुख देता है।

राष्ट्रपति भवन में झाड़ू

- श्रीमती कमला बुटानी



अमेरिका में राष्ट्रपति के रूप में जब आइजन टॉवर को चुना गया तो टैलीफोन और तार से लोगों की बधाईयों का तांता लग गया। इतना ही नहीं राष्ट्रपति भवन में उपहारों का ढ़ेर लग गया।

आइजन टॉवर ने सब की सौगात सरकारी भंडार-घर में जमा करवा दी पर उनमें मिली झाड़ू अपने कार्यालय में रखवा दी।

जो भी कार्यालय में आता 'झाड़ू' देखता तो अपमानित भी होता पर यह पूछने की किसी की हिम्मत न होती कि पूछे कि यह झाड़ू यहाँ क्यों रखी गई है?

एक बार किसी अन्य देश के राष्ट्रपति अमेरिका के राष्ट्रपति के पास मेहमान स्वरूप आए। उनके साथ अन्य अमेरिकी सांसद भी कार्यालय में बैठे थे। विदेशी राष्ट्रपति और सांसद बार-बार उस झाड़ू को देख रहे थे।

उनकी मनोदशा को समझ आइजन टॉवर ने मुस्कुराते हुए कहा, 'आपके अन्दर यह सवाल बार-बार उठता होगा कि राष्ट्रपति भवन में शो-केस में झाड़ू की क्या तुक है? मैं आपको इसकी कथा सुनाता हूँ।

मैं जब राष्ट्रपति चुना गया तो लोगों ने कई तोहफे भेजे जिनमें एक यह झाड़ू भी थी। इसके साथ एक चिट्ठी भी थी जिसमें लिखा था 'आप चुनाव के दिनों में ढिंढोरा पीटते हैं कि मैं भ्रष्टाचार और गंदगी को साफ कर दूंगा। इसलिए मैं आप को एक झाड़ू भेज रहा हूँ ताकि आपको अपनी सफाई की यादाश्त सदा आती रहे। प्रजा को दिये वचन के पालन करने की याद भी बनी रहे। मुझे और सौगातों ने इतना प्रभावित नहीं किया जितना इस झाड़ू ने। झाड़ू भेजने वाले ने मुझे सचेत किया इसलिए मैनें इसे ऐसे स्थान पर रखा, जहां रोज मेरी नज़र इस पर पड़ती रहे। मैं सफाई का काम रोज करने की कोशिश करता हूँ कुछ सफाई हो भी रही है।

झाड़ू वाकई सफाई हेतु कारगर है घर, आस-पड़ोस, रोड़ तो हैं ही पर देश में, समाज में जो भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, कपट, चोरी का मकड़ जाल फैला है उसे झाड़ू ही साफ कर सकती है। यह सन्देश हर सफाई पंसद इन्सान के लिए हैं। प्रेम, सुख, शान्ति, अहिंसा और तरक्की सब दिखावा है। सच्ची-तरक्की मन की गन्दगी को दूर कर, दिये वचनों का पालन करना है। प्रतिदिन झाड़ू से घर की सफ़ाई होती है तो मन की सफाई क्यों नहीं संभव ? एक विचारणीय प्रश्न है। बिना इसके किसी तरह की तरक्की कैसे खुशहाली ला सकती है।

❋❋❋❋

जीवन का सार

- श्रीमती दीप्ति बसु



- धन से आज तक किसी को खुशी नहीं मिली और न ही मिलेगी।
- ज्ञान अर्जित करने में किये खर्च धन को कोई नहीं छीन सकता।
- मछली एवं अतिथि तीन दिनों के बाद दुर्गन्धजन्य और अप्रिय लगते हैं।
- हँसमुख चेहरा रोगी के लिये उतना लाभ-कर है, जितनी की बसंत ऋतु।
- चींटी से अच्छा उपदेशक कोई और नहीं, वह काम करते हुये सदैव खामोश रहती हैं।
- क्रोध से शुरू होने वाली हर बात लज्जा एवं अपमान पर समाप्त होती है।
- जीवन में दुखद बात यह है कि हम बड़े तो जल्दी हो जाते है लेकिन समझदार देर से होते है।

❋❋❋❋

महाभारत की कथा

- ओमप्रकाश भारद्वाज



कौरवों के बड़े भाई दुर्योधन हस्तिनापुर पर तथा पांडवों के बड़े भाई युधिष्ठर इन्द्रप्रस्थ में राज्य कर रहे थे। दुर्योधन ने अपने मामा शकुनी से मिलकर पाण्डवों के राज्य हड़पने हेतु एक योजना तैयार करी। जिसमें पाण्डवों को जुआ खेलने के लिए युधिष्ठर को हस्तिनापुर विदुर के द्वारा आमंत्रित किया गया। हारने के बाद पाण्ड़वों को 12 वर्ष का बनवास तथा एक वर्ष का अज्ञातवास में रहना पड़ा।

जब कुछ समय बाकी था तब पाँचों भाई निर्धन ब्राह्मण को सहायता करते हुए जंगल में दूर तक निकल गए और सुस्ताने हेतु एक पेड़ के नीचे बैठ गए। युधिष्ठर छोटे भाई नकुल से बोले "भैया प्यास लगी है, आसपास देखों पानी मिल जाए तो ले-आओ।" नकुल पात्र लेकर चल पड़ा। कुछ दूर नकुल को एक जलाशय मिला। उसने सोचा कि पहले मैं अपनी प्यास बुझा लूँ और फिर तरकस में पानी भरकर भाइयों के लिए ले जाँऊगा। जैसे ही नकुल ने दोनों हाथों की अँगुली में पानी लिया, एक आवाज आई - "माद्री के पुत्र दु:साहस न करों यह जलाशय मेरे अधीन है। पहले मेरे प्रश्नों के उत्तर दो फिर पानी पियो। नकुल को तेज प्यास लगी थी, उसने आवाज़ की परवाह न कर पानी पी लिया। पानी पीने के बाद नकुल को चक्कर आया और मूर्छित होकर गिर पड़ा।

जब देर तक नकुल न लौटा तो युधिष्ठर को चिंता हुई। सहदेव को- भेजा। जलाशय के नजदीक नकुल को मूर्छित अवस्था में पड़ा देखा। उसे भी प्यास लगी थी अत: पानी पीने को ज्यों ही अंजलि भरी उसे भी यक्ष चेतावनी सुनाई दी। उसने भी चेतावनी पर ध्यान न देकर पानी पी लिया। उसका भी वही हाल हुआ। अर्जुन और भीम भी एक-एक कर इसी प्रकार मूर्छित अवस्था को प्राप्त हो गए। उधर युधिष्ठर अकेले बैठे घबराने लगे और सोचने लगे कि "चारों भाइयों में कोई भी पानी लेकर नहीं लौटा, अखिर क्या हो गया? अब मैं ही चलकर देखता हूँ क्या बात है। युधिष्ठर उसी विषैले तालाब के पास पहुँचे जिसका जल पीकर उनके चारों भाई मृत पड़े थे। यह देख उनकी आँखों से आँसू बह चले, विलाप के पश्चात युधिष्ठर भी तालाब में पानी पीने उतरे, उतने में ही यक्ष वाणी सुनाई दी। युधिष्ठर ताड् गए। उन्होंने यक्ष की बात मान ली और उसके प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार दिये -

यक्ष: मनुष्य का साथ कौन देता है? युधिष्ठर : धैर्य ही मनुष्य का साथी होता है।

यक्ष: भूमि से भारी चीज क्या है? युधिष्ठर : संतान को कोख में धारण करने वाली माता।

यक्ष: आकाश से भी ऊँचा कौन है? युधिष्ठर : पिता।

यक्ष: हवा से भी तेज चलने वाला कौन है? युधिष्ठर : मन

यक्ष: घास से भी तुच्छ कौन-सी चीज़ होती है? युधिष्ठर : चिंता

यक्ष: विदेश जाने वाले का कौन साथी होता है? युधिष्ठर : विद्या

यक्ष: मरणासन्न वृद्ध का मित्र कौन होता है? युधिष्ठर : दान

यक्ष: बरतनों में सबसे बड़ा कौन है? युधिष्ठर : भूमि सबसे बड़ा बरतन है जिसमें सब कुछ समा सकता है।

यक्ष: किसके छूट जाने पर मनुष्य सर्वप्रिय बनता है? युधिष्ठर : अहॅभाव के छूट जाने पर।

यक्ष: किस चीज़ के खो जाने से दु:ख नहीं होता? युधिष्ठर : क्रोध के खो जाने से।

यक्ष: किस चीज़ को गंवाकर मनुष्य धनी बनता है? युधिष्ठर : लालच को।

यक्ष: संसार में सबसे बड़े आश्चर्य की बात क्या है?

युधिष्ठर : हर रोज़ मनुष्य के सामने मृत्यु के मुँह में जाते जीवों को देखता है पर अपने को अमर मानकर कर्म कर रहा है, यही महान आश्चर्य की बात है।

यक्ष ने युधिष्ठर के उत्तर सुनकर पुन: सभी भाईयों को जीवित कर दिया।

कैसे सार्थक बने वृद्धावस्था

– झम्मन सिंह



प्रत्येक जीव की जीवनयात्रा में वृद्धावस्था एक मुख्य पडाव है। यह एक सामान्य एवं प्राकृतिक स्थिति है। जिसने जन्म लिया है समय के साथ उसका विकास भी होगा। यह संभव नहीं कि एक बालक युवा न हो। आयु बढ़ने के साथ शारीरिक क्षमताओं का ह्रास प्रारंभ होता है और वृद्धावस्था आती है। इस गति से हम सभी परिचित है।

वृद्धावस्था एवं आर्थिक स्थिति : आयु बढ़ने के साथ मनुष्य की अपनी आवश्यकताएँ बहुत कम हो जाती है। खाने कपड़े पर भी अधिक व्यय नहीं करना होता है। फिर भी आर्थिक संबल तो हरेक को चाहिए ही।

(क) जिसके पास उनकी आवश्यकता से अधिक धन सम्पत्ति है वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों में ऐसे व्यक्तियों की संख्या बढ़ती जा रही है। उनके बच्चे गाँव-घर छोड़कर महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति हेतु दूसरे शहर या विदेशों में जा बसते हैं। माता-पिता अपार संपत्ति के साथ अकेले ही बीमारी व अन्य परिस्थितियों से जुझते रहते हैं। एक ओर उनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं होता है वहीं कुछ चापलूस स्वार्थी व्यक्ति उनकी धन सम्पत्ति को लूटने के चक्कर में रहते हैं। कई बार उनकी हत्या तक कर देते हैं।

(ख) जिनके पास अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिये कोई आर्थिक साधन नहीं होता है। जिन्होंने सारा जीवन असंयम में बिताया धन का दुरूपयोग किया और समय रहते भविष्य की चिन्ता नहीं करी, वे बुढ़ापे में कष्ट पाते हैं। कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते है जिनके बच्चे जमीन जायदाद पर स्वयं का कब्जा कर लेते हैं और माता-पिता को भाग्य के भरोसे छोड़ देते हैं। आज भोगवादी संस्कृति से प्रभावित अनेक व्यक्ति इस प्रकार का आचरण करने लगे हैं।

(ग) कुछ वृद्धजन इतने अभागे होते हैं कि उनके बच्चे उन्हें दूध में पड़ी मक्खी के समान समझते हैं। उनके व्यवसाय-खेती आदि पर स्वयं कब्जा जमाकर उन्हें घर से बेघर करने में लगे रहते हैं। उनके खाने-पीने की व्यवस्था भी नहीं करते और सदैव यही चाहते कि वे घर छोड़कर कहीं भी चले जाऐं। पुत्र व परिवार के मोह से ग्रस्त वृद्धजन अपमानित एवं उपेक्षित जीवन जीने को विवश होते हैं। जिन परिवारों में अंधाधुंध कमाई और पैसों के फूहड प्रदर्शन की परंपरा पड़ जाती है वहाँ वृद्धजनों को अधिकतर इसी प्रकार प्रताडित एवं अपमानित किया जाता है। तथा कथित प्रगतिशील सामाजिक परिवेश में बुढ़े दीनहीन व्यक्ति उन्हें अवांछनीय प्रतीत होते है। रेशम में टाट का पैबंद जैसे लगते हैं। घर के किसी निर्जन कोने में उन्हें निर्वासित कर दिया जाता है या फिर दूर किसी धार्मिक स्थल या वृद्धाश्रम में छोड़ दिया जाता है।

(च) हमारे जीवन में जो भी कष्ट कठिनाइयाँ आती है वे सब अपने कर्मों का फल है उन्हीं के अनुरूप परिस्थितियाँ बन जाती है और संगी-साथी व सम्बन्धी मिल जाते हैं। हमारे कर्मों के अनुसार हमारा प्रारब्ध बनता है वहीं समय आने पर फलित होता है।

ध्यान देने योग्य बातें :

वृद्धावस्था तो जीवन का नवनीत है इसे अभिशाप न समझो। दीर्घायु परमात्मा की अनन्त कृपा से प्राप्त एक सुअवसर है इसका सदुपयोग करें और समाज में अपने सत्कर्मों की सुगन्ध फैलायें। वृद्धावस्था की तैयारी तो सभी को बचपन से ही प्रारम्भ कर देनी चाहिये। अधिकांश वृद्धजन अपनी दुर्दशा के लिये स्वयं ही जिम्मेदार होते है। पुरानी यादों के खण्डहरों में न भटके वर्तमान की सुखद सम्भावनाओं पर ध्यान दें। कमल को तो कीचड़ में रहना होता है, फिर दुख: कैसा? जो समय बीत गया सो बीता गया पर अभी भी हमारे जीवन के जाने कितने वर्ष बाकी है। शेष जीवन का सदुपयोग करके अपने जीवन को आनन्दमय बनाऐं। पहले हमारे कर्म और विचार जैसे भी रहे हो, कम से कम अपने शेष जीवन तो शुभ एवं पवित्र कर्म करने का अभ्यास डालें ही। अवश्य भावी मृत्यु से भय कैसा। उसके स्वागत हेतु सच्चे मन से स्वयं को प्रस्तुत करें। हम मस्त भी रहे और व्यस्त भी रहे यह तभी सम्भव है जब हम स्वस्थ भी रहें। अपने शरीर स्वस्थ रखने का दायित्व तो हमारा ही है। पहला सुख निरोगी काया। हमेशा हंसते रहो और एक दिन जिंदगी थक जाएगी आपको परेशान करते करते। सच्ची खुशी दूसरों को देने से ही मिलती है।

****

श्रेष्ठ विचार श्रेष्ठता का आधार

- कश्मीर सिंह



हमारे जीवन की जो कुछ भी उपलब्धियाँ है वह सब हमारे विचारों की ही देन है। विचारों से ही हम उठते है और विचारों से ही हम गिरते है, उनसे ही हम खड़े होते है और उनसे ही चलते है। जो व्यक्ति अपने विचारों का स्वामी बनता रहता हैं और अपनी इच्छाओं को अपने वश में रखता है वहीं व्यक्ति श्रेष्ठ जीवन जी सकता है। एक व्यक्ति का जीवन पूर्ण रूप से उसके विचारों का ही प्रतिरूप है।

क्या किसी सम्पतिहीन व्यक्ति को गरीब कहना चाहिए नहीं....कदापि नहीं..... मेरे विचार में गरीब वह व्यक्ति है जिसके विचार ही निम्न श्रेणी के हैं। इस दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता हैं कि मानसिक दरिद्रता ही वास्तव में दरिद्रता हैं। हमारे विचार चुम्बक की तरह है जो अपने ही समान गुण वाली चीजों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। यथा उत्साहपूर्ण विचार यानि सकारात्मक विचार सफलता को ओर आकर्षित करते हैं और निराशाजनक विचार असफलताओं अपनी ओर आकर्षित करते हैं। यदि हम अपने जीवन में तुच्छता, निराशा एवं हीनता का भाव जागृत करेंगे तो हम जीवन भर अयोग्य ही बने रहेंगे। आनन्द प्रसन्नता, खुशी एवं उत्साह से भरी विचारधारा हमारी मानसिक उन्नति के लिए आवश्यक तत्व हैं। जिनके प्रभाव से हमारे दु:ख एवं निर्बलता दूर हो सकेगी। सत्य तो यह है कि अच्छे मित्र, अच्छे रिश्तेदार और अच्छे विचार, जिसके पास होते है उसे दुनिया की कोई भी ताकत हरा नहीं सकती । जब इन्सान को गंदे और मैले कपडों को पहनने से शर्म आती है तो गंदे और मैले विचारो से भी शर्म आनी चाहिए। हम हमारे दिमाग को सिखाएं कि वह हर चीज में बेहतर देखे क्योंकि आपके जीवन की खुशी विचारों की गुणवता पर निर्भर है। वस्तुत जो व्यक्ति अपनी सोच नहीं बदल सकता है वह वास्तव में कुछ नहीं बदल सकता है।

बचपन युवास्था और वृद्धावस्था ये तीनो ही मन की तंरगे है। जैसे ही व्यक्ति विचार द्वारा वृद्ध महसूस करने लगता है वैसे ही उस पर बुढ़ापा हावी हो जाता है। शरीर में स्वत: ही शिथिलता आने लगती है। प्रसन्ता से मुस्कराते हुए जीवन में आने वाली मुसीबतों का मुकाबला करना जीवन युद्ध का अजेय अस्त्र है। दुख की घडियों में दुखी होने से दुख घटेगा नहीं वरन बढेगा ही। आशय यह है कि सुख, दुख, आनन्द या क्लेश सफलता या असफलता यह सब व्यक्ति विशेष के अपने ही विचारों की देन है। प्रत्येक विचारों से अच्छे परिणाम और करे विचारों से बुरे परिणाम मिलेंगे और उसी अनुसार आपके आस-पास का वातावरण पैदा होगा। सुन्दर और श्रेष्ठ विचारों से ओतप्रोत मानव शरीर सुंगधित पुष्पों से युक्त बगिया के समान है। ईर्ष्या और द्वेष ऐसे दुर्गुण है जिनसे दूसरों की क्षति नहीं वरन स्वयं अपना ही नुकसान होता है। घृणा करने वाला व्यक्ति स्वयं घृणा की मूर्ति बन जायेगा। यह सच है कि इस संसार में दूसरे लोग हमें धक्का मारकर गिराने की कोशिश में लगे रहते हैं, लेकिन इससे भी बड़ा सच है कि ज्यादातर स्थितियों में हम स्वयं ही अपने गिरने का कारण बनते है। हम इन्सान भी अजीब होते है। अपनी सफलताओं का श्रेय हम पूरा लेना चाहते है वहीं दुसरी ओर जब हम असफल होते है तो असफलता का श्रेय दूसरे के मत्थे मढ देने में भी हम तनिक भी देर नहीं लगाते हैं। अत: इन दोनों स्थितियों में हमें एक नपा तुला दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। नकारात्मक विचार, उत्तेजक विचार मनुष्य के लिए घातक है। ऐसे विचार व्यक्ति को समय से पूर्व ही बूढ़ा बना देते है और वह जीवन की दौड़ में पिछड जाता है। अच्छे विचार ही व्यक्ति के जीवन के रक्षक होते है। कुविचारों से व्यक्ति के जीवन में दुष्प्रवृतियां जन्म लेती है और अवनति की ओर ले जाती है। हमारे जीवन का उद्देश्य दुष्प्रवृतियों पर विजय प्राप्त करना है जो चारित्रिक दृढ़ता का द्योतक हैं। चारित्रिक दृढ़ता ही श्रेष्ठ जीवन का आधार हो सकती है।

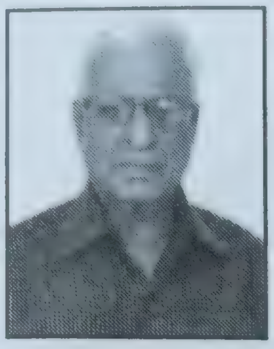
सम्पूर्ण संसार आनन्द का खजाना है। प्रात:काल टहलते समय यदि ठंडी ठंडी हवायें चल रही हो, चिड़ियाये चहचहा रही हो तो ऐसे में सकारात्मक सोच वाला व्यक्ति अपने को बहुत आनन्दित महसूस कर सकता हैं वहीं नकारात्मक सोच वाले व्यक्ति को यदि स्वर्ग जैसी सुविधाएं भी उपलब्ध करा दे तो उसमें भी कुछ न कुछ कमी ढूढ़कर अपने को दुखी कर लेगा। जीवन के इस मोड़ पर व्यस्त रहकर, स्वस्थ रह कर ही हम मस्त रह सकते है। जीवन के विकास पथ पर अग्रसर होने के लिए हमें आशावादी विचारों को ही अपनाना चाहिए। अत: हमारे श्रेष्ठ विचार ही दूसरे श्रेष्ठ जीवन का आधार हो सकते हैं।

सुबह उठते ही चेहरे पर मुस्कान रहे। हर एक दु:ख से आप कोसो दूर रहे।।

महक उठे आपकी जिंदगी। ऐसा शुभ दिन आप का आज रहे।।

मानव जीवन दुर्लभ

– जे.पी. विजय



समय देने से पैसे मिल जाते हैं कितु 'पैसे' देने से समय नहीं मिलता है। जीवन का आधार आयु है, न कि रूपया, पैसा, धन और दौलत। समय देकर क्या उपार्जन किया ? यह महत्त्व की बात है। रूपया देकर आयु, स्वास्थ्य, सुन्दरता, अच्छे विचार नहीं खरीद सकते। हँसी-मजाक में गया समय वापस नहीं आता। की गयी भूल का परिणाम दु:ख, संताप है इसे स्वयं को ही भोगना पड़ता है। जब तक स्वास्थ्य है, वृद्धावस्था दूर है। इन्द्रियों से सही कार्य लेगें सही परिणाम आयेंगे और विपरीत कार्य लेगे विपरीत परिणाम मिलेंगे।

जब अच्छे कार्य के अच्छे परिणाम होते है तो व्यर्थ का प्रलाप क्यों? कोई ऐसा कार्य ना हो, जिससे पछताना पड़े। अध्यात्म और मोक्ष दिलाने के नाम पर मानव को ठगा जा रहा है। ठग सब जगह है। स्वर्ग और मोक्ष के नाम पर ये पैसा, आबरू, बीबी और जायदाद अपने नाम करा लेते है। आप सोचते रह जायेगें, ये लेकर खिसक जायेगें। ये उन्हीं भोले-भाले, धार्मिक और दान दाताओं को खोजते है, जिन्हें स्वर्ग का टिकिट चाहिये। काम पड़े ये आपको पहले से ही स्वर्ग का प्रलोभन देकर आयु भी छीन लेवें। रोगी, भोगी और मन्द बुद्धि को ठगे जाने में भी सुख प्रतीत होता है। कोई आपका समय, पैसा और आयु तो नहीं छीन रहा। इस पर अवश्य सोचें। कहावत है – अब पछताय क्या होत है, जब चिड़िया चुग गई खेत।

जीवन में सावधान रहने की आवश्यकता है। चालाक, धूर्त, निराश, रोगी, दु:खी और समस्याग्रस्त को खोज कर उपाय बताने के नाम पर सर्वस्व लूट लेते है। अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है। कुएं में पूरी रस्सी जाय उससे पहले जो हाथ में बची रस्सी है, उसे ही खीचनें का प्रयास करे तो जीवन सुधर जायेगा। किसी के बहकावे में जीवन को न गंवाये। यह दुर्लभ है। इसे उन्नति, विकास और अच्छे कार्यों में खर्च करें –

बार-बार नहिं पाइये मनुष्य जनम की मौज।

जीवन परमात्मा का दिया हुआ उपहार है। इसे प्रभु चिन्तन में लगावें, न कि मोक्ष के नाम पर इसे समाप्त कर दे। यह आसुरीवृति के लोगों की सोच है जो बलि, कुर्बानी और समर्पण की शिक्षा देकर सर्वस्व छीन लेते है। प्रभु ऐसा होता तो जीवन ही नहीं देता। उसने जिस दुर्लभ जीवन को दिया है उसे पूर्ण निष्ठा, सत्कर्म और आनंद से जिये। दु:ख इन्द्रियों के विपरीत कार्यों का दुष्परिणाम है। सुख सत् कार्यों का। चाहना सही है तो दु:ख जीवन में प्रवेश ही नहीं करेगा। इस पर गंभीरता से विचार करें। अज्ञान को ज्ञान से और अंधेरे को रोशनी से दूर किया जा सकता है।

किसी ने कहा है –

ढूँढ़ा सब जहाँ में पाया पता तेरा नहीं।
जब पता तेरा लगा तो अब पता मेरा नहीं।।

****

कलह व दिखावे के युग में योग साधना, आत्म साक्षात्कार और मोक्ष प्राप्ति का एकमात्र साधन है।

संसार की उत्पत्ति व उद्देश्य

- एम.एल. गोयल



वह संसार जो हमें दिख रहा है, उसका मूल उपादान कारण 'प्रकृति' है। प्रकृति परमाणुओं से बनी है। परमाणु इतने सूक्ष्म होते हैं कि उनके टुकड़े नहीं किये जा सकते। प्रकृति जड़ पदार्थ है, उसमें चेतना नहीं है, वह स्वयं कुछ नहीं कर सकती है। संसार में तीन पदार्थ अनादि है।' अनादि से तात्पर्य जो कभी न पैदा होता है न ही नष्ट होता है। (1) प्रकृति, (2) आत्मा, (3) ईश्वर। चौथा ईश्वरीय ज्ञान/नियम/निदेश/आशा वेद है जो ईश्वर द्वारा महान ऋषियों के हृदय से प्रेरित किया जाता है।

''प्रकृति'' जड़ पदार्थ है, जबकि आत्मा व परमात्मा चेतन पदार्थ है परन्तु जीवात्मा ''अल्पश'' है जो प्रकृति प्रदत्त में पदार्थों में अज्ञानता से फंसकर बंधन में आकर शरीर धारण करता है। जबकि ईश्वर सर्वस्व, सर्वव्यापक, सवन्तिरयानी अनुपम, अजन्मा, अनन्त आदि है। ईश्वर ही प्रकृति के परमाणुओं को जोड़कर अपनी अनन्त शक्ति व ज्ञान से इस संसार/ब्रह्माण्ड की रचना करना है व संसार का नैमत्तिक कारण है। 60 परमाणुओं से एक अणु बनता है, दो अणुओं (120 परमाणु) = एक द्वयणुक से वायु तीन द्वयगुणों से ''अग्नि'' चार द्वयणुको से ''जल'' व पाँच द्वयणुको से पृथ्वी बनाता है तीन द्वयणुक को एक त्रसरेणु कहलाता है।

ईश्वर ने अपनी अनन्त शक्ति व ज्ञान से परमाणुओं को जोड़कर सर्वप्रथम महत्तव=बुद्धि नामक पदार्थ बनाता है जिससे हम लोभ बोध व आन्तरिक ज्ञान प्राप्त करते हैं, तत्पश्चात महत्तव से अहंकार नामक पदार्थ बनाते है, जिससे जीवात्मा अपने अस्तित्व = सत्ता की अनुभूति करता है। अहंकार से 16 पदार्थ बनाता है यथा पाँच (हस्त, पाद, वाणी, गुदा व उपस्थ) पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ (नाक, चक्षु, योग, त्वचा व रसना) पाँच तन्मायाए = सूक्ष्म भूत (गन्ध तन्माय, रूप तन्माय, शब्द तन्माय, स्पर्श तन्मात्र व रस तन्मात्रा) व सोलहवा ''मन'' को बनाता है जिससे जीवात्मा संकल्प विकल्प आदि अनेक कार्य करता है। इन पाँच तन्मात्राओं से पाँच स्थूल-भूत यथा, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु व आकाश बनाता है, इन्हीं पाँच स्थूल भूतो से मनुष्य पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि प्राणियों, सूर्य, पृथ्वी, चन्द्रमा, तारे व वृक्षों आदि को बनाता है।

यह संसार (सृष्टि) चार अरब 32 करोड़ वर्ष तक रहती है, तत्पश्चात प्रलय अवस्था भी 4 अरब, 32 करोड़ वर्ष तक रहती है। सृष्टिकाल 4 अरब, 32 करोड़ को 14 अन्वन्तरों में माना गया है। (1) स्वायम्भव मन्वन्तर (2) स्वारोचित, (3) औत्तमि, (4) तामस, (5) रैवत, (6) चाक्षुष, (7) वैवस्वत (जो अभी चालू है), (8) सावर्णि, (9) दस सावर्णि, (10) ब्रह्म सावर्णि, (11) धर्म सावर्णि, (12) रूद्र सावर्णि, (13) देव सावर्णि व (14) इन्द्र सावर्णि। प्रत्येक मन्वन्तर में 71 चतुर्युगीय होती है एक चतुर्युगी 43 लाख 20 हजार वर्ष की होती है। (सतयुग 1728000 वर्ष, तेत्रायुग 1296000 वर्ष, द्वापर 864000 वर्ष व कलयुग 432000 वर्ष, कुल चारों का योग 4320000 वर्ष होता है) 6 मन्वन्तर व्यतीत हो चुके हैं, सातवां वैवस्वत मन्वन्तर चालू है। एक मन्वन्तर में 71 चतुर्युगीय, 4320000 × 71 = 30 करोड़ 67 लाख 20 हजार वर्ष होते हैं × 6 मन्वन्तर = 1840320000 समाप्त होकर वर्तमान कलियुग की 27 चतुर्युगी, 4320000 × 27 = 116640000 वर्ष समाप्त होकर 28 की चतुर्युगी के सतयुग, त्रेता व द्वापर के 3888000 वर्ष व संवत 2074 वाँ वर्ष समाप्त होने तक 5118 वर्ष समाप्त होकर 5119 वाँ वर्ष चल रहा है अर्थात् वर्तमान दृष्टि के 6 मन्वन्तर 184032000 + सातवें मन्वन्तर की 27 चतुयुगीय 116640000 + सतयुग से द्वापर युग तक 3888000 + वर्तमान कलियुग के 5118 वर्ष कुल 1 अरब 96 करोड़, 8 लाख 53 हजार 48 वर्ष समाप्त हो चुके हैं तथा अब इस सृष्टि में दो अरब 53 करोड़, 11 लाख 46 हजार 882 वर्ष शेष है।

इस संसार का उद्देश्य = इस संसार को बनाये जाने के दो उद्देश्य है प्रथम पूर्व जन्मों के कर्म-संस्कारों अनुसार सांसारिक भोग भोगना (भोजन, मकान, स्त्री, पति, बच्चे आदि - दूसरा मोक्ष प्राप्ति = जीवन - मरण के बन्धन से मुक्ति मोक्षकाल 3600 पर

सृष्टि की उत्पत्ति व 36000 पर प्रलय होना जो कुल 19 मील 10 खरब, 40 अरब वर्ष के बराबर होगा, तत्पश्चात पुन: मोक्ष से लौटकर इस संसार में श्रेष्ठ मनुष्य योनि में जन्म लेना होता है।

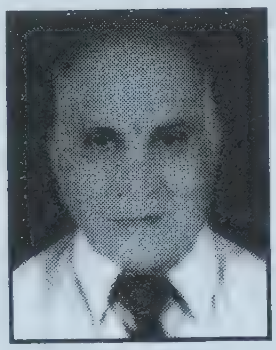
हम मनुष्य योनि में जो भी अच्छे व बुरे कर्म करते हैं - तदानुसार (1) जाति (मनुष्य, पशु-पक्षी, कीट, पतंग, वृक्ष आदि, उसमें भी पुरूष अथवा स्त्री) (2) आयु (जाति अनुसार आयु अथवा कर्म संस्कार अनुसार कम या ज्यादा आयु) (3) योग (भोजन, वस्त्र, मकान, पति/पत्नी, बच्चे आदि) अत: इस संसार में जन्म लिये बिना, मनुष्य को दु:खों की निवृत्ति = मोक्ष प्राप्ति (अपवर्ग) होना असम्भव है। मनुष्य योनि कर्म योनि व भोग योनि दोनों है, अर्थात् नये कर्म भी करता है व पूर्व जन्मों के कर्मों के अनुसार भोग भी प्राप्त करता है। जबकि मनुष्य योनि के अतिरिक्त अन्य योनियाँ केवल भोग योनि होती है उनके नये कर्म नहीं माने जाते हैं।

वेद ईश्वरीय ज्ञान है, मनुष्य कृत नहीं है - वेद ई श्वर का आदेश, निर्देश है - सफल जीवनायापन हेतु पाखण्डों, अन्धविश्वासों के निवारणार्थ वेद पदो/यजुर्वेद के अध्याय 40 मंत्र 9 के अनुसार - अन्धन्तम: प्र विशान्ति ये ऽसम्भूतिमुपार्सेत। ततो भूयऽइत ते तपो सऽउ सम्भूत्या थ्थरता: यजु जो लोग प्रकृति (जड़-पदार्थ) मूर्ति पूजा/कब्रपूजा/मजार पूजा आदि करते है व अन्धकार (दुखों) को प्राप्त होते है। मूर्तिया/कब्र आदि मनुष्य स्वयं बनाते हैं, चोर आदि मूर्तियों व उसके कपड़े आभूषणों को चुराकर ले जाते हैं। जो मूर्ति स्वयं की रक्षा नहीं कर सकती है वह अन्य मनुष्यों की रक्षा कदापि नहीं कर सकती। आज बहुतायत में अन्धविश्वास जादू/टोने फैले हुए है। जिससे सतर्क व सावधान रहने की आवश्यकता है।

****

मानसिकता

- रामेश्वरलाल तापड़िया



आज के इस युग में मनुष्य कैसे कैसे सपने लेकर, कहाँ और कैसे किस जगह पहुँच जाता है, उसकी कल्पना के बाहर है। उसकी तकदीर उसे क्या करने को मजबूर कर दे, उसे स्वयं को भी पता नहीं चलता। पहले पारिवारिक संबंध मजबूत व ठोस होते थे। उनसे बाहर निकलकर मनुष्य कुछ करने की सोच भी नहीं सकता था, पर अब ये सब इतिहास है।

बचपन से ही बच्चों में ऊँची उड़ान और जिन्दगी में कुछ कर गुजरने की ख्वाईश पैदा हो जाती है। माँ-बाप भी उसी अनुसार उन्हें सहारा देने व तन-मन-धन से सहायता करने में जुट जाते हैं। समाज, रीति-रिवाज सब गौण हो जाते हैं यह एक अच्छी शुरुआत है परन्तु देश समाज व स्वयं माता-पिता के हित में हो तभी अच्छाई की प्रतीक है।

अक्सर देखने में आता है कि माँ-बाप बच्चे की अंधी दौड़ में बिना सोचे समझे शामिल हो जाते हैं। जिससे घर में अशांति और चिंता हो जाती है। विज्ञान का दुरुपयोग न हो। यह निरन्तर जारी रहा तो जन हानि, धन हानि और समाज का पतन निश्चित है। इसे रोकना अति आवश्यक है। मनुष्य की सोच शनै: शनै: स्वार्थ-सिद्धि की हो रही है। उसे बदलने की जरूरत है। इसमें साहस और धैर्य की आवश्यकता है। आज मनुष्य स्वयं को व अपने परिवार को ऊँचा उठाने में इतना उतावला है कि उसे आगे की कुछ समझ नहीं है। इसके लिए वह कुछ भी करने को तैयार रहता है। जिसे जल्दी नहीं रोका गया तो यह समाज व देश के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकती है। अत: सरकार के साथ हमारा भी परम कर्त्तव्य है कि इस दुष्प्रवृत्ति को रोका जाये।

****

जीवनपयोगी तीन बातें

- ओमप्रकाश सोगानी



- ▲ तीन व्यक्तियों का सदा वंदन करें – माता, पिता, गुरू
- ▲ तीन व्यक्तियों का सदा सम्मान करें – सज्जन, संत, ज्ञानी
- ▲ तीन व्यक्तियों की सदा मदद करें – दीन, हीन, लाचार
- ▲ तीन व्यक्तियों से कभी ना झगड़ें – मूर्ख, शराबी, कमजोर
- ▲ तीन वस्तुओं का प्रदर्शन ना करें – अंग, धन, भोजन
- ▲ तीन वस्तुएं खोनी नहीं चाहिए – आशा, उत्साह, विश्वास
- ▲ तीन कार्य यथाशक्ति करे – परिश्रम, परोपकार, सत्संग
- ▲ तीन कार्यों से सदा बचे – स्वप्रशंसा, परनिंदा, कुसंग
- ▲ तीन भावनाओं का दमन करें – काम, क्रोध, स्वार्थ
- ▲ तीन इंद्रियों को वश में रखे – मन, बुद्धि, जुबान
- ▲ तीन वस्तुएं सदा बढ़ाए – चरित्र, गौरव, ज्ञान
- ▲ तीन वस्तुएं सदा घटाएं – लोभ, मोह, अभिमान
- ▲ तीन गुण सदा ग्रहण करें – सत्य, अहिंसा, ईमान
- ▲ तीन दुर्गण दूर भगा दें – ईर्ष्या, घृणा, अपमान
- ▲ तीन चीजें कभी नहीं भूले – कर्जा, कर्तव्य, अहसान
- ▲ तीन बातों से यश बढ़ता है – सेवा, सहायता, दान
- ▲ तीन बातों से सबंध बढ़ते है – मित्रता, प्रेम, सम्मान

****

Income Tax Slabs Rates

- Ramesh Chandra Sharma
Advocate



Income Tax Slabs Rates for FY 2017-18

Income Tax Slabs for Individual Tax Payers & HUF
(Less than 60 Years Old) For FY 2017-2018-Part I

Income Tax Slabs	Tax Rate	Health & Education Cess
Income up to Rs. 2,50,000*	No Tax	
Income from Rs. 2,50,000 - Rs. 5,00,000	5%	3% of Income Tax
Income from Rs. 5,00,000 - Rs. 10,00,000	20%	3% of Income Tax
Income more than Rs. 10,00,000	30%	3% of Income Tax

Surcharge 10% of Income Tax, where total income exceeds Rs. 50 Lakh up to Rs. 1 Crore.
Surcharge 15% of Income Tax, where the total income exceeds Rs. 1 Crore.
* Income Tax exemption limit for FY 2017-18 is up to Rs. 2,50,000 for individual & HUF other than those covered in part (II) or (III)

Income Tax Slabs for Senior Citizens (60 Years Old or more but less than 80 Years Old)
For FY 2017-2018-Part II

Income Tax Slabs	Tax Rate	Health & Education Cess
Income up to Rs. 3,00,000*	No Tax	
Income from Rs. 3,00,000 - Rs. 5,00,000	5%	3% of Income Tax
Income from Rs. 5,00,000 - Rs. 10,00,000	20%	3% of Income Tax
Income more than Rs. 10,00,000	30%	3% of Income Tax

Surcharge 10% of Income Tax, where total income exceeds Rs. 50 Lakh up to Rs. 1 Crore.
Surcharge 15% of Income Tax, where the total income exceeds Rs. 1 Crore.
* Income Tax exemption limit for FY 2017-18 is up to Rs. 3,00,000 other than those covered in part (I) or (III)

Income Tax Slabs for Senior Citizens (80 Years Old or More)
For FY 2017-2018-Part III

Income Tax Slabs	Tax Rate	Health & Education Cess
Income up to Rs. 5,00,000*	No Tax	
Income from Rs. 5,00,000 - Rs. 10,00,000	20%	3% of Income Tax
Income more than Rs. 10,00,000	30%	3% of Income Tax

Invest Now & Save Upto 146.800 on Taxes
Surcharge 10% of Income Tax, where total income exceeds Rs. 50 Lakh up to Rs. 1 Crore.
Surcharge 15% of Income Tax, where the total income exceeds Rs. 1 Crore.
* Income Tax exemption limit for FY 2017-18 is up to Rs. 5,00,000 other than those covered in part (I) or (II)

Income Tax Slabs Rates for FY 2018-19 (AY 2019-20)

Income Tax Slabs for Individual Tax Payers & HUF (Less than 60 Years Old) For FY 2018-19-Part I

Income Tax Slabs	Tax Rate	Health & Education Cess
Income up to Rs. 2,50,000*	No Tax	
Income from Rs. 2,50,000 - Rs. 5,00,000	5%	4% of Income Tax
Income from Rs. 5,00,000 - Rs. 10,00,000	20%	4% of Income Tax
Income more than Rs. 10,00,000	30%	4% of Income Tax

Surcharge 10% of Income Tax, where total income exceeds Rs. 50 Lakh up to Rs. 1 Crore.
Surcharge 15% of Income Tax, where the total income exceeds Rs. 1 Crore.
* Income Tax exemption limit for FY 2017-18 is up to Rs. 2,50,000 for individual & HUF other than those covered in part (II) or (III)

Income Tax Slabs for Senior Citizens (60 Years Old or more but less than 80 Years Old)
For FY 2017-2018-Part II

Income Tax Slabs	Tax Rate	Health & Education Cess
Income up to Rs. 3,00,000*	No Tax	
Income from Rs. 3,00,000 - Rs. 5,00,000	5%	4% of Income Tax
Income from Rs. 5,00,000 - Rs. 10,00,000	20%	4% of Income Tax
Income more than Rs. 10,00,000	30%	4% of Income Tax

Surcharge 10% of Income Tax, where total income exceeds Rs. 50 Lakh up to Rs. 1 Crore.
Surcharge 15% of Income Tax, where the total income exceeds Rs. 1 Crore.
* Income Tax exemption limit for FY 2017-18 is up to Rs. 3,00,000 other than those covered in part (I) or (III)

Income Tax Slabs for Senior Citizens (80 Years Old or More)
For FY 2017-2018-Part III

Income Tax Slabs	Tax Rate	Health & Education Cess
Income up to Rs. 5,00,000*	No Tax	
Income from Rs. 5,00,000 - Rs. 10,00,000	20%	4% of Income Tax
Income more than Rs. 10,00,000	30%	4% of Income Tax

Invest Now & Save Upto 146.800 on Taxes
Surcharge 10% of Income Tax, where total income exceeds Rs. 50 Lakh up to Rs. 1 Crore.
Surcharge 15% of Income Tax, where the total income exceeds Rs. 1 Crore.
* Income Tax exemption limit for FY 2017-18 is up to Rs. 5,00,000 other than those covered in part (I) or (II)

****

समूह संयोजक

क्र.सं.	नाम	समूह सं.	जन्म दिनांक	पता	सम्पर्क सूत्र
1.	श्री नरेन्द्र मंगल	01	17.08.45	26, इन्कम टैक्स कॉलोनी, अजमेर	9351257000, 2641387
2.	श्री कैलाश जोशी	02	02.12.52	539/26, मधुबन विहार, डॉ. करनावट के पास, क्रिश्चयनगंज, अजमेर	9414259076
3.	श्री सुरेन्द्र कुमार विजय	03	07.06.48	36, पलटन बाजार, अजमेर	8696954350, 2628284
4.	श्री जे.एस. राजावत	04	15.08.48	ई-213, शास्त्रीनगर, अजमेर	9461839111, 2425695
5.	श्री जे.पी. विजय	05	03.01.37	6-ए, नाथजी मंदिर रोड, कुन्दन नगर, अजमेर	9460612158, 2424672
6.	श्री सी.एन. अग्रवाल	06	11.02.49	गौरी भवन, मॉडल स्कूल के पीछे, बापू नगर, अजमेर	9828042115
7.	श्री भंवरलाल गोयल	07	01.05.28	शारदा भवन, सीताराम मंदिर के पास, अशोक मार्ग, अजमेर	9982362666, 2433653
8.	श्री पी.डी. अग्रवाल	08	16.08.50	409/30, श्री गिरिराज भवन, प्लाजा टॉकिज के पास, अजमेर	9829427827, 2427827
9.	श्री भगवानदास असमादिया	09	25.08.44	सेंट थॉमस स्कूल के पास, अलवर गेट, अजमेर	8764001257
10.	श्री कल्याण राय शर्मा	10	25.07.35	219/12, राजेन्द्र पुरा, हाथी भाटा, अजमेर	9413870037, 2433152
11.	श्री मानकरण अग्रवाल	11	13.04.38	अग्रवाल भवन, गुलाब बाड़ी, अजमेर	9828829287, 2660758
12.	श्री मदन रवि	12	23.02.40	शिव मंदिर के पास, आदर्श नगर, अजमेर	2442707
13.	श्री बी.आर. दोहरे	13	01.06.39	कमला निवास, तानाजी नगर, भजनगंज, अजमेर	9887436574, 9314477985
14.	श्री श्रीकृष्ण शर्मा	14	05.07.47	प्लाट नं. 2, गणेश नगर, मेयो कॉलेज के पीछे, अजमेर	7597722919
15.	श्री जे.पी. शर्मा	15	31.01.50	588/ए-27, माया मेन्शन, पुलिस चौकी वाली गली, रामगंज	9414669001, 2440901
16.	श्री आर.एल. ऐरन	16	25.06.44	256, ऐरन विला, बी.के. कॉल नगर, अजमेर	9460894799, 3207972
17.	श्री आर.सी. माहेश्वरी	17	10.01.46	596, हरिभाऊ उपाध्याय नगर, विस्तार कोटड़ा, अजमेर	9413300900, 2600900
18.	श्री के.के. गौड़	18	21.07.52	1153/42, सेंट जोसफ प्राइमरी स्कूल के पास, धोलाभाटा, अजमेर	9414007543
20.	श्री राजेन्द्र कुमार शिवहरे	20	22.12.49	सी-2, मधुबन कॉलोनी, नाका मदार, अजमेर	9414272722, 2671133
21.	कैप्टन सत्यनारायण सिंह	21	02.05.52	प्लाट नं. 9, वीर तेजाजी नगर, ब्यावर रोड, दौराई	9928215700
22.	श्री बीर बहादुर सिंह यादव	22	04.02.47	ए-177, चन्द्रवरदाई नगर, अजमेर	9929855501

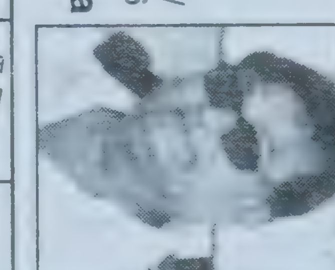
Senior Citizen Society, Ajmer
(At a Glance)

Framed on Date 13.08.95

Regd. Date : 2.12.95 No. 55/AJMER/95-96



V.P. Kapoor



Sunil Saxena

S.N. Year	President	Sr. Vice-President	Vice-President	Secretary	Joint Secretary	Treasurer
1. 1995-96	Col. K.D. Upadhayay	Sh. N.S. Rajguru	Prof.(Smt.) Vimla Mishra	Sh. R.C. Bajaj	Sh. K.C. Sharma	Sh. O.P. Agarwal
	Member : - Sh. N.M. Boolchandani, CDR B.M. Joshi					
2. 1997	Col. K.D. Upadhayay	Prof.(Smt.) Vimla Mishra		Sh. R.C. Bajaj	Sh. K.C. Sharma	Sh. O.P. Agarwal
	Member : - Sh. N.M. Boolchandani, CDR B.M. Joshi, Lt. Col. S.P. Kapoor, Cdt. J.S. Chouhan, Dr. C.S. Mehta					
3. 1998-99	Col. K.D. Upadhayay	Sh. M.G. Toshniwal	Smt. Sushma Mishra	Sh. R.C. Bajaj	Sh. K.C. Sharma Sh. N.M. Boolchandani	Sh. O.P. Agarwal
	Member : - Dr. C.S. Mehta, CDR J.S. Chauhan, Lt. Col. S.P. Kapoor, Sh. G.K. Singhal, Sh. S.K. Mehra, Sh. A.K. Verma, CA Harish Chandra & Co.					
4. 2000-01	Col. K.D. Upadhayay	Smt. Sushma Mishra	Cdt. J.S. Chauhan	Sh. R.C. Bajaj Sh. S.K. Mehra	Sh. K.C. Sharma Sh. N.M. Boolchandani	Sh. O.P. Agarwal
	Member : - Lt. Col. S.P. Kapoor, Sh. S.K. Bachlas, Sh. M.S. Singla, Sh. S.S. Gogawat, Sh. J.P. Vijay, Sh. S.K. Mehra					

S.N. Year	President	Sr. Vice-President	Vice-President	Secretary	Sec. (Adm.)	Sec. (Dev.)	Sec. (Fin)
5. 2001-03	Dr. S.K. Singh	Smt. Hemant Mishra	Sh. S.S. Gogawat	Sh. R.C. Bajaj	Sh. K.C. Gupta	Sh. K.C. Sharma	Sh. R.C. Agarwal
	Member : - Sh. S.K. Bachlas, Sh. G.H. Raisinghani, Dr. P.C. Deedwania, Sh. R.G. Agarwal, Sh. K.K. Khanna, Sh. S.M. Kaushik, Smt. Mithlesh Gupta						
6. 2004-06	Dr. S.K. Sharma	Sh. S.S. Gogawat	Dr. (Miss) D.K. Agicha	Sh. K.C. Gupta	Sh. J.P. Vijay	Sh. S.K. Bachlas	Sh. K.C. Sharma
	Member : - Sh. D.C. Pandey, Sh. L.S. Goyal, Sh. R.P. Singhal, Sh. B.R. Dohre, Sh. R.C. Gupta, Dr. P.C. Deedwania						
7. 2007-09	Dr. S.K. Sharma	Sh. S.S. Gogawat	Dr. (Miss) D.K. Agicha	Sh. K.C. Gupta	Sh. J.P. Vijay	Sh. S.K. Bachlas	Sh. K.C. Sharma
	Member : - Sh. L.S. Goyal, Sh. B.L. Goyal, Sh. B.L. Agarwal, Sh. B.R. Dohre, Sh. B.P. Mittal, Sh. R.G. Agarwal, Sh. D.C. Pandey, Smt. Sheela Saxena, Sh. J.N. Sharma, Sh. K.K. Gupta						
8. 2010-May 13	Sh. K.C. Gupta	Sh. J.P. Vijay	Smt. Sheela Saxena	Sh. R.K. Prasad Sh. R.S. Nirban	Sh. B.R. Dohre	Sh. R.S. Nirban Sh. K.K. Gupta	Sh. Suresh Agarwal
	Member : - Sh. D.C. Pandey, Sh. J.N. Sharma, Sh. J.N. Lakhotiya, Sh. B.L. Agarwal, Sh. K.J. Gyani, Sh. H.L. Sankhla, Sh. P.C. Gupta, Mrs. Madhu Gupta, Sh. Subhash Chandna, Sh. K.K. Gupta, Sh. Ashok Sharma, Sh. R.P. Singhal						
8. 2013-16	Sh. K.C. Gupta	Sh. R.S. Nirban	Smt. Kusum Gautam	Sh. Suresh Agarwal Cdr. J.S. Rajawat	Cdr. J.S. Rajawat	Sh. J.P. Sharma Sh. G.K. Jirota	Sh. R.N. Vijayvargiya Sh. K.C. Agarwal Sh. H.P. Ojha
	Member : - Smt. Madhu Gupta, Smt. Radhika Agarwal						
8. 2016 to	Sh. Suresh Agarwal	Sh. J.P. Sharma	Smt. Kusum Gautam	Sh. Chiranji Lal Sharma	Sh. V.P. Kapoor	Sh. Sunil Saxena	Sh. B.S. Gahlot
	Member : - Smt. Radhika Agarwal, Smt. Manju Maheshwari						

स्मृति शेष - विनम्र- श्रद्धांजलि

वर्ष 2016-17 की स्मारिका में प्रकाशित के अतिरिक्त सत्र 2017-17 में देवलोक गमन हुए सदस्यों को सोसायटी हृदय से श्रद्धांजलि अर्पित करती है।

क्र.सं.	नाम	एल.एम.नं.	स्वर्गवास की दिनांक	समूह संख्या
1.	श्री मदनलाल मित्तल	2148	20.12.2017	01
2.	श्री ओम प्रकाश बाडमेरा	1704	24.12.2017	03
3.	श्रीमती शकुन्तला विजयवर्गीय	2001	-	03
3.	श्री जयकिशन पुरोहित	1696	21.11.2017	05
4.	श्री रामस्वरूप भंसाली	71	31.12.2017	05
5.	श्री किशन गोपाल चोरसिया	2455	05.11.2017	06
6.	श्री भवंरलाल खारवाल	2779	29.12.2017	06
	श्रीमती भारती सक्सेना	2766	24.08.2018	06
7.	श्री वैद्य हरिप्रसाद शर्मा	-	24.06.2017	09
8.	श्री कृष्णा अवतार खण्डेलवाल	-	09.10.2017	09
9.	श्री पुष्कर सिंह तोमर	2409	21.10.2017	09
10.	श्री लक्ष्मीनारायण गुप्ता	1127	21.12.2017	09
11.	श्रीमती तेजकुमारी वर्मा	1076	13.03.2017	13
12.	श्रीमती निमिता गुप्ता	-	-	13
13.	श्रीमती महेन्द्र कुमारी अरोरा	1657	26.10.2017	13
14.	श्री रूपनारायण शर्मा	3122	31.10.2017	13
15.	श्री द्वारका प्रसाद सिंहल	1170	13.12.2017	13
16.	श्री यक्षदत्त शर्मा	884	15.01.2018	13
17.	श्रीमती विमला गोयल	1056	28.01.2018	13
18.	श्री जियेन्द्र मिश्रा	2243	04.02.2018	13
19.	श्री राधाकिशन टांक		10.03.2018	13
20.	श्री नवलसिंह डांगरा	-	16.03.2018	13
21.	श्री चन्दनसिंह बुंदेल	2566	08.04.2018	13
22.	श्री बृजमोहन बंसल	1769	09.04.2018	13
23.	श्री रामसिंह अरोरा	-	26.04.2018	13
24.	श्रीमती शान्ति अग्रवाल	352	-	15
25.	श्री पुरूषोत्तम देवनानी	2268	-	15
26.	श्री रमाकान्त ओझा	238	-	15
27.	श्रीमती सुशीला ओझा	349	-	15
28.	श्री सुरेश शर्मा	557	-	15
29.	श्री भगवत सिंह जैन	1376	14.8.18	16
30.	श्रीमती कमल मद्‌भवी	1781	-	18
31.	श्री रामगोपाल सिंह राठौड़	550	-	18
32.	श्री राधेश्याम मामोड़िया	2054	03.02.2018	18
33.	श्रीमती निर्मला गोयल	2199	05.03.2018	18
	श्री नरेन्द्र सिंह पंवार	3284	28.07.2018	20
34.	श्री आर.डी. शर्मा	3312	-	22
35.	श्री के.के. गुप्ता	1491	05.09.2018	22

सादर भेंट

सीनियर सिटीजन अजमेर की सदस्या

श्रीमती चन्दर ऐबट द्वारा अपने पति

स्व. श्री सुभाष चन्द्र ऐबट, भूतपूर्व नौ सेना अधिकारी

की पुण्य तिथि दिनांक 17.08.18 पर शव रखने हेतु डी फ्रिजर जन सेवार्थ

आदर्श श्मशान गृह, नाका मदार, अजमेर को भेंट दी।



कृपया सुविधा हेतु मो. 9828712924, 9829125110, 9828829287 पर सम्पर्क कर सकते है। यह सुविधा निःशुल्क है केवल ले जाने एवं लाने की व्यवस्था स्वयं करनी होगी।



श्री आर.के. शिवहरे
समूह संयोजक -20



श्री मानकरण अग्रवाल
समूह संयोजक -11

।। श्री गणेशाय नमः ।।

हार्दिक शुभकामना सभी वरिष्ठ नागरिकों को



लोकमन दास गोयल
(M.A., Political Science)
डवलोपीक मैनेजर
आदर्श क्रेडिट को-ऑपरेटिव सोसायटी लि.

सदस्य भाजपा



लोचना गोयल
(H.S.S.)
ऑर्गेनाईजर
आदर्श क्रेडिट को-ऑपरेटिव सोसायटी लि.

- पूर्व सैनिक (भा.ज.पा.)
- सदस्य : सीनियर सिटीजन
- सदस्य : अ.भा. अग्रवाल सम्मेलन
- सदस्य : अग्रवाल समाज अजमेर
- सदस्य : के.स.पे.ए.राज. अजमेर
- संयोजक : डाकवतार संचार पेशनर्स एसोसिएशन, अजमेर

- सदस्य : सीनियर सिटीजन
- सदस्य : अ.भा. अग्रवाल सम्मेलन
- सदस्य : अग्रवाल समाज अजमेर

आदर्श क्रेडिट को-ऑपरेटिव सोसायटी लि. सदस्य द्वारा जमाएं- दैनिक जमा, आर.डी., एफ.डी. इत्यादि प्राप्तकर समय पर भुगतान करती है।

आदर्श क्रेडिट को-ऑपरेटिव सोसायटी लि.

आदर्श क्रेडिट को-ऑपरेटिव सोसायटी, मल्टीस्टेट सोसायटी एक्ट 2002 के तहत जमाओं की सुरक्षा के लिये बनाये गई धारा 66 एवं 67 का पूरी तरह से पालन करती है, इसके अन्तर्गत कुल जमाओं की 10 प्रतिशत राशि शेयर पूंजी एवं रिजर्व फण्ड के रू प में सदैव सुरक्षित रखी जाती है।

जय आदर्श – जय सेकरिता – जय हिन्द

पता : 250/30, छज्जू भवन, लक्ष्मी नारायण मंदिर वाली गली,
हाथी भाटा, अजमेर (राज.) मो. : 7014024851, 8619537161



श्रद्धांजलि



स्व. श्री राजू भाटिया
जन्म : 21-06-1964, स्वर्गवास : 22-01-2005

स्व. श्रीमती सुशीलादेवी भाटिया
स्वर्गवास : 14-05-2011
पत्नि स्व. श्री घनश्यामदास भाटिया

हम सभी अर्न्तमन की गहराइयों से आपको अश्रुपूर्ण श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं

श्रीमती धनवन्ती देवी राजू भाटिया
(धर्मपत्नि)
दीपक राजू भाटिया
(सुपुत्र)

जगदीश-आरती भाटिया (पुत्र-पुत्रवधु)
हरेश-रेखा भाटिया (पुत्र-पुत्रवधु)
हेमन्त-पूजा भाटिया (पुत्र-पुत्रवधु)
कपिल, दीपक, दिपेश, दक्ष भाटिया (सुपौत्र)

आप सभी को समस्त भाटिया परिवार की ओर से चेटीचण्ड एवं नव-सवंत्सर की शुभकामनाएं

भाटिया प्रोपर्टी कमीशन एजेन्ट

अजमेर विकास प्राधिकरण की सभी योजना के आवासीय, व्यवसायिक भूखण्ड, बंगले, क्वार्टर क्रय-विक्रय हेतु सम्पर्क करें।

Jagdhish Bhatia
9414003704, 7727045555
Hemant Bhatia - 9828270029 *Kapil Bhatia - 9950000909*

ऑफिस : शॉप नं. 17, 18 टैम्पू स्टेण्ड, चन्द्रवरदाई नगर, अजमेर
निवास : ए-172, 173, चन्द्रवरदाई नगर, अजमेर




0145-2621622 (शॉप)
08824391300 (मोबा.)
RK
R.K. Jewellers
नया बाजार, उतार घी मण्डी, अजमेर (राज.)
रामेश्वरलाल कैलाशचन्द सर्राफ
चांदी व सोने के जेवर के विक्रेता :
राजस्थानी जेवर, मुस्लिम जेवर, राजपूती जेवर,
मूर्तियाँ, चाँदी के बर्तन, सिक्के इत्यादि ।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित ....



रामजीलाल अरोड़ा
एम.कॉम., एल.एल.बी.

वार्षिक स्मारिका - वरिष्ठ नागरिक
समस्त वरिष्ठ नागरिक एवं सदस्यों को
हार्दिक शुभकामनाएं

रामजीलाल अरोड़ा

एम.कॉम., एल.एल.बी.

एडवोकेट	- नोटरी पब्लिक
संस्थापक सदस्य	- वरिष्ठ नागरिक एसोसियेशन अजमेर वर्ष 1995
नगर संयोजक	- अखिल भारतीय साहित्य परिषद
सहमंत्री	- नगर आर्य समाज, अजमेर
प्रतिनिधि सदस्य	- ह्यूमन राइट एवं करप्शन प्रेडिक्शन, यूनियन परमानन्द चौक, दिल्ली
सदस्य	- भारत विकास परिषद, सहकार भारती

निवास

180, पार्श्वनाथ कॉलोनी, आतेड़ रोड, अजमेर

मो. : 9413779588

वरिष्ठ नागरिक ग्रुप नं. 1, वैशाली नगर, अजमेर

उन्नासी जयंती वर्ष
के
उपलक्ष्य में



स्व. श्री सुधीरकान्त नागर
सेवानिवृत वरिष्ठ नगर नियोजक

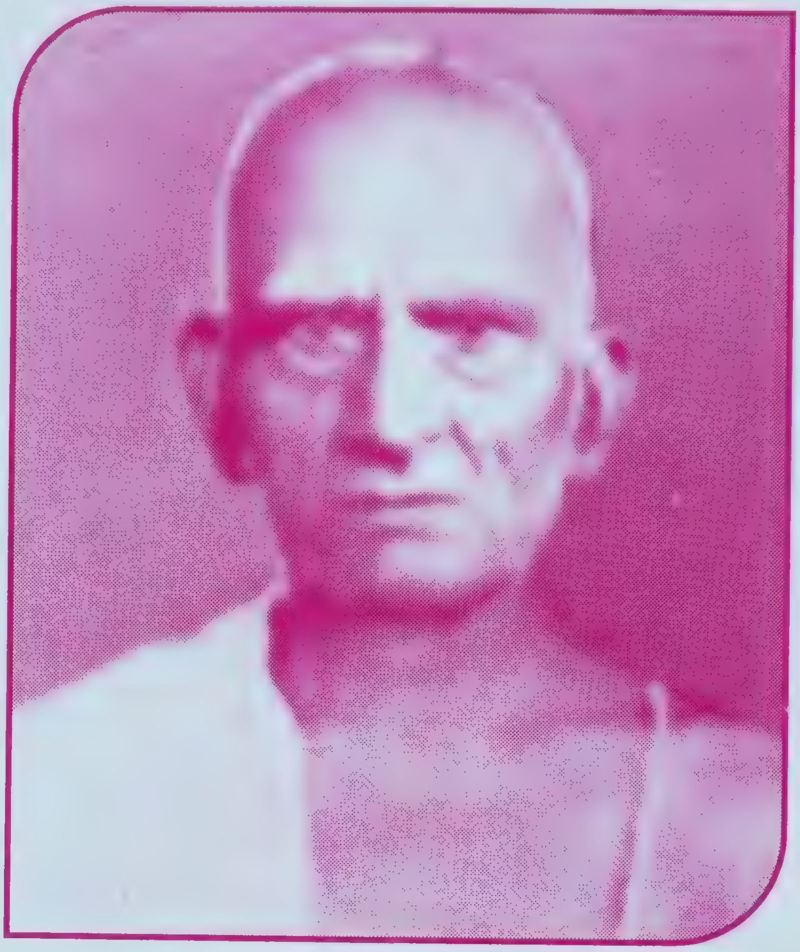
आपके उच्च विचारों की रोशनी, दीया बन के
हमारा मार्ग प्रशस्त करती रहें।

श्रद्धा-सुमन ....

158-सी
आदर्श नगर,
अजमेर

कल्पना नागर (धर्मपत्नि)
हर्षा नागर (पुत्री)
एवं परिवारजन

उन्नतीसवीं पुण्यतिथि
एवं
114 वीं जयंती वर्ष पर



स्व. श्री यादवराम नागर

सादर श्रद्धांजलि

आपके उच्च विचारों की रोशनी, दीया बन के हमारा मार्ग प्रशस्त करती रहें।

श्रद्धा-सुमन ....

158-सी
आदर्श नगर,
अजमेर

कल्पना नागर (पुत्रवधु)
हर्षा नागर (पौत्री)
एवं परिवारजन

विनम्र श्रद्धांजलि

जन्म : 10 जून 1992



गोलोकगमन : 18 अक्टूबर 2017

स्व. अमित शेवानी

फूल बिखर जाते हैं, पर खुशबू सदा महकती है।
चेहरे गुम हो जाते हैं, पर यादें सदा रहती हैं।

श्रीमती कविता-दयाल शेवानी (माता-पिता), हरदेवी, भागेश्वरी (ताई जी)
भगवान-सुशीला, मनोहर-रेनू, अशोक-हेमलता, जयकिशन-दिप्ती (चाचा-चाची जी)
जयप्रकाश-वर्षा (भाई-भाभी)
एवं समस्त शेवानी परिवार

Firm

Souvinor's Divya, Girona (Spain)
Souvinor's Monika, Girona (Spain)
Jyoti Shewani, GC (Spain)

Add. : A-106, M.D. Colony, Naka Madar, Ajmer
M. : 9460242565, 9636655034





विनम्र श्रद्धाजंलि



मेजर आर.एस. चौहान
01.02.1923-29.02.2016



स्व. श्रीमती राजेश्वरी चौहान
25.06.1926-27.03.2011

हमारे पूज्य पिताजी मेजर आर.एस. चौहान (रिटायर्ड) का जन्म 1 फरवरी 1923 को पहाड़पुर गाँव, उन्नाव जिला, उत्तरप्रदेश में हुआ तथा उनकी शिक्षा अजमेर में हुई थी। शिक्षा के बाद मेजर चौहान की नियुक्ति ग्वालियर लांसर्स में 2 लेफ्टिनेंट के पद पर हुई। देश की आजादी के बाद राज्यों के सैन्यबल के एकीकरण के पश्चात् मेजर चौहान की नियुक्ति 13 ग्रेनेडियर, बीकानेर में कैप्टन के रूप में हुई। उन्होंने अजमेर में एन.सी.सी. हेडक्वॉर्टस में प्रशासनिक अधिकारी के रूप में भी अपनी सेवाएं दी। आर्मी में सेवारत रहते हुए वे सन् 1962, 1965 व 1971 में चीन व पाकिस्तान के विरूद्ध हुए युद्ध में बहादुरी से लड़े। यह अत्यन्त गर्व का विषय है कि उन्होंने दिल्ली में राजपथ पर आयोजित गणतंत्र दिवस समारोह 1962, 13 ग्रेनेडियर, कैमल टुप का कुशल नेतृत्व किया। वे कर्मठ, अनुशासनप्रिय एवं परिश्रमी व्यक्ति थे। नि:स्वार्थ रूप से देश की सेवा करते हुए सन् 1972 में मेजर के पद पर कार्यरत रहते हुए सेवानिवृत्त हुए।

सेवानिवृत्ति के पश्चात् अपने जीवन को एक उद्देश्य व समाज में शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए सन् 1976 में अंग्रेजी माध्यम में **''ईस्ट पॉइन्ट स्कूल''** की स्थापना मात्र 10 बच्चों के साथ की। आज यह स्कूल अपनी एक अलग पहचान बना चुका है। उन्होंने ही स्कूल को "Keep Your Aim High" अर्थात् अपने लक्ष्य को सदा ऊँचा रखने का सिद्धान्त दिया। उनका अनुशासन व विनम्र स्वभाव आज भी हमारे लिए प्रेरणा स्त्रोत है और हमेशा बना रहेगा।

आपके द्वारा स्थापित शिक्षण संस्थान आज सभी क्षेत्रों में अपना विशेष स्थान रखता है। आप अपने पीछे सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं। इनके ज्येष्ठ पुत्र कमल सिंह चौहान सीमा सुरक्षा बल से डी.आई.जी. के पद से सेवानिवृत्त हैं, पुत्री आशा सिंह, छोटे पुत्र गोपाल सिंह चौहान व पुत्रवधु श्रीमती विनीता चौहान, मेजर आर.एस. चौहान द्वारा स्थापित शिक्षण संस्थान को सफलतापूर्वक संचालित कर रहे हैं। इनके छोटे जामाता श्री एस.पी.एस. सोलंकी आई.ए.एस., यू.पी. कैडर से कमिश्नर के पद

शोकाकुल परिवार

श्रीमती आशा सिंह (पुत्री)
श्री कमल सिंह चौहान - श्रीमती सुधा चौहान (पुत्र-पुत्रवधु)
श्री गोपाल सिंह चौहान - श्रीमती विनीता चौहान (पुत्र-पुत्रवधु)
अमित सिंह चौहान - अनुराधा चौहान (पौत्र-पौत्रवधु)
विक्रम सिंह चौहान - दीपिका चौहान (पौत्र-पौत्रवधु)
सिद्धार्थ सिंह चौहान - अंकिता चौहान (पौत्र-पौत्रवधु)
अभिमन्यु सिंह चौहान (पौत्र), राजश्री चौहान, वसुधा चौहान, आरिनी सिंह (प्रपौत्री)

श्रीमती उषा चौहान - श्री एस.पी.एस. सोलंकी (पुत्री-दामाद)
कार्तिकेय सोलंकी-ज्योत्सना सोलंकी (नाती-नाती वधु)
स्वास्तिक सोलंकी-मोनिका सोलंकी (नाती-नाती वधु)
युवराज आदित्य सिंह (प्रपौत्र)
आराधना सिंह (प्रपौत्री)

सीनियर सिटीजन सोसायटी अजमेर

समूह-16

फॉयसागर रोड, अजमेर

विनम्र श्रद्धाजंलि



10 अगस्त 1945 **श्री भगवत सिंह जैन** 14 अगस्त 2018

श्री भगवत सिंह जैन HMT से Dy. General Manager के पद से सेवानिवृत होने के बाद विभिन्न सामाजिक संस्थाओं से जुड़ गये। आपने HMTअजमेर को ISO 9001 प्रमाण पत्र दिलवाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की और Quality Assurance का पूर्ण दायित्त्व निभाया। 1978-79 में अजमेर कम्प्यूटर फार्म का गठन किया और छात्र-छात्राओं को नि:शुल्क कम्प्यूटर का अध्ययन करा प्रशिक्षित किया। अजमेर ग्लोबल कॉलेज, आर्यन कॉलेज व अन्य संस्थाओं में Quality Assurance के छात्रों को ट्रेनिंग दी। आप ग्रीन इंडिया क्लीन इंडिया से भी सम्बंधित रहे।

श्री भगवत सिंह जैन महावीर इंटरनेशनल अजमेर, राजस्थान बॉक्सिंग एसोसियेशन के संस्थापक सदस्य रहे और कई पदों पर अपनी सेवायें दी। आप रोटरी क्लब के प्रांतीय गवर्नर एवं अध्यक्ष रहे। महावीर स्मारक सेवा समिति के भी अध्यक्ष रहे। अर्चना धाम, फॉयसागर में संचालित वृद्धाश्रम के संचालक मंडल के पदाधिकारी भी रहे।

श्री भगवत सिंह जैन पिछले दस वर्षो से अधिक समय से सीनियर सिटीजन सोसायटी अजमेर के समूह 16 के कर्मठ, मृदुभाषी लोकप्रिय सदस्य रहे है। ऐसी विभूति के अचानक देवलोक गमन से परिवार को एवमं समूह को अपूर्णनीय क्षति हुई। समूह के सभी सदस्य उन्हें अपनी विनम्र श्रद्धाजंलि देते हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते है कि श्री जैन को अपने श्री चरणों में स्थान प्रदान करे।

श्रद्धा-सुमन ....



समूह 16 के सभी सदस्यगण

रतन लाल ऐरन

समूह संयोजक -16

मो. : 9460894799

विनम्र श्रद्धांजलि



जन्म : 6 मार्च 1953 गोलोकगमन : 28 जुलाई 2018

स्व. नरेन्द्र सिंह पंवार

सेवानिवृत, शिक्षा विभाग, राज. सरकार-अजमेर

रहने को सदा दहर में आता नहीं कोई।
तुम जैसे गये ऐसे भी जाता नहीं कोई।
अंतर्मन में संघर्ष
और फिर भी मुस्कुराता हुआ चेहरा।
आप तो जीवन का श्रेष्ठ अभिनय कर गये।
आपकी मुस्कुराहट हमें सदा प्रेरणा देती रहेगी।

श्रद्धा-सुमन....

श्रीमती मंजु पंवार (धर्मपत्नि)
एडवोकेट लोकेश सिंह पंवार (पुत्र)
श्रीमती लीना- मेजर हेमेन्द्र सिंह, II महार रेजिमेन्ट (पुत्री-दामाद)
तनिष्का, अनन्या (दोहिती)

Add. : B-77, एम.डी. कॉलोनी, नाका मदार, अजमेर
M. : 9460459629







विनम्र श्रद्धांजलि



स्व. श्री गौरी शंकर मिश्र

जन्म : 10 अक्टूबर 1924

स्वर्गवास : 21 जुलाई 2018

ईमानदार, कर्त्तव्यनिष्ठ, अनुशासित,
उदारमना, सरल एवं प्रेरणादायी व्यक्तित्व
के धनी
सेवानिवृत्त सहायक कार्मिक अधिकारी (रेल्वे)

अब हुआ स्वप्न मधु का जीवन,
विस्मृत – स्मृति के विमुक्त बन्धन
खुल गया शून्यमय अवगुंठन
अज्ञेय सत्य तू जड़ चेतन

समस्त परिवार

अशोक कुमार मिश्र (पुत्र)
स्नेह प्रभा – यतीश झा (पुत्री – दामाद)
शशी प्रभा – जितेन्द्र (पुत्री – दामाद)
हिमांशु – सोनल (पौत्र-पौत्री)
वान्या (प्रपौत्री)

तृतीय विनम्र श्रद्धांजलि



जन्म : 13 मई 1949

गोलोकगमन : 24 अप्रैल 2015

स्व. श्री घीसूलाल शर्मा

सेवानिवृत प्रधानाध्यापक (शिक्षा विभाग), राज. सरकार-अजमेर

तृतीय पुण्यतिथी पर पूरे परिवार की ओर से अश्रुपुरित श्रद्धांजली अर्पित करते हैं।

आपकी कमी खलती है हमें, ये खालीपन तड़पाता हैं।
बस यूं ही यादें दिल में समेटे, ये वक्त गुजर जाता हैं।
अब पता चलता है कि
जिम्मेदारियों का बोझ कितना भारी है
खुद से ज्यादा अपनों की खुशियां प्यारी है।

श्रद्धा-सुमन ....

श्रीमती द्वारका देवी शर्मा (पत्नी)

योगेश शर्मा - कुसुम शर्मा (पुत्र-पुत्रवधु)

नीलम - हरिप्रकाश जी, अमृता - राजेश जी (पुत्री-जवाई)

सक्षम, रिशिका (पौत्र-पौत्री)

कुम्हार गली, तानाजी नगर, भजनगंज, अजमेर मो. : 90011 34004

विनम्र श्रद्धांजलि



जन्म तिथि :
29 जून 1930

देवलोक गमन :
6 अगस्त 2016

श्री राम मोहन टंडन

गरिमामय, विशिष्ठ व्यक्तित्व,
निष्ठावान, शिक्षाविद्, पुरूषार्थी, कर्मठ
मूर्धन्य एवं सेवाभावी स्वभाव के धनी
सभी को प्यार बाँटने वाले
एक अविस्मरणीय यादगार
छोड़कर चले गये।

श्रद्धा-सुमन ....

श्रीमती लक्ष्मी टंडन (धर्मपत्नि)
श्री विनोद टंडन-श्रीमती ललिता टंडन (भ्राता-भ्रातावधु)
श्री अनूप टंडन - श्रीमती नीता टंडन (पुत्र-पुत्रवधु)
श्री आलोक टंडन-श्री प्रीति टंडन (पुत्र-पुत्रवधु)
श्रीमती अमिता कपूर-श्री राज कृष्णा कपूर (पुत्री-दामाद)
श्रीमती शिवांगी - श्री एकांक मेहरा (पौत्री-दामाद)
विवेक कपूर, डॉ. गरिमा कपूर (नाती, नातिन)
उज्जवल, प्रज्जवल, मृदुल (पौत्र)

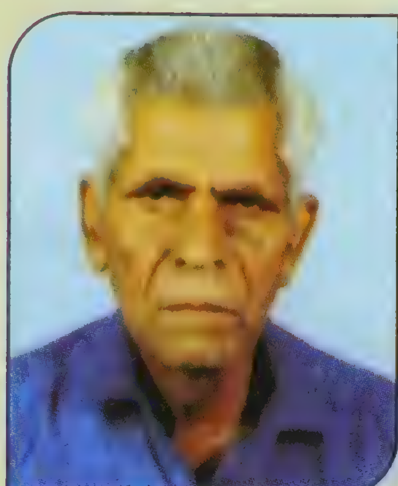
55, आदर्शनगर, अजमेर (राज.) मो. : 9414097088

With Best Compliments From :

Member of Group - 10



कल्याण राय शर्मा



ओम प्रकाश कच्छावा



ओम प्रकाश चौरसिया





श्री कृष्ण भार्गव



लक्ष्मण सिंह अखावत

ग्रुप संख्या 10 की ओर से स्मारिका के 23 वें संस्करण 2017-18 के प्रकाशन पर हार्दिक बधाई

With Best Compliments From :

Member of Group - 17



आर. सी. माहेश्वरी



एम. सी. बाछीवाल



श्रीमती नाथीदेवी बाछीवाल





बहादुर सिंह भाटी



श्रीमती दीपाली गुसांई


The Legacy of Trust
Continues for Generations...
pnb
बड़े देश का
Bada Bank
Credit Card
e payment
SMS alert
Free Internet Banking
ASBA facility
Free accidental/death insurance with active pnb debit card
Free ATM/ Debit Cards
3-in-1 account (Saving Fund, Demat & Trading account)
pnb Prudent- an automatic transfer of balance from saving accounts to fixed deposit and vice versa
Conditions apply
Our Saving Accounts
pnb Total Freedom for salaried persons
pnb Shikshak for teachers
pnb Vidyarthi for students
For further details contact your nearest PNB Branch or Dial 0120-2490000 / All India Toll Free 1800 180 2222
www.pnbindia.in
पंजाब नैशनल बैंक
...भरोसे का प्रतीक !
punjab national bank
...the name you can BANK upon !

English Medium

VALLEY POINT SCHOOL

Vision For Pride Success



PLAY GROUP / NURSERY/ L.K.G.





Features

- *Spacious & Well Equipped Environment*
- *Smart Classes With Digital Content*
- *Creative Activities Every Week*
- *Physical & Sports Activities*
- *Playground Facility*
- *Teaching Through Montessori Method*
- *Qualified & Well Experienced Faculty*

Radhika Villa Campus, Bhajan Ganj, Ajmer

M. : 9057741450, 9414281479, 9828172732


अजमेर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लि., अजमेर
(ISO 22000:2005 प्रमाणित संगठन)
हार्दिक शुभकामनाऐं
सरस
स्वाद राजस्थान का
पौष्टिक एवं ताजा दूध एवं दुग्ध उत्पाद
अजमेर डेयरी के उत्कृष्ट नए दुग्ध उत्पाद *
सरस मावा (फीका)
1 किलोग्राम/200 ग्राम
सरस बर्फी
250 ग्राम
सरस पेड़ा
250 ग्राम
*फ्री होम डेलीवरी - 50 किलो से अधिक मांग होने पर
राम चन्द्र चौधरी
अध्यक्ष
गुलाब भाटिया
प्रबन्ध संचालक
डिमाण्ड हेतु सम्पर्क करें :- प्रभारी, विपणन अनुभाग टोल फ्री नं. : 18001806082 0145-2440013, 2440027